एकार्थक कोश

(समानार्थक कोश)

वाचना-प्रमुख
आचार्य तुलसी

प्रधान-संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
समणी कुसुमप्रज्ञा

एकार्थक कोश

कोशश्चैव महीपानां, कोशश्च विदुषामपि ।
उपयोगो महानेष, क्लेशस्तेन विना भवेत् ।।

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानं,
कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति,
सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥

समणी कुसुमप्रज्ञा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

प्रकाशक ·
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

आर्थिक सौजन्य :
रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट
कलकत्ता

प्रबन्ध-सम्पादक
श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

प्रथम संस्करण · १९८४

पृष्ठांक ४४०

मूल्य ५०.००

मुद्रक ·
मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

EKĀRTHAKA KOŚA

(A Dictionary of Synonyms)

Vācanā Pramukha
ĀCĀRYA TULSĪ

Chief Editor
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Editor
Samaṇī Kusumprajñā

JAINA VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Managing Editor

Shreechand Rampuria

Director

Agama and Sahitya Prakashan
Jain Vishva Bharati

By munificence

Rampuria Charitable Trust
Calcutta

First Edition **1984**

Pages **440**

Price **Rs 50 00**

Printers
Jain Vishva Bharati Press
Ladnun (Rajasthan)

स्वकथ्य

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम कल्पवृक्ष की एक उपशाखा है। जैसे-जैसे समय बीता, वैसे-वैसे आगमवृक्ष का विस्तार होता गया। आगम शब्दकोश की कल्पना आगम सपादन कार्य के साथ-साथ हुई थी, किन्तु उसकी क्रियान्विति उसके पचीस वर्षों के बाद हुई। इस कार्य के लिए हमने शताधिक ग्रन्थो का चयन किया और वह कार्य प्रारम्भ हो गया। इस विशाल कार्य मे निरुक्त, एकार्थक शब्द, देशी शब्द आदि का पृथक् वर्गीकरण किया गया। इस आधार पर उस महान् कोश मे से प्रस्तुत कोश का अवतरण हो गया। इस अवतरण कार्य मे अनेक साध्वियो, समणियो और मुमुक्षु बहिनो ने अपना योग दिया है। इसे कोश का रूप दिया है समणी कुसुमप्रज्ञा ने। मुनि दुलहराज की श्रम-सयोजना और कल्पना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह एक सुखद सयोग है कि आगम शब्दकोश तथा उसकी शाखा-विस्तार का सारा कार्य महिला जाति के द्वारा सपन्न हुआ है।

वैदिक और बौद्ध साहित्य मे निरुक्त अथवा एकार्थक शब्दो पर कार्य हुआ है, किन्तु जैन आगम साहित्य पर इस प्रकार का कार्य नही हुआ था। समीक्षात्मक और तुलनात्मक दृष्टि से इसमे कार्य करने का पर्याप्त अवकाश है, फिर भी प्रारभिक स्तर पर जिस सामग्री का सकलन हुआ है वह कम मूल्यवान् नही है।

जिन-जिन व्यक्तियो ने इस कार्य मे अपना योग दिया है, उन्हे साधु-वाद और उनके लिए मगल भावना है कि उनकी कार्य-क्षमता उत्तरोत्तर बढे और समग्र आगम शब्दकोश की सपन्नता मे उनका कर्त्तृत्व और अधिक निखार पाए।

लाडनू
१५-१-८४

—आचार्य तुलसी
—युवाचार्य महाप्रज्ञ

पुरोवचन

एकार्थक शब्दो का सग्रह सर्वप्रथम हम यास्क रचित निघण्टुकोश मे पाते है। इसमे शब्दो का सकलन सुनियोजित रूप मे किया गया है। प्रथम अध्याय मे पृथ्वी, अन्तरिक्ष, मेघ, नदी आदि वस्तुओ के एव उनसे सम्बद्ध क्रियाओ के वाचक ४१५ पर्यायवाचो शब्द सकलित हैं। द्वितीय अध्याय मे मनुष्य एव उसके अगो आदि से सम्बद्ध ५१६ पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। तीसरे अध्याय मे ४१० पर्यायवाची शब्दो का सग्रह है। इस प्रकार उत्तरवर्ती अध्यायो मे भी एकार्थक शब्द सकलित हैं। पर्यायवाची शब्दो के एक समूह मे से केवल एक-आध शब्द की ही व्याख्या यास्क ने की है। उदाहरणार्थ—गत्यर्थक १२२ शब्दो मे से किसी भी शब्द द्वारा वाच्य गति विशेष का निरूपण नही किया गया है। केवल इतना ही कह दिया है कि १२२ धातुए गत्यर्थक हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए एक वृत्तिकार ने कहा है—"**अत्र पुनर्यद्यपि गतिकर्मणा द्वाविंशतिशतसख्यानाम् अविशिष्ट गमनमेकोऽर्थ उक्त, तथापि प्रसिद्ध्यनुरोधाय कसति, लोठते, श्चोतते इत्येवमादय प्रतिनियत-सत्त्व-गमनविषया एव द्रष्टव्या** ।" तात्पर्य यह है कि एकार्थक शब्द एक ही विषय की विभिन्न अवस्थाओ को स्पष्ट करते है। ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही वर्ण के वाचक भिन्न-भिन्न शब्द भिन्न-भिन्न विषयो के लिये प्रयुक्त हुए है। उदाहरणार्थ—**गौर्लोहित, अश्व शोण। गौ कृष्ण, अश्वो हेम। गौ श्वेत, अश्व कर्क।**

आचार्य जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने आवश्यक के पर्याय नामो के विषय मे कहा है कि वे अभिन्नार्थक, सुप्रशस्त, यथार्थनियत, अव्यामोहनिमित्त एव नानादेशीय शिष्यो को अनायास प्रतिपत्ति कराने वाले हैं। एकार्थक शब्द अपने प्रतिपाद्य विषय को सुव्यवस्थित रूप से निर्धारित करते हैं। एकार्थवाची शब्दो द्वारा विद्यार्थी को बहुश्रुत बनाया जाता है एव प्रतिपाद्य विषय के विभिन्न अगो का प्रतिपादन भी व्यवस्थित रूप से किया जाता है। "एकार्थक" शब्द का अभिप्राय वस्तुत "समानार्थक" से है। किसी भी विषय के विभिन्न पहलुओ के स्वरूप समानार्थक अनेक शब्दो द्वारा सरलता से सम-

भाये जा सकते है। एक ही विषय के लिये विभिन्न देशो मे विभिन्न शब्द प्रयुक्त होते है। एकार्थक कोश मे उन सब शब्दो का सकलन किया जाता है। अत विभिन्न देशो के शिष्य अपनी अपनी बोली मे उस विषय को स्पष्ट रूप से ऐसे कोश के माध्यम से समझ लेते हैं।

बृहत्कल्पभाष्य मे एकार्थक कोश के गुण बन्धानुलोमता आदि बताये है। लेखक का एकार्थक सम्बन्धी ज्ञान जितना समृद्ध होगा, उसका रचनाकौशल भी उतना ही गम्भीर होगा, सौष्ठवपूर्ण होगा। "वचोविन्यासवैचित्र्य" भी इस ज्ञान का एक फलित है।

प्राचीन काल मे पर्यायवाची शब्दो द्वारा ही किसी पदार्थ के विभेद, गणना, लक्षण, निरूपण और परीक्षण किये जाते थे। उदाहरणार्थ, 'आभिणिबोहिय' शब्द के पर्यायवाची ईहा, अपोह, विमर्श, मार्गणा, गवेषणा, स्मृति, मति, प्रज्ञा आदि शब्दो के आधार पर आभिनिबोधिक ज्ञान के विभाग, लक्षण एव अन्य विशेष विवरण हमे सहज ही उपलब्ध हो जाते है। आभिनिबोधिक या मतिज्ञान के इन विभिन्न पर्यायो के आधार पर ही जैन तार्किको ने प्रमाणशास्त्र का निर्माण किया है। परवर्ती समय मे रचित पारिभाषिक ग्रन्थ इन पर्यायवाची शब्दो के ही परिष्कृत रूप हैं।

एकार्थवाची शब्दो के आधार पर हम किसी विषय का सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, अहिंसा शब्द के अन्तर्गत आए हुए ६० शब्दो के माध्यम से अहिंसा-साधना के मूलभूत उपाय, अहिंसा का स्वरूप तथा उसकी फलनिष्पत्ति को हम सूक्ष्म रूप से हृदयगम कर सकते है। शील, सवर, गुप्ति, क्षाति, यतना, अप्रमाद आदि शब्द अहिंसा-साधना के उपायो के द्योतक हैं। दया, कान्ति, विरति, कल्याण, नन्दा, भद्रा, विभूति आदि शब्द उसके स्वरूप के वाचक है। निर्वाण, बोधि, समाधि, सिद्धावास, निर्वृति आदि शब्द अहिंसा की फलनिष्पत्ति के वाचक हैं।

प्रस्तुत एकार्थक शब्दकोष के अवलोकन से जैन दर्शन सम्बन्धी कई बातें स्पष्ट रूप से हमारे सामने उभर आती हैं, जो उसकी विशेषताओ का स्पष्ट निर्देश करती हैं। उदाहरणार्थ, "मोहणिज्जकम्म" के पर्यायो को लीजिये। इन पर्यायो मे मात्र चारित्र मोहनीय के अगो का निर्देश है। दर्शन मोहनीय कर्म का उल्लेख बिल्कुल नही हुआ है। इसके विपरीत पाली ग्रन्थो मे जब मोह शब्द के पर्यायो को देखते हैं तो मात्र अज्ञान या अविद्या से सम्बन्धित

शब्दो को ही पाते हैं, चारित्र मोहनीय से सम्बधित किसी शब्द का समावेश वहा नही है। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि के ३० से भी अधिक पर्याय धम्म-सगणि जैसे बौद्ध ग्रथ मे उपलब्ध होते है जबकि आवश्यक निर्युक्ति मे सम्यक्त्व-सामायिक के मात्र ये ७ पर्याय निर्दिष्ट हैं—सम्यग्दृष्टि, अमोह, शोधि, सद्भावदर्शन, बोधि, अविपर्यय एव सुदृष्टि। ऐसा प्रतीत होता है कि जैनाचार्यों ने सम्यग्दर्शन के आध्यात्मिक पहलुओ पर उतना अधिक ध्यान नही दिया जितना कि बौद्ध चिन्तको ने। जैन कर्मग्रथो मे सम्यग्दर्शन के सबध मे अनेक गम्भीर चिन्तन उपलब्ध है। परन्तु उसके बौद्धिक पक्ष पर अपेक्षित प्रकाश नही डाला गया है। इसके विपरीत बौद्ध दार्शनिको ने सम्यग्दर्शन पर विशेष प्रकाश इसलिए डाला कि चारित्र मोहनीय के निराकरण की आधारशिला सम्यग्दर्शन ही है। बौद्धो ने सवर को विशेष महत्त्व दिया परन्तु तपस्या को आध्यात्मिक साधना का अनिवार्य अग स्वीकार नहीं किया, जैसा कि जैन परम्परा मे किया गया है। यही कारण है कि चारित्र मोहनीय के पर्याय शब्द बौद्ध साहित्य मे एक स्थान पर सकलित नही किये गये, यद्यपि राग, द्वेष, मान आदि शब्दो के पर्याय अत्यन्त विस्तृत रूप से उसमे सगृहीत है।

प्रस्तुत कोश एक विशाल योजना का प्रारम्भिक अग है। परमाराध्य आचार्य श्री एव युवाचार्य श्री की प्रेरणा से जैन विश्व भारती के शोध विभाग ने जैन आगम शब्द कोश की महान् योजना बनायी है। इसी के अतर्गत निरुक्त कोश, एकार्थक कोश, देशी शब्द कोश आदि तैयार किये गए है। इसी क्रम मे अभी दो कोश—निरुक्त कोश तथा एकार्थक कोश प्रकाशित किए जा रहे है। प्रस्तुत कोश का सुव्यवस्थित सकलन एव सम्पादन कर **समणी कुसुमप्रज्ञा** ने अत्यधिक श्रमसाध्य कार्य को अत्यल्प समय मे सम्पूर्ण किया है। इस कार्य मे उन्हे मुनि श्री दुलहराज जी का मार्ग-दर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहा है। प्रस्तुत कोश मे तीन महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी सलग्न किये गये है, जिनके आधार पर पाठक सरलता से इस कोश का उपयोग कर सकते है। द्वितीय परिशिष्ट मे एकार्थक शब्दो की सार्थकता को समझाने का प्रयत्न किया गया है जो कि सराहनीय है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कोश सुधी समाज मे समादर प्राप्त करेगा।

लाडनू
२८-१-८४

नथमल टाटिया
निदेशक, अनेकान्त शोधपीठ
जैन विश्व भारती

प्रस्तुति

कोश का महत्व

लाक्षणिक साहित्य मे कोश का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है । किसी भी भाषा की समृद्धि का ज्ञान उसके शब्दकोश से किया जा सकता है । जिस प्रकार यत्र तत्र बिखरा पानी कोई उपयोगी नहीं होता तथा अधिक मात्रा होने पर वह बाढ का रूप भी ले सकता है, लेकिन उसी पानी को एक स्थान पर बाधकर विद्युत् पैदा की जा सकती है तथा अनेक स्थानो पर सिंचाई आदि का कार्य किया जा सकता है । इसी प्रकार इधर उधर बिखरी हुई शब्द सम्पत्ति निरुपयोगी होती है । कोश के माध्यम से निरुपयोगी और मृत शब्दावली भी व्यवस्थित होकर जीवन्त और उपयोगी हो जाती है । इसलिए प्राचीन काल मे कोश निर्माण का कार्य होता रहा है ।

सस्कृत व प्राकृत आदि भाषाओ की यह विशेषता है कि शब्द प्राय धातुओ से निष्पन्न होते हैं । इस विशेषता के आधार पर कौन शब्द किस अर्थ को ध्वनित करता है यह जानने मे कोश ही एक मात्र सहायक होता है । एक ही धातु कही कही अनेक अर्थों मे प्रयुक्त होती है, वहा प्रसगानुसार भिन्न-भिन्न अर्थों का वास्तविक ज्ञान कोश द्वारा ही सभव है । अनेक स्थलो पर व्याकरण द्वारा व्युत्पत्ति का अर्थ शब्द के मूल अर्थ से बहुत दूर चला जाता है । वहा कोश ही वास्तविक अर्थ का ज्ञान देता है । जैसे पृश्-पालन-पूरणयो ' धातु मे 'ऊप' प्रत्यय लगाने पर 'परुप' शब्द बनता है । धातु का अर्थ पालन व पूरण है लेकिन शब्द का अर्थ कठोर है, जो कि धातु के अर्थ से मेल नही खाता । इसी प्रकार अन्य अनेक रूढ शब्दो का ज्ञान कोश से ही सभव है ।

भाषा विज्ञान के अनुसार प्रत्येक शब्द के अर्थ का अपकर्ष और उत्कर्ष होता रहता है । जैसे पाषण्डी (पाखण्डी) शब्द प्राचीन काल मे व्रती के लिए प्रयुक्त था लेकिन आज उसके अर्थ का अपकर्ष हो गया । कोश के माध्यम से शब्द का इतिहास जाना जा सकता है, क्योकि प्रत्येक कोशकार केवल शब्द सचय ही नही बल्कि अपने पूर्वज कोश का भी सहारा लेता है ।

एक ही शब्द भिन्न भिन्न क्षेत्रों, प्रकरणों एव सदर्भों मे भिन्न भिन्न अर्थ का वाचक होता है, जैसे—'उपयोग', 'धर्म', 'आकाश', 'गुण' आदि जैन दर्शन के पारिभाषिक शब्द है। सामान्य अर्थ से इनके अर्थों मे भिन्नता है। कोश के माध्यम से भिन्न-भिन्न अर्थों का ज्ञान किया जा सकता है। कोश के बिना अर्थ-ज्ञान कठिन होता है, इसलिए विशिष्ट ज्ञान वृद्धि के लिए कोशों की रचना हुई है।

एकार्थक कोश का उत्स—

भगवती सूत्र के प्रारम्भ मे गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते है—एए ण भते ! नव पदा कि एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ?—भते। ये चलमाण चलित आदि नौ पद एकार्थक, नानाघोष और नानाव्यञ्जन वाले है अथवा अनेकार्थक, नानाघोष और नानाव्यञ्जन वाले है ?

भगवान् महावीर ने समाधान देते हुए कहा—'इनमे चलमान चलित, उदीर्यमान उदीरित, वेद्यमान वेदित और प्रहीयमान प्रहीन आदि चारो पद एकार्थक, नानाघोष व नानाव्यञ्जन वाले है।[1]

टीकाकार ने इसी तथ्य को चार विकल्पो के माध्यम से बहुत सुन्दर रूप मे निरूपित किया है। जैसे—

१ एकार्थक—एक व्यजन वाले—जैसे क्षीर क्षीर आदि।

२ एकार्थक—नाना व्यजन वाले—जैसे क्षीर, पय आदि।

३ अनेकार्थक—अनेक व्यञ्जन वाले—जैसे अर्कक्षीर, गव्यक्षीर, महिषक्षीर आदि।

४. अनेकार्थक—नाना व्यञ्जन वाले—जैसे घट, पट आदि।

इसमे दूसरा विकल्प कोश की उत्पत्ति का कारण है।

टीकाकार ने चलमान चलित आदि चारो शब्दो मे स्पष्ट रूप से आर्थिक विभेद स्वीकार करते हुए भी इनको उत्पाद पर्याय की अपेक्षा से

---

१. भग १/१२ गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे—एए ण चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा।

एकार्थक माना है।[१]

एकार्थक का प्रयोजन—

प्राचीन काल मे प्रत्येक विषय को बारह प्रकार से समझाया जाता था। उसमे एकार्थक का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।[२] इस प्रकार कोश ज्ञान अलग मे न कराकर विषय के अध्ययन के साथ ही करा दिया जाता था। बृहत्कल्प भाष्य मे उल्लेख है कि साधु को विविध भाषाओ मे कुशल होना चाहिए, जिससे कि वह जनता को अधिक लाभ पहुचा सके।[३]

एकार्थक का प्रयोजन बताते हुए ग्रन्थकारो ने अनेक स्थलो पर कहा है कि अनेक देशो के शिष्यो के अनुग्रह के लिए एकार्थको का प्रयोग होता है।[४] प्राचीन काल मे गुरु के पास विभिन्न देशो के विद्यार्थी उपस्थित होते थे। उन्हे अवबोध देने के लिए एक ही शब्द के वाचक विभिन्न देशो मे प्रचलित शब्दो का प्रयोग किया जाता था, जिससे सभी शिष्य अपनी-अपनी भाषा मे उस तथ्य को समझ सके। यही कारण है कि शास्त्रो मे एक अर्थ के वाचक विभिन्न प्रान्तीय शब्दो का सभार स्वत विकसित होता चला गया। उदाहरणार्थ—दुग्ध, पय, वालु, पीलु और क्षीर ये दूध के एकार्थक हैं। इनमे आज भी वालु (हालु) शब्द कर्नाटक मे तथा पीलु (पाल) शब्द तमिलनाडु मे दूध का वाचक है। इस प्रकार एकार्थको से विभिन्न शब्दो के आधार पर भाषा वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक इतिहास का अवबोध भी मिलता है। चूर्णिकार ने स्तुति और स्तव को भिन्न-भिन्न देशो मे पयुक्त होने वाले एकार्थक माना है।[५]

एकार्थको के प्रयोग का दूसरा प्रयोजन यह प्रतीत होता है कि किसी बात पर बल देने के लिए तथा उसकी विशेषता प्रकट करने के लिए भी

---

१ भटी प १७।

२ अनुद्वामटी प ६ निक्खेवेगट्ठ निरुत्ति विही पवत्ती व केण वा कस्स।
तद्दारभेयलक्खणतदरिहपरिसा य सुत्तत्थो॥

३ बृभा १२२९।

४ अबूटी प ३३ नानादेशविनेयानुग्रहार्थं एकार्थिका।

५ नदीचू पृ ४९ : अन्योन्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचना।

एकार्थक शब्दो का प्रयोग होता है।[1] जैसे—भाव-क्रिया के प्रसग मे 'तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए' ये सभी शब्द भावक्रिया की महत्ता को व्यक्त कर रहे हैं।[2] इस प्रकार प्रसगवश एक ही अर्थ के वाचक अनेक शब्दो का प्रयोग पुनरुक्ति दोष नहीं है।[3]

एकार्थक शब्दो से व्युत्पन्न मति छात्र एक प्रसग के साथ अनेक शब्दों का ज्ञान कर लेते थे और मद बुद्धि छात्र विभिन्न शब्द पर्यायो से अर्थ समझ लेते थे। इस प्रकार एकार्थक का कथन दोनो प्रकार के शिष्यो के लिए लाभ-प्रद होता था।[4] और पदार्थ विषयक कोई मूढता नही रहती थी।[5] देखे—'पिंड', 'उग्गह', 'दुम', 'आगासत्थिकाय' आदि।

छद-रचना मे रिक्तता की पूर्ति के लिए भी एकार्थक शब्दो की आवश्यकता होती है, जिससे उसी अर्थ का वाचक दूसरा शब्द प्रयुक्त किया जा सके।[6] अनुप्राम अलकार का प्रयोग वही कर सकता है जिसका एकार्थक शब्द-ज्ञान समृद्ध होता है।

एकार्थक कोश क्या ? क्यो ?

एकार्थक शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए स्थानाग टीका मे लिखा है कि

१ (क) भटी प १४ समानार्था प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन ग्रन्थकृतोक्ता।
(ख) अत टी प १६ एकार्थशब्दोपादान तु प्राधान्यप्रकर्षख्यापनार्थम।
(ग) ज्ञाटी प १७ एकार्थशब्दत्रयोपादान चात्यन्तशुक्लताख्यापनार्थम्।

२ अनुद्वामटी प २७ एकार्थिकानि वा विशेषणान्येतानि प्रस्तुतोपयोग प्रकर्षप्रतिपादनपराणि।

३ भटी प ११६ एकार्थशब्दोच्चारण च क्रियमाण न दुष्टम्।

४ नदीटी पृ ५८ विनेयजनसुखप्रतिपत्तए मतिज्ञान

५ अनुद्वाहाटी पृ २० असम्मोहार्थ पर्यायनामानि।

६ विभाकोटी पृ ६३८ एतदनेकपर्यायाख्यान प्रदेशान्तरेषु सूत्रबन्धानुलोम्यार्थम्।

जिन शब्दों का एक ही अभिधेय/अर्थ हो, वे एकार्थक कहलाते हैं।[1] इसके लिए अभिवचन शब्द का प्रयोग भी हुआ है।[2] इसके अतिरिक्त आवश्यक निर्युक्ति मे चार प्रकार की सामायिको के पर्याय दिये हैं। उस प्रसग मे एकार्थक के लिए 'निरुक्ति' और 'निर्वचन' शब्द का उल्लेख मिलता है।[3] जैसे—

सम्यक्त्व सामायिक के एकार्थक—

सम्मदिट्ठि अमोहो, सोही सब्भाव दसण बोही।
अविवज्जओ सुदिट्ठि त्ति, एवमाइ निरुत्ताइ॥

श्रुत सामायिक के एकार्थक—

अक्खर सन्नी-सम, सादिय खलु सपज्जवसिय च।
गमिय अगपविट्ठ सत्त वि एए पडिवक्खा॥

यहा निर्युक्तिकार ने श्रुतसामायिक के भेदो को ही उसके पर्याय मान लिये हैं।

देश विरति सामायिक के एकार्थक—

विरयाविरई सवुडमसवुडे बालपडिए चेव।
देसेक्कदेसविरई, अणुधम्मो अगारधम्मो य॥

इसी प्रकार सर्वविरतिसामायिकनिरुक्तिमुपदर्शयन्नाह—

सामाइय समइय सम्मावाओ समास सखेवो।
अणवज्ज च परिण्णा, पच्चक्खाणे य ते अट्ठ॥

(आवनि ८६१-६४)

भारोपीय भाषा परिवार मे सस्कृत व उसके समकक्ष प्राकृत, पालि आदि भाषाओ की विशेषता है कि उसमे एक शब्द को बताने के लिए अनेक शब्दो का प्रयोग होता है। भाषाविदो के अनुसार कोई भी दो शब्द वस्तुत एक अर्थ को व्यक्त नही करते। एकार्थवाची शब्दो का दूसरा नाम पर्यायवाची है। यह शब्द अधिक सार्थक प्रतीत होता है। जैन दर्शन मे पर्याय शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप मे प्रयुक्त है। एक ही पदार्थ या व्यक्ति के लिए जब दो शब्दो का प्रयोग होता है तब वे प्राय उस पदार्थ या व्यक्ति की दो भिन्न-भिन्न पर्यायो को व्यक्त करते है। जैन दर्शन मे इसे समभिरूढनय के द्वारा

१ स्थाटी प ४७२।
२. भ २०/१५।
३. आवहाटी पृ २४२ चतुर्विधस्यापि सामायिकस्य निर्वचनम्।

समझाया गया है। उदाहरण के लिए इन्द्र शब्द के पर्याय मे जब शक्ति को बताना हो तब 'शक्र' शब्द का प्रयोग होता है और जब ऐश्वर्य बताना हो तब 'इद्र' तथा पाक नामक शत्रु को नाश करने की मुख्यता को द्योतित करना हो तो 'पाकशासन' शब्द का प्रयोग होगा। इसी प्रकार इन्द्र के अन्य नामो की सार्थकता भी है। (देखे—'सक्क')। ये सभी शब्द भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के निमित्त से भिन्न होते हुए भी इद्र अर्थ के वाचक हैं, अत ये एकार्थक है।[1]

इस प्रकार एकार्थक/पर्यायवाची शब्द हमारी शब्द-समृद्धि ही नही, बल्कि किसी भी पदार्थ या व्यक्ति विषयक पूरी जानकारी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के रूप मे हम 'उवहि' शब्द पर विचार करे। उसके आठ पर्यायवाची शब्द हैं। वे सब 'उपधि' की विभिन्न अवस्थाओ और विशेषताओ के द्योतक हैं। इन पर्याय शब्दो से उपधि का पूरा रूप सामने आ जाता है।[2]

इसी प्रकार 'दिट्ठिवाय', 'ववहार', 'अहिंसा', 'अदत्तादान' आदि शब्दो के विभिन्न पर्याय सपूर्ण विषय-वस्तु का बोध कराते है।

एकार्थक सचयन की प्रक्रिया

प्रारम्भ मे आगमो के प्राकृत भाषा के साहित्य मे जहा 'एगट्ठा' या 'पज्जाया' शब्दो का उल्लेख था उन्ही एकार्थको का सकलन किया था किन्तु पुनश्चिन्तन किया गया कि सस्कृत टीका साहित्य मे भी अनेक महत्वपूर्ण एकार्थको का प्रयोग हुआ है तथा चूर्णि साहित्य मे भी मिश्रित भाषा के प्रयोग से बहुत एकार्थक विशुद्ध सस्कृत जैसे प्रतीत होते हैं जैसे—घातो हिंसा मारण दड अधर्म इत्यनर्थान्तरम्" (सूचू २ पृ ३३८)। अत सस्कृत व्याख्या साहित्य के एकार्थक शब्दो का भी सचयन किया गया, जैसे—रय वेग चेष्टाऽनुभव फलमित्यनर्थान्तरम् (आवहाटी १ पृ २९३)। इस प्रकार यह सस्कृत और प्राकृत भाषा का सम्मिश्रित कोश है। कोश की परम्परा मे सभवत यह प्रथम कोश है जिसमे सस्कृत और प्राकृत भाषा के शब्दो का एक साथ सकलन है।

---

१. अनुद्वामटी प २४६ : परमैश्वर्यादीनि भिन्नान्येवात्र भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तानि ।

२ ओनिटी प २०७ *'तत्त्वमेवपर्यायैर्व्याख्येयं'* इति न्यायात् पर्यायान् प्रतिपादयन्नाह ।

आगमो के मूल पाठ मे अनेक स्थलो पर एक शब्द के वाचक अनेक शब्दो का उल्लेख एकार्थक का निर्देश किये बिना किया गया है। उन सबका समावेश भी इस कोश मे अनिवार्य प्रतीत हुआ, जैसे—'आइण्ण', 'उक्किट्ठ' 'आसुरत्त' इत्यादि। व्याख्या साहित्य मे इन शब्दो का भिन्न भिन्न व्याख्या देते हुए भी इनको एकार्थक माना है।[1] कही कही शब्द एकार्थक जैसे प्रतीत नही होते लेकिन प्राचीन आचार्यो ने उनको एकार्थक माना है, जैसे—अशन, पान, खादिम और स्वादिम—ये चारो शब्द भोज्य वस्तुओ की भिन्नता के बोधक है, परन्तु इनको भोज्य वस्तु की अपेक्षा से एकार्थक माना है।[2] इसी प्रकार 'विपरिणामइत्ता' आदि चारो शब्द भिन्नार्थक प्रतीत होते हैं। इन्हे भी विनाश के वाचक होने से एकार्थक माना है।[3]

एक बार कार्य का निरीक्षण करते हुए युवाचार्य प्रवर ने फरमाया कि व्याख्या ग्रथो मे ग्रथकार ने किसी शब्द को स्पष्ट करने के लिए उसके वाचक यदि तीन या चार शब्दो का उल्लेख किया है तो उनका समावेश भी इस कोश मे हो सकता है। इस दृष्टि से टीका साहित्य का पुन पारायण किया गया तथा अनेक महत्त्वपूर्ण एकार्थक इस कोश के साथ जुड गये। जैसे—'फुल्ल' 'अनुकाश' 'आपूरित' 'वर्द्धन' इत्यादि।

इस कोश को तैयार होते-होते अनेक बार कार्डों को बदलना पडा। अन्तिम रूप देते समय एक ही शब्द से शुरू होने वाले अनेक कार्ड थे। उसमे छाटना था कि कोई शब्द छूट न जाये तथा पुनरुक्ति भी न हो। प्रारम्भ मे हमने क-ग, त-य, र-ल, ण-न आदि व्यञ्जनो के अन्तर वाले एकार्थको का भी इसमे समावेश किया था, लेकिन पुनश्चिन्तन के पश्चात् उनको छोड दिया। क्योकि सामान्यत. प्राकृत का पाठक इस अतर को समझ सकता है। जहा प्राकृत भाषा मे निर्युक्ति, चूर्णि आदि मे एकार्थक आया है और वहो यदि

---

१ (क) भटी प १५५ आइन्नमित्यादय एकार्था अत्यन्तव्याप्तिदर्शनाय।

(ख) वही प १७८ एकार्था वैते शब्दा प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय।

(ग) उपाटी पृ १०५ एकार्था शब्दा कोपातिशयप्रदर्शनार्था।

२ प्रसाटी प ५१।

३ जीवटी प २१ विपरिणामइत्ता एतानि चत्वार्यपि पदान्येकार्थिकानि विनाशार्थप्रतिपादकानि नानादेशजविनेयानुग्रहार्थमुपात्तानि।

संस्कृत भाषा मे टीका साहित्य मे आया है तो उसका सकलन हमने नही किया है। इसके अतिरिक्त एक ही एकार्थक का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है, जैसे—'हेतु निमित्त कारणमिति पर्याया' आदि। उनमे कालक्रम का ध्यान न रखते हुए जहां अधिक स्पष्टता लगी उसी को प्रमुखता दी है।

प्रस्तुत कोश मे एकार्थको का सचयन बहुत व्यापक सदर्भ मे हुआ है। एक ही जाति के द्योतक व्यक्ति या पदार्थ को जातिगत समानता के आधार पर एकार्थक माना है, जैसे—'उप्पल' 'पदुम' के एकार्थक कमल की विभिन्न जातियो के वाचक हैं, पर जातिगत समानता के कारण इनको एकार्थक माना है। इसी प्रकार 'अताहार', 'सेज्जा' आदि भी द्रष्टव्य हैं।

कुछ शब्दो को उपादान की समानता से एकार्थक माना है। जैसे 'अर-जर' शब्द के पर्याय मे सभी शब्द भिन्न-२ आकार के घडो के वाचक हैं, लेकिन सभी मिट्टी से निर्मित है अत उपादान की समानता से इनको एकार्थक स्वीकृत किया है। मन मे एक प्रश्न था कि इन शब्दो का एकार्थक प्रयोग से उन शब्दो का निश्चित अर्थ निर्धारण नही किया जा मकता। परन्तु इस दुविधा का समाधान चूर्णिकर एव टीकाकारो ने कर दिया, क्योकि उन्होने भी व्यापक अर्थ मे एकार्थको का प्रयोग किया है जैसा कि पहले कहा जा चुका है।

नदी चूर्णि मे एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है कि भिन्न भिन्न अर्थ होने पर भी शब्दो को एकार्थक मानना क्या विरोध नही है? चूर्णिकार ने स्वय इस प्रश्न को समाहित किया है कि किसी भी वस्तु के स्वरूप को समवेत रूप से देखने पर यह विरोध नही है। भिन्न भिन्न दृष्टि से देखने पर विरोध हो सकता है।[1] इसी अभिप्राय को ध्यान मे रखकर हमने अनेक ऐसे एकार्थको का मकलन किया है, जैसे—'तट्टक' 'कुडल' भग्ग', 'ओसारित' आदि।

एकार्थक कोश के साथ यह समानार्थक भी है। कुछ एकार्थक समवेत रूप से एक ही अर्थ व्यक्त करते है जैसे—'पीणणिज्ज', 'अच्चिय', थेज्ज' इत्यादि।

---

१ नदीचू पृ ३६ णणु भिण्णत्यदसणे एगट्ठित त्ति विरुद्ध? उच्यते ण विरुद्ध, जतो सव्वविकप्पेसु। •।

इसी प्रकार प्रस्तुत कोश मे एक ही पदार्थ अथवा भाव की क्रमिक अवस्था व्यक्त करने वाले शब्दो का भी एकार्थक मे समावेश है। जैसे— 'फासिय', अहासुत्त' आदि। 'फासिय' आदि शब्द व्रतपालन की उत्तरोत्तर अवस्थाओ के वाचक हैं।

जहा 'एगट्ठा', पज्जाया', या अनर्थान्तरम् शब्द का प्रयोग हुआ है वहां हमने दो शब्दो को भी इस कोश मे समाविष्ट किया है, जैसे—ऊसढ ति वा उच्च ति वा एगट्ठा। राशिर्गच्छ इत्यनर्थान्तरम्। भोज्ज ति वा सखडि त्ति वा एगट्ठ। लेकिन जहा उन शब्दो का उल्लेख नही है वहा हमने दो समानाथक शब्दो को इसमे सगृहीत नही किया है।

सामान्यत इस कोश मे जिस शब्द से एकार्थक प्रारम्भ हुआ है उसी को मुख्य शब्द के रूप मे रखा है। लेकिन जहा कही टीकाकार, चूर्णिकार ने किसी विशेष शब्द के एकार्थक का निर्देश किया है वहा प्रारम्भिक शब्द को मूल न मानकर निर्दिष्ट शब्द को मूल माना है। जैसे—

समया समत्त पसत्थ सति सुविहिअ सुह अनिंद च।
अदुगुछियमगरहिय अणवज्जमिमेऽवि एगट्ठा ॥ (आवनि १०३३)

यह गाथा 'समया' से प्रारम्भ होती है लेकिन हरिभद्र ने इस गाथा को सामायिक का पर्याय माना है। इसी प्रकार 'पवयण', 'भिक्खु', 'कम्म', 'चडाल' आदि भी द्रष्टव्य है।

अनेक स्थलो पर एकार्थक गाथा मे भी अन्तिम पद मे भाष्यकार अथवा निर्युक्तिकार ने किसी विशिष्ट शब्द के एकार्थक का उल्लेख किया है तो उसी को मूल माना है। जैसे—

ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सई मई पण्णा, सव्व आभिणिबोहिय ॥ (नदी ५४)

—ये सब 'आभिणिबोहिय' के एकार्थक हैं।

यद्यपि इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि शब्दो की पुनरावृत्ति न हो, लेकिन जहा कही भी एक अथ का वाचक दूसरे शब्द से प्रारम्भ होने वाला एकार्थक आया है, यदि एक या दो शब्द भी उसमे नवीन है तो उन दानो को अलग अलग ग्रहण किया है, जैसे—इद शब्द के पर्याय मे लगभग

सभी शब्द 'सक्क' मे समविष्ट है, लेकिन 'इद' शब्द नवीन है इसीलिए विशेष लक्ष्यपूर्वक इसको अलग लिया गया है।

अनेक स्थलो पर एक एकार्थक के अन्तर्गत नवीन शब्द की दृष्टि से तीन-चार एकार्थको का समावेश उसी के नीचे कर दिया है, जैसे—

१ आण त्ति उववायो त्ति उवदेसो त्ति आगमो त्ति वा एगट्ठा।

२ आणे ति वा सुत ति वा वीतरागादेसो त्ति वा एगट्ठा।

३ आण त्ति वा नाण त्ति वा पडिलेहि त्ति वा एगट्ठा।

४ आणा-उववाय-वयण-निद्देसे।

प्रस्तुत कोश मे एक ही शब्द के पर्याय विभिन्न शब्दो से प्रारम्भ हो रहे हैं। इससे उस शब्द विषयक अनेक पर्यायो का ज्ञान सहज ही हो सकता है। जैसे माया के एकार्थक 'उक्कचण', 'कूड', 'कवड', 'माया', 'कक्क', 'पलिउचण' आदि विभिन्न शब्दो से प्रारम्भ हो रहे हैं। इनको एक स्थान पर देने से अनुक्रमणिका के क्रम मे असुविधा थी। लेकिन किसी भी शब्द के ज्ञान के लिए परिशिष्ट-१ सहयोगी हो सकता है।

अनेक स्थलो पर एक सस्कृत के शब्द के दो प्राकृत रूपो को एकार्थक माना है। जैसे—इसि त्ति वा रिसि त्ति वा एगट्ठ। अण ति वा रिण ति वा एगट्ठा। भवति त्ति वा हवइ त्ति वा एगट्ठा। यहा ऋषि, ऋण और भवति शब्द के ही दो प्राकृत रूप बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राकृत व्याकरण का ज्ञान भी एकार्थको के माध्यम से कराया जाता था।

इसी प्रकार कही कही चूर्णिकारो ने सामान्य एकार्थको का प्रयोग किया है जैसे—उभओ त्ति वा दुहओ त्ति एगट्ठा बहवे त्ति वा अणेगे त्ति वा एगट्ठा। ऐसे एकार्थको का प्रयोग प्राचीन पाठन पद्धति पर विशेष महत्व डालते हैं।

भगवती सूत्र मे क्रोध आदि चारो कषायो के एकार्थक उल्लिखित हैं। समवायाग मे 'मोहनीय कर्म' के पर्याय के रूप मे वे ही नाम सगृहीत है। क्रोधादि के तथा मोहनीय कर्म के पर्यायो को शब्द-गत समानता होने पर भी अर्थभेद की दृष्टि से अलग ग्रहण किया है।

कही कही एक ही गाथा दो भिन्न-भिन्न अर्थों मे प्रयुक्त है। उसको भी हमने अलग अलग ग्रहण किया है। जैसे पावे वज्जे वेरे ···।

यह गाथा 'पाप' और 'कर्म'—दोनो अर्थों मे प्रयुक्त है। इसी प्रकार 'पतिट्ठा' और 'अवत्था' आदि।

अनेक एकार्थक एक ही शब्द के आगे उपसर्ग आदि लगने से एक ही अर्थ के वाचक बन गये है। टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1] जैसे—अक्कोहा निक्कोहा खीणकोहा।

इसी प्रकार 'अमोह', 'अणावरण', 'अगोय' आदि द्रष्टव्य हैं। ऐसे एकार्थको का प्रयोग अन्य कोशो मे देखने को नही मिलता।

प्रस्तुत कोश मे पाच अस्तिकाय के एकार्थक अपना विशेष महत्व रखते हैं। 'धम्मत्थिकाय' (धर्मास्तिकाय) के पर्याय मे प्राणातिपात विरमण से मन-गुप्ति तक के शब्द धर्म के विविध अग हैं जो कि धर्मास्तिकाय से सर्वथा पृथग् हैं। लेकिन धर्म शब्द के साधर्म्य से सूत्रकार ने इनको धर्मास्तिकाय के अभिवचन/पर्याय के रूप मे सगृहीत कर लिया है।[2]

प्रस्तुत कोश मे आगम ग्रथो के अध्यायो के एकार्थक नवीनता के परिचायक है। 'दुमपुप्फिया' के एकार्थक के प्रसग मे दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन को जिन जिन उपमाओ से उपमित किया, उनको इस अध्ययन के पर्यायवाची स्वीकृति कर लिया।[3] इसी प्रकार बाहरवें अग 'दिट्ठिवाय' तथा दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'जीवाभिगम' के पर्याय भी ग्रथकारो ने उसकी वर्ण्य-वस्तु के आधार पर स्वीकृत किये है।

प्रस्तुत कोश मे अनेक महत्वपूर्ण जैन पारिभाषिक शब्दो के पर्याय सकलित है, जैसे—'तमुक्काय' 'अकम्मवीरिय', 'उक्खोडभग', 'लघुक' 'द्वितीयसमवसरण आदि।

प्राकृत भाषा के कुछ शब्द ऐसे होते है, जिनके भिन्न-भिन्न अर्थ होते है। जैसे—'सत', 'माण', 'आगार', 'सक्क' आदि।

'सत' चार अर्थो का वाचक है—तथ्य, शान्त, श्रान्त और सत्।

'माण' दो अर्थों का वाचक है—अभिमान और परिमाण।

'अगार' दो अर्थों का वाचक है—आकृति और घर।

'सक्क' दो अर्था का वाचक है—शक्र और शक्य।

---

१. औपटी पृ २०२ : एकार्था वैते शब्दाः, अनुद्वामटी प १०७।

२. भटी पृ १४३१।

३. दशहाटी प १८।

इन सबके एकार्थक इस कोश मे गृहीत हैं।

प्रस्तुत कोश मे शब्दो के साथ धातुओ के एकार्थक भी सगृहीत हैं। जैसे 'उज्झीयति', 'आसाएइ', 'फासेइ, आदि। एक ही धातु के अनेक उपसर्ग लगाकर भी उसको एकार्थक माना है जैसे—'आलुक्कई पलुक्कई लुक्कई सलुक्कई य एगट्ठा' यहा 'लोकृङ्-दर्शने' धातु के आगे ही विविध उपसर्ग हैं। लेकिन अर्थ की दृष्टि से साम्य है। इसके विपरीत अनेक स्थलो पर उपसर्ग के साथ ही धातु का अर्थ ही बदल गया है जैसे—'परिभासति', 'उप्पज्जते', 'उद्वेति' इत्यादि।

इसके अतिरिक्त अनेक कालो मे प्रयुक्त धातुओ के उदाहरण इसमे समाविष्ट हैं, जैसे—'चयाहि', 'चालिज्जाति' 'छड्डे', 'चितेहिति', इत्यादि।

इसी क्रम मे कृदन्त तथा तद्धित के प्रत्ययो के भी एकार्थक इसमे हैं। जैसे—'छिद्दत', 'पीणणिज्ज', 'सोऊण', 'नस्समाण', 'पडुच्च', 'वसित्तु', 'छर्दितुम्', 'इट्ठत्ता', इत्यादि।

कोश का बाह्य स्वरूप

यह कोश गद्य और पद्य मिश्रित है। इसमे मूल एकार्थक १४६७ हैं तथा करीब २०० अवान्तर एकार्थक मिलाने से करीब १७०० एकार्थको का सकलन है। प्रत्येक एकार्थक का अर्थ-निर्देश और प्रमाण दिया गया है। उसमे लगभग ८००० शब्दो का सकलन है।

इस कोश मे अनेक भाषाओ का मिश्रण है। आगम ग्रथो के आर्ष-प्रयोग सहज ही इसमे समाविष्ट है। इसके अतिरिक्त प्राकृत भाषा के अनेक प्रयोग इसमे है।

इसके साथ अनेक देशी शब्दो का सकलन भी इस कोश मे स्वत हो गया है। अनेक एकार्थको मे सभी शब्द देशी है। परिशिष्ट न० २ मे अनेक स्थलो पर हमने देशी शब्दो का निर्देश किया है।

भाषा की दृष्टि से इस कोश का एक वैशिष्ट्य है कि कुछ एकार्थक एक ही व्यञ्जन से शुरू हुए हैं, जैसे—'पम्हुट्ठ' शब्द के पर्याय मे २१ शब्द है। सभी शब्द 'प' से प्रारम्भ हुए हैं। इसी प्रकार 'णिस्सारित', 'उल्लोइत', 'णिम्मज्जित' आदि ज्ञातव्य है।

परिशिष्ट

इस कोश मे तीन परिशिष्ट दिये गए हैं। प्रथम परिशिष्ट मे इस कोश मे प्रयुक्त सभी शब्दो की अकारादि क्रम से सूची है। इस परिशिष्ट में लगभग ८००० शब्द हैं। एक ही शब्द के पर्याय मे जहां क-ग, त-य, ण-न्न आदि व्यञ्जनो का भेद था वहा एक ही शब्द लिया है।

इस परिशिष्ट की विशेषता यह है कि इसमे शब्द-ज्ञान के लिए कोष्ठक मे मूल शब्द दिया है, जिससे सामान्यत केवल परिशिष्ट देखने मात्र से अर्थ का ज्ञान हो सकता है। परिशिष्ट मे शब्दों को निर्विभक्तिक और प्रत्यय रहित लिया है, जबकि धातुओ को सुविधा के लिए प्रत्यय सहित लिया है।

द्वितीय परिशिष्ट मे एकार्थको की स्पष्टता, तथा सार्थकता प्रमाण सहित टिप्पणो के रूप मे व्याख्यायित है। जैसे—'अलिय', 'परिग्गह' आदि शब्दो के ३०-३० पर्याय उल्लिखित हैं। उनकी विशेष व्याख्या टीका के आधार पर परिशिष्ट २ मे दी गयी है। द्वितीय परिशिष्ट मे लगभग ३२६ टिप्पण हैं। टिप्पणो के साथ आगमेतर साहित्य मे उसके सवादी एकार्थक मिले हैं, उनको भी जोडा गया है। जैसे—'अवग्रह', 'ईहा', 'क्रोध', चित्त आदि।

तृतीय परिशिष्ट धातुओ के अनुक्रम का है। कोश मे जितनी भी धातुए हैं उनकी मूल प्रकृति तथा उनका अर्थ-निर्देश है। धातुओ का निर्देश धातु पारायण के आधार पर किया गया है। कही कही टीकाकार और चूर्णिकार ने भिन्न-भिन्न अर्थ मे प्रयुक्त धातुओ को भी एकार्थक माना है, जैसे—

१ 'वोसिरति विसोवेति णिल्लवेति त्ति एगट्ठा'।

२ चाएति साहति सक्केइ वासेइ तुट्टाएति वा धाडेति वा एगट्ठा।

परिशिष्ट मे कोशिश की गयी है कि मूल अर्थ की सवादी धातु लिखे लेकिन अनेक स्थलो पर मूल धातु खोजना कठिन प्रतीत हुआ वहा प्रश्नचिह्न लगाकर छोड दिया है। इस परिशिष्ट मे गण और प्रक्रिया का निर्देश न करके केवल धातु का ही उल्लेख किया गया है।

अनेक स्थलो पर टीकाकार ने धातुओ को एकार्थक मानते हुए भी अर्थ-भेद किया है, जैसे—'सहइ' धातु के एकार्थक मे—

सहते—अभय होकर सहना।
क्षमते—क्रोध मुक्त होकर सहन करना।
तितिक्षते—दीनता रहित होकर सहना।

अधिसहते—अत्यधिक सहना ।[1]

प्रस्तुत कोश मे धातुओ के अनेक रूप निर्दिष्ट है। हमने इस परिशिष्ट में उनके एक-एक रूप का ही निर्देश दिया है। कालगत तथा विभक्तिगत तथा व्यञ्जनो के रूपान्तर का उल्लेख नही किया गया है। प्रेस मे टाईप न होने से दीर्घ ऋकार वाले शब्दो के स्थान पर ह्रस्व ऋ का प्रयोग किया गया है। जैसे पृ दृ इत्यादि।

प्रस्तुत कोश मे एकार्थको का सकलन लगभग सौ ग्रन्थो से किया गया है। उनमे कुछेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ ये हैं—

भगवती

इस ग्रथ मे जैन सिद्धान्त व दर्शन सम्बन्धी महत्वपूर्ण एकार्थक उपलब्ध हुए है। जैसे—'तमुक्काय', 'कण्हराति', 'पाच अस्तिकाय', 'चार कषाय' आदि। इसके साथ 'राहु' के नौ नाम नवीनता लिए हुए हैं। इसके अतिरिक्त प्रकीर्णक रूप से और भी अनेक एकार्थक इसमे है।

प्रश्नव्याकरण

इसमे पाच आस्रव के ३०-३० तथा अहिंसा के ६० पर्याय उल्लिखित हैं। सामान्यत ये एकार्थक प्रतीत नही होते लेकिन टीकाकार ने बहुत स्पष्टता के साथ इनको एकार्थक स्वीकार किया है। इनकी स्पष्ट व्याख्या के लिए देखें—परिशिष्ट २। इसके अतिरिक्त 'पाव', 'गोणस', सद्दूल आदि अनेक स्फुट एकार्थको का इसमे प्रयोग है।

अनुयोगद्वार

अनुयोगद्वार व्याख्यापद्धति का अनूठा ग्रथ है। इसमे प्रत्येक विषय को समझाने के लिए पहले एकार्थक दिये है, जैसे—'आवस्सय', 'सुत्त', 'गण' इत्यादि।

आवश्यकचूर्णि

आवश्यकचूर्णि के एकार्थक नवीनता की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखते है। चूर्णिकार ने लगभग अपरिचित व अनेक शब्दो से युक्त एकार्थको का प्रयोग किया है, जो अन्य कोशो मे नही मिलते, जैसे—'मजमतवड्डय', 'पावकम्मनिसेहकिरिया', 'दुक्कड', 'अप्पियववहारिय' इत्यादि।

---

१ अत टी प २२ : सहत इत्यादीनि एकार्थानि पदानीति केचित्, अन्ये तु

निशीथचूर्णि

यह आकर ग्रथ है जिसमे प्रसगवश सभी विषयो का विस्तार से वर्णन हुआ है। इसमे भी सुन्दर एकार्थको का प्रयोग हुआ है। जैसे—'उखड्डुमड्डु,' 'दगतीर', उक्खोडभग' 'नयन' इत्यादि।

दशवैकालिक जिनदास चूर्णि—

दशवैकालिक एक महत्वपूर्ण निर्यूढ कृति है। इस पर दो चूर्णिया उपलब्ध है। एकार्थक की दृष्टि से जिनदास स्थविर की चूर्णि महत्वपूर्ण है। इसकी विशेषता यह है कि प्राय सभी एकार्थक दो शब्दो के हैं। कही कही तीन शब्दो का उल्लेख है।

अंगविज्जा—

'अगविज्जा' ज्योतिषविद्या का दुर्लभ ग्रथ है। इसमे प्राचीन सस्कृति, सभ्यता व आभूषणो के अनेक नवीन पर्यायवाची शब्दो का सकलन है। जैसे—'हत्थिक', 'कुडल', 'अरजर', 'णावा', 'दीहमवकुलिका' 'काहापण' इत्यादि। इसके अतिरिक्त ग्रथकार ने अनेक स्थलो पर 'एते सद्दा समा भवे' का उल्लेख किया है। इस ग्रथ के एकार्थक प्राचीन सस्कृति व सभ्यता की समृद्धि का बोध कराते है। तथा लौकिक क्षेत्र मे प्रयुक्त अनेक शब्दो के एकार्थक इसमे सगृहीत है।

इसके अतिरिक्त बृहत्कल्प, ओघनिर्युक्त, जीतकल्पभाष्य आदि ग्रन्थो मे भी पचुर मात्रा मे एकार्थको का प्रयोग हुआ है।

यह कोश अपने आप मे पूर्ण है, ऐसा कहना उचित नही होगा, क्योकि यत्र-तत्र कुछेक महत्वपूर्ण एकार्थक छूट भी गए हो। उनका सकलन परिशिष्ट म किया जाना चाहिए था, पर वैसा हो नही सका। आगे उसकी सपूर्ति हो, ऐसा विचार है।

कार्य का इतिवृत्त

वि० सम्वत् २०३७। चैत्र का महीना। शोध, साधना व शिक्षा की सगमस्थली जैन विश्व भारती का विशाल प्रागण। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी का प्रवास। अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यो की सयोजना। लाडनू मे स्थित पारमार्थिक शिक्षण सस्था के शैक्षणिक विकास के विषय मे चिन्तन चला। जैन विश्व भारती ब्राह्मी विद्यापीठ के अन्तर्गत स्नातकोत्तर कक्षाओ मे पढ़ने वाली साध्विया व मुमुक्षु बहिने श्रद्धेय युवाचार्यश्रीजी के उपपात मे पहुची।

युवाचार्यश्री ने पूछा—'तुम सबकी रुचि गहन अध्ययन मे है अथवा आजकल के विद्यार्थियो की भाति केवल डिग्रिया हासिल करने मे ?' सभी ने एक स्वर से उत्तर दिया—'हम गहन अध्ययन करना चाहती हैं।' उसी भाषा को दोहराते हुए युवाचार्यश्री ने पुन फरमाया—'गहराई से सोचकर उत्तर दे रही हो अथवा केवल श्रद्धा या भावावेश मे बोल रही हो ? एक क्षण के लिए हमारी मुद्रा गभीर हो गयी, लेकिन पुन सबने करबद्ध प्रार्थना की—'गुरुदेव ! हम अध्ययन करने के लिए कृतसकल्प है। आचार्यप्रवर व युवाचार्यश्री के कुशल मार्गदर्शन मे हम नया ज्ञान प्राप्त कर सकेंगी, ऐसा विश्वास है। हमारी मनोभावना को जानकर युवाचार्यश्री ने मन ही मन भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर ली।

महावीर जयन्ती का पावन दिन। सूर्य की अरुण रश्मियो के साथ हमे प्रथम वाचना प्राप्त हुई। और यह प्रथम वाचना छेदसूत्र व आवश्यक ग्रन्थो के साथ प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ मे इस कार्य मे पाच मडलिया थी जिनका नेतृत्व साध्विया कर रही थी। मुमुक्षु बहिने उनके सहयोगी के रूप मे थी। कार्य की योजना बहुत विशाल थी। हमारा अनुभव नया था पर दोनो मनीषियो की अनन्त ऊर्जा हमे सतत मिल रही थी। हम पूरी तन्मयता और उत्साह के साथ कार्य मे जुट गयी। इस कार्य के साथ पाच कोशो की योजना जुडी हुई थी—

१ **आगम शब्द कोश**—प्राकृत के सभी पारिभाषिक शब्दो का अर्थ व प्रमाण सहित निर्देश।

२. **जैन विश्व कोश**—जैन पारिभाषिक शब्दो पर अग्रेजी भाषा मे निबन्धात्मक विश्लेषण।

३. **देशी शब्द कोश**—आगम तथा व्याख्या ग्रन्थो मे प्रयुक्त देशी शब्दो का अर्थ और प्रसग सहित निर्देश।

४ **निरुक्त कोश**—आगम एव व्याख्या ग्रन्थो मे प्रयुक्त निरुक्तो का चयन तथा हिन्दी अनुवाद।

५ **एकार्थक कोश**—शताधिक ग्रथो से एकार्थक शब्दो का सकलन।

इसके साथ कुछ विशिष्ट दृष्टिया भी दी गयी जिनके परिप्रेक्ष्य मे हमे आगम ग्रन्थो तथा व्याख्या साहित्य का अध्ययन करना था। वे कुछेक दृष्टि-बिन्दु ये हैं—

१. गाथा वर्गीकरण व पद्यानुक्रमणिका (भाष्य, निर्युक्ति व चूर्णि मे आयी गाथाओं का अकारादि क्रम से निर्देश, जिससे शोधकर्त्ताओं को गाथा खोजने मे सुगमता हो सके।)

२ धर्मकथासग्रह—व्याख्या ग्रथो मे आयी कथाओ का सकलन।

३ सूक्तिसग्रह।

४. सभ्यता-सस्कृति के मुख्य तत्त्वो का चयन।

५ इतिहास परम्परा।

६ चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण तथ्यो का सकलन।

७ स्वास्थ्य विज्ञान तथा मनोविज्ञान के स्थलो का चयन।

८ दार्शनिक व शैक्षणिक तथ्य।

९ सम्प्रदाय—प्राचीन सम्प्रदायो के अस्तित्व, मान्यता, आचार्य आदि विषयक जानकारी।

१० साधना विषयक जानकारी।

११ वैज्ञानिक तथ्य।

१२ जीवविज्ञान।

१३ आहारविज्ञान।

कार्य अपनी गति से चलता रहा, लेकिन उसके साथ परीक्षण भी अनिवार्य था, अत समय समय पर कार्य का परीक्षण व निरीक्षण करने आचार्य प्रवर और युवाचार्यश्री वर्द्धमान ग्रथागार पधारते रहते थे।

इसी वर्ष समण श्रेणी की स्थापना हुई, जिसमे कार्य करने वाली कुछ मुमुक्षु बहिने समणिया बन गयी। कालान्तर मे आगम कोश के कार्य की गति मथर देखकर युवाचार्य प्रवर ने मुस्कराते हुए फरमाया—'कार्य दो साल मे पूरा करना है, भले ही इसके लिए रोटी-पानी छोडना पडे।' हमने निवेदन किया यदि युवाचार्य प्रवर की लाडनू मे सतत सन्निधि मिले तो यह कार्य सभव हो सकता है, अन्यथा कार्य मे बार-बार अवरोध उत्पन्न होता है और अनेक स्थल प्रश्नचिह्न बने रहते हैं।' युवाचार्य प्रवर ने फरमाया 'समस्या के समाधान के लिए हमारे पास आया जा सकता है, इसी बीच आचार्य प्रवर भी पधारे और हमे नयी प्रेरणा देकर लाडनू से मारवाड की ओर प्रस्थान कर दिया। अब कार्य मुख्य रूप से साध्वियो और समणियो के जिम्मे था।

विक्रम सम्वत् २०३९ का मर्यादा महोत्सव नाथद्वारा की ऐतिहासिक धरा पर हुआ। महोत्सव की समाप्ति के पश्चात् कार्य करने वालो की एक गोष्ठी आयोजित की गयी। और उसका अन्तिम निष्कर्ष था कि कार्य गति-मान किया जाये और उसे अन्तिम रूप दिया जाये। युवाचार्य प्रवर ने फरमाया—यदि कार्य मे बिलम्ब होगा तो 'काल पिबति तद्रसम्' वाली कहावत चरितार्थ होगी। युवाचार्यश्री के इस कथन ने कार्य की महत्ता को और अधिक उजागर कर दिया।

वि० स० २०४०। इस बार मुनिश्री दुलहराजजी को आगम कार्य के लिए लाडनू भेजा गया। मुनिश्री ने एक दिन ग्रन्थागार मे आगम कोश कार्य को देखा। तीन वर्षों के कार्य का निरीक्षण कर आपने कहा—कार्य बहुत हुआ है। अब इसे अतिम रूप देकर समेटना आवश्यक है। यदि मेरा इसमे यत् किञ्चित् सहयोग अपेक्षित हो तो मै इसके लिए प्रस्तुत हू"। हमारा उत्साह बढा और सभी कार्यरत साध्वियो एव समणियो की गोष्ठी आयोजित की गयी। सवप्रथम एकार्थक कोश, निरुक्त कोश आर देशी कोश को अन्तिम रूप देने का निणय हुआ। कार्य का दायित्व जिन जिन पर आया उन्होने अपना पूरा ममय तद् तद् काय के लिए समर्पित कर दिया और जो कार्य एक महा अरण्य-सा प्रतीत होता था वह कुछ ही महीनो मे पूरा होने लगा।

निरुक्त कोश का कार्य साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी एव निर्वाणश्रीजी ने सम्पन्न किया।

देशी शब्दकोश का कार्य साध्वी अशोकश्रीजी और साध्वी विमल प्रज्ञाजी ने प्रारभ कर दिया।

मुझे एकार्थक कोश को सपन्न करना था और मै इसमे दत्तचित्त हो गई। कार्य आगे बढा और आज उसकी सपन्नता पर मुझे हर्ष हो रहा है।

सर्वप्रथम मेरा भक्ति भरा प्रणाम उन आगम पुरुष प्राचीन आचार्यों को है जिन्होने श्रुत-परम्परा को समृद्ध किया है।

परमश्रद्धय, शक्तिस्रोत आचार्यप्रवर एव युवाचार्यश्री का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद मेरी साधना का सबल है। मैं उनकी प्रभुता और महानता के प्रति प्रणत हू, क्योकि इसमे जो कुछ है, वह उन्ही का अवदान है। मैं तो मात्र निमित्त बनी हू। पुन पुन उन पावन चरणो मे अपनी कोमल अभिवन्दनाएं प्रस्तुत करती हू और कामना करती हू कि उनका स्नेहपूरित आशीर्वाद

भविष्य मे मेरी सृजनशक्ति को उजागर करने मे निमित्त बने तथा मेरे आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त करता रहे।

मैं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा श्रीकनकप्रभाजी के प्रति प्रणत हू जिनके हार्दिक स्नेह और वात्सल्य ने प्रेरणा का कार्य किया है। आशा करती हू कि उनके आध्यात्मिक सरक्षण मे समण श्रेणी उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी।

मुनिश्री दुलहराजजी ने एकार्थक कोश के चयन तथा परिशिष्टो के निरीक्षण मे अपना बहुमूल्य समय प्रदान कर मेरा मार्ग दर्शन किया, इसके लिए मैं उनके प्रति जितना भी आभार व्यक्त करू उतना थोडा है। यह उनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि यह गुरुतर कार्य इतने स्वल्प समय मे सम्पन्न हो सका।

'अनेकान्त शोधपीठ' के निदेशक डॉ० टाटियाजी के सहयोग को भी विस्मृत नही किया जा सकता, जिन्होने समय समय पर नई प्रेरणाए देकर तथा कोश का पुरोवचन लिखकर इसका गौरव वृद्धिगत किया है।

मैं सम्पूर्ण समणी परिवार के हार्दिक सहयोग का स्मरण करती हुई अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करती हू, क्योकि धर्मसघ की मर्यादा के अनुसार कोई भी समणी या साध्वी अकेली कही जा नही सकती। इस कार्य के लिए मुझे जहा कही भी जाने की अपेक्षा महसूस हुई समणियो ने उदार हृदय से मेरा सहयोग किया।

अन्त मे मै उन समस्त साध्वियो, समणियो और मुमुक्षु बहिनो के सहयोग का स्मरण करती हू जिन्होने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस कार्य मे अपने श्रम-बिन्दु अर्पित किये हैं—

निर्देशिका	ग्रथ
१ साध्वी कनकश्री	निशीथ
२ ,, यशोधरा	व्यवहार
३ ,, अशोकश्री	आचाराग, दशाश्रुतस्कन्ध, पचाशक, सूर्यप्रज्ञप्ति
४ ,, जिनप्रज्ञा	सूत्रकृताग (प्रथम श्रुतस्कन्ध)
५. ,, कल्पलता	दशवैकालिक
६ ,, विमलप्रज्ञा	आवश्यक (द्वितीय भाग), उत्तराध्ययन, नवीन कर्मग्रन्थ

७ साध्वी सिद्धप्रज्ञा	सूत्रकृतांग (द्वितीय श्रुतस्कन्ध), स्थानांग, बृहत्कल्प, पिण्डनिर्युक्ति
८. ,, निर्वाणश्री	आवश्यक (प्रथमभाग), सूत्रकृतांग, (प्रथम श्रुतस्कध)
९. समणी स्मितप्रज्ञा	उत्तराध्ययन
१०. समणी कुसुमप्रज्ञा	भगवती, ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अतकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण, विपाकश्रुत, औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाभिगम, जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति, निरयावलिका, अगविज्जा, अनुयोगद्वार, नदी, ओघनिर्युक्ति, जीत-कल्पभाष्य, प्रवचनसारोद्धार, इसिभासिय प्राचीनकर्मग्रथ।

विशेष सहयोगी

मुमुक्षु निरजना

साध्वियो के साथ सहयोगी के रूप मे कार्य करने वाली समणियो व मुमुक्षु बहिनो के नाम इस प्रकार हैं—

१. साध्वी शारदाश्री
२ ,, जगत्प्रभा
३ ,, शशिकला
४ ,, कमलयशा
५ ,, अमितश्री
६ ,, मर्यादाश्री
७ ,, प्रज्ञाश्री
८ समणी स्थितप्रज्ञा
९ समणी मधुरप्रज्ञा
१० समणी विशुद्धप्रज्ञा
११ समणी सरलप्रज्ञा
१२ समणी परमप्रज्ञा
१३ समणी शशिप्रज्ञा

१४ समणी अक्षयप्रज्ञा
१५. ,, मुक्तिप्रज्ञा
१६. ,, उज्ज्वलप्रज्ञा
१७. ,, सुप्रज्ञा
१८ ,, चिन्मयप्रज्ञा
१९ ,, सहजप्रज्ञा
२०. मुमुक्षु मञ्जु
२१. ,, राकेश
२२. ,, पुखराज
२३. ,, ज्योति

अन्त मे मैं सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हू और सबके लिए मगलमय उदय की कामना करती हू ।

विनयावनत
समणी कुसुमप्रज्ञा

१-२-८४
लाडनू

प्रयुक्त ग्रन्थ-संकेत सूची

१ अत— **अतकृद्दशा** (अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती लाडनू, सन् १९७४)

२ अतटी— **अतकृद्दशाटीका** (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)

३ अवि— **अगविज्जा** (प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९५७)

४ अविप्र— **अगविज्जा प्रस्तावना** (वही)

५ अचि— **अभिधानचिंतामणि कोश** (श्री जैन साहित्य वर्धक सभा, अहमदाबाद वि०स० २०२५)

६ अनु— **अनुत्तरौपपातिकदशा** (अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)

७ अनुटी— **अनुत्तरौपपातिकदशाटीका** (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)

८ अनुद्वा— **अनुयोगद्वार** (सशोधित, अप्रकाशित)

९ अनुद्वाचू— **अनुयोगद्वारचूर्णि** (श्री ऋषभदेवजी केसरीमल श्वे. सस्था रतलाम, सन् १९२८)

१० अनुद्वामटी—**अनुयोगद्वार मलधारीयाटीका** (श्री केसरबाई ज्ञानमदिर पाटण, सन् १९३९)

११ अनुद्वाहाटी—**अनुयोगद्वार हारिभद्रीया टीका** (सेठ देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, मुबई, स १९७३)

१२. अनुनदी— **अनुज्ञानदी** (सशोधित, अप्रकाशित)

१३ अनुनदीटी—**अनुज्ञानदीटीका** (प्राकृत टेक्स्टसोसायटी, बनारस, सन् १९६६)

१४. आ— **आचारांग** (अगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)

१५ आचू— आचारांग चूर्णि (श्री ऋषभदेवजी केसरीमल श्वे संस्था रतलाम, सन् १९४१)

१६. आचूला— आचारांगचूला (अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)

१७ आटी— आचारांग टीका (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८)

१८ आनि— आचारागनिर्युक्ति (वही)

१९. आप्टे— आप्टे संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, (प्रसाद प्रकाशन पूना, सन् १९५७)

२० आवचू १— आवश्यकचूर्णि १ (श्री ऋषभदेवजी केसरीमल श्वे संस्था रतलाम, सन् १९२८)

२१ आवचू २— आवश्यकचूर्णि २ (वही, सन् १९२९)

२२. आवटि— आवश्यकटिप्पणकम् (शाह नगीनभाई घेलाभाई जवेरी, बम्बई)

२३ आवनि— आवश्यकनिर्युक्ति (भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८)

२४ आवमटी— आवश्यकमलयगिरिटीका (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२८)

२५ आवहाटी १—आवश्यक हारिभद्रीया टीका १ (भैरूलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बंबई, संवत् २०३८)

२६ आवहाटी २—आवश्यक हारिभद्रीया टीका २ (वही)

२७ इभा— इसिभासियाइं (सुधर्मा ज्ञान मंदिर, बम्बई)

२८. उ— उत्तराध्ययन (जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय संस्करण)

२९ उचू— उत्तराध्ययनचूर्णि (देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, स. १९६३)

३० उटि— उत्तरज्झयणाणि टिप्पण भाग २ (जैन श्वे तेरापंथी महासभा, कलकत्ता)

३१ उनि— उत्तराध्ययननिर्युक्ति (देवचन्द लाल भाई, जैन पुस्तको-द्धार)

३२. उपा— उपासकदशा (अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं सन् १९७४)

३३. उपाटी— उपासकदशाटीका (श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय, कोटा, सन् १९४६)

३४ उशाटी— उत्तराध्ययनशास्त्याचार्यटीका (देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार)

३५ ओनि— ओघनिर्युक्ति (आगमोदय समिति, बम्बई सन् १९१९)

३६ ओनिटी— ओघनिर्युक्तिटीका (वही)

३७ ओनिभा— ओघनिर्युक्तिभाष्य (वही)

३८ औप— औपपातिक (सशोधित, अप्रकाशित)

३९ औपटी— औपपातिकटीका (पडित दयाविमलजी ग्रन्थमाला, द्वितीय सस्करण, स० १९९४)

४० जबू— जबूद्वीपप्रज्ञप्ति (सशोधित, अप्रकाशित)

४१ जबूटी— जबूद्वीपप्रज्ञप्तिटीका (नगीनभाई घेलाभाई झवेरी, बम्बई, सन् १९२०)

४२ जीतभा— जीतकल्पभाष्य (बबलचद्र केशवलाल मोदी, अहमदाबाद, स० १९९४)

४३ जीतभागा—जीतकल्पभाष्य गाथा (वही)

४४ जीव— जीवाभिगम (सशोधित, अप्रकाशित)

४५ जीवटी— जीवाभिगमटीका (देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, स० १९९५)

४६ ज्ञा — ज्ञाताधर्मकथा (अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं १९७४)

४७ ज्ञाटी — ज्ञाताधर्मकथाटीका (श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति, सूरत, सन् १९५२)

४८ ठाण— ठाण (जैन विश्व भारती, लाडनूं स० २०३३)

४९ तभा— तत्त्वार्थभाष्य (मणीलाल रेवाशकर जगजीवन झवेरी, बम्बई)

५० दश— **दशवैकालिक** (जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय सस्करण)

५१ दशअचू— **दशवैकालिकअगस्त्यसिंहचूर्णि** (प्राकृत ग्रन्थ परिषद् वाराणसी, सन् १९७३)

५२ दशचू— **दशवैकालिक चूलिका** (जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय-सस्करण)

५३ दशजिचू— **दशवैकालिकजिनदासचूर्णि** (श्री ऋषभदेव केसरीमल श्वे संस्था, रतलाम, सन् १९३३)

५४ दशनि— **दशवैकालिकनिर्युक्ति** (प्राकृत ग्रथ परिषद्, वाराणसी सन् १९७३)

५५ दशहाटी— **दशवैकालिकहारिभद्रीया टीका** (देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, ग्रन्थाक ४७)

५६ दश्रु— **दशाश्रुतस्कन्ध** (सशोधित, अप्रकाशित)

५७ दश्रुचू— **दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि** (पन्यास श्री मणिविजयजी गणिग्रथ-माला, भावनगर स० २०११)

५८ दश्रुनि— **दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्ति** (वही)

५९ दस— **दसवेआलिय** (जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय सस्करण)

६० देसी— **देसीसद्दसगहो** (श्री शकरप्रसाद रावल, बम्बई)

६१ धस— **धम्मसगणि** (पालि प्रकाशन मडल, बिहारसरकार)

६२ धातु— **धातुपारायणम्** (श्री शाहीबाग गिरधरनगर, जैन श्वे० मू० सघ, अहमदाबाद, सन १९७१)

६३ नदी— **नदी** (सशोधित, अप्रकाशित)

६४ नदीचू— **नदीचूर्णि** (प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)

६५ नदीटि— **नदीटिप्पणक** (वही)

६६ नदीटी— **नदीटीका** (वही)

६७ नकग्रटी— **नवीनकर्मग्रन्थटीका** (जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १९३४)

६८ निर— **निरयावलिका** (सशोधित, अप्रकाशित)

६९ निरटी— **निरयावलिका टीका** (आगमोदय समिति, बम्बई)

७० निचू— निशीथचूर्णि (सन्मति ज्ञानपीठ, दूसरा सस्करण, सन् १९८२)

७१. निचूभा १-४-निशीथचूर्णि भाग १-४ (वही)

७२. निपीचू— निशीथ पीठिका चूर्णि (वही)

७३ निपीभा— निशीथपीठिकाभाष्य

७४ निभा— निशीथभाष्य (वही)

७५ निभागा— निशीथभाष्य गाथा (वही)

७६ पचा— पञ्चाशकप्रकरण (ऋषभदेव केसरीमल श्वे० सस्था, रतलाम, सन् १९४१)

७७ पचाटी— पञ्चाशकप्रकरणटीका (वही)

७८ पास— पाइयसद्दमहण्णवो (प्राकृत ग्रथ परिषद्, वाराणसी द्वितीय सस्करण सन् १९६३)

७९ पिनि— पिण्डनिर्युक्ति (देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सन् १९१८)

८० पिनिटी— पिण्डनिर्युक्तिटीका (वही)

८१ प्र— प्रश्नव्याकरण (अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, १९७४)

८२ प्रज्ञा— प्रज्ञापना (सशोधित, अप्रकाशित)

८३. प्रज्ञाटी— प्रज्ञापनाटीका (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१८)

८४ प्रटी— प्रश्नव्याकरणटीका (वही, सन् १९१९)

८५ प्रसा— प्रवचनसारोद्धार (देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, द्वितीय सस्करण, स० १९८१)

८६ प्रसागा— प्रवचनसारोद्धारगाथा (वही)

८७ प्रसाटी— प्रवचनसारोद्धारटीका (वही)

८८ प्रा— प्राकृतव्याकरण (हेमचन्द्र) (जैन दिवाकर दिव्यज्योति कार्यालय, ब्यावर, स० २०१६)

८९. प्राकग्रटी— प्राचीनकर्मग्रन्थ टीका (जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, वि० स० १९७२)

९०. बृकचू— बृहत्कल्पचूर्णि (हस्तलिखित, लाडनूं भडार)

९१ बृकटी— बृहत्कल्पटीका (जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १९३६)

९२ बृकनि— बृहत्कल्पनिर्युक्ति (वही)

९३. बृकभा— बृहत्कल्पभाष्य (वही, सन् १९३६)

९४ भ— भगवती (अंगसुत्ताणि भाग २, जैन विश्व भारती लाडनूं, सन् १९७४)

९५ भटी— भगवतीटीका १ (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१८)
भगवतीटीका २ (ऋषभदेव केसरीमल श्वे० संस्था, रतलाम, द्वितीय संस्करण, सन् १९४०)

९६ मनु— मनुस्मृति (चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी)

९७ राज— राजप्रश्नीय (संशोधित, अप्रकाशित)

९८. राजटी— राजप्रश्नीयटीका (गूर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, अहमदाबाद, वि०स० १९९४)

९९ विपा— विपाकश्रुत (अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती लाडनूं, सन् १९७४)

१००. विपाटी— विपाकटीका (आगमोदयसमिति, बम्बई, सन् १९२०)

१०१ विभा— विशेषावश्यकभाष्य (दिव्यदर्शन कार्यालय. अहमदाबाद, वीर सं० २४८९)

१०२ विभाकोटी—विशेषावश्यकभाष्य कोट्याचार्यटीका (श्री ऋषभदेव केसरीमल रतलाम, सन् १९३६)

१०३. विभामहेटी—विशेषावश्यकभाष्यमलधारीहेमचन्द्र टीका (दिव्यदर्शन कार्यालय, अहमदाबाद, वीर संवत् २४८९)

१०४. व्यभा— व्यवहारभाष्य (वकील केशवलाल प्रेमचन्द, अहमदाबाद, सन् १९२६)

१०५. व्यभाटी—व्यवहारभाष्यटीका (वही)

१०६. शक— शब्दकल्पद्रुम भाग ४, तीसरा संस्करण (चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी, सन् १९६९)

१०७ सम— समवायांग (अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं सन् १९७४)

१०८ समटी— **समवायांगटीका** (कान्तिलाल चुनीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३८)

१०९ सू— **सूत्रकृतांग** (अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती लाडनू, सन् १९७४)

११० सूचू १— **सूत्रकृतांगचूर्णि प्रथमश्रुतस्कन्ध** (प्राकृतटेक्स्टसोसायटी वाराणसी, सन् १९७५)

१११ सूचू २— **सूत्रकृतांगचूर्णि द्वितीयश्रुतस्कन्ध** (ऋषभदेव केसरीमल श्वे० संस्था, रतलाम, सन् १९४१)

११२ सूटी १— **सूत्रकृतांगटीकाप्रथमश्रुतस्कन्ध** (आगमोदयसमिति बम्बई, सन् १९१९)

११३ सूटी २— **सूत्रकृतांगटीका द्वितीय श्रुतस्कन्ध**, (श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन ग्रंथमाला, सन् १९५३)

११४ सूनि— **सूत्रकृतांगनिर्युक्ति** (मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली सन् १९७८)

११५ सूर्य— **सूर्यप्रज्ञप्ति** (संशोधित, अप्रकाशित)

११६ सूर्यटी— **सूर्यप्रज्ञप्ति टीका** (आगमोदयसमिति, बम्बई, सन् १९१९)

११७ स्था— **स्थानांग** (अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती लाडनू, सन् १९७४)

११८ स्थाटी— **स्थानांगटीका** (सेठ माणेकलाल चूनीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३७)

अनुक्रम

स्वकथ्य	७
पुरोवचन	९
प्रस्तुति	१३
प्रयुक्त ग्रन्थ-सकेत सूची	३५
एकार्थक कोश	१
परिशिष्ट	
१. शब्द-अनुक्रम	१६१
२ विशेष शब्द-विवरण	२७३
३. धातु-अनुक्रम	३८३

एकार्थक कोश

अइबल—अतिबल ।

अइबले महब्बले अपरिमियबले । (औप ७१)

अंग—अवयव ।

अग दस भाग भेए अवयवाऽसगल चुण्ण खडे य ।
देस पएसे पव्वे साह पडल पज्जव खिले य ।। (उनि १५७)

अग त्ति वा दस त्ति वा भाग त्ति वा भेदे त्ति वा अवयवे त्ति वा चुण्णे त्ति वा खडे त्ति वा देसे पदेसा पव्वे साहा पडला पज्जवे त्ति वा खिले त्ति ।[1] (उचू पृ ९३-९४)

अंगुलेयक—अगूठी ।

अगुलेयक मुद्देयक वेंटक । (अवि पृ १६३)

अंचेति—झुकाता है ।

अचेति त्ति वा णामेति त्ति वा एगट्ठ । (सूचू १ पृ २४०)

अचेति कपेति णोल्लसति ।[2] (सूचू १ पृ २४०)

अंतर—छिद्र ।

अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य । (निर १/६५)

अंतरप्प—अतरात्मा ।

अतरप्पा चेतो चित्तमित्ति एगट्ठ । (निपीचू पृ ११२)

अंताहार—बचाखुचा खाने वाला ।

अताहारा पताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अतजीवी पतजीवी ।[3] (सू २/२/६६)

---

१. देखें—परि० २
२. देखें— परि० ३
३. देखें—परि० २

अतिक—समीप ।

अन्तिकमभ्याशमासन्न समीपम् । (व्यभा १० टी प १००)

अदोलति– झूलता है, घूमता है ।

अदोलति त्ति वा बूया, तधा हृदोलको त्ति वा ।
घुमति त्ति परिघुमति भमते व परिब्भमे ॥[1] (अवि पृ ८०)

अंस– अंश ।

असो त्ति व भागो त्ति व एगट्ठा । (बृकभा ३६४५)

अंस– भेद ।

अंसा भेदा उत्तरपगडीओ इत्यनर्थान्तरम् । (बृकटी पृ २६)

अकम्मवीरिय—प्रमादरहित वीर्य ।

अकम्मवीरिय ति वा पडितवीरिय ति वा एगट्ठ ।[2]

(सूचू १ पृ १६८)

अकिट्ठ—अक्लिष्ट ।

अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए । (भ ३/१२६)

अकुडिल—ऋजु ।

अकुडिले त्ति वा अणिहे त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४७)

अकुसल—अकुशल ।

अकुसला अणज्जा अलियाणा अलियधम्मणिरया ।[3] (प्र २/१४)

अक्कोस—आक्रोश ।

अक्कोस- फरुस - खिसण - अवमाणण - तज्जण - निब्भछण तासण
उक्कूजिय ।[4] (प्र १०/१४)

अक्कोसेज्ज—आक्रोश करना ।

अक्कोसेज्ज बधेज्ज रुंभेज्ज उद्दवेज्ज । (आचूला ३/११)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

अक्कोह—अक्रोधी

अक्कोहा निक्कोहा खीणक्कोहा । (औप १६८)

अक्खयायार—परिपूर्ण आचार ।

अक्खयायारे अभिन्नायारे असबलायारे । (व्यभा ४/३ टी प २७)

अक्रिया—अप्रवृत्ति ।

अक्रिया अनारम्भ अवीर्यं अपरिस्पन्द इत्यनर्थान्तरम् ।

(सूचू २ पृ ३१९)

अक्षताचार—परिपूर्ण आचार ।

अक्षताचार अभिन्नाचार असक्लिष्टाचार ।

(व्यभा ४/२ टी प ३५)

अखंड—पूर्ण ।

अखड अप्फुडिय अविरल । (औप १९)

अखड—अखण्ड ।

अखडो अविराधितो निरतिचार । (नदीचू पृ ३)

अगणिझामिय—अग्नि-दग्ध ।

अगणिझामिए अगणिभूसिए अगणिपरिणामिए । (भ १५/११६)

अगोय—अगोत्र ।

अगोए निगोए खीणगोए । (अनुद्वा २८२)

अगृद्ध—अनासक्त ।

अगृद्ध अनध्युपपन्नोऽमूर्च्छित । (सूटी १ प ५०)

अगृहीतव्य—अग्राह्य ।

अगृहीतव्येऽनुपादेये हेये । (व्यभा १० टी प ११३)

अग्ग—परिमाण ।

अग्ग ति वा परिमाण ति वा पमाण ति वा एगट्ठा ।

(आवचू १ पृ २९)

अग्ग- प्रधान ।

अग्ग पहाण त्ति एगट्ठा । (जीतभा २५१७)

अग्गाइ वराइ एकार्थानि । (अत टी प १९)

अग्गि—अग्नि ।

अगणि पुण जाततेओ अणलो वा हुतवहो त्ति जलणो त्ति ।
पवणो त्ति य जोति त्ति य अग्गिस्स भवति णामाणि ।[1]

(अवि पृ २५४)

अग्घातित—आख्यात ।

अग्घातितति वा आतिक्खियति वा एगट्ठा । (आचू पृ ३०३)

अग्घुप्पत्ति—अग्नि का उत्पत्ति-स्थान ।

अग्घुप्पत्ति अग्गिट्ठे अग्गिकुडे य । (अवि पृ २५४)

अग्र—प्रधान ।

अग्र वर्यं प्रधान । (सूटी १ प ७२)

अचपल—स्थिर ।

अचपल स्थिरस्वभाव अकुक्कुच । (व्यभा ४/१ टी प २६)

अचल—स्थिर ।

अचल ध्रुव तधा ठाण सस्सत मखिल ति वा ।
अजरामर ति वा बूया णियत ति अवत्थित ।। (अवि पृ ७८)

अचियत्त—अप्रिय ।

अचियत्त ति वा अपियत्त ति वा एगट्ठ । (व्यभा ४/१ टी प ५६)

अच्चिय—अर्चित ।

अच्चिय-वदिय-पूइय-माणिय-सक्कारिय-सम्माणिया ।[2]

(ज्ञा० १/१/२७)

अच्छ— साफ-सुथरा ।

अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पके (भ २/११८)

अज्झत्थिय—मनोगत चिंतन ।

अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ।[3]

(विपा १/१/४१)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० २
३ देखें—परि० २

अज्झयण—अध्ययन ।

अज्झयण अज्झीण आओ झवणा य एगट्ठा । (निपीचू पृ ५)

अज्झोववण्ण—तन्मय ।

अज्झोववण्णा तच्चित्ता तम्मणा तल्लेसा इति एगट्ठा ।
(आचू पृ ४१)

अज्झोस—अध्यवसाय ।

अज्झोसो भावण त्ति वा एगट्ठ । (आचू पृ ३७३)

अट्ट—दु खी ।

अट्टदुहट्टवसट्ट । (उपा २/२८)

अड्ढ—धनवान् ।

अड्ढो य सुहभागी य वसुमतो । (अवि पृ १०५)

अणंत—अनत ।

अणत अणुत्तर निव्वाघाय निरावरण कसिण पडिपुण्ण । (औप १६६)

अणतराय—अन्तराय—विघ्न रहित ।

अणतराए निरतराए खीणतराए । (अनुद्वा २८२)

अणतरिय—सचेतन ।

अणतरिया अणतरहिता सचेतना । (दश्रुचू प ५१)

अण—ऋण ।

अणति वा रिणति वा एगट्ठा । (दशजिचू प २०४)

अणण्ण—अभिन्न ।

अणण्ण अभिण्ण अपृथग् । (निपीचू पृ ३७)

अणप्पज्झो—पराधीन, भूताविष्ट ।

अणप्पज्झो अनात्मवश ग्रहगृहीत । (निचूभा २ पृ २९)

अणल—असमर्थ ।

अणलो अपच्चलो त्ति य, होति अजोगो य एगट्ठा । (निभा ३५०४)

अणाइल—अनाविल ।

अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे । (आचूला १५/३४)

अणाइले अकसाई मुक्के । (सू १/६/८)

अणाइलभाव—अनाविलभाव ।

अणाइलभावो अणिग्गयभावो सचित्तो अबहिलेस्सो त्ति एगट्ठा ।
(आचू पृ २४१)

अणाउय—अनायुष्य (मुक्त) ।

अणाउए निराउए खीणाउए । (अनुद्वा २८२)

अणाम—अनाम ।

अणामे निण्णामे खीणनामे । (अनुद्वा २८२)

अणायतण—अनायतन (पापस्थान) ।

सावज्जमणायतण असोहिठाण कुसीलससग्गी एगट्ठा होति ।
(ओनि ७६३)

अणावरण—आवरण रहित ।

अणावरणे निरावरणे खीणावरणे । (अनुद्वा २८२)

अणासव—अनास्रव ।

अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो ।
(प्र ६/२३)

अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नसोए निरुवलेवे ।[1] (राजटी पृ ३४)

अणिट्ठ—अनिष्ट ।

अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।
(सू २/१/५१)

अणु—अणु ।

अणु परमाणु एकांशोऽभेदो निर्भेद इति (विभाकोटी पृ १७०)

---

१ देखें—परि० २

अणुओग—अनुयोग ।

अणुओगो य नियोगो भासा विभासा य वत्तिय चेव ।
एए अणुओगस्स य नामा, एगट्ठिया पच ॥[1] (आवनि १३१)

अणुकंपण—दया ।

अणुकपण अणुकपा दया । (निपीचू पृ० ७६)

अणुण्णा—अनुज्ञा ।

अणुण्णा उण्णमणी णमणी णामणी ठवणा पैभवो पभावणपयारो ।
तदुभय हिय मज्जाया णाओ मग्गो य कप्पो य ॥
सगह सवर णिज्जर ठिइकरण चेव जीववुड्ढिपय ।
पदपवर चेव तहा, वीसमणुण्णाए णामाइ ॥
(अनुनदी २८)

अणुत्तर—अनुत्तर ।

अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे । (औप १५३)

अणुत्तर अणत कसिण पडिपुण्ण निरावरण वितिमिर विसुद्ध ।[2]
(उ २६/७२)

अणुत्तर—श्रेष्ठ ।

अणुत्तर ति वा अणुत्तम ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २८७)

अणुपविट्ठ—अनुप्रविष्ट ।

तधा अणुपविट्ठो त्ति तधा अतिगतो त्ति वा ।
तधा गाढोपगूढे त्ति गाढलीण ति वा वदे ॥
तधा अल्लीणमपल्लीणो अब्भलीणो त्ति वा वदे ।
अब्भतरब्भतरगो एते सद्दा समा भवे ॥[3] (अवि पृ ८७)

अणुमात्र—थोडा ।

अणुमात्र थोव अप्प । (दशअचू पृ १३७)

---

१ देखे—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखे—परि० २

अणुव्विग्ग—अनुद्विग्न ।

अणुव्विग्ग अचवल अभीय । (दशजिचू पृ २८६)

अणुसंचरइ—जाता है ।

अणुसचरइ धावति गच्छति वा एगट्ठा ।[1] (आचू पृ १३)

अणुसट्ठि—स्तुति ।

अणुसट्ठि थुइ त्ति एगट्ठा । (निभा ६६०८)

अणुसमय—निरन्तर ।

अणुसमयनिरन्तरमवीइ । (उनि २१५)

अणेगपडिरय—अनेक रूप से कहा जाने वाला ।

अणेगपडिरयति वा अणेगपज्जाय ति वा अणेगणामभेद ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ २६)

अणोज्जा—अनवद्या (महावीर की पुत्री का नाम) ।

अणोज्जा ति वा पियदसणा ति वा । (आचूला १५/२३)

अण्ण—पृथक् ।

अण्ण भिण्ण पृथग् । (निपीचू पृ ३७)

अण्णाय—अज्ञात ।

अण्णाय अदिट्ठ अस्सुत अमुय अविण्णाय । (ज्ञा १८/१४३)

अण्हयकर—आस्नवकर (मन को आश्रवो मे प्रवृत्त करने वाला) ।

अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे । (आचूला १५/४५)

अतिगत—भीतर तक प्रविष्ट ।

अतिदूरे पविट्ठो त्ति अतिगतो त्ति व दूरत ।
दूरातिसरितो व त्ति दूरोगाढो त्ति वा पुणो ।।
तधा अणुपविट्ठो त्ति तधा अतिगतो त्ति वा ।
तधा गाढोपगूढे त्ति गाढलीण ति वा वदे ।। (अवि पृ ८७)

---

१ देखे—परि० ३

अतिदूर—अतिदूर।

अतिदूर अतिदिग्घ अतिम्महूतेसु। (अवि पृ २३९)

अतियार—अतिचार।

अतियार त्ति वा अविसोहीओ त्ति वा एगट्ठा। (आवचू १ पृ १०२)

अतिवत्त—अतिवर्तन।

अतिवत्तमतिक्कतं गत त्ति य विणिग्गत।
विणियत्त पुराण ति जुण्ण ओपुप्फ णिप्फल॥

सुक्ख मलित विसिण्ण ति, उवउत्त भीणमेव य।
खइय पित ति वा भुत्त णिट्ठित ति कत ति वा॥

सम्मद्दित अतीत ति समतिच्छियमतिच्छिय।
ओहिज्जत ओहसित पहीण ति पहिज्जते॥[1] (अवि पृ ८१)

अतुरिय—अत्वरित।

अतुरियमचवलमसभत। (ज्ञा० १/१/१९)

अत्त—प्रिय।

अत्ता इट्ठा कता पिया मणुण्णा। (उचू पृ २१२)

अत्तय—पुत्र

अत्तए त्ति आत्मज सुत। (विपाटी प ३५)

अत्तए त्ति आत्मज अङ्गज। (ज्ञाटी प १२)

अत्तव—आत्मवान्।

अत्तव ति वा विन्नव ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २८९)

अत्ताण—अत्राण।

अत्ताणा असरणा अणाहा अबधवा बधुविप्पहूणा। (प्र १/२६)

अत्थ—अर्थ (कारण)।

अत्थो त्ति वा हेउ त्ति वा कारण त्ति वा एगट्ठ।
(निचूभा ४ पृ ३८८)

---

१ देखें—परि० २

अत्थयति—याचना करता है।

अत्थयति त्ति वा पत्थयति त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३३४-३५)

अत्थयति त्ति वा मग्गइत्ति वा एगट्ठा।[1] (दशजिचू पृ ७४)

अत्थाम—शक्तिरहित।

अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे। (भ ७/२०३)

अत्थि—अर्थी—चाहनेवाला।

अत्थी गवेसी लुद्धगा कखिया पिवासिया। (राज ७३८)

अर्थाध्यवसाय—अवाय (मतिज्ञान का एक भेद)।

अर्थाध्यवसायोऽपाय निर्णयो निश्चयोऽवगम इत्यनर्थान्तरम्।
(नदीटी पृ ४६)

अदिण्णादाण—चोरी

तस्स य णामाणि गोण्णाणि होंति तीस, तजहा—चोरिक्क, परहड, अदत्त, कूरिकड, परलाभो, असजमो, परधणम्मि गेही, लोलिक्का, तक्करत्तण, अवहारो, हत्थलहुत्तण, पावकम्मकरण, तेणिक्का, हरणविप्पणासो, आदियणा, लुपणा धणाण, अप्पच्चओ, ओवीलो, अक्खेवो, खेवो, विक्खेवो, कूडया कुलमसी, कखा, लालप्पण, पत्थणा, आससणाय वसण, इच्छा मुच्छा, तण्हा गेही, नियडिकम्म, अपरच्छ त्ति।[2] (प्र० ३/२)

अदीण- अदीन।

अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी।
(अत ६/५७)

अद्धा- काल समय।

अद्धा काल इत्यनर्थान्तरम्। (व्यभा २ टी प ११)

अधण— निर्धन।

अधणेसु दुग्गतेसु य परिहायतेसु। (अवि पृ २५०)

अधण्ण— अधन्य।

अधण्णो दूभगो त्ति य असिद्धत्थो। (अवि पृ ८१)

---

१ देखे—परि० ३ २ देखें—परि० २

अधन्न—अधन्य ।

अधन्ने अपुन्ने अकयत्थे अकयलक्खणे । (राज ७३८)

अधम्मत्थिकाय—अधर्मास्तिकाय ।

अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा, मुसावाए इ वा, आदिण्णादाणे इ वा, मेहुणे इ वा, परिग्गहे इ वा, कोहे इ वा, माणे इ वा, माये इ वा, लोहे इ वा, रागे इ वा, दोसे इ वा, कलहे इ वा, अब्भक्खाणे इ वा, पिसुणे इ वा, परपरिवाए इ वा, रइ अरई इ वा, मायामोसे इ वा, मिच्छादसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा, भासाअस्समिती इ वा, एसणाअस्समिती इ वा, आयाणभडमत्तनिक्खेवणाअस्समिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ।[1] (भ २०/१५)

अधरा—अधम ।

अधरा अधमा जघन्या । (निचूभा ३ पृ ३८)

अधिकरण—कलह ।

अहिकरणमहोकरण अहरगतीगाहण अहोतरण ।
अद्धितिकरण च तहा, अहीरकरण च अहीकरण ।।
(निभागा २७७२)

अधिकरण कलह प्राभृतमित्येकोऽर्थ. । (बृकटी पृ ७५१)

अधितिकरण—अधैर्य ।

अधितिकरण अधिकरण अल्पसत्वम् । (निचूभा २ पृ २७६)

अनगार—साधु।

अनगारो मुनिर्मौनी साधु प्रव्रजितो व्रती ।
श्रमण क्षपणश्चैव यतिश्चैकार्थवाचका. ।। (उशाटी प १६)

अनर्थ—निष्कारण ।

अनर्थ अप्रयोजनमनुपयोगो निष्कारणेत्ति पर्याया ।
(आवहाटी २ पृ २२८)

---

१ देखें—परि० २

अनल—अयोग्य ।

अनल अयोग्यश्च एकार्था । (निचूभा ३ पृ २२६)

अनायतन—अस्थान (अनाचार) ।

अनायतन असम्भव अनाचार अस्थानमित्यनर्थान्तरम् ।
(सूचू १ पृ २२०)

अनित्य—अनित्य ।

अनित्य अध्रुव चल । (उचू पृ १८८)

अनुकाश—विशेष विकास ।

अनुकाशो विकाश प्रसर । (ज्ञाटी प २४)

अनुगत—अनुमत ।

अनुगता अनुमता अनुबद्धा इत्येकोऽर्थ । (उचू पृ ११०)

अनुलोम—अनुकूल ।

अनुलोम अनुकूल अनुगुणम् । (जीवटी प ३)

अन्विष्ट—खोजा गया ।

अन्विष्ट याचित गवेसिय । (निचूभा २ पृ ६६)

अपगत—दूर होना ।

अपगते अपेते वेदिते । (पचा प ११)

अपमट्ठ—अप्रमार्जित ।

अपमट्ठे अपलिखिते अपसारिते अपणामिते अपवट्टिते अपलोलिते अपवत्ते अपणते अपविट्ठे अपछुद्धे आपडिते । (अवि पृ १७१)

अपमाण—अपमान ।

अपमाणमसक्कार णिराकार पराजय । (अवि पृ ८६)

अपसारित—दूर किया हुआ ।

अपसारिते अपणासिते अपकड्ढिते अपणते अपछुद्धे अपहिते अप्फिडिते । (अवि पृ १६६)

अपातय—अनावृष्टि ।

अपातयमणावुट्ठि सस्सवापत्तिमेव य । (अवि पृ ६०)

अपात्र—अयोग्य ।

अपात्र अयोग्य अभाजनम् । (निचूभा ४ पृ २५५)

अपूर्व—जो पहले नही था ।

अपूर्व अदृष्ट अश्रुत अविदित अविचालित । (आवचू १ पृ ५४४)

अप्पकम्मतर—अल्पकर्म ।

अप्पकम्मतराए अप्पकिरियतराए अप्पासवतराए । (भ ५/१३३)

अप्पडिबद्ध—अप्रतिबद्ध ।

अप्पडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गथा । (सू २/२/६५)

अप्पियववहार—अष्टाग निमित्त (उत्पाद) का भेद ।

अप्पियववहारिय ति वा विसेसादिट्ठ ति वा एगट्ठा ।

(आवचू १ पृ ३७६)

अबभ—अब्रह्मचर्य ।

अबभ, मेहुण, चरत, ससग्गि, सेवणाधिकारो, सकप्पो, बाहणा पदाण, दप्पो, मोहो, मणसखोभो, अणिग्गहो, वुग्गहो, विघाओ, विभगो, विब्भमो, अधम्मो, असीलया, गामधम्मतत्ती, रती, रागो, कामभोग-मारो, वेर, रहस्स, गुज्झ, बहुमाणो, बभचेर-विग्घो, वावत्ति, विराहणा, पसगो, कामगुणो त्ति ।[1] (प्र ४/२)

अबालसील—प्रौढ शील वाला ।

अबालसीलो अचचलसीलो मज्झत्थसीलो । (दश्रुचू प २१)

अब्भहियतर—अत्यधिक, पूर्ण ।

अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतर ।[2] (भ ८/१८७)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

अब्भास—अभ्यास ।

अब्भास भावण त्ति य एगट्ठ । (बृकभा १२६०)

अब्भुग्गय—अभ्युद्गत ।

अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु अब्भुण्णएसु अब्भुट्ठिएसु । (ज्ञा १/१/३३)

अभिगच्छति—प्राप्त करता है ।

अभिगच्छति त्ति वा पावइ त्ति वा एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ ३१६)

अभिज्झा—लोभ ।

अभिज्झा लोभो प्रार्थनेत्यनर्थान्तिरम् । (सूचू २ पृ ३६१)

अभिप्पाय—अभिप्राय ।

अभिप्पायो त्ति वा बुद्धि त्ति वा एगट्ठ । (आचू पृ ५४३)

अभिलसंति—इच्छा करते है ।

अभिलसति वा पत्थयति वा कामयति वा अभिप्पायति वा एगट्ठा ।[2] (दशजिचू पृ २१५)

अभिवायण— अभिवादन ।

अभिवायण वदण पूयण च । (दशचू २/६)

अभिसभूत—उत्पन्न ।

अभिसभूता, अभिसजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसवुड्ढा । (आ ६/२५)

अभिहणति— हनन करता है ।

अभिहणति नज्जेति तालेति परितालेति परितावेति उद्दवेति ।[3] (इभा ३४/२)

अभिहणेज्ज— हनन करे ।

अभिहणेज्ज वत्तेज्ज लेसेज्ज सघसेज्ज सघट्टेज्ज परियावेज्ज किलामेज्ज ।[4] (आचू १/८८)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३

अभीय—अभीत ।

अभीए अतत्थे अचलिए असभते अणाउले अणुव्विग्गे ।
(ज्ञा १/८/७३)

अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असभते ।
(भत ६/४१)

अभूतिभाव—विनाशभाव ।

अभूतिभावा त्ति वा विणासभावो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३०२)

अमाण—निरभिमानी ।

अमाणा निम्माणा खीणमाणा । (औप १६८)

अमाया—अमायावी ।

अमाया निम्माया खीणमाया । (औप १६८)

अमूढ—अमूढ ।

अमूढो मतिम धीरो । (अवि पृ ५६)

अमोह—निर्मोही ।

अमोहे निम्मोहे खीणमोहे । (अनुद्वा २८२)

अयन—ज्ञान ।

अयन गमन परिच्छेद । (प्रसा टी प २०८)

अरंजर—घडा ।

अरजरो अलिंदो त्ति कुडगो माणको त्ति वा ।
घडको कुढारको व त्ति वारको कलसो त्ति वा ॥
गुलमगो त्ति वा बूया तधा पिढरको त्ति वा ।
तधा मल्लगभड त्ति पत्तभड त्ति वा पुणो ॥[1] (अवि पृ ६५)

अरति—अप्रीति ।

अरति सोगपाग च अप्पीइमतिस तहा । (अवि पृ १२)

---

१ देखें—परि० २

अरय—निर्मल।

अरए विरए णीरए णिम्मले वितिमिरे विसुद्धे। (स्था ६/७२)

अरह—अर्हत्।

अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी। (भ २/३८)

अरिह जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी[1]।

(आचूला १५/३६)

अरि—शत्रु।

अरी इ वा, वेरिए इ वा, घायए इ वा, वहए इ वा, पडिणीयए इ वा, पच्चामित्ते इ वा।[2] (जबू २/२८)

अरिट्ठ—अरिष्ट (एक प्रकार का मद्य।

अरिट्ठो आसवो व त्ति मेरको त्ति मधु ति वा। (अवि पृ ६४)

अरिह—योग्य।

अरिहो भायण जोग्गो पत्त ति वा एगट्ठ। (आवचू १ पृ ५०६)

अर्घते—जाया जाता है।

अर्घते गम्यते अट्यते।[3] (भटी पृ १४३१)

अर्पित—अर्पित।

अर्पित गमित दर्शितम्। (उचू पृ १०१)

अर्यते—प्राप्त करता है।

अर्यते गम्यते साध्यते।[4] (विभामहेटी १ पृ ३४१)

अर्हत्—पूजित।

अर्हन् पूजितो पूजोचित। (उपाटी पृ १३०)

अलं—पर्याप्त।

अल पर्याप्त परिपूर्णम्। (ज्ञाटी प ४८)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

४ देखें—परि० ३

अलस—अलसिया (प्राणी विशेष)।

अलसो त्ति वा गडूलो त्ति वा सुसुणागो त्ति वा एगट्ठ ।

(निपीचू पृ ६६)

अलस—मथर।

अलसमभारो भीरू अतिकिमणो मथरो त्ति वा सद्दो ।
मज्झत्थो त्ति पमत्तो त्ति पगुलो दिग्घपस्सि त्ति ॥

(अवि पृ २४१)

अलिय—असत्य ।

तस्य य नामामि गोण्णाणि होति तीस, त जहा—अलिय, सढ, अणज्ज, मायामोसो, असतक, कूडकवडमवत्थु, निरत्थयमवत्थग, विद्देसगरहणिज्ज, अणुज्जग, कक्कणा, वचणा, मिच्छापच्छाकड, साती, ओच्छन्न उक्कूल, अट्ट, अब्भक्खाण, किब्बिस, वलय, गहण, मम्मण, नूम, नियती, अप्पच्चओ, असमओ, असच्चसधत्तण, विवक्खो, अवहीय, उवहि-असुद्ध, अवलोवो त्ति।[1] (प्र २/२)

अलोह—लोभमुक्त।

अलोहा निल्लोहा खीणलोहा। (ओप १६८)

अल्पश्रुत—अल्पज्ञानी।

अल्पश्रुतो अबहुश्रुतोऽगीतार्थ । (व्यभा ६ टी प ७)

अवकड्ढित—पराजित।

अवकड्ढिते पराहूते पराजित परम्मुहे। (अवि पृ १०८)

अवगाढ—उत्पन्न।

अवगाढ आरूढ प्रपन्न इति चैकोऽर्थं । (उशाटी प २४७)

अवड्ढ—आधा

अवड्ढ ति वा अद्ध ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २२)

---

१ देखें—परि० २

अवत्था - अवस्था ।

पतिट्ठा ठवणा ठवणी अवत्था सठिती ठिती ।
अवत्थाण अवत्थाया एगट्ठा चिट्ठणा त्ति य ॥ (जीतभा १९६६)

अवदात—शुभ्र ।

अवदात अतिपण्डर स्निग्ध वा निर्मल । (सूचू १ पृ १४७)

अवद्य – गर्हित ।

अवद्य गर्हित मिच्छत्त अण्णाण अविरती । (आवचू १ पृ ५९३)

अवद्य गर्हित पापम् । (आवहाटी २ पृ २२७)

अवधान— मर्यादा ।

अवधान अवधि मर्यादा । (नदीचू पृ १३)

अवन—ज्ञान ।

अवन गमन वेदनमिति पर्याया । (आवहाटी पृ ६)

अवसर— प्रस्ताव ।

अवसरो विभाग प्रस्ताव । (विभाकोटी पृ ९७६)

अवाय—अवाय (मतिज्ञान का एक भेद) ।

आवट्टणया पच्चावट्टणया अवाए बुद्धी विण्णाणे ।[1]

(नदी ४७)

अविजात—विनीत ।

अविजातो विनीत अनुकूल । (उचू पृ १०२)

अविमनस्—जागरूक ।

अविमना अविगतचित्ता अशून्यमना । (अनुटी प ४)

अविराय—अविध्वस्त ।

अविराय अविलीण अविद्धत्थ ।[2] (जीव ३/११८)

अविविचित्त—पृथक् किये बिना ।

अविविचित्ता अविधूणित्ता असमुच्छित्ता अणणुतावित्ता । (सू २/४/१८)

---

१. देखें—परि० २ २ देखें—परि० २

अविसुद्ध—अविशुद्ध ।

अविसुद्ध, अविवित्त, लोहिल्ल । (निचूभा ४ पृ १४४)

अवेयण- अवेदन ।

अवेयणे निव्वेयणे खीणवेयणे । (अनुद्वा २८२)

अव्यक्त—साख्य सम्मत प्रकृति का एक नाम ।

अव्यक्त प्रकृतिरित्यनर्थान्तरम् । (आवटि प २३)

अशाश्वत—अशाश्वत ।

अशाश्वत अनित्यो विनाशी । (सूटी १ पृ ४२)

अशेष—सपूर्ण ।

अशेष कृत्स्न सम्पूर्ण सर्वमित्यनर्थान्तिरम् । (सूचू २ पृ ४११)

अश्लाघा—अवज्ञा ।

अश्लाघा वा अवज्ञा वा अनादर । (पचा पृ ५१)

असजण—अनासक्ति ।

असजण त्ति असगो अगेही । (निपीचू पृ १२९-३०)

असण अशन ।

असण पाण खाइम साइम ।[1] (प्रमाटी प ५१)

असपज्जाय—असद्पर्याय ।

असपज्जाय त्ति वा णत्थिभावो त्ति वा अविज्जमाणभावो त्ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ २९)

असमजस—प्रतिकूल ।

असमजसा अननुकूला अनभिप्रेता । (उचू पृ २५)

असरण- अस्मरण ।

असरण अचिन्तण अणाढायमाण ति एगट्ठा । (आचू पृ ३०३)

असात—दुक्ख ।

असात ति वा अपरिणिव्वाण ति वा महब्भय ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ३६)

---

१ देखें—परि० २

असात ति वा दुक्ख ति वा अपरिणिव्वाण ति वा भय ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ३१-३२)

असाहस—अचचल ।

असाहसो अचवलो अवत्थियमवेगिओ ।
अणुब्भडो अरभसो अणुज्जलमचचलो ।। (अवि पृ ४)

असुइ—अपवित्र ।

असुइ वा अचोक्ख पूइय । (राज ६)

अस्थान—अनुचित ।

अस्थानम् अयुक्तम् असाम्प्रतम् । (सूटी १ पृ १६०)

अस्सि—कोण, कोना ।

अस्सिति वा कोडित्ति वा एगट्ठा । (अनुद्वाचू पृ ५५)

अहाअत्थ—यथार्थ ।

अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग । (स्था ७/१३)

अहाछंद—स्वच्छन्द ।

अहाछदो इच्छाछदो त्ति एगट्ठा । (प्रसागा १२१)

अहासुत्त—विधि के अनुसार ।

अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम्म ।[1] (भ २/५६)

अहिंसा—अहिंसा ।

दीवो, ताण, सरण, गती, पइट्ठा, निव्वाण, निव्वुई, समाही, सत्ती, कित्ती, कती रती य, विरती य, सुयग, तित्ती, दया, विमुत्ती, खती, सम्मत्ताराहणा, महती, बोही, बुद्धी, धिती, समिद्धी, रिद्धी, विद्धी, ठिती, पुट्ठी, नदा, भद्दा, विसुद्धी, लद्धी, विसिट्ठदिट्ठी, कल्लाण, मगल, पमोओ, विभूती, रक्खा, सिद्धावासो, अणासवो, केवलीण ठाण, सिव-समिई-सील-सजमो त्ति य, सीलपरिघरो, सवरो य, गुत्ती, ववसाओ, उस्सओ य जणो, आयतण जयणमप्पमाओ, आसासो, वीसासो, अभओ, सव्वस्स वि अमाघाओ, चोक्खपविता, सुती, पूया, विमल-पभासा य, निम्मलतर त्ति । एतमादीणिनियगुण निम्मियाइ पज्जवणामाणि होति अहिंसाए भगवतीए । (प्र ६/३)

---

१ देखे—परि० २

अहिंसा इ वा अज्जीवाइवानोत्ति वा पाणातिपातविरइ त्ति वा एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ २०)

अहिट्ठयति—आचरण करता है।

अहिट्ठयति त्ति वा आयरइ त्ति वा एगट्ठा ।[2] (दशजिचू पृ ३२७)

आइक्खइ—कथन करता है।

आइक्खइ भासेइ पण्णवेइ परूवेइ ।[3] (भ २/३०)

आइक्खामि—कथन करता हूं।

आइक्खामि विभयामि (विभावेमि) किट्टेमि पवेदेमि ।[4] (सू २/१/११)

आइण्ण—व्याप्त।

आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ ।[5] (भ ३/४)

आइन्न—विनीत।

आइन्ने य विणीए य भद्दए वा वि एगट्ठा। (उनि ६४)

आउट्टि—हिंसक।

आउट्टि त्ति वा अब्भुट्ठि त्ति वा एगट्ठा। (आचू पृ २७५)

आउडिज्जमाण—पीटे जाते हुए।

आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परितावििज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा ।[6] (सू २/२/४०)

आओडावेइ—प्रवेश कराता है।

आओडावेइ त्ति आखोटयति प्रवेशयति ।[7] (विपाटी प ७२)

आओसण—आक्रोश।

आओसणा निब्भच्छणा उद्धसणा ।[8] (निर ८२)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० २
६ देखें—परि० २
७ देखें—परि० ३
८ देखें—परि० २

आओसेज्ज—आक्रोश करना।

आओसेज्ज वा हणेज्ज वा बधेज्ज वा महेज्ज वा तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निब्भच्छेज्ज वा।[1] (उपा ७/२५)

आकुट्टि— हिंसा।

आकुट्टि छेदन हिंसा। (आवमटी प ४८१)

आक्रोश—आक्रोश।

आक्रोशो निर्भत्सना उद्धर्षणा एते समानार्था। (निरटी पृ १२)

आख्यात— कहा हुआ।

आख्यात प्ररूपितमित्येकोऽर्थ। (उचू पृ १)

आख्यातुम् —कहने के लिए।

आख्यातु वा प्रज्ञापयितु वा सज्ञापयितु वा विज्ञापयितु वा।

(ज्ञाटी प ५५)

आगत—विज्ञात।

आगत आगमित गुणिय च एगट्ठा। (आचू पृ २२१)

आगम— उत्पत्ति।

आगम हेतु प्रभव प्रसूतिराश्रवमित्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ पृ ४०८)

आगार ·आकार, आकृति।

आगारो त्ति वा आगिति त्ति वा सठाण ति वा एगट्ठा।

(आवचू १ पृ ५५-५६)

आगार—घर।

आगार ति वा गिह ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १८०)

आगासत्थिकाय—आकाशास्तिकाय।

आगासे इ वा, आगासत्थिकाए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अबरे इ वा, अबरसे इ वा, छिड्डे इ वा, भुसिरे इ वा, मग्गे इ वा,

१ देखे—परि० ३

विमुहे इ वा, अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा, आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अतलिक्खे इ वा, सामे इ वा, ओवासतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणते इ वा। जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा।[1] (भ २०/१६)

आग्राहयति— पूर्ण रूप से ग्रहण कराता है।

आग्राहयति अर्थापयति वा आख्यापयति वा प्रत्याययति।[2]
(भटी पृ ६६१)

आघवणा— आख्यान, कथन।

आघवणाहि पण्णवणाहि सण्णवणाहि विण्णवणाहि। (निर १/१०६)

आघविय— कथित

आघविय पण्णविय परूविय दसिय णिदसिय उवदसिय।[3] (अनुनदी ८)

आचार –शील।

आचारो त्ति वाऽऽचरण ति वा मवरो त्ति वा सजमो त्ति वा बभचेर ति वा एगट्ठ। (सूचू२ पृ ४०३)

आचिक्खति— कथन करता है।

आचिक्खति कधेति त्ति जपति भणति त्ति वा।[4] (अवि पृ ८३)

आढाइ— आदर करता है।

आढाइ परिजाणेइ वदइ णमसइ सक्कारेइ सम्माणेइ।[5] (सू २/७/३३)

आणंतरिय— आनन्तर्य।

आणतरिय ति वा अणुपरिवाडि त्ति वा अणुक्कमे त्ति वा एगट्ठा।
(आवचू १ पृ ७२)

---

१ देखें— परि० २
२ देखें— परि० ३
३ देखें— परि० २
४. देखें— परि० ३
५ देखें —परि० ३

आणा—आज्ञा ।

आण त्ति उववायो त्ति वा उवदेसो त्ति वा आगमो त्ति वा एगट्ठा ।
(दशजिचू पृ ३३८)

आणेति वा सुत ति वा वीतरागादेसो त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२)

आण त्ति वा नाण त्ति वा पडिलेहि त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १६८)

आणा उववाय वयण निद्देसे ।[1] (भ ३/७१)

आणुपुव्वि—क्रम ।

आणुपुव्वी परिवाडी कमो एगट्ठा । (आवचू पृ ३३४)

आणेति —लाता है ।

आणेति व देति व उवणामेति ।[2] (अवि पृ ८३)

आतट्ठि—आत्मार्थी ।

आतट्ठी आत्मार्थी आयतार्थी वा । (दश्रुचू प २७)

आतिण्ण—पूजित ।

आतिण्ण ति वा पूजित ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २०४)

आदर्श —स्वच्छ, निर्मल ।

आदर्श शुद्ध स्फटिक अलक्तक । (विभाकोटी पृ ७७५)

आदान—प्रसूति ।

आदान प्रसूतिराश्रयो वा । (सूचू १ पृ ३८)

आदित्य—सूर्य ।

आदित्य सविता भास्कर दिनकर । (आवचू १ पृ ४६१)

आदियति—ग्रहण करना ।

आदियति ति वा गेण्हितित्ति वा आयरणति वा एगट्ठा ।[3]
(दशजिचू पृ २६६)

आदेश—व्यवहार ।

आदेश व्यवहार उपचार । (विभाकोटी पृ ६५६)

---

१ देखे—परि० २

२ देखें—परि० ३

३. देखें—परि० ३

आनुपूर्विन्—क्रम ।

आनुपूर्वी अनुक्रमोऽनुपरिपाटीति पर्याया । (अनुद्वामटी प ४६)

आनुपूर्व्यनुक्रम परिपाटी । (उचू पृ २६)

आपिबति—ग्रहण करता है ।

आपिबति आदियति त्ति एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ ६३)

आपूरित—व्याप्त ।

आपूरित व्याप्त भूत वासितम् । (विभामहेटी १ पृ १२७)

आप्त—वीतराग पुरुष ।

आप्त मोक्षमार्गगामी आत्महितगामी वा प्रक्षीणदोष सर्वज्ञ ।
(सूटी १ प १९६)

आप्त—प्रिय ।

आप्ता इट्ठा कता पिया । (दश्रुचू प २७)

आभिणिबोहिय—मतिज्ञान ।

ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सण्णा सई मई पण्णा सव्व **आभिणिबोहिय** ।।[2] (नदी ५४)

आभोग—उपयोग (मनोयोग)

आभोग मग्गण गवेसणा य ईहा अपोह पडिलेहा ।
पेक्खणनिरिक्खणावि अ आलोयपलोयणेगट्ठा ।।[3]
(ओनि ३)

आभोगण—आसेवन करना ।

आभोगण ति वा मग्गण त्ति वा **ओसण** ति वा एगट्ठ ।
(व्यभा ४/१ टी प २४)

आमेलक—मुकुट ।

आमेलक **आपीड शेखरक** । (राजटी पृ १६५)

---

१ देखे—परि० ३
२ देखे—परि० २
३. देखे—परि० २

आम्रचिञ्चा—इमली।

आम्रचिञ्चा चिञ्चनिका आम्बिली। (व्यभा ६ टी प १८)

आय—कारण।

आय उपादान हेतु। (विभामहेटी २ पृ २२६)

आय—प्राप्ति।

आयो पावण लाभो इत्यनर्थान्तरम्। (नदीचू पृ १३)

आयो लाभ प्राप्तिरिति पर्याया। (नदीटि २ पृ ११२)

आउ त्ति वा आगमु त्ति वा लामु त्ति वा हुति एगट्ठा। (उनि ६)

आयत—पवित्र।

आयता चोक्खा परमसुइभूया। (ज्ञा १/१/८१)

आयट्ठि—आत्मार्थी।

आयट्ठी आयहिए आयगुत्ते आयजोगी आयपरक्कमे आयरक्खिए आयाणुकपए आयणिप्फेडए।[1] (सू २/२/८१)

आययण—सभव।

आययण सभवो त्ति वेगट्ठा। (निभा २५३५)

आययण ति वा सभवट्ठाण ति वा एगट्ठ। (निचूभा २४५६)

आयतन—आयतन।

आयतन स्थान चैत्यम्। (जबूटी प ७६)

आयाम—आयाम।

आयाम विक्खभ दो वि पदा एगट्ठा।[2] (नदीचू पृ २४-२५)

आयार—आचार।

आयारो आचालो आगालो आगरो य आसासो।
आयरिसो अगति य आइण्णाऽऽज्जाइ आमोक्खा।।[3] (आनि ७)

---

१ देखे—परि० २

२ देखें—परि० २

३. देखे—परि० २

आयार—विनय ।

आयारोत्ति वा विणयोत्ति वा एगट्ठ । (उशाटी प ३४४)

आयास—कलह ।

आयास-विसूरण कलह भडण वेराणि । (प्र ४/६)

आयास कलह वा वि मताम आविल तहा । (अवि पृ १२)

आरंभ—असयम ।

आरभो असजमो अविरती वा एगट्ठा । (सूचू २ पृ ३७०)

आरंभकड—हिसा से निष्पन्न ।

आरभकडे ति वा सावज्जकडे ति वा पयत्तकडे ति वा ।
(आचूला ४/२२)

आरभइ—हिसा मे प्रवृत्त होता है ।

आरभइ सारभइ समारभइ ।[1] (भ ३/१४५)

आरित—बुलाना ।

आरितो आगारितो सारितो एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ २४४)

आरितो आगारितो सावितो य एगट्ठ । (आवचू २ पृ २३४)

आरिय—आर्य ।

आरिए आरियपण्णे आरियदसी । (आ २/१०६)

आरोह—विशालता ।

आरोहो दीर्घत्व परिणाहो विष्कभो विशालता ।
(व्यभा १० टी प ३८)

आलब—आधार ।

आलबे वा आहारे वा पडिबधे वा । (ज्ञा १६/३१२)

---

१ देखें—परि॰ ३

आलीन—प्रमाणयुक्त ।

आलीनानि-सुश्लिष्टानि प्रमाणयुक्तानि । (ज्ञाटी प ७२)

आलुक्कई— देखता है ।

आलुक्कई पलुक्कई लुक्कई सलुक्कई य एगट्ठा ।[1]

(आवनि १०५८)

आलोइज्जइ—आत्मालोचन करता है ।

आलोइज्जइ निंदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणाए अब्भुट्ठिज्जइ पडिक्कमिज्जइ ।[2] (उपा १/७८)

आलोचन—अभिव्यक्ति ।

आलोचन विकटन प्रकाशनमाख्यान प्रादुष्करणमित्यनर्थान्तरम् ।

(उशाटी प ६०८)

आलोयण—अभिव्यक्ति ।

आलोयण ति वा पगासकरण ति वा अक्खण ति वा विसोहि त्ति वा वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २५)

आलोयणा— आलोचना ।

आलोयणा वियडणा सोही सब्भावदायणा चेव ।
निंदण गरिह विउट्टण, सल्लुद्धरण ति एगट्ठा ।।[3]

(ओनि ७९१)

आवस्सग—नित्यकर्म ।

आवस्सग ति वा अवस्सकायव्व अवस्सकरण ति वा अवस्सकरणिज्ज ति वा धुवकायव्व ति वा निग्गहो त्ति वा ।[4] (आवचू १ पृ ७९-८०)

आवस्सय—आवश्यक कर्म, नित्यकर्म ।

आवस्सय (आवासत) अवस्सकरणिज्ज धुवनिग्गहो विसोही य ।
अज्झयणछक्कवग्गो नाओ आराहणा मग्गो ।।[5]

(अनुद्वा २८)

---

१ देखे—परि० ३
२ देखे—परि० ३
३ देखे —परि० २
४ देखें—परि० २
५ देखे—परि० २

आवहति—करता है ।

आवहति कुव्वइ त्ति वा घडइ त्ति वा एगट्ठा ।[1]

(दशजिचू पृ ३२९)

आवीलए—आपीडन करे (तप करे) ।

आवीलए पवीलए निप्पीलए ।[2] (आ ४/४०)

आसदग—पादपीठ ।

आसदगो भद्दपीढ ति पादफल वट्टपीढक ।[3] (अवि पृ ६५)

आसाएइ—इच्छा करता है ।

आसाएइ तक्केइ पीहेइ पत्थेइ अभिलसइ ।[4] (उ २९/३४)

आसुरत्त—कुपित ।

आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे (मिसिमिसेमाणे) ।[5]

(उपा २/३२)

आस्पृष्ट—व्याप्त ।

आस्पृष्टा व्याप्ता आक्रान्ता । (अनुद्वामटी प १७८)

आहणइ—हिंसा करता है ।

आहणइ हिंसति अक्कोसति ।[6] (उचू पृ १०३)

आह्वान—अपलाप ।

आह्वान निन्हव व्यपलाप । (उचू पृ २९)

आहाकम्म—आधाकर्म (भोजन का एक दोष) ।

तत्थ इमे णामा खलु आहाकम्मस्स होंति चत्तारि ।
आहकम्म अहकम्मे य अहयम्मे अत्तकम्मे य ।।

(जीतभा १०९९)

आहाकम्म अधे य कम्मे आयाकम्मे य अत्तकम्मे य ।

(निभा २६६७)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० २
६ देखें—परि० ३

आहा (कम्म) अहे य कम्मे आयाह (आताह) कम्मे य अत्तकम्मे य ।[1] (बृकभा ६३७५)

आहित—आख्यात ।

आहितमाख्यात कथितमित्येकोऽर्थं । (सूचू १ पृ ६६)

आहुणिज्जमाणी—कंपित होती हुई ।

आहुणिज्जमाणी सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी । (ज्ञा १/६/१०)

आहेवच्च—आधिपत्य ।

आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त ।[2] (अत ३/८१)

इखिणी—तिरस्कार ।

इखिणी खिसणा णिदणा हीलणा । (सूचू १ पृ ५६)

इगालछारिगा—राख ।

इगालछारिगा व त्ति भूती भस्सो त्ति वा पुणो । (अवि पृ १०६)

इद—इन्द्र ।

सक्क-सहस्सक्ख-वज्जपाणि-पुरदरादीणि इदस्स एगट्ठियाणि ।[3] (दशजिचू पृ १०)

इच्छा—इच्छा ।

इच्छाच्छन्द इत्येकार्थं । (व्यभा ३ टी प ११२)

इच्छित—अभिलषित ।

इच्छितचिंतित पत्थिय । (आवचू १ पृ ४८३)

इच्छिय—अभिलषित ।

इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । (ज्ञा १/१/१०२)

इच्छिय पडिच्छिय इच्छिय-पडिच्छिय । (भ २/५२)

इज्जा—माता ।

इज्ज त्ति वज्जा माया मज्जा ।[4] (अनुद्वाचू पृ १३)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० २

४ देखें—परि० २

इट्ठ—प्रिय ।

इट्ठ कंत पिय मणुण्ण मणाम मणाभिराम-हिययगमणिज्ज ।
(औप ६८)

इट्ठ कंत पिय मणुण्ण मणाम पेज्ज । (औप ११७)

इट्ठा सुभा कता मणामा (सू चू १ पृ ४८)

इट्ठा वल्लभा कांता (ज्ञाटी प १५)

इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा उराला कल्लाणा सिवा धण्णा मंगल्ला । (स्था ६/६२)

इट्ठत्ता—प्रियता ।

इट्ठत्ताए कंतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छिय-त्ताए अणभिज्झियत्ताए । (भ ६/२२)

इत—गया हुआ ।

इत गत स्थित इत्यनर्थान्तरम् । (विभामहेटी १ पृ १७५)

इसि—ऋषि ।

इसि त्ति वा रिसि त्ति वा एगट्ठ । (उचू पृ २०८)

इस्सर—ईश्वर ।

इस्सरो पभू सामी । (आचू पृ ३५२)

ईश्वर—ईश्वर ।

ईश्वर प्रभु महेश्वर । (सूचू १ पृ ४१)

ईसिपब्भारपुढवी—ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी ।

ईसि ति वा, ईसिपब्भारा ति वा, तणूति वा, तणुतणूइ वा, सिद्धीति वा, सिद्धालए ति वा, मुत्तीति वा, मुत्तालए ति वा । (स्था ८/११०)

इसि त्ति वा, ईसिपब्भारत्ति वा, तणूइ वा, तणुयतरि ति वा, सिद्धित्ति वा, सिद्धालएत्ति वा,, मुत्तीति वा, मुत्तालएत्ति वा, बभेत्ति वा, बभवडेंसएत्ति वा, लोकपडिपूरणेत्ति वा, लोगग्गचूलिआइ वा ।
(सम १२/११)

ईसी इ वा, ईसीपब्भारा इ वा, तणू इ वा, तणूयरी इ वा, सिद्धी इ वा, सिद्धालए इ वा, मुत्ती इ वा, मुत्तालए इ वा, लोयग्गे इ वा, लोयग्गथूभिगा इ वा, लोयग्गपडिबुज्झणा इ वा, सव्वपाण (सुहावहा), सव्वभूय (सुहावहा), सव्वजीव (सुहावहा), सव्वसत्त (सुहावहा) इ वा।[1] (औप १९३)

ईहा—ईहा (मतिज्ञान का भेद)।

आभोगणया मग्गणया गवेसणया चिंता वीमंसा। (नदी ४५)

ईहाऽपोहो मार्गणा गवेषणा चिन्ता विमर्ष। (नदीटी पृ ६१)

उउमास—ऋतुमास (श्रावण)।

उउमासो कम्ममासो सावणमासो।[2] (व्यभा २ टी प ७)

उक्कंचण—माया।

उक्कंचण वंचण माया णियडि कूड कवड साइ संपओगबहुला।[3] (सू २/२/५८)

उक्कंपित—क्षिप्त

उक्कंपिते झंपिते खित्ते। (अवि पृ १४३)

उक्कड्ढ—खींचा हुआ।

उक्कड्ढमोकड्ढो अव्वोकड्ढे त्ति वा पुणो। (अवि पृ ८६)

उक्कसण—उत्कर्ष।

उक्कसण माणण नि य णगट्ठ। (व्यभा ४/३ टी प ४६)

उक्किट्ठ—उत्कृष्ट, शीघ्र।

उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए। (भ ११/१०६)

उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धुयाए। (ज्ञा १/१६/२०४)

उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए।[4] (आचूला १५/२७)

१ देखें—परि० २
२. देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४. देखें—परि० २

उक्खिन्न—अवकीर्ण ।

उक्खिन्ने विक्खिन्ने वितिगिण्णे विप्पइण्णे । (बृकचू प १४१)

उक्ति—उक्ति ।

उक्तिर्वचन वाग्योग । (अनुद्वाहाटी पृ २२)

उखड्डुमड्डु—बार बार ।

उखड्डुमड्डु त्ति वा बहुसो त्ति वा भूयो भूयो त्ति वा पुणो पुणो त्ति वा एगट्ठ ।[1] (निचूभा ४ पृ ३०८)

उग्गम— उद्गम ।

उग्गमो पसूई पभवो एमादि होति एगट्ठा । (पचा प ३४१)

उग्गय— उदय ।

उग्गय इति वा उदओ त्ति वा एगट्ठ । (निचूभा ३ पृ ७०)

उग्गविस— तीव्रविष ।

उग्गविस चडविस घोरविस महाविस ।[2] (भ १५/६३)

उग्गह—अवग्रह ।

उग्गह ति वा अवग्गहो त्ति वा एगट्ठ । (अनुद्वाचू पृ ३३)

उग्गह—अवग्रह । (मतिज्ञान का भेद)

ओगेण्हणया उवधारणया सवणया अवलबणया मेहा । (नदी ४३)

उग्गिण्हणया अवधारणया सवणया अवलबणया मेहा ।[3]

(भटी पृ ६३३)

उग्घायण—विनाश ।

उग्घायण ति वा उप्पायण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १००)

उच्चच्छंद— स्वच्छद ।

उच्चच्छदा अणिग्गहा अणियता ।[4] (प्र २/३)

उच्चयरक—ऊचा ।

उच्चयरक महतरक परग्घतरक । (अवि पृ १६)

---

१ देखें— परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४. देखें—परि० २

उच्चावच — उच्चावच ।

उच्चावचा अनुकूलप्रतिकूला असमञ्जसा । (अतटी प १८)

उच्छोलेंति — स्नान करते है ।

उच्छोलेति पधोवेति सिंचति सिणावेति ।[1] (आचूला ७/१९)

उज्जल — विपुल, दारुण ।

उज्जल विउल (तिउल) पगाढ कक्कस कडुय फरुस निट्ठुर चंड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास । (भ ५/१३८)

उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा ।[2] (अत ३/६०)

उज्जल बल विउल उक्कड खर फरुस पयड घोर बीहणग दारुणाग । (प्र १/२५)

उज्जु — मुनि ।

उज्जु त्ति वा अणगारो त्ति वा मुणि त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २४)

उज्जुगत्तण — ऋजुता ।

उज्जुगत्तण ति वा अकुटिलत्तण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ १८)

उज्जुय — ऋजुक ।

उज्जुय अकुडिल भूयत्थ ।[3] (प्र ७/१)

उज्झीयति — छोडता है ।

उज्झीयति विज्झीयति हायति त्ति परिहायति ।[4] (अवि पृ २५०)

उट्ठाण — पुरुषार्थ ।

उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे ।[5] (भ १२/१११)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३
५. देखें—परि० २

उद्ठित—बाहर निकला हुआ।

उट्ठिते पत्थिते वा णिग्गते वा णिल्लोकिते वा णिल्लालिते वा णिल्लिखिते वा अवसारिते अवसक्किते अपधजाते वा विप्पमुचणे अपगुते। (अवि पृ १६८)

उत्तरकरण—विशुद्धीकरण।

उत्तरकरण पायच्छित्तकरण विसोहीकरण विसल्लीकरण पदानि एगट्ठितानि।[1] (आवचू २ पृ २५१)

उत्तारिय—विमुक्त।

उत्तारिय ति वा विमोक्खित ति वा एगट्ठ। (सूचू १ पृ ८५)

उत्पादयति—उत्पन्न करता है।

उत्पादयति किरियति वा एगट्ठ।[2] (सूचू २ पृ ३६७)

उदग्ग—प्रधान।

उदग्ग पधान शोभनम्। (उचू पृ १६६)

उदग्र—ऊंचा।

उदग्र उच्च समुच्छ्रितम्। (उपाटी पृ १११)

उदार—मनोज्ञ।

उदारा शोभना मनोज्ञा। (सूटी १ प १८४)

उद्दवण—उद्रवण।

उद्दवण विराहणेगट्ठ। (जीतभा १७७८)

उद्दामित- बन्धन-मुक्त।

उद्दामिता अपनीतबन्धना प्रलबिता। (विपाटी प ४६)

उद्दिट्ठ—कथित।

उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियजियाओ।[3] (स्था ५/६८)

उद्दिष्ट—ईप्सित।

उद्दिष्टा ईप्सिता इत्यनर्थान्तरम्। (व्यभा २ टी प ६४)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० ३

३ देखें—परि० २

उद्‌दूढ—पीडित किया हुआ।

उद्‌दूढे जित-पराजिते विह्नले। (अवि पृ २५०)

उद्धृत—उखाडा हुआ।

उद्धृत उत्पाटितो गृहीत। (व्यभा २ टी प ५१)

उपदेस—उपदेश।

उपदेसो त्ति वा आदेसो त्ति वा पण्णवण त्ति वा परूवण त्ति वा एगट्ठा। (नदीचू पृ ४६)

उपनीयते—प्राप्त करता है।

उपनीयते त्ति वा उपपदरिसिते त्ति वा एगट्ठ।[1] (सूचू १ पृ १३२)

उपयोग—विमर्श।

उपयोग चिंता विमर्श इत्यनर्थान्तरम्। (बृकटी पृ १८४)

उपयोग—प्रस्तावित क्रम।

उपयोगोऽधिकार इति पर्याया। (आवहाटी २ पृ २३३)

उपश्रा—द्वेष।

उपश्रा द्वेष इत्यनर्थान्तरम्। (व्यभा १ टी प १०)

उप्पज्जते—उत्पन्न होता है।

उप्पज्जते त्ति वा बूया दिस्सते सूयते त्ति वा।[2] (अवि पृ ८३)

उप्पल—कमल।

उप्पलाण पउमाण कुमुयाण णलिणाण सुभगाण सोगंधियाण (सुगंधिए) पोंडरीयाण महापोंडरीयाण सयपत्ताण सहस्सपत्ताण कल्हाराण कोकणयाण अरविंदाण तामरसाण भिसाण भिसमुणालाण पुक्खलाण पुक्खलच्छिभगाण। (सू २/३/४३)

---

१ देखे—परि० ३

२ देखे—परि० ३

३ देखे—परि० २

उप्पायण—उत्पादन ।

उप्पायण सपायण णिव्वत्तणमो य होति एगट्ठा ।[1] (पचा प ३४७)

उप्पिलावण—प्लावन, बहा देना ।

उप्पिलावण ति वा प्लावण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २३१)

उब्भिण्ण— उद्भिन्न, अभिव्यक्त ।

उब्भिण्ण मुक्कमवगुत ति पागडिय दसिय बहिद्ध त्ता सुव्वत्त । (अवि पृ २४५)

उभय—युगल ।

उभओ त्ति वा दुहओ त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३१६)

उल्लोइत- ऊचा करना ।

उल्लोइते उस्सिने उच्चारिते उण्णामिते उत्थिते उपसारिते उपवप्पिते उपलोलिते उपकड्ढिते उपवत्ते उपणते उपणद्धे । (अवि पृ १६८)

उल्लोहित— चूने से पुता हुआ, आवृत ।

उल्लोहित उव्वनित तधा उच्छाडित ति वा । (अवि पृ १०६)

उवचरित—ज्ञात ।

उवचरिताधीतगमितमेगट्ठा । (निपीभा ५८)

उवचार—पठित, गृहीत ।

उवचारो त्ति वा अहीत ति वा आगमिय ति वा गृहीत ति वा एगट्ठ । (निपीचू पृ ३०)

उवचार ति अहीय ति अज्झीत ति वा एगट्ठ । (आचू पृ ३२६)

उवचारो ग्रहण अधिगम । (निपीचू पृ २६)

उवट्ठिय- उपस्थित ।

उवट्ठिओ त्ति वा अब्भुट्ठिओ त्ति वा एगट्ठा । (दशजिच पृ ३०८)

उवधि- माया ।

उवधि-णिकडि-सातिजोगकरणे । (अवि पृ २६३)

उवधी-णियडिजोगेसु सातिजोगमणज्जवे । (अवि पृ २६८)

---

१ देखे—परि० २

उवम्म—उपमा ।

उवम्म त्ति वा सरिस त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३०५)

उवयति - पास मे जाता है ।

उवयति त्ति वा पक्खतित्ति वा छुभति त्ति वा ।[1] (अनुद्वाचू पृ २१)

उववाय—आज्ञा ।

उववाओ निद्देसो आणा विणओ य होति एगट्ठा ।

(व्यभा ४/३५४]

उववूह—प्रशसा ।

उववूह त्ति वा पसंसत्ति वा सद्धाजणणति वा सन्धाघणति वा एगट्ठा ।

(निपीचू पृ २६)

उवसत—उपशान्त ।

उवसत समिए सहिते सया जए । (आ ५/७५)

उवसते उवट्ठिए पडिविरते । (सू २/२/४५)

उवसग—उपाश्रय ।

उवसग पडिसग सेज्जा आलय वसधी निसीहिया ठाणे एगट्ठ ।[2]

(बृकभा ३२९५)

उवसम—उपशम ।

उवसम णिव्वाण समण सति । (आचू पृ २३७)

उवसमण - उपशमन ।

उवसमण ति वा णामण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १२६)

उवसमसार—उपशम का सार ।

उवसमसार उवसमप्पभव उवसममूल । (दश्रुचू प ७०)

उवहि- उपकरण ।

उवही उवग्गहे सगहे य तह पग्गहुग्गहे चेव ।
भडग उवगरणे य करणेवि य हुति एगट्ठा ॥[3] (ओनि ६६६)

१ देखे—परि० ३

२ देखे— परि० २

३ देखें— परि० २

उवेइ—जाता है ।

उवेइ त्ति वा गच्छइ त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४८-४६)

उवेति वा वयति वा एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ २३४)

उवेति—नीचे उतरता है ।

उवेति त्ति वा उत्तरतित्ति वा अवतरतित्ति वा एगट्ठ ।[2]
(अनुद्वाचू पृ २१)

उवेहति

उवेहति उत्प्रेक्षते विशेषयति ।[3] (निचूभा ४ पृ ३०)

उव्वत्तेइ—स्पंदित करता है ।

उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ ससारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ टिट्टियावेइ ।[4] (ज्ञा १/३/२१)

उसभ—बैल ।

उसभो बलिवद्दो वच्छको तण्णको त्ति वा । (अवि पृ ६२)

उस्सग्ग—उत्सर्ग ।

उस्सग्ग विउस्सरणमुज्भणा य अवगिरण छड्डुण विवेगो ।
वज्जण चयणुम्मुअणा पडिसाडण साडणा चेव ।।
(आवनि १४५१)

उस्सय—उत्सव ।

उस्सयो त्ति समासो त्ति विहि जण्णो छणो त्ति वा । (अवि पृ १२१)

उस्सिघण—मर्दन ।

उस्सिघण-मक्खणऽब्भगण उच्छदण उव्वट्टण । (अवि पृ १६३)

ऊसढ—ऊंचा ।

ऊसढ ति वा उच्च ति वा एगट्ठ । (दशजिचू पृ १६६)

ऊहित— चिंतित ।

ऊहित गुणित चिंतित एगट्ठा । (आचू पृ १७१)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३

ऋ- सरजुल ।

ऋजु प्रगुणमकुटिलम् । (प्रसाटी प २४५)

ऋजु अकुटिल निरुपध्र । (सूचू १ पृ ३६)

ऋतुसवत्सर—कर्म सवत्सर का एक नाम । वह सवत्सर जिसमे पूरे ३६० अहोरात्र होते है ।

ऋतुसवत्सर सावनसवत्सरश्चेति पर्यायौ ।[1] (स्थाटी प ३२८)

ऋषि—ऋषि ।

ऋषय महर्षय यतय । (दशहाटी प ११६)

एइज्जमाण—प्रकपित होता हुआ ।

एइज्जमाणा वेइज्जमाणा पकपमाणा पभ्रभमाणा ।

(जीवटी प २११)

एगपडिरय—एक रूप मे कहा जाने वाला ।

एगपडिरय ति वा एगपज्जाय ति वा एगणामभेद ति वा एगट्ठा ।

(आवचू १ पृ २६)

एजणा—प्रकपन ।

एजणा वेदणा खोभणा घट्टणा फदणा चलणा उदीरणा ।[2]

(इभा ११/१)

एजन—कम्पन ।

एजन कम्पन गमन क्रियेत्यर्थान्तर । (सूचू २ पृ ३३६)

एसणा—एषणा ।

एसण गवेसणण्णेसणा य गहण च होति एगट्ठा । (पचा पृ ३५१)

एसण गवेसणा मग्गणा य उग्गोवणा य बोद्धव्वा ।
एए उ एसणाए नामा एगट्ठिया होति ।। (पिनि ७३)

ओघ- सामान्य ।

ओघ सक्षेप समास सामान्यमित्येकोऽर्थ । (ओनिटी पृ ४)

ओघेन सामान्येन उत्सर्गत । (पचा पृ १२०)

---

१ देखे—परि० २

२ देखें—परि० २

ओधावति— दौडता है ।

ओधावति त्ति वा बूया अहिधावति णोल्लति ।[1] (अपि पृ ८०)

ओभासेइ— उद्योतित करता है ।

ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ । (भ १/२५७)

ओभासति उज्जोवेंति तवेति पगासिति ।[2] (सूय टी प ६३)

ओयसि—ओजस्वी ।

ओयसी तेयसी वच्चसी जससी ।[3] (ज्ञा १/१/४)

ओयण— भात ।

ओयणो कूरो भत्त । (सूचू २ पृ ३३०)

ओराल—विपुल ।

ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण मस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण । (भ ३/१०४)

ओराल (उराल) विस्तराल विसाल । (अनुद्वाचू पृ ६०-६१)

ओराले त्ति उदार प्रधान ।[4] (ज्ञाटी प ८)

ओवास—अवकाश ।

ओवासो अवगासो स्थानम् । (निचूभा ४ पृ १८७)

ओवीलेमाण—पीटे जाते हुए ।

ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे तज्जेमाणे तालेमाणे ।[5] (विपा ३/६)

ओसारित— अपसृत ।

ओसारिते ओमत्थिते ओणामिते ओवट्टिते ओलोकिते ओकड्ठिते ओवत्ते ओणते उग्गहिते उच्छुद्धे ओतारिते ओतिण्णे उक्खित्ते ओमुक्के । (अवि पृ १७१)

ओसरिते ओमथिते ओणामिते ओवट्टिते ओलोलिते ओकड्ढिते ओवत्ते ओणते ओछुद्धे ओतारिए ओमुक्के । (अवि पृ १६६)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

ओसारेति—फाडता है।

ओसारेति पाटयति स्फाटयति।[1] (अनुद्वाचू पृ ५६)

ओह—ओघ, सक्षेप।

ओह सक्षेप स्तोक। (निचूभा २ पृ १८८)

ओहे पिंड समासे सखेवे चेव होति एगट्ठा। (ओनिभा १)

ओहबल—

ओहबले अइब्बले महब्बले। (उपाटी पृ० १२६)

ओहय—पराजित।

ओहय उद्धिय निज्जित पराजित। (आवचू १ पृ ४७६)

ओहयकटय—उद्घृतकटक।

ओहयकटय निहतकटय मलियकटय उद्धियकटय अप्पडिकटय अकटय। (आवचू १ पृ ४७६)

ओहयकटय निहयकटय गलियकटय उद्धियकटय अकटय। (ज्ञाटी प ६०)

कखइ आकाक्षा करता है।

कखइ पत्थेइ पीहेइ अभिलसइ। (राज ६७७)

कखनि पत्थति गच्छति एगट्ठा[2]। (आचू पृ २०५)

कची- करधनी।

कची व रसणा व त्ति जबूका मेखल त्ति वा।
कटक त्ति व जो बूया, तधा सपडिक त्ति वा॥[3] (अवि पृ ७१)

कत—कान्त।

कते पियदसण सुरूवे पडिरूवे। (भ १३/१०२)

कते सोभन रुइल रमणिज्ज। (जबू २/१५)

---

१ देखे—परि० ३

२ देखे—परि० ३

३ देखे—परि० २

कंति—कान्ति ।

कंतीए दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए ।[1]

(ज्ञा १/१०/२)

कंदण—क्रन्दन ।

कंदणता सोयणता तिप्पणता परिदेवणता ।[2] (स्था ४/६२)

कक्क—रत्न विशेष ।

कक्क ति वा रत्त ति वा एगट्ठा ।[3] (अनुद्वाचू पृ ५१)

कक्क—माया ।

कक्ककुरुया य माया नियडीए डभण ति ।[4] (प्रसा ११५)

कक्कस—कर्कश ।

कक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे । (औप ४१)

कक्खडो—कर्कश ।

कक्खडीओ त्ति कठिने निर्मांसे । (उपाटी पृ १०२)

कज्ज—कार्य ।

कज्ज ति वा कारण ति वा एगट्ठ । (व्यभा ६ टी प ४७)

कडग—कंकण ।

कडग-रुचक सूचीका । (अवि पृ १६३)

कडपल्ल—धान्यशाला ।

कडपल्लत्ति वा तणपल्लत्ति वा धन्नसालत्ति वा वलयत्ति वा एगट्ठा ।

(बृकचू प १४१)

कडीय—करधनी ।

कडीय कंचिकलापक मेखलिका कडिउपकाणि । (अवि पृ १६३)

कढण—निकालना ।

कढण आगरिसण उद्धरण । (निपीचू पृ १२२)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

कण्ह—कृष्ण, काला ।

कण्ह णील ति वा बूया कालक असित ति वा ।
असित किसिण व त्ति हरित ति व जो वदे ॥

(अवि पृ ६२)

कण्हराति—कृष्णराजि ।

कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा, मघा इ वा, माघवइ इ वा, वाय-फलिहा इ वा, वायपलिक्खोभा इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा ।[1] (भ ६/१०३)

कतत्थ—कृतार्थ ।

कतत्थो कतकज्जो त्ति सपत्तमणोरधो त्ति वा । (अवि पृ १२१)

कप्प—मर्यादा ।

कप्पो मेरा मज्जाया । (दश्रुचू प ६६)

कप्प—आचार ।

कप्पो त्ति वा मग्गो त्ति वा आयारो त्ति वा धम्मो त्ति वा एगट्ठा ।
(आचू पृ २१७)

कप्पिय—फाडा हुआ ।

कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो । (उ १९/६२)

कमल—कमल ।

कमल पद्म अरविन्द पकज सरोज तामरसजलरुह ।[2]
(विभाकोटी पृ ३६६)

कम्म—कर्म ।

पावे वज्जे वेरे पणगे पके खुहे असाए य ।
सगे सल्ले अरए निरए धुत्ते य एगट्ठा ॥
कम्मे य किलेसे य समुदाणे खलु तहा मइल्ले य ।
माइणो अप्पाए य दुप्पक्खे तह सपराए य ॥

(दश्रुनि १२२-२३)

---

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

कम्म ति वा खुह ति वा वोण्ण ति वा कलुस ति वा वज्ज ति वा वेर ति वा पको त्ति वा मलो त्ति वा, एते एगट्ठिता ।[1]

(निचूभा ४ पृ २७४)

कयार—कचरा ।

कयारो त्ति व जो बूया, पसुको ति व जो वदे ।
धूली रया ति रेणु त्ति, सारो सुक्को त्ति वा पुणो ।

(अवि पृ १०६)

करण—प्रयत्न ।

करण आरम्भ प्रयत्न इत्येकोऽर्थ । (बृकटी पृ २६८)

करुण—करुण ।

करुण दीन विस्वर । (सूटी १ प १३५)

करोडक—कटोरा ।

करोडको त्ति वा बूया अधवा वट्टमाणक ।
अलदको जबूफलक तधा मल्लकमूलक ॥[2] (अवि पृ ६५)

कलह—कलह ।

कलहे ति वा भडणे ति वा डमरे ति वा एगट्ठा । (उचू पृ १६७)

कला—अश ।

कला अशा अवयवा इति पर्याया । (विभाकोटी पृ ३)

कलुस—कलुष ।

कलुस किलिट्ठमप्पसत सावज्ज । (निपीचू पृ २३)

कल्प—आचार ।

कल्पो व्यवहार आचार इत्यनर्थान्तरम् । (व्यभा १ टी प ५१)

कल्पो विधिराचार इति पर्याया । (प्रसाटी प २२२)

कल्याण—कल्याण ।

कल्याण श्रेय शिवमनुपद्रवम् । (भटी प ११६)

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० २

कल्लाण—कल्याण ।

कल्लाण ति वा सोहण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २०३)

कवड—कपट ।

कवड ति कइयव ति य सठयावि य हुति एगट्ठा । (प्रसा १६७)

कषाय—कषाय ।

कषाय कलुष बहुलम् । (निचूभा २ पृ १२३)

कस—कृश ।

कस परिकस व त्ति अणु ति अणुक ति वा ।
दुब्बलो ति किसो व त्ति उल्लुत्तो ति व जो वदे ॥
(अवि पृ ११४)

कसाय—कषाय ।

कसाओ त्ति वा भावो त्ति वा परियाओत्ति वा एगट्ठा ।[1]
(दशजिचू पृ १२१)

कसिण—पूर्ण ।

कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एकग्गहणगहिया । (भ २/१३४)

काउस्सग्ग—कायोत्सर्ग ।

काउस्सग्गोत्ति वा जोगनिग्गहोत्ति वा । (आवचू २ पृ २५६)

काउसग्गोत्ति वा विउसग्गोत्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २६)

काण—काना व्यक्ति ।

काणा दीपकाणा फरला ।[2] (प्रटी प २५)

कान्त—कमनीय ।

कान्त कमनीयोऽभिलषणीय । (अत टी प ६)

कामगम—मनोरम ।

कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण मणोरमाण । (जबू ५/१७८)

---

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

काय—शरीर ।

काय सरीर देहे बुंदी य चय उवचय य सघाए ।
उस्सय समुस्सय वा कलेवरे भत्थ तण पाणु ॥[1]
(आवनि १४४६)

कारण—कारण ।

कारण ति वा कज्ज ति वा एगट्ठ । (व्यभा १ टी १५८)

कारण ति वा कारग ति वा साहण ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ ३७२)

काल—समय ।

कालो त्ति व समओ त्ति वा अद्धा कप्पो त्ति एगट्ठ ।[2]
(व्यभा ४/३३०)

काहापण—कार्षापण (सिक्का) ।

काहापणो खत्तपको पुराणो ति व जो वदे ।
सतेरको त्ति । (अवि पृ ६६)

किट्टते—कथन करता है ।

किट्टते ति वा कहेति त्ति वा एगट्ठा ।[3] (आचू पृ २५०)

कित्तइस्सामि—कथन करु गा ।

कित्तइस्सामि वण्णिस्सामि परूवेस्सामि कहेस्सामि ।[4] (दश्रुचू प ३)

कित्तण—कीर्तन ।

कित्तण पससणा वि अ एगट्ठा । (आवनि १०९२)

कित्ति—कीर्ति ।

कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठया एगट्ठा ।[5] (दशजिचू पृ ३२८)

किब्विस—पाप ।

किब्विस कलुस कल्मष पापमित्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३५१)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३
५. देखें—परि० २

कीव—क्लीब ।

कीवाण कायराण कापुरिसाण । (अत ३/७३)

कुच्चि—मायावी ।

कुची कुटिलो मायावी । (व्यभा ३ टी प ४३)

कुडल—कुडल ।

कुडल वा बको व त्ति मत्थगो तलपत्तक ।
दक्खाणक कुरबको अधवा कण्णकोवगो ।।
कण्णपीलो त्ति वा बूया कण्णपूरो त्ति वा पुणो ।
कण्णस्स खीलको व त्ति अधवा कण्णलोडको ।।[1] (अवि पृ ६५)

कुच्छति—निदा करता है ।

कुच्छति गरहति निदति ।[2] (निपीचू पृ १६)

कुट्टण—पीटना ।

कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण । (सू २/२/५८)

कुब्ज—कुबडा ।

कुब्जा कुब्जिका वक्रजघा । (जबूटी प १६१)

कुब्ब—निम्न ।

कुब्ब त्ति निम्न क्षामम् । (उपाटी पृ ६७)

कुल—परिवार ।

कुल कुटुब यूथम् । (प्रटी प ३७)

कुल—सघ ।

कुल वा सघ वा गण वा ।[3] (व्यभा ४/३ टी प २६)

कुशल—कुशल ।

कुशलो दक्ष क्षुण्ण । (व्यभा ४/१ टी प ५५)

कुशला निपुणा मोक्षमार्गाभिज्ञा । (सूटी १ प १६०)

कूजण—कूजन, विलपन ।

कूजण कक्करण तिप्पण विलवण । (दशजिचू पृ ३१)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० ३
३ देखें—परि० २

कूड—माया।

कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण पणिहि-वचण। (प्र ३/१४)

कृत्स्न—सम्पूर्ण।

कृत्स्ना परिपूर्णका गुरुका। (व्यभा ४ टी प २२)

कृश—तुच्छ।

कृश तनु तुच्छमित्यनर्थान्तरम्। (सूचू १ पृ २२)

केज्जूर—हाथ का आभूषण (बाजूबध)।

केज्जूर तलभ व त्ति कडूग परिहेरग।
ओवेढगो वलयग तधा हृत्थकलावगो॥[1] (अवि पृ ६५)

केतन—सकेत।

केतन सकेतन सकेतो। (व्यभा ५ टी प १७)

केतु—चिह्न।

केतु चिह्न ध्वज। (ज्ञाटी प २०)

केवल—परिपूर्ण।

केवल ति वा, एग ति वा, केवलणाण ति वा, अणिवारियवावार ति वा, अविरहितोवयोग ति वा, अणत ति वा, अविकप्पित ति वा, इमाणि एगट्ठियाणि। (बृकटी पृ १५)

केवले पडिपुण्णे णेयाउए ससुद्धे। (सू २/२/५५)

केवलमेग सुद्ध सकलमसाधारण अणत।[2] (नदीचू पृ १४)

कोह—क्रोध।

कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा सजलणे कलहे चडिक्के भडणे विवादे।[3] (भ १२/१०३)

क्रमति—चेष्टा करता है।

क्रमति घडति युज्यते।[4] (निपीचू पृ ६४)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३

किरिया—क्रिया ।

क्रिया कर्म परिस्पन्द इत्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३१६)

क्रिया कर्मबन्ध इत्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३१७)

कोध—क्रोध ।

क्रोध कोपो रोषोऽनुपशम । (अनुद्वाहाटी पृ ६२)

क्षपणा—निर्जरा ।

क्षपणा अपचयो निर्जरा इति पर्याया (अनुद्वामटी प २३६)

क्षामित—उपशमित ।

क्षामितमिति वा व्यवशमितमिति वा विनाशितमिति वा क्षपितमिति वा एकार्थानि । (बृकटी पृ ७५२)

क्षिप्त—पागल ।

क्षिप्त क्षिप्तचित्त अपहृतचित्त । (व्यभा ४/१ टी प २७)

क्षुद्र—तुच्छ ।

क्षुद्रं बालै शीलहीनैर्वा । (उशाटी प ४७)

खडित—खडित ।

खडितो पडितो व त्ति भिण्णो मतुलितो त्ति वा । (अवि पृ १२१)

खत—क्षान्त ।

खतेऽभिणिव्वुडे दते वीतगेही । (सू १/८/२७)

खतस्स दतस्स जिइदियस्स[1] । (ज्ञा १४/७६)

खद्ध—शीघ्र ।

खद्ध वेइय तुरिय चवल साहस ।[2] (प्र ८/१२)

खमति—सहन करता है ।

खमति मरिसेति सहति ।[3] (दश्रुचू प २६)

खमा—क्षमा ।

खम त्ति वा तितिक्ख त्ति वा कोधनिग्गहे त्ति वा एगट्ठा ।

(दशजिचू पृ १८)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

खमिति—सहन करता है।

खमिति अहियासेति सहति।[1] (आचू पृ ३८१)

खर—कठोर।

खर फरुस णिट्ठुर। (निचूभा ३ पृ २)

खलुंक—अविनीत।

खलुका गली मरालो शठो प्रतिलोमो अविनीत इत्येकार्थं।[2] (उचू पृ २७०)

खात—प्रसिद्ध।

खात प्रथित समृद्ध। (उचू पृ २२२)

खामिय—उपशमित।

खामिय वितोसिय विणासिय च झविय च होंति एगट्ठा। (बृकभा २६८७)

खिंखिणिका—पायल।

खिंखिणिक खत्तियधम्मका पादमुद्दिका पादोपकाणि। (अवि पृ १६३)

खिंसइ—निंदा करता है।

खिंसइ निंदति परिभवति।[3] (सूटी १ प २४३)

खिज्जणिया—उपालंभ।

खिज्जणियाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य।[4] (ज्ञा १८/३४८)

खीण—क्षीण।

खीणे निराए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे। (भ ६/१३४)

खीण खविय विणट्ठ विद्धत्थ। (अनुद्वाचू पृ ४३)

खुड्डुतर—छोटा।

खुड्डुतराए चेव हस्सतराए चेव णीयतराए चेव। (जंबू ४/५४)

---

१ देखे—परि० ३
२ देखे—परि० २
३ देखे—परि० ३
४ देखे—परि० २

खुड्डुलक—छोटा ।

खुड्डुलक-थोक-डहरक-अणुक-सुहुम । (अवि पृ २३७)

खेम—क्षेम, कुशल ।

खेम सिव सुभिक्ख निरुवसग्ग । (व्यभा ४/३/२०६)

खेम सिव सुभिक्ख पसतडिंबडमर । (आवचू १ पृ ४७६)

खेम—क्षेम ।

खेम सिव अणुत्तर । (उचू पृ १६३)

खोडभग—राजकुल का देय द्रव्य ।

खोडभगो त्ति वा उक्कोडभगो त्ति वा अक्खोडभगो त्ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ २८०)

खोरक—कटोरा, खप्पर ।

खोरक खोरको व त्ति वट्टक ति व जो वदे ।
मुंडक ति व जो बूया, पीणक ति व जो वदे ।।[1] (अवि पृ ६५)

गड—फोडा ।

गड वा अरइय वा पिडय वा । (आचूला १३/२८)

गड्डि—अविनीत ।

गड्डी गली मराली एगट्ठा ।[2] (उनि ६५)

गंडूपक—पैर का आभूषण ।

गडूपक ति वा बूया तधा खत्तियधम्मक ।
तधा णीपुरग व त्ति तधा अगजक ति वा ।।
पापढको त्ति वा बूया पादखडुयक ति वा ।
परमासको त्ति वा बूया तधा पादकलावगो ।।[3] (अवि पृ ६५)

गडूपयक—पैर का आभूषण ।

गडूपयक णीपुराणि परिहेरकाणि । (अवि पृ १६३)

गड्डिक—भाग्यशाली ।

गड्डिको पोट्टहो व त्ति अड्डगो सुभगा त्ति वा ।[4] (अवि पृ ६२)

---

१ देखे—परि० २
२. देखे—परि० २
३. देखे—परि० २
४. देखे—परि० २

गण—गण, समूह ।

गणे काए व निकाए, खधे वग्गे तहेव रासी य ।
पुंजे पिंडे निगरे, सघाए आउल समूहे ॥[1] (अनुद्वा ७३)

गणणमतिक्कंत—असख्येय ।

गणणमतिक्कत त्ति वा असखेज्ज त्ति वा एगट्ठा। (आवचू १ पृ ५४)

गत—प्राप्त ।

गत प्राप्त स्थित इत्यनर्थान्तरम् । (नदीटी पृ ५८)

गत—मृत ।

गते विपन्ने मृते । (व्यभा ४/१ टी प ६६)

गमित—प्राप्त ।

गमित प्रदर्शित उपनीत अर्पितम् । (आवचू १ पृ ३७४)

गय—मृत ।

गयसि वा चुयसि वा मयसि वा । (ज्ञा १/७/६)

गरहित—गर्हित, निदित ।

गरहित ति वा अकथ्य ति वा अविवित्त ति वा परिहरणीय ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ६०९)

गलन—विनाश ।

गलन गालो विनाश । (उचू पृ ४)

गहण—अरण्य ।

गहण वण ति वा बूया रन्न व गहण ति वा । गहणा अडवी व त्ति ।[2] (अवि पृ ११८)

गाढीकय—सघन किया हुआ ।

गाढीकयाइ चिक्कणीकयाइ सिलिट्ठीकयाइ खिलीभूताइ । (भ ६/४)

---

१ देखे—परि० २ २. देखें—परि० २

गाहा—गृह ।

गाहा इति घरमिति गिहमिति वा एते त्रयोऽप्येकार्था ।
(व्यभा ८ टी प १)

गिद्ध—गृद्ध ।

गिद्ध त्ति वा सत्त त्ति का मुच्छिय त्ति वा एगट्ठ । (सूचू १ पृ १०८)

गिरा—वाणी ।

गिर त्ति वाणी वयण । (निचूभा ४ पृ २६५)

गीय—ज्ञात ।

गीय मुणितेगट्ठ । (बृकभा ६८६)

गुण—गुण ।

गुणो त्ति वा पज्जवो त्ति वा एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ २६६)

गुण—उपकार ।

गुण साधनमुपकारमित्यनर्थान्तरम् । (उशाटी प ६६)

गुणेति—गुनता है, परावर्तन करता है ।

गुणेति त्ति वा परियट्टति त्ति वा एगट्ठा ।[2]
(दशजिचू पृ २६७)

गुरुक—प्रायश्चित्त का एक प्रकार ।

गुरुकमिति वा अनुद्घातीति वा कालकमिति वा गुरुकस्य नामानि ।[3]
(बृकटी पृ ६१)

गुलोवलद्धीय—द्रवगुड, फाणित ।

गुलोवलद्धीय कक्कब वा फाणित वा । (अवि पृ १८२)

गूहण—माया ।

गूहण गोवण णूमण पलियचणमेव एगट्ठ । (जीतभा १७७४)

गृह्णाति—प्राप्त करता है ।

गृह्णाति उपलभत इति पर्याया ।[4] (नदीटी पृ ५८)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३

गृहिपर्याय—गृहस्थ पर्याय ।

गृहिपर्यायो जन्मपर्याय इत्येकोऽर्थः । (बृकटी पृ ४२५)

गेहि—आसक्ति ।

गेही कख त्ति इति वा एगट्ठा । (आचू पृ २१२)

गोज्झग—देव, इन्द्र ।

गोज्झगो गोज्झकपती देवराय त्ति वा पुणो । (अविपृ ६२)

गोणस—सर्प ।

गोणस मंडलि दव्वीकर मउली ।[1] (प्र २/१२)

गोधिका—वाद्यविशेष ।

गोधिका दर्दरिकेति पर्याया । (स्थाटी प ३७६)

गोब्बर—गोबर ।

गोब्बरो त्ति करीसो त्ति सुक्ख वा छगण पुणो । (अवि पृ १०६)

गोयर—विषय ।

गोयरो विसतो त्ति एगट्ठा । (आचू पृ २५१)

ज्ञान—ज्ञान ।

ज्ञानमागमितमित्येकार्थम् ।

ज्ञानमागममित्येकार्थम् । (व्यभा १० टी प ३१)

ज्ञानमिति वा भाव इति वा अध्यवसाय इति वा उपयोग इति वा एकार्थम् । (बृकटी पृ ८)

ज्ञान ज्ञा संवित्ति । (आवमटी प ३६६)

ग्रथित—आसक्त ।

ग्रथिता संबद्धा अभ्युपपन्ना । (सूटी १ प ४८)

ग्राम्यवचन—अशिष्ट वचन ।

ग्राम्यवचन कर्कश कटुक निष्ठुर । (निचूभा ४ पृ २५७)

---

१ देखें—परि० २

घट—घट।

घट कुट कुम्भ कलश इत्यादि।[1] (विभामहेटी १ पृ ४००)

घट्टण--पूछना।

घट्टण विचालण ति य पुच्छा विप्फालणेगट्ठा। (बृकभा ५३७६)

घट्टण वियारण ति य पुच्छा विप्फालणेगट्ठा। (निचूभा ४ पृ ७७)

घट्ठ—साफ-सुथरा।

घट्ठा मट्ठा णीरया। (जबूटी प ४३)

घट्ठ वा मट्ठ वा समट्ठ वा सपघूमिय वा।[2] (आचूला ५/१२)

घडितव्व--चेष्टा करनी चाहिए।

घडितव्व जतितव्व परक्कमितव्व। (स्था ८/१११)

घण - सघन।

घण-निचिय-निरतर-णिच्छिछ्हाइ। (राज ७१६)

घाट—सौहार्द मित्रता।

घाट सघाट सौहार्दमित्येकोऽर्थ। (बृकटी पृ २७७)

घात - हिसा।

घातो हिसा मारण दड अधर्म इत्यनर्थान्तर। (सूचू २ पृ ३३८)

घाय—घात।

घाय विणासो य एगट्ठा। (जीतभा २३४)

घायाए वहाए उच्छायणयाए।[3] (राज ६३५)

घायय—घातक।

घायए मारए पडिणीए। (भ १५/१४१)

घोस—गोकुल।

घोसो त्ति गोउल ति य एगट्ठ। (बृकभा ४८७८)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३. देखें—परि० २

चएज्ज—छोड दे ।

चएज्ज त्ति वा जहेज्ज त्ति वा एगट्ठा ।[२] (दशजिचू पृ ३६६)

चंचल—चचल ।

चचल गलत सलोल चवल फुरफुरेंत निल्लालिय । (ज्ञा १/८/७२)

चडाल—चाडाल ।

हरिएसा चडाला सोवागा मयग बाहिरा पाणा ।
साणघणा य मयासा सुसाणवित्ती य नीया य ॥[१] (उनि ३२३)

चद—चाद ।

चदो ससी सोमो उडुपती । (आवचू १ पृ ६०६)

चद्र—चन्द्रमा ।

चन्द्र शशी निशाकर उडुपति रजनीकर । (आवचू १ पृ ४६१)

चत्तदेह—त्यक्तदेह ।

चत्तदेह देहोवरओ त्ति एगट्ठा । (अनुद्वाहाटी पृ १४)

चन्द्रिका—चादनी ।

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना तथा चन्द्रातप । (सूर्यटी प ६४)

चयाहि— त्याग दो ।

चयाहि त्ति वा छड्डेहि त्ति वा जहाहि त्ति वा एगट्ठा ।[३]
(दशजिचू पृ ८६)

चरण—गति करना ।

चरण गतिर्गमनम् । (आटी प ३७४)

चरण—चारित्र, शील ।

चरण वृत्त मर्यादेत्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ४४३)

चरति—खाता है ।

चरति त्ति वा भक्खति त्ति वा एगट्ठा ।[४] (दशजिचू पृ ३१६)

---

१ देखें—परि० २
२. देखें—परि० ३
३. देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३

चरति चलता है।

चरति गच्छति चञ्चूर्यंत इत्येकोऽर्थः ।[1] (सूचू १ पृ १९८)

चर्यते—प्राप्त करता है।

चर्यते गम्यते प्राप्यते ।[2] (प्रसाटी प २९१-९२)

चलित—कंपित।

चलित विचलित वा वि चल ति चलिय ति वा। (अवि पृ ८०)

चहित—दृष्ट।

चहित ति चाहित प्रेक्षित निरीक्षित दृष्टमित्यनर्थान्तरम्।

(नंदीचू पृ ४९)

चहिय—पूजित।

चहिय महिय पूइए। (उपा ७/१०)

चाउम्मासित—चातुर्मासिक।

चाउम्मासितो सवच्छरिउ त्ति वा वासारत्तिउ त्ति वा एगट्ठ ।[3]

(दश्रुचू प ६९)

चाएति—सहन करता है।

चाएति साहति सक्केइ वासेइ तुट्ठाएति वा धाडेति वा एगट्ठा ।[4]

(आचू पृ १०७)

चार—गति।

चारश्चरण गमनमित्येकार्थं । (व्यभा ३ टी प ११४)

चार—चर्या।

चारो चरिया चरण एगट्ठ। (आनि २४६)

चालिज्जति—चलाया जाता है।

चालिज्जति वा उच्छल्लिज्जति वा उत्क्षिप्यति वा ।[5]

(सूचू २ पृ ३४७)

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० ३

चालित—चलाया हुआ।

चालिते त्ति उदीरिते त्ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १४१)

चालित्तए—कंपित करने के लिए।

चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा।

(ज्ञा १/८/७४)

चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा।[1] (ज्ञा १/८/७६)

चितेहिति—चिन्तन करेगा।

चिंतेहिति त्ति वा मतेहिति त्ति वा बूया णिच्छय णाहिनि त्ति।[2]

(अवि पृ ८४)

चिक्कण—निबिड।

चिक्कण ति वा दारुण ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २३२)

चिट्ठ—प्रगाढ।

चिट्ठ ति वा गाढ़ ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १४१)

चित्त—चित्त।

चित्त मनोऽर्थविज्ञानमिति पर्याया। (अनुद्वाहाटी पृ २३)

चित्त मनो विज्ञानमिति पर्याया।[3] (अनुद्वामटी प ३५)

चिर—शाश्वत।

चिर-दीह-सस्सत। (अवि पृ २३६)

चिरसंसिट्ठ—चिरपरिचित।

चिरसंसिट्ठो चिरसंथुओ चिरपरिचिओ चिरजुसिओ चिराणुगओ चिराणुवत्ती। (भ १४/७७)

चूला—शिखर।

चूला विभूसण ति य, सिहर ति य होति एगट्ठा। (निपीभा ६६)

चूल ति वा अग्ग ति वा सिहर ति वा एगट्ठा। (निपीचू पृ २)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० ३

३ देखें—परि० २

चेतित – कृत ।

चेतित कृत चेत्येकार्थम् । (बृकटी पृ १०१५)

चेयण्ण—चैतन्य ।

चेयण्ण ति वा उवयोगि त्ति वा अक्खर त्ति वा एगट्ठा ।[१]

(दशजिचू पृ ४६)

चोदित – पीडित किया हुआ ।

चोदिता अवधिता तज्जिता बाधिता । (सूचू १ पृ ८८)

चोयणा – प्रेरणा ।

चोयणा प्रेरणा नियोजना । (निपीचू पृ १८)

चोक्ष -- अच्छा ।

चोक्षपवित्रौ एकार्थौ । (प्रटी प १०४)

छंद—इच्छा ।

छदो गेही अभिलासो एगट्ठ । (आचू पृ ४१)

छदो लोभ इच्छा प्रार्थना । (सूचू १ पृ ६६)

छदोऽभिप्रायोऽभिलाष । (सूचू २ पृ ३२४)

छदेण अभिप्रायेण यथारुचि । (ज्ञाटी प ६३)

छंद—निमत्रण ।

छद निकाय निमतण एगट्ठा । (निभा २१०६)

छदण—निमत्रण ।

छदण ति वा णिकायण ति वा णिमतण ति वा एगट्ठ ।

(निचूभा २ पृ ३५०)

छज्जिय—टोकरी ।

छज्जिय पडलग चगेरिय ।[२] (राज १२)

छड्डिय—छर्दित, त्यक्त ।

छड्डिउ त्ति वा जढो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २३१)

छड्डे—छोडदे ।

छड्डे चए वोसिरे ।[३] (आचू पृ ३७६)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

छन्द—आगम ।

छन्दो वेद आगम इत्यनर्थान्तरम् ।[1] (उशाटी प २२३)

छन्न—आच्छादित ।

छन्नमप्रकाशमदर्शनमनुपलब्धिरित्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ४३३)

छड्डित—छर्दित, त्यक्त ।

छर्दितमुज्झित त्यक्तमिति पर्याया । (प्रसाटी प १५४)

छाया—छाया ।

छाया इ य अंधकारे इ य एगट्ठे । (सूर्य १६/६)

छिंदत—छेदता हुआ ।

छिंदतो वा भिंदतो वा फालेतो वा विवाडेंतो वा णिक्खणतो ।

(अवि पृ १४४)

छिंदति—छेदन करता है ।

छिंदति विच्छिंदति भिंदति ।[2] (स्था ५/७३)

छिड्ड—छिद्र ।

छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा । (राज ७१८)

छिद्द—छिद्र ।

छिद्द विरह अंतर ।[3] (ज्ञा १/२/११)

छिन्न—छिन्न ।

छिन्ने भिन्ने य भग्गे य कुट्टिते वा वि णिव्वरा । (अवि पृ १५५)

छिन्नति—हनन करते है ।

छिन्नति वा हणति वा एगट्ठ ।[4] (उचू पृ ५२)

छेद—खण्ड ।

छेद खण्ड कर्परमिति । (उपाटी पृ ९६)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३

छेय—दक्ष ।

छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी निउणसिप्पोवगए ।[1] (जबू ५/६)

छेयणकरी—छेदन करने वाली ।

छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं । (आचूला ४/१०)

जंबू—जबू वृक्ष ।

सुदसणा अमोहा य, सुप्पबुद्धा जसोधरा ।
विदेहजबू सोमणसा, णियया णिच्चमडिया ॥
सुभद्दा य विसाला य सुजाया सुमणा वि य ।
सुदसणाए जबूए, नामधेज्जा दुवालस ॥[2] (३/७००)

जग्गतक— लकडी ।

जग्गतको त्ति सदीपण ति दारु समिध त्ति । (अवि पृ २५४)

जड्ड—मूढ ।

जड्डे मूढे अपडिए निव्विण्णाणे । (राज ६९६)

जणसमद्द—जनसमूह ।

जणसमद्दे इ वा, जणवूहे इ वा, जणबोले इ वा, जणकलकले इ वा, जणुम्मी इ वा, जणुक्कलिया इ वा, जणसण्णिवाए इ वा ।[3]
(भ २/३०)

जण्ण—उत्सव ।

जण्ण छणुस्सय । (अवि पृ १२१)

जरत्का—जीर्ण ।

जरत्का जरती जीर्णा । (अनुटी प ४)

जल्ल—मैल ।

जल्लो कमढो मल्लो ।[4] (आचू पृ ३७२)

१ देखे –परि० २
२ देखे—परि० २
३ देखे—परि० २
४ देखे—परि० २

जल्लिय—मैला-कुचेला।

जल्लियस्स वा पंकियस्स वा मइल्लियस्स वा रइल्लियस्स वा।

(भ ६/२३)

जवइत्तए—निर्वाह करने के लिए।

जवइत्तए त्ति वा लाढेत्तए त्ति वा एगट्ठा।[1] (सूचू १ पृ ८८)

जवित्तए—स्थापना करने मे।

जवित्तए त्ति णिज्जूढमित्यनर्थान्तरम्। (सूचू १ पृ ९३)

जस—यश।

जसो त्ति वा सजमो त्ति वा वण्णो त्ति वा एगट्ठ।[2]

(व्यभा ६ टी प ५५)

जहाभूत—यथार्थ।

जहाभूतमवितहमसदिद्ध। (ज्ञा १/१/४८)

जाणइ- जानता है।

जाणइ पासइ बुज्झइ अभिगच्छइ।[3] (स्था ५/७८)

जात—प्रकार।

जाता प्रकारा भेदा। (व्यभा १ टी प ५२)

जाम—अवस्था।

जामो त्ति वा वयो त्ति वा एगट्ठा। (आचू पृ २५५)

जायसड्ढ—श्रद्धालु।

जायसड्ढे जायससए जायकोउहल्ले। (भ १/१०)

जावताव—गुणाकार (गणित)।

जावतावन्ति वा गुणकारो त्ति वा एगट्ठ।[4] (स्याटी प ४७५)

जितकरण—विनीत।

जितकरणो विनीत इति द्वावप्येकार्थौ। (व्यभा ४/३ टी प १९)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० ३
४. देखें—परि० २

जिब्भिका—प्रणालिका ।

जिब्भिका प्रणालापरपर्याया । (जबूटी प २६१)

जीत—मर्यादा ।

जीत मर्यादा व्यवस्था स्थिति कल्प इति पर्याया । (नदीटी पृ ११)

जीव—जीव ।

जीवो त्ति वा पाणो त्ति वा एगट्ठ । (सूचू १ पृ ३१)

जीव सत्व प्राणी आत्मेत्यादि पर्याया । (नकग्रटी पृ २)

जीवा प्राणिन शरीरभृत इति पर्याया । (नकग्रटी पृ ११२)

जीवण—जीवन ।

जीवन प्राणधारण जीवितमिति पर्याया । (विभामहेटी २ पृ ३४६)

जीवत्थिकाय—जीवास्तिकाय ।

जीवे इ वा जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, वेया इ वा, चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रगणे इ वा, हिंदुए इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जतू इ वा, जोणी इ वा, सयभू इ वा, ससरीरी इ वा, अतरप्पा इ वा । जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स अभिवयणा ।[1] (भ २०/१७)

जीवा—धनुष्य की डोरी ।

जीवया प्रत्यञ्चया दवरिकया । (सूर्यटी प २२)

जीवाभिगम—दशवैकालिक का चौथा अध्ययन ।

जीवा (अभिगम) ऽजीवाभिगमो आयारो चेव धम्मपण्णत्ती ।
तत्तो चरित्तधम्मो चरणे धम्मे य एगट्ठा ।।[2]
(दशनि १४४)

जीवित—आयुष्य ।

जीवितमायुष्कमित्यनर्थान्तरम् । (अनुद्वाहाटी पृ ८६)

---

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

जुइ—द्युति ।

जुइए रभाए छायाए अच्चीए तेएण लेसाए । (उपा २/४०)

जुण्ण—जीर्ण ।

जुण्णो वि जज्जरो वुड्ढ । (अवि पृ ३०)

जुद्ध—युद्ध ।

जुद्ध णिजुद्ध सगाम सपराग । (अवि पृ १२)

जुवाण—जवान,युवा ।

जुवाणो जोव्वणत्थो वा पोअडो । (अवि पृ ६२)

जूह—सक्षेप ।

जूहे सजूह सक्षेप समास इत्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३३८)

जेमेति—भोजन करता है ।

जेमेति भुजते व त्ति आहार कुरुते त्ति य ।
अण्हेते व त्ति वा बूया भक्खते खाति वप्फति ॥[1] (अवि पृ १०७)

जोग—करण ।

जोगा इति वा करणाणि त्ति वा एगट्ठ । (बृकटी पृ ४०७)

जोग—योग, सामर्थ्य ।

जोगो त्ति वा वीरिय ति वा सामत्थ ति वा परक्कम त्ति वा उच्छाहो त्ति वा एगट्ठा । (आवचू १ प १०३)

जोगो त्ति वा वावारो त्ति वा वीरिय ति वा सामत्थ ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ४३३)

जोगो विरिय थामो, उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा ।
सत्ती सामत्थ चिय, जोगस्स हवति पज्जाया ।[2] (व्यभा १ टी प २२)

जोव्वण—यौवन ।

जोव्वण ति व जो बूया तहा जोव्वणक ति वा ।
जोव्वणत्थे त्ति जो बूया जुवाणो त्ति व जो वदे ॥
तरुण । (अवि पृ ६६)

---

१ देखें—परि० ३ २. देखें—परि० २

झीण—क्षीण । (अवि पृ १४७)

झीण परिक्खीण विणट्ठ ।

झोस—समीकरण की राशि विशेष ।

झोस त्ति वा समकरण ति वा एगट्ठ ।[1] (निचूभा ४ पृ ३२३)

झोसण—छोडना ।

झोसण खवणा मुचण एगट्ठा । (जीतभा २२७६)

ठप्प—स्थाप्य ।

ठप्पाइ ठवणिज्जाइ एते दोवि एगट्ठिता । (अनुद्वाचू पृ २)

ठाण—नैषेधिकी, स्वाध्यायभूमि ।

ठाण निसीहिय त्ति य एगट्ठ । (व्यभा ३ टी प ५३)

ठाण—स्थान, भेद ।

ठाण ति वा भेदो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३२५)

ठित—स्थित ।

ठित गत ति एगट्ठ । (नदीचू पृ १६)

ठिति—मर्यादा ।

ठिति त्ति मेरत्ति एगट्ठा । (बृकभा ६३५५)

डंड—घात ।

डड धायण मारण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २६८)

डिंब—कलह ।

डिंबा इ वा डमरा इ वा कलह-बोल-खार-वेर ।[2] (जबू २/४२)

डिप्फर—बैठने का आसन विशेष ।

डिप्फरो पीढफलक सत्थिय तलिय ति वा ।
मरसूको अत्थरको कोट्टिम ति सिलातलो ।।
मासालो मचको ।[3] (अवि पृ ६५)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २

णगल—हल ।

णगल लगल ति वा हल ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २५४)

णदी—प्रमोद ।

णदी पमोदो हरिसो कदप्पो । (नदीचू पृ १)

णदी हरिसो तुट्ठी ।[1] (निचूभा ४ पृ १२२)

णग—पर्वत ।

णगो त्ति पव्वतो व त्ति गिरि मेरुवरो त्ति वा ।
सेलो सिलोच्चयो व त्ति पव्वतो सिहरि त्ति वा ।।[2] (अवि पृ ७८)

णट्ठ—नष्ट ।

णट्ठ-विणट्ठ-भट्ठ । (भ १५/१०३)

णट्ठ त्ति वा, विगए त्ति वा, अनथाभूए त्ति वा, एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ ११)

णट्ठ-हित-पलाते दूमिने विणट्ठे विगणे । (अवि पृ २५०)

णपुंसक—नपुंसक ।

णपुंसको अपुरिसो चिल्लिको मीतलो त्ति वा ।
पडको वातिको वा वि, किलिमो वा मकरो त्ति वा ।।

कुंभीकपंडक जाणे इस्सापंडकमेव य ।
पक्खापक्खि व विक्खो य सढो वा वि णरेतरो ।।[3]

(अवि पृ ७३)

णमोक्कत—नमस्कृत ।

णमोक्कते वदिने वा पूयितुल्लोकिते तधा ।[4] (अवि पृ १५५)

णरिंद—स्वामी ।

णरिंदो त्ति सामिको सुपुरिसो त्ति वा । (अवि पृ २४६)

णाण—ज्ञान ।

णाणन्ति वा सवेदणति वा अधिगमोत्ति वा चेतणति वा भावोति वा
एते सद्दा एगट्ठा । (दशजिचू पृ १०)

---

१ देखे - परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखे—परि० २
४ देखे—परि० २

णाण ति वा विज्ज त्ति वा एगट्ठा। (उचू पृ १४७)

णाण ति वा सवेदण ति वा अहिगमो त्ति वा वेयणि त्ति वा भावो त्ति वा एगट्ठा।[1] (आवचू १ पृ ६)

णाणि—मुनि।

णाणि त्ति वा मुणि त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ १६८)

णाम—नाम।

णाम ति वा ठाण ति वा भेद त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३५३)

णाय—दृष्टान्त।

णाय ति वा दिट्ठनो त्ति वा आहरण ति वा ओवम्म ति वा निदरिसण ति वा एगट्टा। (दशजिचू पृ ३६)

णाय—ज्ञात।

णाय गणिय गुणिय गय च एगट्ठ। (दश्रुचू प १७)

णावा—नाव।

णावा पोनो कोट्टिंबो सालिका तप्पको प्लवो पिडिका कड वेलु तबो कुभे दती सघाडो कट्ठ।[2] (अवि पृ १६६)

णिकड्ढति—बाहर निकालता है।

णिकड्ढति विकड्ढति।

उक्कड्ढति त्ति वा बूया कड्ढिति त्ति व जो वदे।[3] (अवि पृ ८०)

णिकम्मदरिसि—निष्कामदर्शी।

णिकम्मदरिसी-सिद्धदरिसी मोक्खदरिसी वा। (आचू पृ ११३)

णिक्खत—प्रव्रजित।

णिक्खतो त्ति वा पव्वइओ त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २६३)

णिक्खित्त—निक्षिप्त, स्थापित।

णिक्खित्त ठविय नि य एगट्ठ। (जीतभा १५१२)

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

३ देखे—परि० ३

णिक्खेव— निक्षेप, न्यास ।

णिक्खेवो णासो त्ति य ठवण त्ति य होति एगट्ठा। (उशाटी प ६६६)

णिच्छय—सद्भाव ।

णिच्छयो सब्भावो स्वरूप । (नदीचू पृ ५८)

णिच्छुद्ध— निक्षिप्त ।

णिच्छुद्धे णिग्गते छुद्धे उक्कड्डिय विकड्डिते । (अवि पृ १०८)

णिच्छोडण—निर्भर्त्सन ।

णिच्छोडण णिव्वलक तधा णिल्लिक्खण ति वा । (अवि पृ १०६)

णिज्जरा – निर्जरा ।

णिज्जर त्ति वा तवो त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २१५)

णिडाल —ललाट ।

णिडाल मत्थको सीसो । (अवि प ११९)

णिडालमासक—तिलक ।

णिडालमामको व त्ति तिलको मुहफलक ति वा ।
विसेमको त्ति वा बूया अवगो त्ति व जो वदे ॥[1] (अवि पृ ६४)

णिण्णेहक -नि स्नेह

णिण्णेहक अणेह वा फुट्ट ति फरुस ति वा । (अवि पृ १०६)

णितिय— नित्य ।

णितिउ त्ति वा सासतो त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १३४)

णिदंसण— निदर्शन ।

णिदसण हेतु दिट्ठत उवदसणा उवणय उवसघार एगट्ठिना एत ।
(नदीचू पृ ५२)

---

१ देखें—परि० २

णिप्पीलित— निष्पीडित ।

णिप्पीलिते णिगलिते भीणे भविते य । (अवि पृ२५५)

णिप्फत्ति—निष्पत्ति ।

णिप्फत्ति प्रभव प्रसूति । (निचूभा ४ पृ ३८८)

णिप्फत्ति लाभो आगमो । (अवि पृ २५२)

णिब्भामित—रूक्ष ।

णिब्भामित णिग्गलित अब्भुक्कढित नि वा । (अवि पृ १०६)

णिम्मंसक—मास रहित ।

णिम्ममको त्ति वा बूया तधा अट्ठिकलेवर ।
अट्ठिक चम्मणद्ध ति तधा अट्ठिकसकला ।।
सुक्कलो त्ति व जो बूया णिस्सुक्को त्ति व जो वदे ।
ओभीण परिहीण ति मात ति मलित ति वा ।।[1] (अवि पृ ११४)

णिम्मज्जित—हटा देना ।

णिम्मज्जिते निल्लक्खिते णिस्सारिते णिव्वट्टिते णिलुलिते णिक्कड्ढिते णिद्धाडिते णिस्साविते णिप्फाविते णिच्छोल्लिते णिक्खण्णे णिव्विट्ठे णिच्छुद्धे विच्छुद्धे णिस्सिते णिल्लुविते णिवोल्लिते णित्थणिते णिस्ससिते णिस्सिघिते णिठ्ठुते णित्थुद्धे णिस्सरिते णिप्फेडिते णिद्दीणे णिण्णीते णिकुज्जिते णिव्वासिते णीरक्कए णिराणदे । (अवि पृ १७१)

णियत—नियत ।

णियत भूतपुव्व ति कतपुव्व ति वा पुणो ।
तधा रयितपुव्व ति अणुभूत ति वा पुणो ।। (अवि पृ ८२)

णियय—नियत ।

णियय वा णिच्छिय वा एगट्ठा । (जीतभा २३४)

णिव्वजीयति—व्यक्त करते है ।

णिव्वजीयति विभाविज्जति फुडीकज्जति ।[2] (आवचू १ पृ २६)

---

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० ३

णिव्वाण—निर्वाण, सुख ।

णिव्वाण सुह साय सीइभूय-पय अणाबाह ।[1] (आनि २०८)

णिव्वाणिकर—मागलिक ।

णिव्वाणिकर च मगलिज्ज च इट्ठा आणदकर च । (अवि पृ २५०)

णिव्वुत—सुखी ।

णिव्वुते सुहिते व त्ति आरोगो पीणितो त्ति वा । (अवि पृ १२१)

णिस्सकित—नि शकित ।

णिस्सकिते णिक्कखिते णिव्वितिगिच्छिते ।[2] (स्था ३/५२४)

णिसियणा—निसीदन ।

णिसियणा उववेसणा सणिहणा इति एगट्ठा । (आचू पृ ४६)

णिसीहिया—निषीधिका ।

णिसीहिय त्ति वा ठाण ति वा एगट्ठ । (उचू पृ ६७)

णिस्सारित—बाहर निकाला हुआ ।

णिस्सारिते णिण्णामिते णिद्धाडिते णिल्लोलिते णिक्कड्ढिते णिप्फीलिते णिच्छालिते णिक्खित्ते णिच्छुद्धे णिव्वाडिते णिसित्ते णिलूचिते णिच्छोलिते णिस्ससिते णिस्सरिते णिप्पतिते णिप्फाडिते णिड्डीले णिकुज्जिते णिव्वामिते णिराकते णिराणते । (अवि पृ १६८-६९)

णिहण—कपट ।

णिहण ति वा गूहण ति वा छायण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १७३)

णिहुय—उपशान्त ।

णिहुय णट्ठ भट्ठ उवसत पसत । (गाजटी पृ ५४)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

णिहित—रखना ।

णिहित ति वा णिहेति त्ति वा ठवेति त्ति वा एगट्ठा ।[1]
(अनुद्वाचू पृ २१)

णीरागदोस—राग-द्वेष रहित ।

णीरागदोस णिम्मम णिस्संग णीसल्ल । (जबू ५/५८)

णीहारेति—नीहरण करता है ।

णीहारेति णीहरति त्ति अपकड्ढति णिकड्ढति ।
णिसारेति णिसरति णिक्खुस्सति विकड्ढति ॥[2] (अवि पृ १०८)

ण्हात—स्नात ।

ण्हात व मज्जिय वा वि आलोलित पलोलिय ।
पलोट्ठित ति वा बूया तधा सम्मज्जित ति वा ॥ (अवि पृ ८१)

ण्हाय—स्नात ।

ण्हाओ विमलो विसुद्धो सुसुइभूओ । (उ १२/४६)

तडि—अविनीत ।

तडी ति वा गली ति वा मराली ति वा एगट्ठा ।[3] (उचू पृ ३०)

तत—तन्त्र, ग्रथ ।

तत ति वा सुत्तो त्ति वा गथो ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४६)

तका—शय्या ।

तका अभिशय्या अभिनिषद्या । (व्यभा ३ टी प ५४)

तक्क—छाछ ।

तक्क उदसी छासि त्ति एगट्ठ ।[4] (निपीचू पृ ६२)

तक्क—तर्क ।

तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा । (भ १/१६५)

तक्को मीमासा विमर्श इत्यनर्थान्तरम् ।[5] (सचू २ पृ ३६८)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

तट्टक—थाल।

तट्टक सरक थाल सिरिकुंड ति वा पुणो।
तधा पणसक व त्ति तधा अद्धकविट्ठग ॥
सुपतिट्ठक ति व वदे तधा पुक्खरपत्तग।
मरग मुंडग व त्ति तधेव सिरिकसग ॥[1] (अवि पृ ६५)

थालक • ।

तनुतरशरीर—सूक्ष्मशरीरी।

तनुतरशरीरो महावीर्यो देवो वा। (विभामहेटी १ पृ २८८)

तण्हा— तृष्णा।

तण्ह गेहि लोभ। (प्र ५/६)

तत्त्व—पारमार्थिक सत्य।

तत्त्वेन परमार्थेन मौनीन्द्राभिप्रायेण। (सूटी १ प ६०)

तत्थ—त्रस्त।

तत्था उव्विग्गा सजायभया। (विपाटी प ४३)

तत्थ तत्थ—वहां वहां।

तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं।[2] (सू २/१/२)

तद्दिट्ठि—एकाग्रदृष्टि।

तद्दिट्ठिए, तम्मोत्तिए, तप्पुरक्कारे, तस्सण्णी, तन्निवेसणे। (आ ५/६८)

तमस्—अन्धकार।

तमो तिमिरमन्धकार इत्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ प ३४७)

तमुक्काय—तमस्काय।

तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अधकारे इ वा, महधकारे इ वा, लोगधकारे इ वा, लोगतमिसे इ वा, देवधकारे इ वा, देवतमिसे इ वा, देवरण्णे इ वा, देववूहे इ वा, देवफलिहे इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा। (भ ६/८६)

---

१ देखें—परि० २ २ देखें— परि० २

तमे ति वा, तमुक्काते ति वा, अधकारे ति वा, महधकारे ति वा, लोगधगारे ति वा, लोगतमसे ति वा, देवधगारे ति वा, देवतमसे ति वा, वातफलिहे ति वा, वातफलिहखोभे ति वा, देवरण्णे ति वा, देववूहेति वा।[1] (स्था ४/२७५-७७)

तरच्छ—व्याघ्र विशेष।

तरच्छ-अच्छ-भल्ल-सद्दूल-सीह।[2] (प्र १/६)

तरुणय—नवीन।

तरुणय त्ति अभिनवा कोमला। (अनुटी प ४)

तच्चित्त—तन्मयता।

तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए।[3] (भ १/३५४)

तज्जेंति—तर्जना देते है।

तज्जेति तालेति परिवहेति पव्वहेति।[4] (भ ३/४५)

तवस्सि—तपस्वी।

तवस्सी त्ति वा साहु त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २०३)

तसति—भयभीत होते है।

तसति त्ति वा उव्वियति वा सकुयति वा बीभिति वा एगट्ठा।[5] (आचू पृ ३६)

तह—तथ्य।

तहमवितहमसदिद्ध। (भ २/५२)

तिण्ण—तीर्ण।

तिण्णे मुत्ते विरए। (आ ५/६१)

तितिक्खति—तितिक्षा करता है।

तितिक्खति त्ति वा सहति त्ति वा एगट्ठा।[6] (आचू पृ १७१)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
 देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० ३
६ देखें—परि० ३

तितिक्खा—अहिंसा ।

तितिक्खा य अहिंसा य हिरि एगट्ठिया पदा । (उनि १५८)

तितिक्खा अहिंसा वेरति वा ।[1]

तिरीड—मुकुट ।

तिरीड मउडो चेव तधा सीहस्स भडक ।
अलकस्स परिक्खेवो, अधवा मत्थककटक ।।
तधा गुरुलको व त्ति वदे मगरको त्ति वा ।
तधा उसभको व त्ति अधवा सीउको भवे ।। (अवि पृ ६४)

तिरीड ति किरीट च मुकुटम् ।[2] (ममटी प १४६)

तिलोवलद्धीय—तिलपपडी ।

तिलोवलद्धीय पलल वा तिलक्खली वा ।[3] (अवि पृ १८२)

तिसरा—मछली पकडने का जाल ।

तिसराहि य, भिसराहि य, घिसराहि य, विसराहि य, हिल्लिरीहि य, भिल्लिरीहि य, गिल्लिरीहि य, झिल्लिरीहि य, जालेहि य ।[4]
(विपा ८/१६)

तिसला—त्रिशला, महावीर की माता ।

तिसला ति वा विदेहदिण्णा ति वा पियकारिणी ति वा ।[5]
(आचूला १५/१८)

तीरित—पार पा गया ।

तीरित णीत अतम् । ((दश्रुचू प ७०)

तीर्थ—घाट ।

तीर्थं जलपानस्थानमित्येकोऽर्थ । (बृकटी पृ १३०३)

तुच्छ—असार ।

तुच्छ ति रित्तक व त्ति असार झुसिर ति वा। (अवि पृ १००)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

तुट्ठि— तुष्टि ।

तुट्ठी वा ऊसए वा हरिसे वा आणदे वा । (निर १/७२)

तुदति— प्रेरित करता है ।

तुदति उत्तुदति प्रचोदयति ।[1] (निचूभा ३ पृ ४०)

तुलना— तुलना ।

तुलना भावना परिकर्म चेत्येकार्थानि ।[2] (प्रसाटी प १२६)

तुस— तुष ।

तुस त्ति कोटको व त्ति कक्कुसो तप्पणो त्ति वा ।[3] (अवि प १०६)

तेगिच्छियसाला— चिकित्सालय ।

तेगिच्छियसाला चिकित्साशाला अरोगशाला । (ज्ञाटी प १८७)

तेय— तेज ।

तेउ त्ति उण्ह ति इति पगट्ठा । (आचू पृ ३१७)

त्वग्वर्तन— शयन करना ।

त्वग्वर्तन तुयट्टण शयन । (निचूभा २ पृ ३७०)

थणति— चिल्लाते है ।

थणति वा कदति वा सोयति वा ।[4] (आचू पृ २०२)

थिर— स्थिर ।

थिर ध्रुव धारणिज्ज । (आचूला ४/३०)

थिरसघयण— दृढ सहनन वाला ।

थिरसघयणो दढसघयणो बलितसरीर । (दश्रचू प २१)

थिल्ली— पालकी ।

थिल्ली गिल्लि त्ति वा बूया सिबिका सदमाणिका ।[5] (अवि प ७२)

---

१ देखे—परि० ३

२ देखे—परि० २

३. देखे—परि० २

४. देखें—परि० ३

५. देखें—परि० २

थुइ—स्तुति ।

थुइथुणणवदणनमसणाणि एगट्ठियाणि । (आवनि १०६२)

थुइवदणपूयाअच्चणाइ ।[1] (आचू पृ ३१५)

थुत—स्तुत ।

थुता पूइया ह्येते एकार्थवचना । (नदीचू पृ ४६)

थूल—स्थूल ।

थूल वड्ड वरढ ति परिवूढ ति वा पुणो ।
पीण उवचित व त्ति पीवर मासल ति वा ।।
महासार महाकाय अतिकाय ति वा पुणो ।
मड ति बहल व त्ति पुत्थव्वा मेदित ति वा ।।[2] (अवि पृ ११४)

थेज्ज—विश्वसनीय ।

थज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए ।[3] (भ २/५२)

थेरकप्प—स्थविरकल्प ।

थेरकप्पो थरमज्जाता थेरसमायारी । (दश्रूचू पृ ७०)

थेरभूमि—स्थविरभूमि ।

थेरभूमि त्ति वा थेरट्ठाण त्ति वा थेरकालो त्ति वा एगट्ठ ।[4]
(व्यभा १० टी प १००)

दड—विनाश ।

दडो घातो मारण ति एगट्ठा । (आचू पृ ६१)

दत—दात ।

दते दविए वोसट्ठकाए । (सू १/१६/२)

दतप्प—आत्मदात ।

दतप्पा समिए गुत्ते । (उ ३४/३१)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० २
३ देखे—परि० २
४ देखे—परि० २

दउदर— जलोदर व्याधि ।

दउदरे त्ति दकोदर जलोदरम् । (ज्ञाटी प १९०)

दक्ख— दक्ष ।

दक्खो दक्खिण्णव णिउणो । (अवि पृ ४)

दगतीर—पानी के पास ।

दगतीर दगासण्ण दगब्भास ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ ४६)

दगवीणिय—जल की प्रणालिका ।

दगवीणिय दगवाहो दगपरिगालो य एगट्ठा । (निभा ६३४)

दण्ड—यातना ।

दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्याया । (आवहाटी २ पृ २२६)

दया—सयम ।

दया य सजमो लज्जा दुगुञ्छाऽछलणा इ य ।[1] (उनि १५८)

दर्शन—दृष्टि, सिद्धान्त ।

दर्शन दृष्टि र्वा देश उपदेशो मार्ग । (सूचू २ पृ ४५७)

दर्शन मत सिद्धान्तम् । (उपाटी पृ १७४)

दविय—बधनमुक्त ।

दविए बधणुम्मुक्के छिण्णबधणे । (सू १/८/१०)

दव्वी—कुडछी ।

दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कडच्छकी ।[2] (अवि पृ ७२)

दारिया—बालिका ।

दारिया बालिया व त्ति मिगिका पिल्लिक त्ति वा ।
वच्छिका तण्णिका व त्ति पोतिक त्ति व जो वदे ।।
कण्ण त्ति व कुमारि त्ति धिज्जा ।[3] (अवि पृ ६८)

---

१. देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

३ देखें परि० २

दारुण—दारुण ।

दारुणो कक्कसो असाओ । (प्र १/३९)

दारुणसद्द—दारुणशब्द ।

दारुणसद्दो कक्कससद्दोऽवि य एगट्ठा । (दशजिचू पृ २८३)

दास—दास, नौकर ।

दासा इ वा, पेस्सा इ वा, भयगा इ वा, भाइल्लगा इ वा ।
(ज्ञा १/२/६०)

दास किंकर कम्मकर । (दश्रु ६/२४)

दास-भयक-पेस (प्र १०/३)

दासे इ वा, पेसे इ वा, भयए इ वा, भाइल्ले इ वा, कम्मकरे इ वा, भोगपुरिसे इ वा । (सू २/२/५८)

दासे इ वा, पेसे इ वा, सिस्से इ वा, भयगे इ वा, भाइल्लए इ वा, कम्मारए इ वा ।[1] (जबू २/२६)

दासी—दासी ।

दासी कम्मकरी व त्ति पेसि त्ति नत्तिक त्ति वा । (अवि पृ ६८)

दिट्ठ—दृष्ट ।

दिट्ठाण सुयाण मुयाण विण्णायाण निज्जूढाण वोगडाण वोच्छिण्णाण णिसिट्ठाण णिवूढाण उवधारियाण । (सू २/७/३४)

दिट्ठ सुय मय विण्णाय ।[2] (आ ४/२०)

दिट्ठि—दर्शन ।

दिट्ठी दरिसण मत । (निपीचू पृ १५)

दिट्ठिवाय—दृष्टिवाद (बारहवा अग) ।

दिट्ठिवाए ति वा, हेउवाए ति वा, भूयवाए ति वा, तच्चावाए ति वा, सम्मावाए ति वा, धम्मावाए ति वा, भासाविजए ति वा, पुव्वगते ति वा ,अणुजोगगते ति वा, सव्वपाण (सुहावहे) ति वा, सव्वभूत (सुहावहे) ति वा, सव्वजीव (सुहावहे) ति वा, सव्वसत्त (सुहावहे) ति वा ।[3] (स्था १०/९२)

---

१ देखे—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखे—परि० २

द्वितीयसमवसरण—ऋतुबद्धकाल ।

द्वितीयसमवसरण ऋतुबद्ध इति चैकार्थम् ।[1] (बृकटी पृ ११५१)

दिप्पते—दीप्त होता है ।

दिप्पते भासते सोभते ।[2] (निपीचू पृ १९)

दीण—दीन ।

दीणो त्ति दुम्मणो व त्ति परितत्तो त्ति वा पुणो ।
उक्कट्ठितो त्ति सोकत्तो चिंता-झाणपरो त्ति वा ॥
अणिव्वुतो आतुरो त्ति परायितणिरागतो ।
अकतत्थो असिद्धत्थो अहमो णियमसक्कतो ॥ (अवि पृ १२१)

दीणा दुम्मणा निराणदा । (ज्ञा १/१/३४)

दीण ति वा कलुण ति वा एगट्ठा ।[3] (दशजिचू पृ ३१२)

दीव—दीप (अग्नि का स्थान) ।

दीवा त्ति दीवक त्ति य चुडली मद्यअग्गि चुल्लके व त्ति ।
विज्जु त्ति विज्जुता आयवो त्ति कज्जोपको व त्ति ॥
अणलि त्ति व चुल्लि त्ति व चितक त्ति व फुफक त्ति वा ।[4]
(अवि पृ २५४)

दीविय—प्रकाशित ।

दीविय पभामिउ त्ति य पगासितो चेव एगट्ठा । (जीतभा २४८)

दीविय—सिंह ।

दीविय वियग्घ सद्दूल सीह ।[5] (प्र १/२९)

दीह—दीर्घ, ऊंचा ।

दीहमुच्च महत ति । (अवि पृ ११५)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

दीहसक्कुलिका—खजली (गुड से निष्पन्न खाद्य विशेष)।

दीहसक्कुलिक वा, खाखट्टिका वा, खोडके वा, दीवालिकाणि वा, दसीरिका वा, भिसकटक वा, मत्थकत वा।[1] (अवि पृ १८२)

दुक्कड—दुष्कृत।

दुक्कड ति वा सावज्जमणुट्ठित ति वा पावकम्ममासेवित ति वा वितट्ठमाइन्न ति वा एगट्ठा। (आवचू १ पृ ३४६)

दुक्ख—दुख।

दुक्ख अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणाम। (सूचू १ पृ ४८)

दुक्ख—कर्म।

दुक्ख ति वा कम्म ति वा एगट्ठ।[2] (दश्रुचू पृ २८)

दुक्खइ—दुखित होता है।

दुक्खइ वा सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा परितप्पइ वा।[3] (सू २/१/४२)

दुक्खण—दुख।

दुक्खण-जूरण-सोयण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण।[4] (सू २/२/३१)

दुगुछणा—सयम।

दुगुछणा सजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्ति त्ति वा एगट्ठा। (आचू पृ ३८)

दुग्गव—दुष्ट बैल।

दुग्गवो त्ति वा दुट्ठगोणो त्ति वा गलिवद्दो त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३१५)

दुघाण—दुर्भिक्ष।

दुघाण ति वा दुभिक्ख ति वा एगट्ठ। (बृकचू प १४८)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० २
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० २

दुट्ठ—दुष्ट ।

दुट्ठे मूढे वुग्गाहिते ।[1] (स्था ३/४७८)

दुद्ध—दूध ।

दुद्ध पयो बालु खीर च । (जीतभा ११३२)

दुद्ध पओ पीलु खीर च ।[2] (पिनि १३१)

दुब्बल—दुर्बल ।

दुब्बले किलते जुजिए । (ज्ञा० १/१/१८६)

दुम—वृक्ष ।

दुमा य पायवा रुक्खा, विडिमी य अगा तरू ।
कुहा महीरुहा वच्छा, रोवगा भजगा वि य ।।[3] (दशनि १४)

दुमपुप्फिया—दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन का नाम ।

दुमपुप्फिया य आहारएसणा गोयरे तया उंछो ।
मेस जलूगा सप्पे, वणऽक्खइसुगोलपुत्तुदए ।।[4]
(दशहाटी प १८)

दुर्भेद—दुर्भेद्य ।

दुर्भेदो दुर्मोचो दु क्षपणीय । (विभामहेटी १ पृ ४५६)

दुरुहइ—आरोहण करता है ।

दुरुहइ त्ति विलग्गइ त्ति आरुभति त्ति एगट्ठ ।[5]
(निचूभा ४ पृ २०५)

दुस्सह—दुस्सह ।

दुस्सहा व्याकुला असमजसा । (जबूटी १६७)

दुस्सील—दुश्शील ।

दुस्सीले दुपरिचए दुरणुणेए दुव्वए । (दश्रु ६/३)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० २
४ देखें— परि० २
५ देखें—परि० ३

दुहट्ट—दुःखी।

दुहट्ट त्ति दुर्घटो दुःस्थगो। (उपाटी पृ १०८)

दूइज्जति—विहरण करता है।

दूइज्जति रीयति गच्छति।[1] (निचूभा २ पृ १२१)

देव—देवता।

देवो अमरो व त्ति सुरो वा विबुधो त्ति वा।[2] (अवि पृ ६२)

देश—भाग।

देश प्रस्तावोऽवसर विभाग पर्याय इत्यनर्थान्तरम्।
(दशहाटी प ६)

देशन—कथन।

देशन भाषण देशो निर्देश। (विभामहेटी १ पृ ५६३)

देसकालण्ण—देश-कालज्ञ।

देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गतिआगतिण्णे परक्कमण्णू।[3] (सू २/१/६)

दोमणस्स—दौर्मनस्य।

दोमणस्स ति वा दुम्मणिय ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२१)

दोसिणा—ज्योत्स्ना।

दोसिणा इ वा चंदलेस्सा इ य एगट्ठे। (सूर्य १६/२)

दोसीण—रात का बासी अन्न।

दोसीण-वावण्ण-कुहिय-पूइय।[4]

द्रव्य—भव्य, मोक्षगामी।

द्रव्यो भव्यो मुक्तिगमनयोग्यो। (सूटी १ प ५६)

धण्ण—धन्य।

धण्णासि पुण्णासि कयत्थासि। (जंबू ५/५)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

धम्म—स्वभाव ।

धम्मो त्ति वा सभावो त्ति वा दो वि एगट्ठा । (निचूभा ४ पृ ३७५)
धम्मो सब्भावो लक्खण ति एगट्ठा । (दशजिचू पृ १६)

धम्मत्थिकाय—धर्मास्तिकाय ।

धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, अदिण्णादाणवेरमणे इ वा, मेहुणवेरमणे इ वा, परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा, माणविवेगे इ वा, मायाविवेगे इ वा, लोहविवेगे इ वा, रागविवेगे इ वा, दोसविवेगे इ वा, कलहविवेगे इ वा, अब्भक्खाणविवेगे इ वा, पेसुणविवेगे इ वा, परपरिवायविवेगे इ वा, रइ-अरइविवेगे इ वा, मायामोसविवेगे इ वा, मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिती इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा सव्वेते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ।[1] (भ २०/१४)

धम्ममण—धर्म मे रक्त मन वाला ।

धम्ममणे अविमण सुहमणे अविग्गहमणे समाहिमणे ।[2] (प्र ६/२०)

धम्मिय— धार्मिक ।

धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा ।[3] (सू २/२/७१)

धरण—धारणा (मति ज्ञान का भेद) ।

धरण अविच्चुती धारणा । (नंदीचू पृ ३४)

धरणा धारणा ठवणा पइट्ठा कोट्ठे ।[4] (नंदी ४६)

धर्म—धर्म ।

धर्म स्वभाव सम्यग्दर्शनमित्येकार्थम् ।[5] (व्यभा १० टी प ४४)

---

१ देखें – परि० २
२ देखें – परि० २
३ देखें – परि० २
४. देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

धर्म—व्यवस्था ।

धर्म स्थिति समयो व्यवस्था मर्यादित्यनर्थान्तरम् । (आवचू १ पृ ७)

धाय—सुभिक्ष ।

धाय ति वा सुभिक्ख ति वा एगट्ठा । (निचूभा ३ पृ ७०)

धारणववहार—धारणा व्यवहार ।

उद्धारण विहारण, सधारण सपहारणा चेव ।
धारणववहारस्स उ, णामा एगट्ठिता एते ॥[1]

(जीतभा ६५५)

धारयति—धारण करते है ।

धारयति वा सजमति वा निमित्तति वा एगट्ठा ।[2]

(दशजिचू पृ २२१)

धी—बुद्धि ।

धी बुद्धि पेहा मतीति । (आचू पृ ५४)

धीर—धीर ।

धीर त्ति वा सूरे त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ११६)

धुणण—धूनन ।

धुणण ति वा करीसण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १४६)

धुण्ण—पाप ।

धुण्ण ति वा पाव ति वा एगट्ठा ।[3] (दशजिचू पृ २६४)

धुत—प्रकपित ।

धुत प्रकम्पित स्फटित । (व्यभा ४/१ टी प ५६

धुव—ध्रुव ।

धुवे णितिए (णिइए) सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।[4]

(इभा ३१/१)

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३. देखें—परि० २
४. देखें—परि० २

ध्रुवक—ध्रुव ।

ध्रुवको अचलितो व त्ति, तधा थावरको त्ति वा ।
सिवणामो गुत्तणामो, भवो त्ति अभवो त्ति वा ॥
थितो त्ति सुत्थितो व त्ति, तधा ठाणट्ठितो त्ति वा ।
अकंपो णिप्पकंपो त्ति, णिव्वरो सुहते त्ति वा ॥[1]

(अवि पृ ७६)

धूत—संयम ।

धूतं संयमं मोक्षं वा ।[2] (सूटी १ प १६४)

धूमिका—धूसर ।

धूमिका धूम्रवर्णा धूसरा । (भटी प १६६)

धूर्त—धूर्त ।

धूर्ता नैकृतिका स्तब्धा लुब्धा कार्पटिका शठा ।[3]

(उशाटी प २८१)

ध्रुव—ध्रुव ।

ध्रुवं नियतं नैत्यिकमिति त्रयोऽप्येकार्था । (व्यभा ४/३ टी प ६८)

नन्दन—समृद्ध ।

नन्दनं समृद्धीभवनं वाञ्छितस्याधिगतिरित्यनर्थान्तरम् ।

(बृकटी पृ ५)

नन्दि—शास्त्र ।

नन्दी शास्त्रं एकार्थम् ।[4] (बृकटी पृ ११)

नयन—उत्तेजित करना ।

नयन जलन जालन ओसक्क त्ति एगट्ठं । (निपीचू पृ ८३)

नववधू—नववधू ।

नववधू अप्रसूतागर्भिणी वा ।[5] (सूचू १ पृ ८४)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४. देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

नस्समाण—नष्ट होता हुआ ।

नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे ।[1] (उपा ७/४६)

नागदन्तक—खूंटी ।

नागदन्तकौ नर्कुटिकौ अकुटिकौ । (जबूटी प ५०)

नाण—ज्ञान ।

नाण ति वा उवयोगे ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ १२०)

नापित—नाई ।

नापिता नखशोधका वारिका । (व्यभा १० टी प १५)

नाय—ज्ञात ।

नाय दिट्ठ बुद्ध अभिसमण्णागय । (ज्ञा १७/३३)

नाय आगमिय ति वा एगट्ठ । (व्यभा १०/२०८)

नायय—सखा ।

नायए इ वा, घाडियए इ वा, सहाए इ वा, सुहि त्ति वा ।[2] (ज्ञा १/२/७५)

निअच्छति—प्राप्त करते है ।

निअच्छति निग्गच्छति वा पावति वा एगट्ठा ।[3] (दशजिचू पृ ३१४)

निकाच—निमत्रण ।

निकाचो निकाचन च्छदन निमत्रणमित्येकार्था । (व्यभा ५ टी प १२)

निक्षेप—न्यास ।

निक्षेप मोचन रचन न्यास इति । (विभाकोटी पृ २८८)

निक्षेपो न्यास समर्पणम् । (विपाटी प ५२)

---

१. देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

निग्गमण—निर्गमन ।

निग्गमणमवक्कमण निस्सरणपलायण च एगट्ठा ।[1]

(व्यभा ३ टी प १२४)

निज्जामय—नाविक ।

निज्जामए कुच्छिधारा कण्णधारा गब्भेल्लगा ।[2] (ज्ञा १७/१०)

निट्ठिय—उपरत ।

निट्ठिए उवरए उवसते विज्झाए । (ज्ञा १/१/१८३)

निट्ठियट्ठ—सिद्ध, निर्मल ।

निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा ।[3]

(औप १८४)

निट्ठुर—निष्ठुर ।

निट्ठुर खर फरुस । (ज्ञा १/८/७२)

निधान—न्यास ।

निधान निर्धिनिक्षेपो न्यासो विरचना प्रस्तार स्थापनेति पर्याया. ।

(अनुद्वामटी प ४७)

निमित्त—हेतु ।

निमित्त हेतुरूपदेश प्रमाण कारणमित्यनर्थान्तरम् ।

(सूचू २ पृ ३१४)

नियाग—मोक्ष ।

नियागो मोक्ष सद्धर्मो वा ।[4] (सूटी १ प ३६)

नियाण—निदान, कारण ।

नियाण हेतु कारणमित्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३८०)

नियोग—ग्राम ।

नियोग इति ग्राम इति चैकोऽर्थ । (बृकटी पृ ३४५)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० २

४ देखें—परि० २

निर्मम—निर्मोही।

निर्ममो निरहकारो वीतरागो निराश्रव। (उचू पृ २८०)

निव्वट्टन—निर्वर्तन।

निव्वट्टन ति वा छिण्णण ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १२८)

निव्वाण—निर्वाण।

निव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे अव्वाहए निरावरणे अणते अणुत्तरे।[1]

(आचूला १५/३८)

निव्वुड—निर्वृत।

निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धे। (भटी प २१७)

निश्चय—निश्चय।

निश्चयो निर्णयोऽवगम इत्यनर्थान्तरम्। (नदीटी पृ ५१)

निषन्न—बैठा हुआ।

निषन्ना अनुपविष्टा स्थिता। (व्यभा ७ टी प ४५)

निष्कटक—आवरणरहित।

निष्कटका निष्कवचा निरावरणा निरुपघातेति। (राजटी पृ १७८)

निष्ठित—पूरा करना।

निष्ठित कृतमित्येकोऽर्थ। (बृकटी पृ १०१६)

निष्पक—निर्मल।

निष्पका कलकरहिता कर्दमरहिता। (जबूटी प २१)

निसृजति—छोड़ता है।

निसृजति उत्सृजति मुञ्चति इति पर्याया।[2]

(विभामहेटी १ पृ १७७)

निसर्ग—स्वभाव।

निसर्ग स्वभाव परिणाम इत्यनर्थान्तरम्। (आवचू १ पृ ४३६)

१. देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

निस्सा— आलबन ।

निस्सोवसपय त्ति य एगट्ठ । (व्यभा ४/३ टी प ३१)

निस्सील— निश्शील ।

निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे । (राज ६३५)

निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणे ।[१] (ज्ञा १/१८/१६)

नीय— नीचा ।

नीय ति वा अवय ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ १६६)

नील—नीला, काला ।

नील तिमिरधकार ति, रत्ती उत्तासो त्ति य ।[२] (अवि पृ २४३)

पउजेज्जा—प्रयुक्त करे ।

पउजेज्ज त्ति वा कुव्विज्ज त्ति वा एगट्ठा ।[३] (दशजिचू पृ ३०६)

पंडिय—पडित ।

पडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे ।[४] (आ ६/६८)

पडुर—अत्यन्त सफेद ।

पडुर धवलय सेय । (ज्ञाटी प १७)

पतावेज्ज—क्रोध करे ।

पतावेज्ज वा ओभासेज्ज वा उक्कोसेज्ज वा फरुसेज्ज वा ।[५] (निचूभा २ पृ १४८)

पथ—पथ, रास्ता ।

पथि त्ति मार्गो विहार । (बृकटी पृ ४०६)

पकप्प- प्रकल्प, मर्यादा ।

पकप्पो समायारी मज्जाता । (आचू पृ २७७)

---

१ देखें- परि० २

२ देखे—परि० २

३ देखें—परि० ३

४ देखें—परि० २

५. देखें—परि० ३

पकप्पण—भेद ।

पकप्पणा पकप्पो भेद । (निपीचू पृ ३८)

पकिण्ण—प्रकीर्ण, बिखरा हुआ ।

पकिण्ण विप्पकिण्ण ति छड्डित परिसाडिय । (अवि पृ ८०)

पगडि—प्रकृति (पर्याय) ।

पगडीओ त्ति वा पज्जाय त्ति वा भेद त्ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ ३७)

पगत—अधिकार ।

पगत अहिगार प्रयोजन । (निपीचू पृ ३०)

पगासेति—प्रकाशित करता है ।

पगासेति त्ति वा बुज्झावेति त्ति वा पच्चाणेति त्ति वा एगट्ठा ।[1]
(आवचू १ पृ १०)

पच्चंतिक—म्लेच्छ ।

पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि ।[2] (आचूला ३/८)

पच्चक्खाण - प्रत्याख्यान ।

पच्चक्खाण नियमा चरित्तधम्मो य होति एगट्ठा । (पचा प १४६)

पज्जव—पर्यव, पर्याय ।

पज्जवो त्ति वा भेदो त्ति वा गुणो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ४)

पज्जाहार—परिधि ।

पज्जाहारो त्ति वा परिरओ त्ति वा एगट्ठ । (व्यभा २ टी प १०)

पज्जोसवणा—पर्युषण ।

पज्जोसवणाए अक्खराइ होंति उ इमाइ गोण्णाइ ।
परियायवत्थवणा, पज्जोसवणा य पागइता ।।
परिसवणा पज्जुसणा, पज्जोसवणा य वासावासो य ।
पढमसमोसरण ति य, ठवणा जेट्ठोग्गहेगट्ठा ।।[3] (निभा ३१३८-३९)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २

पट्ठवण—प्रवर्तन ।

पट्ठवण प्रारभ प्रवर्तन । (अनुद्वाचू पृ ५)

पडण—पतन ।

पडण ति वा उज्झण ति वा एगट्ठ । (निचूभा २ पृ २३१)

पडिकमण—प्रतिक्रमण ।

पडिकमण पडियरणा, परिहरणा वारणा नियत्ती य ।
निदा गरिहा सोही । (आवनि १२३३)

पडिपुन्न—प्रतिपूर्ण ।

पडिपुन्न ति वा निरवसेस ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३२६)

पडियाणिया—पैबन्द ।

पडियाणिया थिग्गलय छदतो य एगट्ठ । (निचूभा ३ पृ ५६)

पडिसेवणा—प्रतिसेवना (दोष) ।

पडिसेवणा मइलणा भगो य विराहणा य खलणा य ।
उवघाओ य असोही सबलीकरण च एगट्ठा ।[1] (ओनि ७८८)

पडिहत्थ—अत्यधिक ।

पडिहत्था अनिरेकिता अतिप्रभूता । (जबूटी प ४२)

पडुच्च—प्रसग को प्राप्त कर ।

पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ २१)

पणिधि—माया ।

पणिधी उवधी माया । (दश्रुचू प ७४)

पणिहाण—प्रणिधान (अध्यवसाय) ।

पणिहाण ति वा अज्झवसाण ति वा चित्त ति वा एगट्ठा ।
(निपीचू पृ २२)

---

१ देखे—परि० २

पणिहाण अभिप्पायो चित्तमिति समाण। (दशजिचू पृ १८०)

पणिहि—निक्षेप, प्रक्षेप।

पणिहि निक्खिविय ति वा पणिहाण ति वा एगट्ठा।
(दशजिचू पृ २६५)

पण्णत्त—प्रज्ञप्त।

पण्णत्त पण्णवित प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम्। (नदीचू पृ १३)

पण्णवण—प्रज्ञापन।

पण्णवण त्ति परूवण त्ति वा विण्णवण त्ति वा एगट्ठ।
(निशीचू पृ १६०)

पण्णविय—प्ररूपित।

पण्णविय परूविय पसिद्ध। (प्र ७/२५)

पति—स्वामी।

पति प्रभु स्वामी। (निचूभा २ पृ ११८)

पतिट्ठा—प्रतिष्ठा स्थापना।

पतिट्ठा ठावणा ठाण, ववत्था सठिती ठिती।
अवट्ठाण अवत्था य, एगट्ठा चिट्ठणा त्ति य॥ (बृकभा ६३५६)

पत्ति—पत्नी (स्त्री)।

पत्ति वधु त्ति वा।
वधू उपवधू व त्ति, इत्थिया पदम त्ति वा॥
अगणा महिला णारी, पोहट्टी जुवति त्ति वा।
जोभिता धणिता व त्ति, विलक त्ति विलासिणी।
इट्ठा कता पिया व त्ति, मणामा हितइच्छिता।
इस्सरी सामिणी व त्ति, तधा वल्लभिक त्ति वा॥[1] (अवि पृ ६८)

पत्थेमाण—चाहता हुआ।

पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे। (विपा १/५७)

---

१ देखे—परि० २

पद—हिंसा ।

पद ति वा भूताधिकरण ति वा हणण ति वा एगट्ठा ।
(दशजिचू पृ २९०)

पदपाश—पैरो का बधन ।

पदपाश कूड उपक । (सूचू १ पृ ३३)

पदुम—पद्म ।

पदुम पुडरीक च, पकय णलिण ति वा ।
सहस्सपत्त सतपत्त, सप्फ ति कुमुद ति वा ।।
तधुप्पल कुवलय, तधा गद्दभग ति वा ।
तणसोल्लिक ति वा बूया, तधा तामरस ति वा ।।
इदीवर कोज्जक ति, पाडल कदल ति वा ।[1] (अवि पृ ६३)

पधावति—दौडता है ।

पधावति त्ति वा बूया, सधावति विधावति ।
परिधावति त्ति वा बूया, तधा णिद्धावति त्ति वा ।।[2] (अवि पृ ८०)

पभासइ—प्रभासित करता है ।

पभासइ त्ति वा उज्जोएइ त्ति वा एगट्ठा ।[3] (दशजिचू पृ ३०७)

पभु—योग्य, समर्थ ।

पभु त्ति वा जोग्गो त्ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ ३३१)

पमिलायति—म्लान होता है ।

पमिलायति पविद्धसति विद्धसति ।[4] (स्था ३/१२५)

पम्हुठ—विस्मरण ।

पम्हुठ त्ति वा परिठविय ति वा एगट्ठ । (व्यभा ८ टी प २९)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० ३
३ देखे—परि० ३
४ देखे—परि० ३

पम्हुट्ठ— विनष्ट ।

पम्हुट्ठे पमुक्के पब्भट्ठे पकिण्णे पविसिते पमुच्छिते पलोलिते परावत्ते परिसडिते परिसोडिते पडिसिद्धे पप्फोडिते पडिणायिते पडिहरिते पडिदिन्ने पडिछुद्धे पडिते परिवढिते पडिलोलिते पडिसरिते पडिओघुते ।
(अवि पृ १६६)

पयत्त—सयत ।

पयतो पयत्तवान् अप्रमत्त । (दश्रुचू प ८६)

पयस्—पानी ।

पय पिच्च नीरमुदकम् । (प्रसाटी प २६२)

पयाति—उत्पन्न होता है ।

पयाति उपपद्यत इत्यनर्थान्तिरम् ।[1] (सूचू २ पृ ३४४-४५)

पर— ज्येष्ठ ।

पर प्रधान ज्येष्ठम् । (निचूभा ३ पृ ४)

परग्घ—महगा ।

परग्घम्हि महग्घम्हि जुत्तग्घम्हि । (अवि पृ १६)

परज्झ—परवश ।

परज्झा परवसा रागद्दोसवसगा । (उचू पृ १२६)

परम—प्रधान ।

परम पहाण ति होति एगट्ठ । (जीतभा ७०६)

परमाणु—परमाणु ।

परमाणुर्निरशो निरवयवोनिष्प्रदेशो निर्भेद । (आवमटी प ४५)

परिउसित—पास मे बठा हुआ ।

परिउसितो पज्जुसितो थितो त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २७३)

---

१ देखो—परि० ३

परिकम्मण—परिकर्म, सीवन ।

परिकम्मण ति वा सिव्वण ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ १४३)

परिकर्म—भावना ।

परिकर्मेति वा भावनेति वा एकार्थम् । (बृकटी पृ ३६७)

परिक्कमिज्ज—सस्कारित करे, युक्त करे ।

परिक्कमिज्जासि घडिज्जासि जोत्तेज्जासि ।[1] (आच पृ ११०)

परिक्खित्त—विस्तारित ।

परिक्खित्त त्ति परिक्षिप्तो विस्तारित । (अतटी प ७)

परिगण्यमान—गिना जाता हुआ ।

परिगण्यमान परीक्ष्यमाण मीमांस्यमानो वा । (सूचू १ पृ २०८)

परिगम—पर्याय, गुण ।

परिगमो त्ति वा पज्जाहारो त्ति वा परिरओ त्ति वा एगट्ठ ।
(निचूभा ४ पृ २७९)

परिग्गह—परिग्रह ।

परिग्गहो, मचयो, चयो, उवचयो, निहाण, सभारो, सकरो, आयारो, पिडो, दव्वसारो, महिच्छा, पडिबधो, लोहप्पा, महद्दी, उवकरण, सरक्खणा, भारो, सपायुप्पायको कलिकरडो, पवित्थरो, अणत्थो, सथवो, अगुत्ति, आयासो, अविओगो, अमुत्ति, तण्हा, अणत्थको, आसत्ति, असतासो ।[2] (प्र ५/२)

परिचेट्ठति—चेष्टा करता है ।

परिचेट्ठति त्ति वा बूया, तधा विप्परिचेट्ठते ।
परिवत्तते त्ति वा बूया, तधा विप्परिवत्तते ॥[3] (अवि पृ ८०)

परिज्जभासि—परीक्षापूर्वक बोलने वाला ।

परिज्जभासि त्ति वा परिक्खभासि त्ति वा एगट्ठा ।
(दशजिचू पृ २६४)

---

१ देखे—परि० ३

२ देखे—परि० २

३ देखे—परि० ३

परिज्झा—इच्छा ।

परिज्झ ति वा पत्थण ति वा गिद्धि त्ति वा अभिलासो त्ति वा कख ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३०)

परिभासति—निन्दा करता है ।

परिभासति परिभवति अवमण्णति ।[1] (दश्रचू प ७)

परिभीत—अपमानित ।

परिभीते अवमाणिते विमाणिते । (अवि पृ १०८)

परियट्टण—परावर्तन, अभ्यास ।

परियट्टण ति वा अब्भसण ति वा गुणण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २८)

परिरय—परिधि ।

परिरय पर्याहार परिधि । (व्यभा २ टी प १०)

परिवदण—परिवदना ।

परिवदण-माणण-पूयणाए । (आ १/४४)

परिवयण—परिवाद ।

परिवयण परिवातो अगुणकित्तण । (निचूभा ३ पृ ५)

परिवुड्ढ—पुष्ट ।

परिवुड्ढे त्ति ण बूया, बूया उवचिए 'त्ति य ।
सजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे ।। (दश ७/२३)

परिवूढ—मोटा ।

परिवूढ वा उवचितदेह वा सजातदेह वा पीणितदेह वा । (दशजिचू पृ २५३)

परिसहण—सहना ।

परिसहण ति वा अहियासण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २१०)

---

१. देखें—परि० ३

परिहार—परिहार ।

परिहार परित्यागो वर्जन । (व्यभा २ टी प १०)

परिहार—एक प्रकार का तप ।

परिहार तवो त्ति एगट्ठ । (व्यभा ५/१४३)

परूवण—प्ररूपण ।

परूवण त्ति वा कप्पणे त्ति वा एगट्ठा । (निपीचू पृ ३२)

परूवण त्ति कहण ति वक्खाण ति मग्गो त्ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ १७)

परूवित—प्ररूपित ।

परूवित पण्णवित ति एगट्ठा । (आचू पृ १३६)

पर्यंव—पर्याय ।

पर्यंवा विशेषा धर्मा इत्यनर्थान्तरम् । (भटी पृ ११७५)

पर्याय—पर्याय, विशेष धर्म ।

पर्याया गुणा विशेषा धर्मा इत्यनर्थान्तरम् । (प्रज्ञाटी प १७६)

पर्याया भेदा धर्मा बाह्यवस्त्वालोचनप्रकारा इत्यनर्थान्तरम् ।
(आवहाटी पृ १०६)

पर्याया पर्यवा पर्यया धर्मा इत्यनर्थान्तरम् ।
(विभामहेटी १ पृ ४७)

पर्याय भेद भाव इत्यनर्थान्तरम् । (विभामहेटी १ पृ ३३)

पर्याय—परिपाटी, क्रम ।

पर्याय परिपाटिरित्यनर्थान्तरम् । (ज्ञाटी प ५५)

पलिउंचण—माया ।

पलिउंचण ति य माय त्ति य नियडि त्ति य एगट्ठा ।
(व्यभा १ टी प ४७)

पलिमंथ—विघ्न ।

पलिमथो वक्खेवो वक्खोड विणास विग्घो य । (बृकनि ६३१४)

पवयण—प्रवचन ।

सुयधम्म तित्थ मग्गो, पावयण पवयण च एगट्ठा । (आवनि १३०)

पवयण ति वा सुत्त ति वा अत्थे ति वा । (आवचू १ पृ १०७)

पविट्ठ—प्रविष्ट ।

पविट्ठो त्ति व जो बूया, तधा अतिगतो त्ति वा ।
तधातिसरितो व त्ति, तधा लीणो त्ति वा पुणो ।।

(अवि पृ ८६)

पवेइय—प्रवेदित, कहा हुआ ।

पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ।[1] (दश ४/१)

पव्वइज्जा—दीक्षित करे ।

पव्वइज्जा सजमेज्जा सवरेज्जा ।[2] (स्था ३/१७५)

पव्वइय—प्रव्रजित ।

पव्वइए सजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणव दुक्खक्खवे नवस्सी ।[3] (स्था ४/१)

पव्वाविय—प्रव्रजित ।

पव्वाविय मुडाविय सेहाविय सिक्खाविय ।[4] (भ २/५२)

पहर—प्रहार करो, मारो ।

पहर, छिंद, भिंद, उप्पाडेहि, उक्खणाहि, कत्ताहि, विकत्ताहि य, भज, हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ, आकड्ढ, विकड्ढ ।[5] (प्र १/२७)

पहारेत्थ—निश्चय किया ।

पहारेत्थ त्ति सप्रधारितवान् विकल्पितवान् । (ज्ञाटी प ३७)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २
५. देखें—परि० ३

पहेण—उपहृत भोजन।

पहेण त्ति वा उक्खित्तभत्त ति वा एगट्ठा। (आचू पृ ७७)

पागार—प्राकार।

पागारो फलिहो त्ति य वति त्ति। (अवि पृ २४१)

पाठीण—मछली।

पाठीण तिमि तिमिंगिल। (प्र १/५)

पाण—प्राण (प्राणी)।

पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे।[1] (भ २/१४)

पाण—चांडाल।

पाणा डोंबा किणिया सोवागा। (व्यभा ४/२ टी प २१)

पाणवह—हिंसा।

पाणवहुम्मूलणा सरीराओ, अवीसभो, हिंसविहिंसा, तहा अकिच्चं च, घायणा, मारणा य, वहणा, उद्दवणा, तिवायणा य, आरंभ, समारंभो, आउयकम्मस्स उवद्दवो, (भेय, णिट्ठवण, गालणा य, संवट्टग, संखेवो) मच्चू, असंजमो, कडग-मद्दण, वोरमण, परभव-संकामकारओ, दुग्गतिप्पवाओ, पावकोवो य, पावलोभो, छविच्छेओ, जीवियंतकरणो, भयंकरो, अणकरो, वज्जो, परितावण-अण्हओ, विणासो, निज्जवणा, लुंपणा गुणाणं विराहणत्ति।[2] (प्र १/३)

पात्र—पात्र।

पात्रं भाजनमाधार इति पर्यायवचनम्। (बृकटी पृ १६४)

पात्र—योग्य।

पात्रस्य योग्यस्य परिणामकस्य। (व्यभा १० टी प ११०)

पाद—पाद।

पादस्यैवाय पदशब्द पर्यायो ज्ञेय। (प्रसाटी प ४३)

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

पादव—वृक्ष ।

पादवो व दुमो व त्ति, रुक्खो वा अगमो त्ति वा ।
तथा थावरकायो त्ति, विडवि त्ति व जो वदे ॥[1] (अवि पृ ६३)

पामुद्दिका—पैर का आभूषण ।

पामुद्दिक त्ति वा बूया, वम्मिका पाअसूचिका ।
तधा पाघट्टिका व त्ति, तधा खिखिणिक त्ति वा ॥[2]
(अवि पृ ७१)

पार—अन्त ।

पारमन्तगमनमित्येकोऽर्थ । (सूचू २ पृ ३३५)

पारण—पूरा करना ।

पारण ति वा पालण ति वा पारगमण ति वा एगट्ठा ।
(आवचू २ पृ २५३)

पालित—रक्षित ।

पालितो रक्खितो चेव विन्नेया गुत्त रक्खिते । (अवि पृ १५७)

पाली—मर्यादा (पाल) ।

पाली मेरा सीमतिक त्ति । (अवि पृ २४१)

पाव—पाप ।

पावे वज्जे वयरे, पके पणये खुहे दुहमसाते ।
सगे धुण्णे य रए, कम्मे कलुसे य एगट्ठा ॥
(आवचू १ पृ ६०६)

पावे वज्जे वेरे पके पणए । (उशाटी प ६७)

पाव—पापी, रौद्र कार्य करने वाला ।

पावो, चडो, रुद्दो, खुद्दो, साहसिओ, अणारिओ, निग्घिणो, निस्ससो, महब्भओ, पइभओ, अतिभओ, बीहणओ, तासणओ, अणज्जो, उव्वेयणओ य, निरवयक्खो, निद्धम्मो, निप्पिवासो, निक्कलुणो, निरयवास-गमण-निधणो, मोह-महब्भय-पवड्ढओ, मरण, वेमणसो । (प्र १/२)

---

१ देखे—परि० २
२. देखे—परि० २

पावा असजया अविरया अणिहुण-परिणाम-दुप्पयोगी । (प्र १/४)

पावा चडदडा अणारिया णिग्घिणा णिरणुकपा।[1] (सूटी २ प १३)

पावकम्मनिसेहकिरिया—पाप कर्म की निषेधक क्रिया ।

पावकम्मनिसेहकिरिय त्ति वा अवस्सकम्म ति वा अवस्सकिरिय त्ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ३५०)

पावय—पापकारी ।

पावए सावज्जे सकिरिए सउक्केसे अण्हयकरे छविकरे भूताभिसकणे ।[2] (स्था ७/१३२)

पास—बधन ।

पासो त्ति य बधणो त्ति य एगट्ठ । (निभा ४३४३)

पासाण—पत्थर ।

पासाणो पत्थरो व त्ति, उपलो त्ति मणि त्ति वा ।
सिलोपट्टो त्ति वा बूया, गडसेलो त्ति वा पुणो ।।
णामतो गिरिको व त्ति, तहा पव्वतको त्ति वा ।
सेलो वइरो त्ति वा बूया, मेरुको मरुभूतिको ।।[3] (अवि पृ ७८)

पासादिय—दर्शनीय ।

पासादिए दरिसणिज्जे अभिरुवे पडिरुवे ।[4] (उपा १/१५)

पाहुड—उपहार ।

पाहुड ति पहेणग ति वा एगट्ठ । (आचू पृ ३५०)

पाहुड पहेण पणयण एगट्ठा । (बृकभा २६७८)

पिंड—समूह ।

पिंड निकाय समूहे, सपिंडण पिंडणा य समवाए ।
समोसरण निचय उवचय, चए य जुम्मे य रासी य ।।[5]
(ओनि ४०७)

---

१ देखो—परि० २
२ देखो—परि० २
३ देखो—परि० २
४. देखो—परि० २
५ देखो—परि० २

पिञ्चिअ—कूटा हुआ ।

पिञ्चिउ त्ति वा विप्पिउ त्ति वा कुट्टित्तो त्ति वा एगट्ठ ।
(निचूभा २ पृ ६८)

पिज्ज—प्रेम ।

पिज्ज प्रेम राग । (उशाटी पृ ५६४)

पितवण्ण—पीला रग ।

पितवण्ण ति पीतक ॥
पउमकेसरवण्ण ति, तिगिञ्छसरिस ति वा ।[1] (अवि पृ ६०)

पितामह—ब्रह्मा ।

पितामहो त्ति वा बूया, तधा बभ ति वा पुणो ।
सयभु त्ति व जो बूया, तधेव य पयावति ॥[2] (अवि पृ १०१)

पियइ—जानता है ।

पियइ त्ति वा मिणइ त्ति वा दो वि अविरुद्धा ।[3]
(व्यभा ६/२५७ टी प ४६)

पियति—पीता है, पान करता है ।

पियति त्ति वा आपियइ त्ति वा एगट्ठा ।[4] (दशजिचू पृ २०२)

पिवासित—पिपासित ।

पिवासितो परिस्सतो छातो तण्हाइतो त्ति वा । (अवि पृ १२१)

पीणणिज्ज—प्रीणनीय ।

पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे ।[5]
(ज्ञा १/१२/४)

पीहन—इच्छा करना ।

पीहन अभिलसन प्रार्थनम् । (उचू पृ १११)

---

१ देखें—परि० २
२. देखे—परि० २
३ देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० २

पुच्छणा—पृच्छा ।

पुच्छणा दावणा णिज्जवणा य एगट्ठा । (आवचू १ पृ ५०८)

पुच्छा—पृच्छा, प्रेरणा ।

पुच्छ त्ति वा चोदण त्ति वा एगट्ठ । (निचूभा ३ पृ ५१६)

पुज्ज—पूज्य ।

पुज्जो पूयणिज्जो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३१८)

पुट्ठ—पुष्ट ।

पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे । (उ ७/२)

पुण्ण—पुण्य ।

पुण्या पवित्रा शुभा । (जबूटी प २०२)

पुप्फ—पुष्प ।

पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ, फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि ।
सुमणाणि अ सुहुमाणि अ, पुप्फाण होंति एगट्ठा । (दशहाटी प १७)

पुराण—पुराना ।

पुराण जरठ कक्खडीभूत । (विपाटी प ३७)

पूज्यभक्त—पूज्यभक्त ।

पूज्यभक्त उत्क्षिप्तभक्त पट्टकभक्त एतान्येकार्थिकानि ।
(बृकटी पृ १०१५)

पूयणट्ठि—पूजार्थी ।

पूयणट्ठी जसोकामी माण (कामय) सम्माणकामए ।[1] (दश ५/२/३५)

पूया—पूज्य के लिए निष्पादित भोजन ।

पूय त्ति वा उक्खित ति वा पट्टगो त्ति वा भत्त ति वा पन्नागारो त्ति वा एगट्ठ । (बृकचू पृ १५०)

पूया उक्खित्त ति य पट्टगभत्त च एगट्ठा । (बृकटी पृ १०१५)

---

१ देखे—परि॰ २

पूया—पूजा ।

पूय त्ति वा विणओ त्ति वा आयारो त्ति वा एगट्ठ । (उचू पृ १९५)

पूर्व—पहला ।

पूर्व प्रथममादिरिति पर्याया । (अनुद्वाहाटी पृ ३०)

पृथु—विस्तार ।

पृथु विस्तार विच्छुण्णा । (उचू पृ १८६)

पेक्खते—देखता है ।

पेक्खते पेच्छते व त्ति, णिज्झायति व पेक्खति ।
णियक्खेति त्ति वा बूया, णिरिक्खति णिलिक्खति ॥[1] (अत्रि पृ १०७)

पेम—प्रेम ।

पेम ति वा रागो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २६२)

पेहति—देखता है ।

पेहति त्ति वा पेच्छति त्ति वा एगट्ठा ।[2] (दशजिचू पृ ३२६)

पोग्गलत्थिकाय—पुद्गलास्तिकाय ।

पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा, जाव असखेज्जपएसिए इ वा, अणतपएसिए इ वा खधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा ।[3] (भ २०/१८)

पोत्थ—वस्त्र ।

पोत्थ पोत वस्त्रम् । (अनुद्वामटी प १२)

पोरेवच्च—अग्रगामिता ।

पोरेवच्च पुरोवर्त्तित्व अग्रेसरत्वम् । (विपाटी प ४६)

प्रकाश—आविर्भाव ।

प्रकाश प्रकटत्वम् आविर्भाव इत्यप्यभिन्नार्थम् ।
(विभामहेटी २ पृ १४०)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २

प्रकृति—प्रकृति (साङ्ख्यमत का एक तत्त्व) ।

प्रकृति प्रधानमव्यक्तमित्यनर्थान्तरम् ।[1] (सूचू २ पृ ३१९)

प्रकृति—भेद, विभाग ।

प्रकृतयो भेदा इत्यनर्थान्तरम् । (आवमटी प ४४)

प्रज्ञापनीय—कथनीय ।

प्रज्ञापनीय अभिलाप्य इत्येकोऽर्थ । (बृकटी पृ ३०४)

प्रणमन—प्रणाम ।

प्रणमन प्रणाम पूजा । (उचू पृ १)

प्रणाम पूजा नमस्कारो वदनमिति पर्याया । (विभाकोटी पृ ३)

प्रणिधान—अभिप्राय ।

प्रणिधान बुद्धिरभिप्राय इत्यनर्थान्तरम् । (सूचू २ पृ ३४१)

प्रतिगमन—व्रतभग ।

प्रतिगमन प्रतिभञ्जन व्रतमोक्षम् । (व्यभा १० टी प ५८)

प्रतिबद्ध—प्रतिबद्ध ।

प्रतिबद्धा युक्ता सश्लिष्टा । (निचूभा २ पृ ८)

प्रतिमा—प्रतिज्ञा ।

प्रतिमा प्रतिज्ञा अभिग्रह । (स्थाटी प १८८)

प्रतीष्ट—स्वीकृत ।

प्रतीष्ट प्रतीप्सित अभ्युपगतम् । (ज्ञाटी प २०)

प्रत्येति—विश्वास करता है ।

प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति ।[2] (प्रसाटी प २८८)

प्रथम—पहला ।

प्रथम आद्य प्रधान । (विपाटी प ५६)

---

१ देखो—परि० २

२ देखो—परि० ३

प्रथमसमवसरण—वर्षावास, चतुर्मास ।

प्रथमसमवसरण ज्येष्ठावग्रहो वर्षावास इति चैकार्थम् ।[1]

(बृकटी पृ ११५१)

प्रवेश—भेद ।

प्रदेशा प्रतिभागा भेदा । (व्यभा १० टी प ३२)

प्रभव—उत्पत्ति ।

प्रभव प्रसूति निर्गम । (सूचू १ पृ २०)

प्रभाति—प्रकाशित होता है ।

प्रभाति शोभते प्रकाशते ।[2] (जबूटी प २१)

प्रयोग—प्रयोग ।

प्रयोग उपाय इत्यनर्थान्तरम् । (आवचू १ पृ ५१४)

प्रवचन—प्रवचन ।

प्रवचनमुपदेशोऽर्हद्वचनम् । (विभाकोटी पृ २)

प्रवहण—गाडी ।

प्रवहण यान गन्त्री । (ज्ञाटी प १००)

प्रवृत्ति—उत्पत्ति ।

प्रवृत्ति प्रवाह प्रसूतिरित्येकार्था । (बृकटी पृ ७२)

प्रशस्त—प्रशस्त ।

प्रशस्त प्रधान प्रथम । (अनुद्वामटी प ३४)

प्राप्ति—लाभ ।

प्राप्ति गोचरा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ४३१)

प्रासुक—प्रासुक ।

प्रासुक प्रगतासु निर्जीवम् । (दशहाटी प १८१)

प्रीति—प्रीति ।

प्रीति पेम वा पेज्ज वा । (सूचू २ पृ ४०६)

---

१ देखो—परि० ३ २. देखो—परि० ३

प्रेक्षण—देखना ।

प्रेक्षण प्रेक्षा विलोकन निरीक्षितमिति पर्याया । (बृकटी पृ १७६)

फरुस—कठोर ।

फरुसा णिट्ठुरा अमनोज्ञा । (आचू पृ ३८०)

फलपिंडी—फलो का गुच्छा ।

फलपिंडि त्ति वा बूया, फलगोच्छो त्ति वा पुणो ।
फला फलिक त्ति वा बूया, फलमाल त्ति वा पुणो ॥
(अवि पृ ७१)

फासिय—स्पृष्ट, पालित ।

फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय आणाते अणुपालिय ।
(प्र ६/२४)

फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए ।[1]
(आचूला १५/४६)

फासेइ—स्पर्श करता है ।

फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ ।[2] (भ २/५६)

फुडण—भंजन ।

फुडण भजण छेयण तच्छण विलुंचण ।[3] (प्र १/३५)

फुडित—स्फुटित ।

फुडित रुग्ग भग्ग । (अवि प ५३)

फुलित—भग्न ।

फुलित दालित दलिय छड्डित परिसाडित भग्ग त्ति । (अवि प ८०)

फुल्ल—विकस्वर ।

फुल्ल विकोच विकाश विकसित उन्मीलित उन्मिषित उन्निद्र विजृम्भित हसित उद्बुद्ध व्याकोशमित्यादि । (विभामहेटी १ पृ ५०६)

---

१ देखो—परि० २
२ देखो—परि० ३
३ देखो—परि० २

फुल्ल विकच विकसितमुत्फुल्लबुद्धमुद्भिन्नम् । (विभाकोटी पृ ३९९)

फुसित—पालन करना ।

फुसिते दुज्झोसए त्ति वा एगट्ठ । (आचू पृ १७३)

बभण—ब्राह्मण ।

बभणो त्ति वियाणीया, तधा बभरिसि त्ति वा ।
बभवत्थो त्ति वा बूया, बभण्णू पिअबभणो ।।

दिजाति त्ति व जो बूया, दिजातीवसभो त्ति वा ।
द्विजातीपुंगवो व त्ति, दिजाईपवरो त्ति वा ।।

विप्पो व त्ति व जो बूया, तधा विप्परिसि त्ति वा ।
तधा विप्पगुणोवेओ, विप्पाण पवरो त्ति वा ।।
जण्णो कतो त्ति वा बूया, जण्णकारि त्ति वा पुणो ।
जट्ठो पढमजण्णो त्ति जण्णमुंडो त्ति वा पुणो ।।
सोमो त्ति व जो बूया, सोमपाइ त्ति वा पुणो ।
सोमपा इत्ति वा बूया, सोमणाम च वाहरे ।।
अग्गिहोत्त ति वा बूया, आहितग्गि त्ति वा पुणो ।
अग्गिहोत्तरती व त्ति, अग्गिहोत्त हुत ति वा ।।
वेदो त्ति व जो बूया, वेदज्झाइ त्ति वा पुणो ।
वेदाण पारगो व त्ति, चतुवेदो त्ति वा पुणो ।।[1] (अवि पृ १०१)

बकुश—चितकबरा ।

बकुश शबल कर्बुर इति पर्यायाः । (प्रसाटी प २१०)

बद्ध—बद्ध ।

बद्धे ति वा रइय इ वा गहिय इ वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ७७)

बद्ध गृहीतमुपात्तमित्यनर्थान्तिरम् । (अनुद्वाचू पृ ६१)

बलाहक—बादल ।

बलाहको त्ति मेघो त्ति, तधा जलहरो त्ति वा । (अवि पृ ९२)

बहु—अनेक ।

बहवे त्ति वा अणेगे त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २६१)

---

१ देखें—परि० २

बहुजनाचीर्ण—उचित ।

बहुजनाचीर्णमिति वा उचितमिति वा जीतमिति वा एकार्थम् ।[1]
(व्यभा १ टी प ७)

बाल—मूढ ।

बाल मद मूढा। (उचू पृ १७२)

बाला अज्ञा सदसद्विवेकविकला । (सूटी १ प ६४)

बाल—नवीन ।

बाल अभिनव प्रत्यग्र । (सूटी १ प १३३)

बालक—बालक ।

बालको दारको व त्ति, सिंगको पिल्लको त्ति वा ।
वच्छको तण्णको व त्ति, पोतको कलभो त्ति वा ॥[2] (अवि पृ ६७)

बीय—आधार ।

बीय ति वा पइट्ठाण ति वा मूल ति वा एगट्ठा ।
(दशजिचू पृ २१६)

बीहणय—भयभीत ।

बीहणओ तासणओ पइभओ अइभउ त्ति एकार्था । (प्रटी प २०)

बुज्झेज्ज—बोधि को प्राप्त करो ।

बुज्झेज्ज त्ति वा परिजाणेज्ज त्ति वा एगट्ठ ।[3] (सूचू १ पृ २१)

बुद्ध—बुद्ध ।

बुद्धा महाभागा वीरा । (सू १/८/२४)

बुद्ध अवगततत्व गीतार्थ । (दशहाटी प १६०)

बुद्धि—बुद्धि ।

बुद्धी मती मेधा । (इभा ३६/गा ७)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० ३

बेंति—बोलते है।

बेंति ब्रुवति कथयन्ति ।[1] (निपीचू पृ १८)

बोंदि—शरीर ।

बोदि तनु शरीरमिति पर्याया. । (अनुद्वाहाटी पृ ६३)

भंग—प्रकार ।

भग प्रकारो भेद । (अनुद्वामटी प ११०)

भंत—सम्मानवाची सबोधन ।

भतेत्ति भदत भयान्त भवान्त ।[2] (आवचू १ पृ ५६३)

भक्ति—भक्ति ।

भक्ति सेवा बहुमानो वा । (भटी प १६६)

भग्ग—अनाथ ।

भग्गो त्ति दुग्गतो किस्सते अणत्तो अणाधो त्ति । (अवि पृ २५०)

भग्ग—भग्न ।

भग्गे भिण्णे विणट्ठे विपाडिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छित्ते णिलुंचिते विणासिते विसधिते रूपाकडे भूमिते विज्झविते धते । (अवि पृ १६८)
भग्गे छिण्णे भिण्णे विणासिते विपाडिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छिन्ने विणट्ठे वते सिवितालिते रूयकडे पूसिते विज्झविते ।[3]

(अवि पृ १७१)

भजना—विधि ।

भजना सेवना परिभोग । (निचूभा २ पृ ४७)

भजना सेवना विधि । (विभाकोटी पृ ७७६)

भणिय—कथित ।

भणिय ति वा वुत्त ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २७४)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २

भद्दग—कल्याण ।

भद्दग ति वा कल्लाण ति वा सोभण ति वा एगट्ठा ।

(दशजिचू पृ २०१)

भमर—भवरा ।

भमरा मधुकर तोड्डा पतग । (अवि पृ २३७)

भय—भय ।

भय दुक्ख असात मरण असति अणत्थाणमिति एगट्ठा ।[1]

(आचू पृ २६)

भव—जन्म ।

भवो गति जन्मेति पर्याया । (नदीटी पृ ३७)

भवण—घर ।

भवण-घर-सरण-लेण ।[2] (प्र १/१४)

भवति—होता है ।

भवति हवइ त्ति वा एगट्ठा ।[3] (दशजिचू पृ ३२६)

भवन—होना ।

भवन भूति भाव । (अनुद्वाचू पृ २६)

भवन भाव पर्याय । (निपीचू पृ ३३)

भवन वर्तन करण । (उचू पृ २४६)

भविय—भविष्य मे होने वाला ।

भविय त्ति भव्यो भावीत्यनर्थान्तिरम् । (व्यभा २ टी प ४)

भव्य—योग्य ।

भव्यो योग्यो दल पात्रमिति पर्याया । (अनुद्वाहाटी पृ १५)

भाग—विभाग ।

भागा अविभागा पलिच्छेदा इति चानर्थान्तिरम् ।

(नकप्र ५ टी पृ ११७)

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

भाव—अभिप्राय ।

भाव अभिप्राय प्रार्थना । (दशहाटी प ६७)

भाव—भाव ।

भाव अधिगम उपयोग इत्यनर्थान्तरम् । (निचूभा पृ २७६)

भासा—व्याख्या, कथन ।

भासा विभासा अर्थव्याख्या । (निपीचू पृ ३१)

भिक्खु—भिक्षु ।

तिण्णे ताती दविए वती य खते य दत विरते य ।
मुणि तावत पण्णवगुज्जु भिक्खु बुद्धे जति विदू य ।।
पव्वयिये अणगारे पासडी चरय बभणे चेव ।
परिव्वाए समणे निग्गथे सजते मुत्ते ।।
साहू लूहे य तधा तीरट्ठी होति चेव णातव्वे ।
णामाणि एवमादीणि होति तवसजमरताण ।।

(दशनिगा २४४-४६)

भिक्खु त्ति वा जति त्ति वा खमग त्ति वा तविस्स त्ति वा भवते त्ति वा एगट्ठा ।[1] (निचूभा ४ पृ २७४)

भिण्ण—भिन्न, व्यक्त ।

भिण्ण ति वा उज्झिय ति वा एगट्ठा । (निचूभा ४ पृ २३६)

भीम—भयानक ।

भीमा भयानका भयभैरवा । (उचू पृ २३७)

भीय—भयभीत ।

भीया तत्था तसिया उव्विग्गा ।[2] (विपा १/१/६५)

भूमि—अवस्था विशेष ।

भूमिरिति स्थानमिति अवस्थारूपकाल इति त्रयोऽपि शब्दा एकार्था ।[3]

(व्यभा १० टी प १००)

---

१ देखो—परि० २

२ देखो—परि० २

३. देखो—परि० २

भेउरधम्म—अशाश्वत, नष्ट होने वाला।

भेउरधम्म विद्धंसण-धम्म अधुव अणितिय असासय चयावचइय विपरिणामधम्म। (आ ५/२९)

भेद—विकल्प।

भेदा विकल्पा अंशा इत्यनर्थान्तरम्। (नंदीटी पृ ५६)

भेय—विकल्प।

भेउ त्ति वा विकप्पो त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा।
(आवचू १ पृ १०)

भेसण—डराना।

भेसण-तज्जण-तालणाते।[1] (पृ ६/११)

भोज्ज—भोज, जीमनवार।

भोज्ज ति वा संखडि त्ति वा एगट्ठं।[2] (बृकटी पृ ८९०)

भोयण—भोजन।

भोयण जेमण व त्ति आहारो त्ति व जो वदे। (अवि पृ ६४)

मइ—मति।

मइ सण्णा णाण एगत्था। (आचू पृ ९)

मइ त्ति वा मुत्ति (सइ) त्ति वा सण्ण त्ति वा आभिणिबोहियणाण ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २९)

मंद—मन्द।

मन्दा जडा अशक्ता। (सूटी १ प ८१)

मंदर—मेरुपर्वत।

मदर मेरु मणोरम सुदसण सयपभे य गिरिराया।
रयणुच्चयपियदसण मज्झे लोगस्स नाभी य॥

अत्थे अ सूरियावत्ते, सूरियावरणे त्ति य।
उत्तरे य दिसाई य, वडेंसे इअ सोलसे॥ (सम १६/३)

१ देखें—परि० २ २ देखें—परि० २

मदर मेरु मणोरम सुदसण सयपभे य गिरिराया ।
रयणोच्चए सिलोच्चए मज्झे लोगस्स नाभी य ॥
अच्छे य सूरियावत्ते सूरियावरणे त्ति य ।
उत्तमे य दिसादी य, वडेंसे ति य सोलस ॥ (जबू ४/२६०)

मदरसि मेरुसि मणोरमसि सुदसणसि सयपभसि गिरिरायसि रयणुच्चयसि सिलुच्चयसि लोयमज्झसि लोयणाभिसि अच्छसि सूरियावत्तसि सूरियावरणसि उत्तमसि दिसादिसि अवतससि धरणिखीलसि धरणिसिंगसि पव्वतिंदसि पव्वयरायसि ।[1] (सूर्य ५/१)

मदरो मेरु सुदर्शन सुरगिरि । (सूटी १ पृ १४७)

मग्गण—एषणा ।

मग्गण ति वा एसण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ १११)

मग्गण—पृथक्करण ।

मग्गण ति वा पिथकरण ति वा विवेयण ति वा विजओ त्ति वा, एगट्ठा । (दशजिचू पृ २२९)

मग्गत—पीछे ।

मग्गतो त्ति वा पिट्ठउ ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ५६)

मज्जाया—मर्यादा ।

मज्जाय त्ति वा ओहि त्ति वा मेर त्ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ ३७)

मज्झ—मध्य ।

मज्झो त्ति मज्झिमो त्ति य, मज्झत्थो मज्झदेसक व त्ति ।
मज्झण्हो मज्झट्ठिय, तम त्ति मज्झण्हमेतेहि ॥
(अवि पृ २४७)

मज्झि मज्झतिको मज्झो मज्झिमो । (अवि पृ ७७)

मणसकप्प—अध्यवसाय ।

मणसकप्पो त्ति वा अज्झवसाण ति वा चित्त ति वा एगट्ठ ।
(निचूभा ३ पृ ७०)

१ देखे—परि० २

मणाम—सुन्दर ।

मणामो त्ति व जो बूया, छलिको (छदको) त्ति व जो वदे ।
पियदसणो त्ति वा बूया, तधा भावस्सिओ त्ति वा ॥
(अवि पृ १२०)

मणुण्ण—मनोज्ञ ।

मणुण्णा मणहरा निव्वुइकरा । (जीवटी प ४०१)

मतिसहित—मति-सहित ।

मतिसहित ति वा मतिअणुगय ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ६)

मधुर—मधुर ।

मधुरा य मणोहरा य इट्ठा य णिव्वुतिकरा य ।
चित्ता आणदकरा य । । (अवि पृ २५६)

मनन—पर्यालोचन ।

मनन चिन्तन पर्यालोचनम् । (सूटी १ पृ २६४)

मन्नति—जानते है ।

मन्नति वा जाणति वा एगट्ठा ।[1] (दशजिचू पृ २३३)

मयूर—मोर ।

मयूरो कारडओ पिलओ सिरिकठो । (अवि पृ ६२)

मरण—मृत्यु ।

मरण मच्चू वा मारो । (आचू पृ १०८)

मल—पाप ।

मल ति वा पाव ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २६४)

महत्थ—महान् ।

महत्थ महग्घ महरिह । (ज्ञा १/१/११६)

महब्भय—भयकर ।

महब्भय भयकर पतिभय उत्तासणग । (प्र ३/७)

1 देखे—परि० ३

महृव्वय—बडी उम्र वाला, बूढा ।

महव्वयो त्ति वा बूया, तधा जुण्णवयो त्ति वा ।
तधा तीतवयो व त्ति, तधा गतवयो त्ति वा ।।
थेरो जुण्णो त्ति वा बूया, वुड्ढो परिणतो त्ति वा ।
जरातुरो त्ति वा बूया, खीणवसो त्ति जो वदे ।।
वत्तुस्सयो त्ति वा बूया, णिव्वत्त त्ति व जो वदे ।
उववुत्त ति वा बूया, झीण वा णिट्ठित ति वा ।।
वात ति मलित व त्ति, तधा परिमलित ति वा ।
मिलाण परिसुक्ख ति, तधा परिसडित ति वा ।।[1]

(अवि पृ १००)

महाकम्मतर—महाक्रिया ।

महाकम्मतराए महाकिरियतराए महासवतराए । (भ ५/१३३)

महापउम—महापद्म (नृप) ।

महापउमे देवसेणे विमलवाहणे ।[2] (स्था ९/६२)

महापण्ण—महाप्रज्ञ ।

महापण्णे प्रधानप्रज्ञ विस्तीर्णप्रज्ञो वा । (सूचू १ पृ २०४)

महामुणि—महामुनि ।

महामुणी त्ति वा महानाणी त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४८)

महित—पूजित ।

महितो पूजितो नमसितो एगट्ठा । (आवचू १ पृ ८६)

माण—मान, अभिमान ।

माणे मदे दप्पे थभे गव्वे अत्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उण्णते उण्णामे दुण्णामे । (भ १२/१०४)

मान स्तम्भो गर्व उत्सुको अहकारो दर्प स्मयो मत्सर ईर्ष्या ।[3]

(अनुद्वाहाटी पृ ६२-६३)

---

१ देखें—परि० २

२. देखे—परि० २

३. देखें—परि० २

माण—माप।

माण ति वा परिच्छेदो त्ति वा गहणपगारो त्ति वा एगट्ठा।

(आवचू १ पृ ३७७)

मातग—हाथी।

मातगो त्ति मतिंगो त्ति गयो त्ति। (अवि पृ ६२)

मातगे दुपाणे कुजरे। (जीव ३/११८)

माया—माया।

माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए जिम्हे किब्बिसे आयरणया गूहणया वचणया पलिउचणया सातिजोगे।

(भ ११/१०५)

मायाप्रणिधिरुपधिर्निकृति वचना दम्भ कूटमभिसधान साठ्य-मनार्जवम्।[1] (अनुद्वाहाटी पृ ६३)

माहण—श्रमण, माहन।

माहणे त्ति वा समणे त्ति वा भिक्खु त्ति वा णिग्गथे त्ति वा।

(सू १/१६/१)

मिच्छा—मिथ्या।

मिच्छ त्ति वा वितह ति वा असच्च ति वा असट्ठिय ति वा अकरणीय ति वा एगट्ठा। (आवचू १ पृ ३४६)

मिणति—मापता है।

मिणति त्ति वा परिच्छिदति त्ति वा गिण्हाति त्ति वा एगट्ठा।[2]

(आवचू १ पृ ३७७)

मित—परिमित।

मित परिमित स्तोकम्। (उचूपृ २४६)

मित्त—मित्र, स्वजन।

मित्त-नाइ-नियग-सयण सबधि-परियणा। (ज्ञा १/२/१२)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० ३

मित्ते ति वा वयसे ति वा सही ति वा सुहिए ति वा सगतिए ति वा ।
(जीव ३/६१३)

मित्ता इ वा, वयसा इ वा, णायए इ वा, घाडिए इ वा, सहाए इ वा, सही इ वा, सगइए इ वा[1] (जबू २/२९)

मित्ति—मैत्री ।

मित्ति सम्मोइ सपीति । (अवि पृ ११२)

मिथ्या—असत्य ।

मिथ्या वितथमनृतमिति पर्याया । (स्थाटी प ४७८)

मिय—परिमित ।

मिय माइय त्ति एकार्थौं । (प्रटी प ८१)

मुडावित्तए—मुंडित करने के लिए ।

मुडावित्तए सिक्खावित्तए उवट्ठावित्तए । (स्था २/१६८)

मुक्क—मुक्त ।

मुक्को विरते त्ति एगट्ठा । (आचू पृ ६४)

मुक्त—छोडा हुआ ।

मुक्त त्यक्त क्षिप्त उज्झित निरस्तमित्यनर्थान्तरम् ।
(अनुद्वाचू पृ ६१)

मुकुल—अर्धविकसित पुष्प ।

मुकुल कुड्मल कोरक जालक कलिकावृन्तमित्यादि ।
(विभामहेटी १ पृ ५०६)

मुकुल कुड्मल पोण्डाप्रविबुद्धम् । (विभाकोटी पृ ३९९)

मुख—मुख ।

मुख वक्त्र वयण च एगट्ठ । (निचूभा २ पृ २८५)

मुखर—वाचाल ।

मुखरा वाचाला असम्बद्धप्रलापिन । (जबूटी प २६४)

---

१ देखे—परि० २

मुच्छा—मूर्च्छा ।

मुच्छा य गिद्धि य दो वि एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४५-४६)

मुच्छिय—आसक्त ।

मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे त्ति एकार्था ।[1]

(विपाटी प ४१)

मुणि—मुनि ।

मुणि त्ति वा णाणि त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २७६]

मुणि त्ति वा समणो त्ति वा माहणो त्ति वा । (आचू पृ १०६)

मुणित—ज्ञात ।

मुणित गमितमित्येकोऽर्थ । (सूचू २ पृ ३३५)

मुदित– प्रसन्न ।

मुदितो त्ति व जो बूया, तधा पमुदितो त्ति वा ।
हट्ठो तुट्ठो पहट्ठो, उदत्तो सुमणो त्ति वा ।।

(अवि पृ १२१)

मुदिता—प्रीति ।

मुदिते वा पमोद वा हास पीति । (अवि पृ १२१)

मुद्ध - मुख्य ।

मुद्ध पर प्रधानमाद्यम् । (निचूभा २ पृ ४४६)

मुनि—मुनि ।

मुनि सयत इति पर्यायौ । (दशहाटी प १८४)

मुम्मुर—अग्नि की अवस्था विशेष ।

मुम्मुरे ति वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा ।[2] [ज्ञाटी प २११]

मूढ—मूढ ।

मूढो त्ति वा बालो त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ १५६)

---

१ देखें—परि० २   २ देखें—परि० २

मूर्च्छित—आसक्त ।

मूर्च्छिता मूढा गृद्धिमन्ता । (उशाटी प ३३७)

मूर्च्छितो मूढो गतविवेकचैतन्य । (ज्ञाटी प ६१]

मूल—आदिबिन्दु ।

मूलमादिरित्यनर्थान्तरम् । (उचू पृ १०४)

मूल—आधार ।

मूल प्रतिष्ठा आधारो य एगट्ठा । (आचू पृ ४४)

मूल ति वा प्रतिष्ठान ति वा हेतु त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ११०)

मूल—निमित्त ।

मूलमिति निमित्त कारण प्रत्यय इति पर्याया । (आटी पृ ६८)

मूलच्छेज्ज—मूलोच्छेद ।

मूलच्छेज्ज ति वा मूलगुणपडिवाओ त्ति वा एगट्ठा ।
(आवचू १ पृ १०२)

मेढी—आधार ।

मेढी पमाण आहारे आलबण चक्खू ।[1] (उपा १/१३)

मेधावी—मेधावी ।

मेधावी प्रज्ञावान् मर्यादाव्यवस्थितो वा । (सूटी १ प ४६)

मेरा—मर्यादा ।

मेरा मर्यादा सामाचारी । (व्यभा ३ टी प ५२)

मेलना—मिलाना ।

मेलना योजना घटनेत्येकोऽर्थ । (आवमटी प ३५०)

मैथुनिकी—वेश्या ।

मैथुनिक्या मैथुनाजीवया वेश्यया ।
मैथुनिक्या मैथुनाजीवया पणाङ्गनया । (व्यभा ४/१ टी प ६७)

---

१ देखें—परि० २

मोत्ति—मुक्ति ।

मोत्ती णिज्जाण निव्वाण च एगट्ठियाणि । (दश्रुचू प ६१)

मोहणिज्जकम्म—मोहनीयकर्म ।

मोहणिज्जस्स ण कम्मस्स बावन्न नामधेज्जा पण्णत्ता-कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, सजलणे, कलहे, चडिक्के, भडणे, विवाए, माणे, मदे, दप्पे, थभे, अत्तुक्कोसे, गव्वे, परपरिवाए, उक्कोसे, अवक्कोसे, उन्नए, उन्नामे, माया, उवही, नियडी, वलये, गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए, दभे, कूडे, जिम्हे, किब्बिसिए, अणायरणया, गूहणया, वचणया, पलिकुचणया, सातिजोगे, लोभे, इच्छा, मुच्छा, कखा, गेही, तण्हा, भिज्जा, अभिज्जा, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नदी, रागे ।[1] (सम ५२)

यजन—यज्ञ ।

यजन इज्या याग । (अनुद्वामटी प २६)

यत—सयत ।

यत प्रयत प्रयत्नवान् । (सूटी १ प २०६)

यत प्रयत सत्सयमवान् । (सूटी १ प २६६)

युवा—युवक ।

युवा यौवनस्थ प्राप्तवया । (अनुद्वामटी प १६२)

योग—अवसर ।

योग प्रस्तावोऽवसर । (विभाकोटी पृ ५)

योग—सामर्थ्य, चेष्टा ।

योगो विरिय थामो, उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा ।
सत्ती सामत्थ ति य, योगस्स हवति पज्जाया ।। (आवचू १ पृ ६०९)

योगो व्यापार कर्म क्रियेत्यनर्थान्तरम् । (आवहाटी १ पृ १०)

रज्ज—राज्य ।

रज्ज देसो त्ति य जणपदो ।[2] (अवि पृ २४१)

---

१ देखें—परि० २ २ देखें—परि० २

रज्जति—आसक्त होता है।

रज्जति वा पच्चति वा डज्झति (वज्झति) वा एगट्ठा।[1]

(आचू पृ १७६)

रति—मैथुन।

रति रत निधुवनम्। (प्रटी प ६७)

रमति—क्रीडा करते है।

रमति ललति कीलति किट्टति मोहेति। (राज १८५)

रमति ललति कीडति।[2] (जीवटी प ३५१)

रयणी—रात्री।

रयणि त्ति सव्वरि त्ति य णिस त्ति खणता णिवियरत्ति।

(अवि पृ २४५)

रयस्—वेग।

रय वेग चेष्टाऽनुभव फलमित्यनर्थान्तरम्।[3]

(आवहाटी १ पृ २६३)

रस—रस।

रसो जूसो त्ति वा बूया खलको पाणिय ति वा। (अवि पृ ६४)

रसिय--कथित।

रसिय-भणिय कूविय-उक्कूइय। (प्र १/२७)

रहस्स—ह्रस्व, अल्प, छोटा।

रहस्स मडहक व त्ति, सखित्त खुडित ति वा।
रुद्ध ति मण्णिरुद्ध ति, सपीलित ण पीलित ॥
सपिडित पेंडित ति, सन्नद्ध सन्निकासिय।
अप्प थोव ति किंचि त्ति, अतिथोव ति वा पुणो ॥
आकुडित सहित ति, तधा सवेल्लित ति वा।
उस्सारित ति णिम्मट्ठ अवमट्ठाऽपमज्जिय ॥[4] (अवि पृ ११५)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

राग—अनुराग।

रागो त्ति वा सगो त्ति वा एगट्ठा। (निचूभा ३ पृ १९०)

इच्छा मूर्च्छा काम स्नेहो गार्ध्यं ममत्वमभिनन्द अभिलाषो इत्यनेकानि रागपर्यायवचनानि।[1] (उशाटी प ६३०)

राशि—राशिगणित।

राशिर्गच्छ इत्यनर्थान्तरम्। (व्यभा २ टी प ६५)

राहु—राहु (देव विशेष)।

सिंघाडए जडिलए खतए खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे कण्हसप्पे।[2] (भ १२/१२३)

रिउ—ऋतु, ऋतुमास।

रिउ त्ति वा कम्ममासो वा एगट्ठ। (निचूभा ४ पृ २७८)

रीत—पद्धति।

रीत रीति स्वभाव। (भटी प २१२)

रुइय—रुचिकर।

रुइय ति वा सेय ति वा एगट्ठा। (दशजिचू ३२९)

रुट्ठ—रुष्ट, कुपित।

रुट्ठे कुविए चंडिक्किए। (भटी प ३२२)

रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसता। (भ ७/१८१)

रुण्ण—रोदन।

रुण्णे वा कदिते वा कूजिते वा। (अवि पृ १६२)

रुण्ण-रडिय-कंदिय-निग्घुटठरसिय-कलुणविलवियाइ।[3] (प्र १०/१४)

रुद्धापित—रोका हुआ।

रुद्धापिते य सतापिते य सतप्पमाणे य। (अवि पृ २५४)

रुसिय—रुष्ट होना।

रुसिय हीलिय निंदिय खिसिय। (प्र १०/१४)

---

१ देखे—परि० २

२ देखें—परि० २

३. देखें—परि० २

रोयमाणी—रुदन करती हुई ।

रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी ।[1]

(ज्ञा १/१/१०६)

लंचा—रिश्वत ।

लंचा उत्कोच इत्यनर्थान्तरम् । (व्यभा १ टी प ८)

लघुक—प्रायश्चित्त का एक प्रकार ।

लघुकमिति वा उद्घातितमिति वा शुक्लमिति वा लघुकस्य नामानि ।[2]

(बृकटी पृ ६१)

लज्जामो—दया करते हैं ।

लज्जामो त्ति वा दयामो त्ति वा एगट्ठा ।[3] (आचू पृ २५६)

लज्जिय—लज्जित ।

लज्जिया विलिया वेड्डा । (जबू २/६०)

लज्जिया विलिया विड्डा । (निर ८३)

लता—श्रेणि ।

लता श्रेणि परिपाटी चेत्येकार्था ।[4] (प्रसाटी प ४३५)

लद्ध—प्राप्त ।

लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागताओ । (स्था ३/३६६)

लद्धट्ठ—लब्धार्थ ।

लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा ।[5]

(भ २/६४)

लद्धमईय—मतिमान् ।

लद्धमईए लद्धसुइए लद्धसण्णे ।[6] ।(ज्ञा १७/१२)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० ३
४. देखें—परि० २
५. देखें—परि० २
६. देखें—परि० २

लब्भति—प्राप्त करता है ।

लब्भति त्ति वा दीसति त्ति वा पन्नायति त्ति वा एगट्ठा ।[1]
(आवचू १ पृ १०३)

लय—लीनता ।

लय लीनता तिरोभाव इत्यनर्थान्तरम् । (विभामहेटी २ पृ १४०)

लयण—घर ।

लयण ति वा गिह ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २६०)

लाघविय—अल्पेच्छा ।

लाघविय अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया । (भ १/४१७)

लाभ—लाभ, प्राप्ति ।

लाभे आगमे य उवगमण उवगमो वा वि । (अवि पृ २५५)

लाभ प्राप्ति परिच्छित्तिरित्येकोऽर्थ । (आवमटी प ६४)

लिङ्ग—चिह्न ।

लिग चिंघ निमित्त, कारणमेगट्ठियाइ एयाइ । (जीतभा १७)

लिंगिय—लिग—हेतु से निष्पन्न ।

लिंगिय ति वा चिंधणिप्फण्ण ति वा करणनिप्फण्ण ति वा परनिमित्त-णिप्फण्ण ति वा एगट्ठ । (आवचू १ पृ ७)

लुटण—लुटना ।

लुटण लोट्टण पलोट्टण उट्ठाण चेव एगट्ठा । (व्यभा ३ टी प १२४)

लूसग—हिंसक ।

लूसगा भजगा विहारगा एगट्ठा । (आचू पृ २४२)

लोटन—लुटना ।

लोटन लुठन प्रलोटनमवधावनमिति चैकार्थ । (व्यभा ३ टी प १२४)

---

१ देखे—परि० ३

लोभ—लोभ ।

लोभे इच्छा मुच्छा कखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पत्थणया लालप्पणया कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नदिरागे ।
(भ १२/१०६)

लोभो रागो गार्ध्यमिच्छा मूर्च्छाऽभिलाषो सग काक्षा स्नेह ।[1]
(अनुद्वाहाटी पृ ६३)

लोमसिका—ककडी ।

तधा लोमसिका व त्ति, अक्खोल त्ति व जो वदे ।
तधा कक्कुडिगा व त्ति, तधा सगलिक त्ति वा ॥[2] (अवि पृ ७१)

लोमहरिसजणण—रोमाञ्चक ।

लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए । (भ ६/८५)

लोलुग—प्रगाढ ।

लोलुग भृश गाढ प्रगाढ निरन्तरम् ।[1] (सूचू १ पृ १३०)

लोलुय—लोलुप ।

लोलुया मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा । (उपा ८/२०)

वइर—वज्र ।

वइर वज्ज ति एगट्ठ । (व्यभा १०/३)

वंक—वक्र, कुटिल ।

वक वकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउचग ओवहिए । (उ ३४/२५)

वंझा—वध्या ।

वझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया ।[4] (ज्ञा १/२/८)

वंद—समूह ।

वदो सघो त्ति गणो महाजणो आउल णिकायो त्ति । (अवि पृ २४०)

---

१. देखें—परि० २
२. देखें—परि० २
३. देखें—परि० २
४. देखें—परि० २

वंदण—वंदन ।

वंदण-माणण-पूयणासु । (अवि पृ १४६)

वंदण नमसण पूयण । (नंदीचू पृ ४८)

वंदणग—वंदनकर्म ।

वंदणगति वा चितिकमति वा कितिकमति वा पूजाकमति वा विणयकमति वा एगट्ठिताणि ।[1] (आवचू २ पृ १४)

वंदित—वंदित ।

वंदिते पूजिते सक्कते सथुते अच्चिते पणमिते अभिवादिते ।[2] (अवि पृ २६८)

वंश—वंश परम्परा ।

वंश प्रवाह आवलिका इत्येकार्थाः । (जंबूटी प २५८)

वक्क—वाणी ।

वक्क वयण च गिरा, सरस्सती भारती य गो वाणी ।
भासा पण्णवणी देसणी, य वईजोग जोगे य ॥[3] (दशनि १७२)

वक्कमति—च्युत होते है ।

वक्कमति विउक्कमति चयति ।[4] (भ २/११३)

वक्र—वक्र ।

वक्र कुटिलो निष्कारणप्रतिसेवी । (व्यभा १ टी प १४)

वक्षस्कार—सीमा-पर्वत ।

वक्षस्कारपर्वतो गजदन्तापरपर्याय । (जंबूटी प ३१४)

वगडा—बाड, परिक्षेप ।

वगडा पलिहत वतिपरिक्खेव इत्यनर्थान्तरम् । (बृकटी पृ २०२)

वचन—वचन ।

वचन वागित्येकार्थम् । (बृकटी पृ ६०)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३

वच्छक—वत्सक ।

वच्छके पुत्तके चेति पोतके पिल्लके तधा ।
सिंगके तण्णके व त्ति (अवि पृ १४२)

वज्ज—कर्म ।

वज्ज ति वा पात ति वा चोण्ण ति वा । (सूचू १ पृ १२०)

वज्ज—वैर ।

वज्ज ति वा वेर ति वा पर ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २२५)

वड—विभाग ।

वडो वटगो विभागो एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ २४४)

वडो वड्गो विभागो एगट्ठ । (आवचू २ पृ २३४)

वडभिका—वामन, ह्रस्व ।

वडभिका मडहकोष्ठा वक्राध काया । (जबूटी प १६१)

वण्णित—वर्णित ।

वण्णिनाइ कित्तिताइ बुइयाइ पसत्थाइ अब्भणुण्णताइ । (स्था ५/३५)

वण्णिय—वर्णित ।

वण्णिय ति वा देसिय ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २२२)

वन्दते—वन्दन करता है ।

वदते स्तौति नमस्यति ।[1] (सूर्यटी प ६)

वध—वध ।

वधे तालणे मालणे । (आचू पृ १५२)

वध बधण तालणकण निवायण । (प्र १/३०)

वध बधण जायण । (प्र २/२०)

वध बधण विघाय दुव्विघाय ।[2] (प्र ४/१)

---

१ देखे—परि० ३

२ देखें—परि० २

वमण—वमन।

वमण ति वा विरेयण ति वा विगिंचण ति वा विसोहण ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १२६)

वमेति—वमन करते है।

वमेति परिच्चयति छड्डेति।[1] (नंदीचू पृ ५०)

वयति—जाते है।

वयति त्ति वा गच्छति त्ति वा एगटठा।[2] (दशजिचू पृ ३२४)

वयत्थ—वयस्थ।

वयत्थो पवत्तो उदग्गो पोअडो। (अवि पृ ६८)

वर—श्रेष्ठ।

वरा प्रधाना श्रेष्ठा। (दश्रुचू प ७६)

वर्द्धन—व्याख्या।

वर्द्धन वृद्धि व्याख्या। (अनुद्वाचू पृ ६०)

ववगत—व्यपगत।

ववगत चत्त विप्पजढ। (अनुद्वाचू पृ ६)

ववगय—व्यपगत।

ववगय-चुय-चइय-चत्त। (भ ७/२५)

ववगय-चुय-चाविय। (अनुद्वा ३७)

ववण—वपन।

ववण ति रोवण ति य पकिरण परिसाडणा एगट्ठ। (व्यभा १/४)

१. देखे—परि० ३

२ देखे—परि० ३

ववसाय—व्यवसाय, अवबोध।

ववसाउ त्ति वा णिच्छयत्थपडिवत्ति त्ति वा अवबोहो त्ति वा एगट्ठा।
(आवचू १ पृ १०)

ववसाओ बुद्धिअज्झवसाओ एगट्ठ। (आचू पृ २७६)

ववहार—व्यवहार।

सुत्ते अत्थे जीए कप्पे मग्गे तहेव नाए य।[1] (व्यभा १/७)

ववहार—प्रायश्चित्त।

ववहारो आलोयण, सोही पच्छित्तमेव एगट्ठा। (व्यभा ४/१/६०)

ववहारो आरोवण, सोही पच्छित्तमेयमेगट्ठ। (जीतभा १८४)

वसित्तु—पालन करके।

वसित्तु वा पालित्तु वा एगट्ठा। (आचू पृ २०६)

वसुम—वसुमान्।

वसुम ति व वसिम ति व वसति व वुसिम व। (निभा ५४२०)

वस्तु—वस्तु।

वस्तु द्रव्य दलिकमित्यनर्थान्तरम्। (बृकटी पृ ३००)

वहित—व्यथित।

वहित ति वा चलिय ति वा (खोभिय ति वा) एगट्ठा।
(आचू पृ १७७)

वाघात—व्याघात।

वाघातो विणासो य एगट्ठा। (व्यभा १०/३२२)

वाट—बाड, काटों की परिधि।

वाटेन वाटकेन वृत्या। (प्रटी प २२)

वाम—प्रतिकूल।

उत्तर ति व वाम ति, वामावट्टो त्ति वा पुणो।
वामसीलो त्ति वा बूया, वामायारो त्ति वा पुणो॥

१ देखे—परि० २

वामपक्खा ति वा बूया, वामदेस ति वा पुणो ।
वामभाग ति वा बूया, वामतो त्ति व जो वदे ।।
अपवाम ति वा बूया, अपसव्व ति वा वदे ।
अवसव्व ति वा बूया, अप्पग्घ ति वा पुणो ।।[1] (अवि पृ ७६)

वारण—निवारण ।

वारण निवारण प्रवारण । (उचू पृ ५६)

वावड—व्यापृत ।

वावडो व्यापृत नियुक्त । (निचूभा ३ पृ १२०)

वावण्ण—विनष्ट ।

वावण्ण विणट्ठ कुहित पूति । (निचूभा २ पृ ६३)

वाहिय—रोगी ।

वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य । (ज्ञा १/१३/२२)

विउस्सग- व्युत्सर्ग ।

विउस्सग्गो त्ति वा विवेगो त्ति वा अधिकिरण ति वा छड्डुण ति वा वोसिरण ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३७)

विकल्प—विकल्प ।

विकल्पो व्याहृतिर्भजना । (विभामहेटी १ पृ ७५७)

विकल्प—अंश ।

विकल्पा अंशा इत्यनर्थान्तरम् । (आवहाटी १ पृ ७)

विकल्पित—विकल्पित

विकल्पित रचित स्वेच्छाकल्पितम् । (व्यभा ३ टी प ११३)

विकूणित- रुदित ।

विकूणिते कूविते य, रुण्ण विक्कदिते तधा । (अवि पृ १५५)

विक्खिण्ण—विकीर्ण ।

तधा विक्खिण्ण णिक्खिण्णे विप्पकिण्णे विणासिते ।
अवकिण्णे । (अवि पृ १०८)

---

१ देखें—परि० २

विक्षेप—व्याघात ।

विक्षेपो व्याघात पलिमन्थ । (व्यभा ८ टी प ३)

विगत—नष्ट ।

विगत विनष्टमतीतम् । (विभामहेटी २ पृ १२)

विगिंचण—विवेक ।

विगिंचण ति वा विवेगो त्ति वा खवण त्ति वा एगट्ठा ।
(आचू पृ १२७)

विग्घ—विघ्न ।

विग्घो वक्खोडो बधण ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ४१)

विग्घित—बाधित ।

विग्घित त्ति विप्पित त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ २४२)

विचल—अध्रुव ।

विचले अधुवे व त्ति, ओधुते सधुते त्ति वा ।
अधुवे त्ति गए व त्ति, आधुते त्ति धुते त्ति वा ।। (अवि पृ ८०)

विचिकित्सा—सशय ।

विचिकित्सा चित्तविप्लुति सशयज्ञानम् । (सूटी १ प २६१)

विचीयते—निर्णय किया जाता है ।

विचीयते निर्णीयते पर्यालोच्यते । (स्थाटी प १८३)

विच्छिण्णतर—विस्तृत ।

विच्छिण्णतराए चेव विपुलतराए चेव महततराए । (जबू ४/१०२)

विच्छिन्न—विस्तीर्ण ।

विच्छिन्न ति वा अणत ति वा विउल ति वा एगट्ठा ।
(दशजिचू पृ २१५-१६)

विजय—पराभव ।

विजय अभिभव पराभव पराजय इति पर्याया । (आटी प ८३)

विजय—विचय, चितन ।

विजयो विचारणा मग्गणा एगट्ठा । (आनि ४३)

विज्ञापना—परिभोग ।

विज्ञापना परिभोग एकार्थिकानि । (सूचू १ पृ ६७)

विणय—विनय ।

विणय पणामो य एगट्ठा । (आवनि १०६२)

विणिच्छय—

विणिच्छओ त्ति वा अवितहभावो त्ति वा एगट्ठ । (दशजिचू पृ २८७)

विण्णाण—विज्ञान, अभिप्राय ।

विण्णाण वेयणा भावो अभिप्पातो त्ति तुल्ल । (दशअचू पृ ७)

वितर्क—वितर्क ।

वितर्क मीमासेत्यनर्थान्तरम् ।[1] (सूचू १ पृ ३६)

वितिगिच्छा—विचिकित्सा, सदेह ।

वितिगिच्छा विमर्ष मतिविप्लुति सदेह । (निचूभा ३ पृ ६८)

वित्थिन्न—विस्तृत ।

वित्थिन्न वित्थत व त्ति, वत्थित ति व जो वदे ।
वितत वियाणक व त्ति, तधा पत्थरिय ति वा ।। (अवि पृ ११७)

विदित—ज्ञात ।

विदित आगमित उपलब्ध । (दश्रुचू पृ १७)

विदित मुणितमेकोऽर्थ । (आवचू १ पृ ८६)

विदु—ज्ञानी ।

विदु त्ति वा नाणि त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३३४)

विद्वस्—विद्वान् ।

विद्वान् पण्डितो विरत । (सूटी १ प १६१)

विद्वान् पण्डितो धर्मदेशनाभिज्ञ । (सूटी १ प २४६)

---

१ देखे—परि० २

विधि—प्रकार ।

विधिर्विधान भेद प्रकार इत्यनर्थान्तरम् । (बृकटी पृ १६६)

विधिर्विधान प्रकार । (सूचू १ पृ ४२)

विनयन्ति—प्रेरित करते है ।

विनयन्ति प्रेरयन्ति अतिवाहयन्ति ।[1] (प्रटी प ६४)

विन्नत्तिकारण—ज्ञान का हेतुभूत ।

विन्नत्तिकारण ति वा जाणितव्वगसामत्थजुत्त ति वा विन्नत्तिहेउभूय ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ७३)

विपरिणामइत्ता—विपरिणत कर ।

विपरिणामइत्ता परिपालइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धसइत्ता । (जीवटी प २१)

विप्फालण—पूछना ।

विप्फालण त्ति पुच्छण त्ति वा एगट्ठ । (व्यभा २ टी प २१)

विभजन—विभाग ।

विभजन विभाग विस्तर । (निचूभा ४ पृ ४०२)

विमल—मल रहित ।

विमल सुद्ध परिमज्जित । (अवि पृ २४५)

वियजित—तथ्य ।

वियजित ति वा तत्थ ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २८६)

वियालण—चिन्तन ।

वियालण ति वा मग्गण ति वा ईहण ति वा एगट्ठ । (आवचू १ पृ १०)

विरत--विरत, सयमी ।

विरते समिए सहिए सया जए । (सू १/१६/३)

---

१ देखें—परि० ३

विरति—विरति।

विरतिर्विरमण निवृत्ति·। (पचा पृ १३)

विरमण—विरमण।

विरमण विरति सावद्ययोगनिवृत्ति। (विभामहेटी १ पृ ७६४)

विरल्लिय—प्रसारित।

विरल्लिओ त्ति प्रसारित क्षिप्त। (ज्ञाटी प २४१)

विराहणा—विराधना।

विराहणा खडणा भजणा य एगट्ठा। (निपीचू पृ १३)

विरिय—वीर्य, सामर्थ्य।

विरिय सामत्थ वा, परक्कमो चेव होइ एगट्ठा। (जीतभा १७७४)

विल्लरी—राजहसिनी।

विल्लरी रायहसि त्ति कलहसि। (अवि पृ ६९)

विवाद—विवाद।

विवादे विग्गहे त्ति य कलह। (अवि पृ १४३)

विवेक—विवेक।

विवेक पृथग्भाव विनाशम्। (सूटी १ प १६४)

विशति—वास करता है।

विशति निविशति प्रविशति।[1] (निचूभा २ पृ २४४)

विशुद्ध—विशुद्ध।

विशुद्धो निर्मल स्नातक। (प्रसाटी प २१२)

विशोधि—शुद्धीकरण।

विशोधि प्रायश्चित्तमित्यनर्थान्तरम्। (बृकटी पृ ११२)

विसय—विषय, उपपत्ति।

विसओ त्ति वा सभवो त्ति वा उववत्ति त्ति वा एगट्ठा।
(आवचू १ पृ २१)

---

१ देखें—परि० ३

विसारत—विशारद।

विसारतो पडित बुद्धिमत। (अवि पृ १२३)

विश्र—दुर्गन्धयुक्त।

विश्रा आमगन्धय कुथिता। (प्रटी प १६)

विह—प्रकार।

विह त्ति वा भेद त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२६)

विहरण—विहरण।

विहरण क्रीडन विहार। (सूटी १ प ८६)

विहि—विधि, क्रम।

अणुपुव्वी परिवाडी कमो य नायो ठिई य मज्जाया।
होइ विहाण च तहा, विहीए एगट्ठिया हुति॥ (बृकभा २०८)

विहि मेरा सीमा आयरणा इति एगट्ठा। (आवहाटी २ पृ ६६)

वीथि—मार्ग, गली।

वीथी रत्था वा मग्गो वा एगट्ठा। (आचू पृ २६)

वीर—धर्मवीर।

वीरा समिता सहिता जता। (आचू पृ १५३)

वीर—वीर।

वीरा सूरा विक्रान्ता। (दशअचू पृ ६३)

वीरिय—वीर्य।

वीरिय ति वा बल ति वा सामत्थं ति वा परक्कमो ति वा थामो त्ति वा एगट्ठा। (निपीचू पृ २४)

वीरिय ति वा सामत्थ ति वा सत्तीति वा एगट्ठा।
(आवचू १ पृ ३७६)

वुग्गह—कलह ।

वुग्गहो त्ति वा कलहो त्ति वा भडण ति वा विवादो त्ति वा एगट्ठा ।
(निचूभा ४ पृ १०१)

वुच्चमाण—निर्भर्त्सित होता हुआ ।

वुच्चमाणो असुस्सूसमाणो निदिज्जमाणो वा णिब्भच्छिज्जमाणो वा ।
(सूचू १ पृ १८२)

वुड्ड—वृद्ध, श्रावक ।

वुड्डा सावगा बम्भणा ।[1] (अनुद्वाचू पृ १२)

वुत्त—कथित ।

वुत्त ति वा भणित ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ २२१)

वृक—भेडिया ।

वृका ईहामृग पर्याया । (प्रटी प ६)

वृणीते—वर्णन करता है ।

वृणीते वृणोति वर्णयति ।[2] (उचू पृ १०२)

वेच्च—बुना हुआ ।

वेच्च व्यूत वानम् । (जीवटी प २१०)

वेर—**कर्म** ।

वेरे वज्जे य कम्मे । (उशाटी प २०६)

वेरति–विरति ।

वेरति वा वाति वा वेरमण ति वा एगट्ठ । (सूचू २ पृ ३६६)

वेला—सीमा ।

वेला मेरा सोमा मज्जाय त्ति एगट्ठ । (सूचू १ पृ १८२)

वेला सीमा मर्यादा सेतुरित्यनर्थान्तरम् । (उचू पृ ५६)

वेवित—कपित ।

वेविते परिदेविते पयलाइते पसुत्ते पतिते विप्पलोट्टिते । (अवि पृ १५५)

---

१ देखें—परि० २   २ देखें—परि० ३

वैगुण्य—विपरीतता ।

वैगुण्य वैधर्मता विपरीतभाव । (निचूभा ४ पृ २५०)

वोसट्ठ—छोडा हुआ ।

वोसट्ठ ति वा वोसिरिय ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४४)

वोसिरति—त्याग करता है ।

वोसिरति विसोधेति णिल्लवेति एगट्ठ ।[1] (आचू पृ ३६६)

व्यक्तिकर—व्याख्याकार ।

व्यक्तिकरो वार्त्तिकर इत्येकार्थौं । (बृकटी पृ ६४)

व्यञ्जक—उद्दीपित करने वाला ।

व्यञ्जक दीपकमित्यनर्थान्तरम् । (आवटि पृ ४४)

व्यञ्जनाक्षर—अक्षरो की आकृति ।

व्यञ्जनाक्षर द्रव्याक्षरमित्यनर्थान्तरम् । (विभामहेटी १ पृ ८६)

व्यत्यय—व्यत्यय, विपर्यास ।

व्यत्यये विपर्यासे उत्क्रमोल्लघने । (व्यभा ३ टी प १३५)

व्यवसायिन्—उद्यमी ।

व्यवसायी अनलस उद्योगवान् । (व्यभा ४/३ टी प १८)

व्यवहार—व्यवहार ।

व्यवहार अनुपदेश अननुमार्ग इत्यनर्थान्तरम् ।
(सूचू २ पृ ४०३)

व्यापन्न—विनष्ट ।

व्यापन्न विपन्न विनष्टम् । (प्रसाटी प २७५)

व्यावृत्त—निवृत्त ।

व्यावृत्त निवृत्तमपगतम् । (समटी प ४)

व्युत्सर्ग—कायोत्सर्ग ।

व्युत्सर्ग कायोत्सर्ग इत्यनर्थान्तरम् । (व्यभा १ टी प ३६)

---

१ देखे—परि० ३

शंकित—शंकित ।

शंकितमिति वा भिन्नमिति वा कलुषितमिति वा एकार्थम् । (व्यभा १० टी प ३३)

शांत—उपशांत ।

शान्त उपशान्त प्रशान्त अकषायवान् । (उचू पृ ६२)

शान्तो निशान्त अक्रोधवान् । (उचू पृ २८)

शापित—बुलाया हुआ ।

शापित शब्दित आकारित । (व्यभा ३ टी प ८३)

शिक्षित—प्रशिक्षित ।

शिक्षितमित्यतनीतमधीतम् । (अनुद्वाहाटी पृ ६)

शुभवृद्धि—कल्याणवृद्धि ।

शुभवृद्धि कल्याणोपचय सुखवर्धन वा । (पचा पृ १२१)

शृणोति—सुनता है, ग्रहण करता है ।

शृणोति गृह्णाति उपलभत इति पर्याया ।[1] (आवहाटी १ पृ ८)

शोधि—शोधि ।

शोधिरिति वा धर्म इति वा एकार्थ ।[2] (व्यभा १० टी प ९७)

श्लक्ष्ण—चिकना ।

श्लक्ष्णो मसृण स्निग्ध । (जबूटी प २९८)

श्लोक—प्रशसा ।

श्लोक श्लाघा कीर्तिम् आत्मप्रशसाम् । (सूटी १ प २४६)

सअट्ठ—हेतु सहित, सप्रयोजन ।

सअट्ठ सहेउ सनिमित्त । (सू २/१/११)

सअट्ठ सहेउ सकारण । (निचूभा ४ पृ ३८८)

संकण—शका ।

संकण सका चिन्ता । (निपीचू पृ १५)

१ देखें—परि० ३

२ देखें—परि० २

संकित—शकित ।

सकिते कखिते वितिगिच्छिते ।[1] (स्था ३/५२३)

संकीर्ण—व्याप्त ।

सकीर्णं व्याप्त सभिन्नम् । (विभामहेटी १ पृ ४९८)

संख—निर्मल, श्वेत ।

सख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे ।[2] (ज्ञा० १/१/१५६)

संखेव—सक्षेप ।

सखेव समासो त्ति व, ओहो त्ति व होति एगट्ठा । (जीतभा ६)

संग—विघ्न ।

सगो त्ति वा विग्घो त्ति वा वक्खोडो त्ति वा एगट्ठा । (सूचू १ पृ ८३)

सगो त्ति वा वग्घो त्ति वा वक्खोडि त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ३)

संग—बधन ।

सगो त्ति वा बधण ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ १४३)

संग—इन्द्रियों के विषय ।

सगो त्ति वा इदियत्थो त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३४६)

संगाम—सग्राम ।

सगामे जुद्धसद्देसु अब्भातलपलाइते ।
सन्नाहे जुद्धमरागे । (अवि पृ १४४)

संघ—सघ ।

सघ गण कुल गच्छ वा ।[3] (आचू पृ ३३०)

संघाड—प्रकार, भेद ।

सघाड त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठ । (बृकटी प ८११)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० २

सघात—समागम ।

सघात समिति समागम एते एगट्ठा । (अनुद्वाचू पृ ५६)

संचालयति—सचालित करते है ।

सचालयन्ति-सचारयन्ति पर्यालोचयन्ति ।[1] (ज्ञाटी प २७)

सजत—सयमी ।

सजते विमुत्ते निस्सगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेहबधणे ।[2] (प्र १०/११)

सजम—सयम ।

सजमो विरती य एगट्ठा । (दश्रुचू ६२)

सजमो त्ति वा सामाइय ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ३४६)

संजमठाण—सयमस्थान ।

सजमठाण ति वा अज्झवसायठाण ति वा परिणामठाण ति वा एगट्ठ । (निचूभा ४ पृ २८१)

संजमतवड्ढय—सयम-तप-वर्धक ।

सजमतवड्ढग त्ति वा आउत्ते त्ति वा अविधिपरिहारि त्ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ३४८)

संजमबहुल—सयमबहुल ।

सजमबहुले सवरबहुले सवुडबहुले समाहिबहुले । (प्र ८/११)

सजय—सयत ।

सजय-विरय-पडिहय (पावकम्मे) पच्चक्खाय-पावकम्मे अकिरिए सवुडे एगतपडिए ।[3] (सू २/४/२५)

संजायते—होता है ।

सजायते सभवति सचिट्ठते ।[4] (अवि पृ ८३)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० ३

सठाण—सस्थान, आकृति ।

मठाण ति वा आगिति त्ति वा एगट्ठा । (आवचू १ पृ ५५)

सत—तथ्य ।

सते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए ।[1] (ज्ञा १/१२/१६)

सत—शात ।

मते पसते उवसते पडिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे । (जबू २/६८)
सते पसते उवसते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे निरुवलेवे ।[2] (ज्ञा १/५/३५)

सत—श्रान्त, थका हुआ ।

मता तता परितता निव्विण्णा ।[3] (ज्ञा १/६/४५)

सत—सत्, अस्तित्व वाला ।

मत त्ति वा अत्थि त्ति वा विज्जमाण ति वा एगठ्ठा । (आवचू १ पृ १७)

सतत--निरन्तर ।

सन्ततमनुबद्ध प्रारब्धम् । (प्रटी प १२५)

संदाण—बधन ।

सदाण निदाण ति य पव्वो य होति एगट्ठा । (दश्रुनि १३५)
सताण ति वा निदाण ति वा बधो त्ति वा ॥[4] (दश्रुचू प ८६)

सति—शाति ।

सति त्ति वा णेव्वाण ति वा मोक्खो त्ति वा कम्मक्खयो त्ति वा एगट्ठ । (सूचू १ पृ १००)

सति विरति उवसम निव्वाण । (आ ६/१०२)

सथुणण—सस्तवन ।

सथुणण मथवो तू, थुणणा वदणगमेगट्ठ । (जीतभा १४२०)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३ देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

सधयेत्—सधान करे।

सधयेत् अभिसन्दध्यात् प्रार्थयेत्।[१] (सूटी १ प १८६)

संधान—ससार।

सधान सधि ससार। (दश्रुचू प ६१)

सधि—मैत्री।

सधी सपीइ सम्मोइ मित्ति णिव्वाणिमेव वा। (अवि पृ १२)

सपण्ण—पडित, प्रज्ञावान्।

सपण्णा पडिता पवियक्खणा तुल्ल। (दशअचू पृ ४८)

सपुण्णदोहला—जिसका दोहद पूर्ण हो गया हो वह स्त्री।

सपुण्णदोहला समाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला सपण्णदोहला। (विपा १/२/३०)

सपेहेति—देखता है।

सपेहेति त्ति सप्रेक्षते पर्यालोचयति।[२] (ज्ञाटी प ३७)

सबुद्ध—सबुद्ध।

सबुद्धा पडिया पवियक्खणा।[३] (दश२/११)

समय—सम्मत।

समओ त्ति वा अणुमओ त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २६३)

सयत—सयत।

सयत विरत निवृत्त। (सूचू १ पृ ६१)

सयता साधव सुसमाहिता।[४] (दशहाटी प २०२)

सरभ—हिसा।

सरभे सरमाभे आरभे।[५] (व्यभा १/४२)

---

१ देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३ देखें—परि० २
४. देखें—परि० २
५ देखें—परि० २

संवर—सवरण।

सवर घट्टण पिहुण एगट्ठ। (जीतभा ७०७)

संवरित—स्थगित।

सवरिता स्थगिता निवारिता। (निचूभा २ पृ २७१)

संविग्न—सविग्न साधु।

सविग्ना उद्यतविहारिण आयतस्थिता। (व्यभा ६ टी प ६)

संविचिण्ण—आसेवित।

सविचिण्णे त्ति सविचरित आसेवित। (ज्ञाटी प १०६)

संविद्—ज्ञान।

सवित् ज्ञानमवगमो भावोऽभिप्राय इत्यनर्थान्तरम्।

(आवमटी प ६)

सविदधिगमो ज्ञान भाव इत्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ पृ ४४३)

संशय—सशय।

सशय सदेहो वितर्क ऊहा वीमसेत्यनर्थान्तरम्। (सूचू १ पृ ३५)

संस्कृत—सस्कारित।

सस्कृत ति वा करण ति वा एगट्ठा। (उचू पृ १०३)

संस्तव—परिचय।

सस्तवपरिचयमभिष्वङ्ग। (सूटी १ प ६५)

संहर्ष—समूह।

सहर्ष समुदाय पिण्ड इत्यनर्थान्तरम्। (आवचू १ पृ ५७५)

सकर्मवीरिय—प्रमाद मे प्रयुक्त वीर्य।

सकर्मवीरिय ति वा बालवीरिय ति वा एगट्ठ। (सूचू १ पृ १६८)

सकल—सम्पूर्ण।

सकल परिपूर्णोऽच्छिन्नो। (विभामहेटी २ पृ ८१)

सक्क—शक्य।

सक्क ति वा सहय त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२०)

सक्क—इन्द्र ।

सक्क देविंद देवराय, मघव पाकसासण ।
सयक्कतु सहस्सक्ख, वज्जपाणि पुरदर ।।
दाहिणड्ढलोगाहिवइ एरावणवाहण सुरिंद ।[1] (प्र ३/१०६)

सक्कार—सत्कार ।

सक्कारे इ वा, सम्माणे इ वा, किइकम्मे इ वा, अब्भुट्ठाणे इ वा, अजलिपग्गहे इ वा, आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पदाणे इ वा ।[2] (भ १४/३२)

सक्त—आसक्त ।

सक्ता गृद्धा अध्युपपन्ना । (सूटी १ प १५)

सच्च—सत्य ।

सच्च सब्भूय अवितह अविसदिद्ध । (अनुद्वाचू पृ ८६)

सच्च तहिय आहातहिय । (सू २/१/३५)

सज्जइ—आसक्त होता है ।

सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ ।[3] (ज्ञा १५/१४)

सज्जिय—आसक्त ।

सज्जिय रज्जिय गिज्झिय मुज्झिय लुब्भिय । (प्र १०/१४)

सडइ—सडता है ।

सडइ वा पडइ वा गलइ वा ।[4] (निर १/५१)

सडण—विध्वसन ।

सडण-पडण-विद्धसण । (ज्ञा १/१/१०७)

सडण-पडण-विकिरण विद्धसणधम्म । (इभा २४/१)

सण्णा—सज्ञा ।

सण्ण त्ति वा बुद्धि त्ति वा नाण ति वा विण्णाण त्ति वा एगट्ठा ।
(आचू पृ १२)

---

१. देखें—परि० २
२. देखें—परि० २
३. देखें—परि० ३
४. देखें—परि० १

सण्णिहि—संग्रह ।

सण्णिही इ वा सण्णिचया इ वा निही इ वा निहाणा इ वा ।[1]

(भ ३/२६८)

सद्दहइ—श्रद्धा करता है ।

सद्दहइ पत्तियइ रोएइ ।[2] (भ ६/२३५)

सद्दूल—सिंह ।

सद्दूल सीह चिल्लला ।[3] (प्र १/६)

सन्त्राण—रक्षण ।

सन्त्राण-परित्राण रक्षणमित्येकोऽर्थं । (बृकटी पृ ५८१)

सन्धि—छिद्र ।

सन्धि छिद्र विवर । (सूटी १ प २६)

सन्नतपास—सुन्दर पार्श्व वाला ।

सन्नतपासा संगतपासा सुंदरपासा सुजातपासा । (प्र ४/८)

सन्नद्ध—सन्नद्ध ।

सन्नद्ध बद्ध कवचिय । (ज्ञाटी प २२८)

सप्पज्जाय—अस्तित्वयुक्त ।

सपज्जाय त्ति वा अत्थिभावो त्ति वा विज्जमाणभावो त्ति वा एगट्ठा ।

(आवचू १ पृ २६)

सप्पभ—प्रभा सहित ।

सप्पभा समिरीया सउज्जोया । (जंबू १/८)

सप्पभे समीरिईए सउज्जोवे । (आवचू १ पृ ४७६)

सबल—चितकबरा ।

सबलो ति वा चित्तलो त्ति वा एगट्ठ । (आवचू १ पृ १३८)

---

१ देखें—परि० २

२ देखें—परि० ३

३ देखें—परि० २

समण—शमन ।

समण सति परिहरणा दुगुछा वा एगट्ठा । (आचू पृ ४०)

समण—श्रमण ।

समणे ति वा, माहणे ति वा, खते ति वा, दते ति वा, गुत्ते त्ति वा, मुत्ते ति वा, इसी ति वा, मुणी ति वा, कती ति वा, विदू ति वा, भिक्खू ति वा, लूहे ति वा, तीरट्ठी ति वा, चरणकरण-पारविउ । (सू २/१/७२)

पव्वइए अणगारे, पासडी चरक तावसे भिक्खू ।
परिवायए य समणे, णिग्गथे सजए मुत्ते ।।
तिण्ण णेया दविए, मुणी य खते य दत विरए य ।
लूहे तीरट्ठी वि य, हवति समणस्स णामाइ ।। (दशनि ६५-६६)

समण समाहिय समत्त समजोगि । (जवू ५/५८)

समण सजय दत सुमण । (ओनिभा ११०)

समणे त्ति वा माहणे त्ति वा मुणि त्ति वा एगट्ठ ।[1] (आचू पृ ६३)

समय—सकेत ।

समय आगम सकेतो वा । (सूटी १ प २०३)

समर—युद्ध ।

समर-सग्राम-डमर-कलि कलह ।[2] (प्रश्न ३/१)

समवयन्ति—सम्मिलित होते है ।

समवयन्ति वा समवतरन्ति सम्मिलन्ति ।[3] (समटी प १)

समागम—समागम ।

समागम वा सम्मोइ वा सपीति वा मित्तसगम वा वीवाह वा । (अवि पृ १४५)

समाणधम्मिय—सार्धमिक ।

समाणधम्मिया साहम्मिया स्वप्रवचन प्रतिपन्न । (निपीचू पृ ११७)

---

१ देखे—परि० २
२ देखे—परि० २
३ देखे—परि० ३

समास—संक्षेप।

समासो संखेवो पिंडार्थ । (निपीचू पृ १०१)

समित—उपशांत।

समित ति वा सेवित ति वा एगट्ठा। (आचू पृ १०१)

समुस्सय—ढेर।

समुस्सयो त्ति वा रासि त्ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २१६)

समूह—समूह।

समूहो वर्ग राशि इति पर्याया । (विभामहेटी पृ २७८)

समूह समुदायो मीलनक इति। (विभामहेटी पृ ३६३)

समूह संघात इत्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ पृ ४५०)

सयय—सतत।

सयय ति वा सव्वकाल ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२४)

सयय ति वा अणुबद्ध ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ ३२३)

सरभ—शरभ।

सरभा परासरेति पर्याया । (प्रटी प ६)

सर्व—सम्पूर्ण।

सर्वं संपूर्णमखण्ड निरवशेष कृत्स्नमिति पर्याया ।

(विभाकोटी पृ ६५६)

सर्वर्जु—संयम।

सर्वर्जु संयम सद्धर्मो वा। (सूटी १ प ३५०)

सव्व—सम्पूर्ण ।

सव्व कसिण पडिपुण्ण निरवसेस। (अनुद्वा ५५७)

सव्वओ—सब ओर से।

सव्वओ समत त्ति एकार्थौ। (भटी पृ ७८)

ससंभम—शीघ्रता।

ससंभम तुरिय चवल। (राजटी पृ ४६)

सहइ—सहन करता है।

सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।[1] (अत ६/५)

सागय—स्वागत।

सागय सुसागय कथञ्चिदेकार्थौ। (भटी प १९६)

सागारिक—जननेन्द्रिय।

सागारिक मेहन लिङ्गम्। (आवटि प २५)

सागारिय—शय्यातर।

सागारियस्स णामा, एगट्ठा णाणावजणा पच।

सागारिय सेज्जायर, (सेज्जा) दाता य (सेज्जा) धरे (सेज्जा) तरे

वावि।[2] (निभा ११४०)

सात—सुख।

सात त्ति वा सुह ति वा अभय ति वा परिणिव्वाण ति वा एगट्ठा।

सात ति वा सुह ति वा परिणिव्वाण ति वा अभय ति वा एगट्ठा।

(आचू पृ ३१)

सात सुख रतिरित्येकोऽर्थः। (बृकटी पृ ६६७)

साधु—साधु।

साधु त्ति वा सजतो त्ति वा भिक्खु त्ति वा एगट्ठ।

(दशजिचू पृ २६३)

साधु निसगो मुनि। (विभाकोटी पृ ६१३)

साध्यते—निष्पन्न किया जाता है।

साध्यते निष्पाद्यते ज्ञाप्यते।[3] (दशहाटी प ३४)

सामायिक—सामायिक।

समया सम्मत्त पसत्थ सति सुविहिअ सुह अनिंद (अनिद्द ?) च।

अदुगुछियमगरिहिय अणवज्जमिमेऽवि एगट्ठा।[4] (आवनि १०३३)

---

१ देखें—परि० ३

२ देखें—परि० २

३ देखें—परि० ३

४ देखें—परि० २

सायण—ध्वस ।

सायण घसो विणासो त्ति एगट्ठा । (जीतभा ८६३)

सारक्खमाण—रक्षा करता हुआ ।

सारक्खेमाणे सगोवेमाणे अणुपालेमाणे अणुकपमाणे ।
(आवचू १ पृ ५१३)

साला—शाखा ।

साल त्ति वा साह त्ति वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३०८)

साहरण—बाहर निकालना ।

साहरण उक्किरण, विरेयण चेव एगट्ठ । (जीतभा १५५७)

साहसिक—शीघ्र कार्य करने वाला ।

साहसिको मेहावी लहुको सद्धो त्ति मुक्कहत्थो त्ति ।
चडो सूरो दच्छो त्ति । (अवि पृ २४१)

साहा—शाखा ।

साहा माहुली वृक्षसाला । (निपीचू पृ ८५)

सिंगबेर—अदरख ।

सिगबेर सुठी अल्लग वा । (आचू पृ ३४०)

सिक्ख—शैक्ष ।

सिक्खउ त्ति वा सेहो त्ति वा सीसो त्ति वा । (सूचू १ पृ २२७)

सिक्खिय—शिक्षित ।

सिक्खिय ठिय जिय मिय परिजिय ।[1] (अनुद्वा ३४)

सिखंड—सिर ।

सिखडो मत्थको सीस तधा सीमतको । (अवि पृ ५६)

सिग्घ—शीघ्र ।

सिग्घ तुरिय चवल चड वेइय । (भ ११/१३६)

सिग्घ तुरिय जइण ।[2] (जबू ५/२८)

---

१ देखें—परि० २

२. देखें—परि० २

सिज्झइ—मुक्त होता है।

सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंत करेइ।[1]
(भ १/४४)

सिणाण—स्नान।

सिणाण ति वा ण्हाण ति वा एगट्ठा। (दशजिचू पृ २३१)

सिणाण मज्जणा दो वि एगट्ठा। (निचूभा ३ पृ ३७८)

सिण्ह—ओस।

सिण्ह त्ति वा ओस त्ति वा एगट्ठ। (निपीचू पृ ६८)

सिद्ध—सिद्ध।

सिद्ध ति य बुद्ध त्ति य, पारगय त्ति य परपरगय त्ति।
उम्मुक्क-कम्म-कवया, अजरा अमरा असगा य॥
विच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबधणविमुक्का। (औप १९५)

सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।
(जबू २/८८)

सिद्ध प्राप्तनिष्ठ इत्यनर्थान्तरम्। (आवचू १ पृ ५३९)

सिद्धो मुत्तो त्ति तिण्णो त्ति, णीरयो णिव्वुतो त्ति य।
असगो केवली बुद्धो, असरीरकधासु य॥
अकम्मो णिप्पयोगो त्ति।[2] (अवि पृ २६९)

सिद्ध– प्रसिद्ध।

सिद्ध प्रख्यात प्रथित। (निपीचू पृ १९)

सिद्धउपपत्ति—सिद्धि, अपुनर्जन्म।

सिद्धउपपत्ति मोक्खो अपुणब्भवो ससारविप्पमोक्खो अससारोपपत्ती।
(अवि पृ २६४)

---

१ देखें—परि० ३

२ देखें—परि० २

सिद्धत्थ—सिद्धार्थ (महावीर के पिता का नाम)।

सिद्धत्थे सेज्जसे जससे। (आचूला १५/१७)

सिद्धत्थ—जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया।

सिद्धत्थो सुभगो त्ति य। धण्णो य सुहभागी य सुद्धभावी य।
(अवि पृ १०३)

सिद्धिगत—सिद्धि को प्राप्त।

सिद्धिगते णिव्वुयगते तिण्णगते अरुजगते अकम्मगते मुक्कगते अयोगगते परिसुद्धगते। (अवि पृ २६८)

सिद्धिमग्ग—सिद्धि का मार्ग।

सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे।
(ज्ञा १/१/११२)

सीईभूय—प्रशान्त।

सीईभूओ परिनिव्वुओ य सतो तहेव पण्हाणो (ल्हाओ)।
(आनि २०६)

सीत—शीतल, ठडा।

सीत हिम ति सीतल ति। (अवि पृ २४४)

सीमा—मर्यादा।

सीमा मेरा मर्यादा इत्यनर्थान्तरम्। (आवचू २ पृ २५६)

सीलमत—शीलवान्।

सीलमता वयमता गुणमता।[1] (आचूला २/३८)

सुकड—सुकृत।

सुकडे ति वा सुट्ठुकडे ति वा साहुकडे त्ति वा।
(आचूला ४/२१)

---

१ देखे—परि० २

सुक्क—शुष्क, मास रहित ।

सुक्के लुक्खे निम्मसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे धमणिसतए ।[१]
(ज्ञा १/१/२०२)

सुक्किल—शुक्ल, सफेद ।

सुक्किलेसु सप्पभेसु ओवातेसु । (अवि पृ २५०)

सुत्त—श्रुत, सूत्र ।

सुय सुत्त गथ सिद्धत सासण आणवयण उवएसे ।
पण्णवण आगमे य, एगट्ठा पज्जवा सुत्ते ॥ (अनुद्वा ५१)

सुत्त तत गथो पाढो सत्थ च एगट्ठा । (आवनि १३०)

सुत्त ति वा पवयण ति वा एगट्ठा ।[२] (आवचू १ पृ ९२)

सुद्ध—शुभ्र, विमल ।

सुद्ध ति पडर ति य, विमलं उज्जोतित पभा व त्ति ।
दिवसो त्ति णीरयो त्ति य पडिरूव ।[३] (अवि पृ २४३)

सुबुद्धिक—बुद्धिमान् ।

सुबुद्धिको त्ति वा बूया, सुबुद्धिमतो त्ति वा पुणो ।
तधा पसण्णबुद्धि त्ति, कितबुद्धि त्ति वा पुणो ॥ (अवि पृ १२२)

सुभ—शुभ ।

सुभ चारु कत । (आचूला १५/२८)

सुभासिय—सुभाषित ।

सुभासिय सुव्वय सुकहिय सुदिट्ठ । (प्र ७/१)

सुरा—मद्य विशेष ।

सुर वा मेरग वा वि मज्जग रस ।[४] (दश ५/२/३६)

सुविवेग—सु-प्रव्रज्या ।

सुविवेगो त्ति वा सुणिक्खत त्ति वा सुपव्वज्ज ति वा एगट्ठ ।
(सूचू १ पृ ६८)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० २
४ देखें—परि० २

सुसंहत—सघन ।

सुसहता सुश्लिष्टा निर्विचाला । (जबूटी प ११४)

सुसील—सुशील ।

सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा ।[1] (स्था ३/१३६)

सूर—शूर ।

सूरे वीरे विक्कते । (ज्ञा १/१/२६)

सूरे ति वा वीरे ति वा सत्तिए त्ति वा एगट्ठा । (आचू पृ ८३)

सूरलेस्सा—आतप ।

सूरलेस्सा इ वा आतवे इ य एगट्ठे । (सूर्य १६/४)

सेज्जा—बैठने तथा सोने मे काम आने वाले आसन ।

सेज्जा खट्टा भिसी व त्ति, आसदी पेढिक त्ति वा ।
महिसाहा सिला व त्ति, फलकी इट्टक त्ति वा ।।[2] (अवि पृ ७२)

सेत—श्वेत, शुभ्र ।

सेत ति पडर व त्ति, विमल णिम्मल ति वा ।
सुद्ध ति वातिविसुद्ध ति, तधा वितिमिर ति वा ।।
सप्पभ सुचिम ।[3] (अवि पृ ६०)

सेसवती—शेषवती, (महावीर की दौहित्री) ।

सेसवती ति वा जसवती ति वा । (आचूला ५/२४)

सोऊण—सुनकर ।

सोऊण वा सोच्चाण वा एगट्ठा । (दशजिचू पृ ३२४)

सोभत—शोभित ।

सोभत-रुइल-रमणिज्ज । (जीव ३/५६७)

सोम—सौम्य ।

सोमे सुभगे पियदसणे सुरूवे । (ज्ञा १/५/३)

---

१ देखें—परि० २
२ देखे—परि० २
३. देखें—परि० २

सोह—शोधि (शुद्धि)।

सोह त्ति व धम्मो त्ति व एगट्ठ। (व्यभा १० टी प ९७)

सौकरिक—कसाई।

सौकरिका श्वपचाश्चाण्डाला खट्टिका। (सूटी २ प ६३)

स्थान—प्रवृत्ति।

स्थान वृत्त कर्मेत्यनर्थान्तरम्। (सूचू २ पृ ४४३)

स्थान—स्वाध्याय भूमि।

स्थानमिति वा नैषेधिकीति वा एगट्ठ। (व्यभा ३ टी प ५४)

स्थान—कारण।

स्थान कारणमित्येकोऽर्थ। (बृकटी पृ १४२५)

स्थापना—आकार।

स्थापना आकारो मूर्तिरिति पर्याया। (बृकटी पृ २६०)

स्पर्शना—प्राप्ति।

स्पर्शना प्राप्तिरवगाहो लभ। (आवचू १ पृ ४८६)

स्पृष्ट—व्याप्त।

स्पृष्ट व्याप्त पूर्ण इत्यनर्थान्तरम्। (आवमटी प ३५)

स्वर्—स्वर्ग।

स्व स्वर्ग सुरसद्म त्रिदशावास त्रिविष्टप त्रिदिवमित्याद्येकार्थिकनाम।[1]
(विभामहेटी पृ ५०७)

स्थिति—अवस्थिति।

स्थितिरायु कर्मानुभूतिर्जीवनमिति पर्याया। (प्रज्ञाटी प १६६)

हतव्व—हनन करने योग्य।

हतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा उद्दवेयव्वा।[2]
(आ ४/२०)

---

१ देखे—परि० २

२ देखे—परि० २

हंता—हनन करके ।

हता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवित्ता ।[1] (आ २/१४)

हक्कार—हाहाकार ।

हक्कार रुदित कदित ।[2] (अवि पृ २५३)

हट्ठ—नीरोग ।

हट्ठो णिरोगो णिव्वाधितो समत्थो । (निचूभा २ पृ ३१५)

हट्ठा अरोगा बलिया कल्लसरीरा । (स्था ४/४५१)

हट्ठचित्त—प्रसन्न ।

हट्ठ (चित्त) तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए ।[3] (भ २/४३)

हत्थखड्डुग—हाथ का आभूषण (अगूठी) ।

हत्थस्स खड्डुग व त्ति, अणत खड्डुग ति वा । (अवि पृ ६५)

हत्थभडक—हाथ का आभूषण (ककण) ।

हत्थस्स भडको व त्ति, ककण वेढको त्ति वा । (अवि पृ ६५)

हत्थिक—हाथ का आभूषण ।

अधवा हत्थिको व त्ति, तधा चक्ककमिहुणग ।
तधेवज्भक्कक व त्ति, कडग खडुग ति वा ।।[4] (अवि पृ ६४)

हत्या—हनन ।

हत्या हननमुद्धारम् । (विपाटी प ७५)

हय—हत ।

हय महिय घाइय विवडिय ।[5] (ज्ञा १६/२५३)

हयतेय—जिसका तेज नष्ट हो गया है ।

हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए । (भ १५/११६)

---

१ देखें—परि० २

२ देखे—परि० २

३ देखे—परि० २

४. देखे—परि० २

५ देखे—परि० २

हरंति—हरण करते हैं।

हरति वा विभयति वा णूमेति वा एगट्ठ ।[1] (सूचू १ पृ १७६)

हर्ष—हर्ष ।

हर्ष प्रमोदोऽनुराग । (ज्ञाटी प १३८)

हसंति—हसते हैं ।

हसति रमति ललति ।[2] (भ ६/१३५)

हसित—मुदित ।

हसितप्पहिट्ठे मुदिते । (अवि पृ २५१)

हापयति—तिरस्कृत करता है ।

हापयति परिभवति विलुपति ।[3] (व्यभा २ टी प २७)

हार—हरण ।

हार हरण ह्रियते इति वा एकार्थम् ।[4] (व्यभा १/४ टी प ५)

हाहाभूय—हाहाकार ।

हाहाभूए भभभूए कोलाहलभूए । (भ ७/११७)

हाहाभूए भभाभूए कोलाहलभूए । (जबू २/१३१)

हिट्ठिम—निकृष्ट ।

हिट्ठिमो निकृष्टो जघन्य । (उचू पृ २४७)

हिमानि—हिम समूह ।

हिमानि वा, हिमपुञ्जानि वा, हिमपटलानि वा, हिमकूटानि वा, एतान्येव पदानि नानादेशविनेयानुग्रहाय पर्यायैर्व्याचिष्टे ।

(जीवटी प १२४)

हिय—हित ।

हिय सुह खम णिस्सेयस (नीसेस) आणुगामिय ।[5] (आ ८/६१)

---

१. देखें—परि० ३
२ देखें—परि० ३
३. देखें—परि० ३
४ देखें—परि० ३
५ देखें—परि० २

हियकामग—हितेच्छु ।

हियकामगस्स सुहकामगस्स पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स । (भ १५/९३)

हीणस्सर—निद्यस्वर ।

हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा अकंतस्सरा अप्पियस्सरा अमणुण्णस्सरा अमणामस्सरा अणादेज्जवयणा । (जबूटी प १६५)

हीलणा—अवहेलना ।

हीलणाओ निंदणाओ खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ ।[1] (राज ७७९)

हीलिज्जमाणी—तिरस्कृत होती हुई ।

हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी ।[2] (ज्ञा १/१६/२९)

हीलेति—निंदा करता है ।

हीलेति निंदेति खिंसति गरिहति परिभवति अवमण्णति ।[3] (सू २/२/११)

हुतासिणा सिहा—अग्निशिखा ।

हुतासिणा सिहा व त्ति, तधा अग्गिसिह त्ति वा ।
तधा दीवसिहा व त्ति, ओदीवसिह त्ति वा ॥
दीविगाय सिहा व त्ति, चिडिलीय सिहि त्ति वा ।
एते उत्ता समा सद्दा । (अवि पृ ९१-९२)

हेउगोवएस—संज्ञा का एक प्रकार ।

हेउगोवएसो त्ति वा कारणोवएसो त्ति] वा पगरणोवएसो त्ति वा एगट्ठा ।[4] (आवचू १ पृ ३१)

---

१ देखें—परि० २
२ देखें—परि० २
३. देखें—परि० ३
४ देखें—परि० २

हेतु—हेतु ।

हेतु कारण निमित्तमित्यनर्थान्तरम् । (नदीचू पृ ४७)

हेतू कारण उवाओ । (आवचू १ पृ ५५७)

ह्री—लज्जा ।

ह्री लज्जा सयम इत्यनर्थान्तरम् । (सूचू १ पृ २२१)

परिशिष्ट

१ शब्द-अनुक्रम

२. विशेष शब्द-विवरण

३. धातु-अनुक्रम

परिशिष्ट १

शब्द-अनुक्रम

(प्रस्तुत परिशिष्ट के अन्तर्गत जिन शब्दो के आगे कोष्टक मे पृष्ठ सख्या अथवा शब्द दिए गए है, वे एकार्थवाची शब्दो के प्रारभिक शब्द के द्योतक हैं।)

अइबल (पृ १)
अइब्बल (ओहबल)
अइभय (बोहणय)
अकण (वध)
अकुटिक (नागदन्तक)
अग (पृ १)
अग (आयार)
अगजक (गड्डूपक)
अगणा (पत्ति)
अगुलेयक (पृ १)
अङ्गज (अत्तय)
अचेति (पृ १)
अजलिपग्गह (सक्कार)
अन (तीरित)
अतनीत (शिक्षित)
अतगड (सिद्ध)
अतजीवि (अताहार)
अतर (पृ १)
अतर (छिद्द)
अतर (छिड्ड)
अतरप्प (पृ १)
अतरप्प (जीवत्थिकाय)
अतलिक्ख (आगासत्थिकाय)
अताहार (पृ १)
अतिक (पृ २)
अदोलति (पृ २)
अधकार (छाया)
अधकार (नील)
अधकार (तमस्)
अधकार (तमुक्काय)
अबर (आगासत्थिकाय)
अबरस (आगासत्थिकाय)
अश (कला)
अश (विकल्प)
अश (भेद)
अस (पृ २)
अकटय (ओहयकटय)
अकत (अणिट्ठ)
अकत (दुक्ख)
अकतस्सर (हीणस्सर)
अकप (धुवक)
अकतत्थ (वीण)
अकथ्य (गरहित)
अकम्म (सिद्ध)
अकम्मगत (सिद्धिगत)
अकम्मवीरिय (पृ २)

अकयत्थ (अधम्म)
अकयलक्खण (अधम्म)
अकरणा (दुगुंछणा)
अकरणाए अब्भुट्ठिज्जइ (आलोइज्जइ)
अकरणीय (मिच्छा)
अकलुस (अदीण)
अकलुस (अणासव)
अकषायवद् (शान्त)
अकसाइ (अणाइल)
अकिञ्चण (अणासव)
अकिंचण (सत)
अकिच्च (पाणवह)
अकिट्ठ (पृ २)
अकिरिय (संजय)
अकुक्कुच (अचावल)
अकुटिल (ऋजु)
अकुटिलत्तण (उज्जुगत्तण)
अकुडिल (पृ २)
अकुडिल (उज्जुय)
अकुसल (पृ २)
अक्कोस (पृ २)
अक्कोसति (आहणइ)
अक्कोसेज्ज (पृ २)
अक्कोह (पृ ३)
अक्ख (दुमपुप्फिया)
अक्खण (आलोयण)
अक्खय (धुव)
अक्खयायार (पृ ३)
अक्खर (चेयण्ण)
अक्खुभिय (अभीय)
अक्खेव (अदिण्णादाण)
अक्खोडभग (खोडभग)
अक्खोला (लोमसिका)
अक्रिया (पृ २)
अक्रोधवद् (शान्त)
अक्षताचार (पृ ३)
अखड (पृ ३)
अखड (पृ ३)
अखण्ड (सर्व)
अखमा (कोह)
अखमा (मोहणिज्जकम्म)
अखिल (अचल)
अग (दुम)
अगणि (अग्गि)
अगणिझामिय (पृ ३)
अगणिझूसिय (अगणिझामिय)
अगणिपरिणामिय (अगणिझामिय)
अगम (आगासत्थिकाय)
अगम (पादव)
अगरिहिय (सामायिक)
अगर्भिणी (नववधू)
अगीतार्थ (अल्पश्रुत)
अगुणकित्तण (परिवयण)
अगुत्ति (परिग्गह)
अगृद्ध (पृ ३)
अगृहीतव्य (पृ ३)
अगेहि (लाघविय)
अगेहि (असज्जण)
अगोय (पृ ३)
अग्ग (पृ ३)
अग्ग (पृ ३)
अग्ग (चला)

अग्गि (पृ ४)
अग्गिकुंड (अग्घुप्पत्ति)
अग्गिट्ठ (अग्घुप्पत्ति)
अग्गिसिहा (हुतासिणा सिहा)
अग्गिहोत्त (बभण)
अग्गिहोत्तरति (बभण)
अग्घातित (पृ ४)
अग्घुप्पत्ति (पृ ४)
अग्र (पृ ४)
अग्रेसरत्व (पोरेवच्च)
अचचल (असाहस)
अचचलसील (अबालसील)
अचपल (पृ ४)
अचल (पृ ४)
अचलित (धुवक)
अचलिय (अभीय)
अचवल (अणुव्विग्ग)
अचवल (अतुरिय)
अचवल (असाहस)
अचिंतण (असरण)
अचियत्त (पृ ४)
अचोक्ख (असुइ)
अच्चण (थुइ)
अच्चलीण (अणुपविट्ठ)
अच्चि (मुम्मुर)
अच्चि (जुइ)
अच्चित (वदित)
अच्चिय (पृ ४)
अच्छ (पृ ४)
अच्छ (तरच्छ)
अच्छ (मच्छ)
अच्छिद्द (अणासव)
अच्छिन्न (सकल)
अछलणा (दया)
अजर (सिद्ध)
अजरामर (अचल)
अजीवाभिगम (जीवाभिगम)
अजोग (अणल)
अज्जावेयव्व (हतव्व)
अज्जीवाइवात (अहिंसा)
अज्झत्थिय (पृ ४)
अज्झयण (पृ ५)
अज्झयणछक्कवग्ग (आवस्सय)
अज्झवसाण (पणिहाण)
अज्झवसाण (मणसकप्प)
अज्झवसायठाण (सजमठाण)
अज्झीण (अज्झयण)
अज्झीत (उवचार)
अज्झोववज्जइ (सज्जइ)
अज्झोववण्ण (पृ ५)
अज्झोववण्ण (लोलुय)
अज्झोववण्ण (मुच्छिय)
अज्झोस (पृ ५)
अज्ञ (बाल)
अज्ञानावृत (मन्द)
अट्ट (पृ ५)
अट्ट (अलिय)
अट्ट (आगासत्थिकाय)
अट्ट्यते (अर्ध्यते)
अट्ठिक (णिम्मसक)
अट्ठिकलेवर (णिम्मसक)
अट्ठिकसकल (णिम्मसक)

अट्ठिचम्मावणद्ध	(सुक्क)
अडवी	(गहण)
अडढ	(पृ ५)
अड्ढग	(गड्डिक)
अण	(पृ ५)
अणत	(पृ ५)
अणत	(अणुत्तर)
अणत	(विच्छिन्न)
अणत	(हत्थखड्डग)
अणत	(निव्वाण)
अणत	(आगासत्थिकाय)
अणत	(केवल)
अणतपएसियखंध	(पोग्गलत्थिकाय)
अणतरहित	(अणतरिय)
अणतराय	(पृ ५)
अणतरिय	(पृ ५)
अणकर	(पाणवह)
अणगार	(उज्जु)
अणगार	(समण)
अणगार	(भिक्खु)
अणज्ज	(पाव)
अणज्ज	(अकुसल)
अणज्ज	(अलिय)
अणज्जव	(उवधि)
अणणुतावित्ता	(अविविचित्ता)
अणण्ण	(पृ ५)
अणत्त	(भग्ग)
अणत्थ	(भय)
अणत्थ	(परिग्गह)
अणत्थक	(परिग्गह)
अणप्पज्झ	(पृ ५)
अणभिज्झियत्ता	(इट्ठत्ता)
अणल	(पृ ५)
अणल	(अग्गि)
अणलि	(दीव)
अणवज्ज	(सामायिक)
अणाइल	(पृ ६)
अणाइल	(अदीण)
अणाइलभाव	(पृ ६)
अणाउय	(पृ ६)
अणाउल	(अमोय)
अणाढायमाण	(असरण)
अणादेज्जवयण	(हीणस्सर)
अणाध	(भग्ग)
अणाबाहपय	(णिव्वाण)
अणाम	(पृ ६)
अणायतण	(पृ ६)
अणायरण	(मोहणिज्जकम्म)
अणारिय	(पच्चंतिक)
अणारिय	(पाव)
अणावरण	(पृ ६)
अणावुट्ठि	(अपातय)
अणासव	(पृ ६)
अणासव	(सत)
अणासव	(अहिंसा)
अणाह	(अत्ताण)
अणिग्गयभाव	(अणाइलभाव)
अणिग्गह	(अबभ)
अणिग्गह	(उच्चच्छद)
अणिट्ठ	(पृ ६)
अणिट्ठ	(दुक्ख)
अणिट्ठस्सर	(हीणस्सर)

अणितिय (मेउरधम्म)
अणियत (उच्चच्छद)
अणिवारियवावार (केवल)
अणिव्वुत (वीण)
अणिह (अकुडिल)
अणिहुयपरिणामदुप्पयोगि (पाव)
अणु (पृ ६)
अणु (कस)
अणुओग (पृ ७)
अणुक (कस)
अणुक (खुड्डलक)
अणुकपण (पृ ७)
अणुकपमाण (सारक्खेमाण)
अणुकपा (अणुकपण)
अणुक्कम (आणतरिय)
अणुजोगगत (विद्विवाय)
अणुज्जग (अलिय)
अणुज्जल (असाहस)
अणुज्जुय (वक)
अणुण्णा (पृ ७)
अणुत्तम (अणुत्तर)
अणुत्तर (पृ ७)
अणुत्तर (पृ ७)
अणुत्तर (अणत)
अणुत्तर (निव्वाण)
अणुत्तर (खेम)
अणुपरिवाडि (आणतरिय)
अणुपविट्ठ (पृ ७)
अणुपविट्ठ (अतिगत)
अणुपालेइ (फासेइ)
अणुपालेमाण (सारक्खेमाण)
अणुपुव्वि (विहि)
अणुबद्ध (सयय)
अणुब्भड (असाहस)
अणुभूत (णियत)
अणुमय (समय)
अणुमय (थेज्ज)
अणुमात्र (पृ ७)
अणुवसत (रुट्ठ)
अणुव्विग्ग (पृ ८)
अणुव्विग्ग (अभीय)
अणुसचरइ (पृ ८)
अणुसट्ठि (पृ ८)
अणुसमय (पृ ८)
अणेग (बहु)
अणेगणामभेद (अणेगपडिरय)
अणेगपज्जाय (अणेगपडिरय)
अणेगपडिरय (पृ ८)
अणेह (णिण्णेहक)
अणोज्जा (पृ ८)
अण्ण (पृ ८)
अण्णाण (अवद्य)
अण्णाय (पृ ८)
अण्णेसणा (एसणा)
अण्हयकर (पृ ८)
अण्हयकर (पावय)
अण्हेते (जेमेति)
अतत्थ (अभीय)
अतथाभूय (णट्ठ)
अतलपलाइत (सगाम)
अतिकाय (थूल)
अतिकिमण (अलस)

अतिक्कत (अतिवत्त)
अतिगत (पृ ८)
अतिगत (अणुपविट्ठ)
अतिगत (पविट्ठ)
अतिच्छिय (अतिवत्त)
अतिथोव (रहस्स)
अतिदिग्घ (अतिदूर)
अतिदूर (पृ ६)
अतिदूर (अतिगत)
अतिपण्डर (अवदात)
अतिप्रभूत (पडिहत्थ)
अतिभय (पाव)
अतिम्महत (अतिदूर)
अतियार (पृ ६)
अतिरेकित (पडिहत्थ)
अतिवत्त (पृ ६)
अतिवाहयन्ति (विनयन्ति)
अतिविसुद्ध (सेत)
अतिस (अरति)
अतिसरित (पविट्ठ)
अतीत (अतिवत्त)
अतीत (विगत)
अतुरिय (पृ ६)
अत्त (पृ ६)
अत्तकम्म (आहाकम्म)
अत्तय (पृ ६)
अत्तव (पृ ६)
अत्ताण (पृ ६)
अत्तुक्कोस (माण)
अत्तुक्कोस (मोहणिज्जकम्म)
अत्थ (पृ ६)
अत्थ (ववहार)
अत्थ (पवयण)
अत्थ (संवर)
अत्थयति (पृ १०)
अत्थरक (झिप्फर)
अत्थाम (पृ १०)
अत्थि (पृ १०)
अत्थि (संत)
अत्थिभाव (सपज्जाय)
अदत्त (अदिण्णादाण)
अदर्शन (छन्न)
अदिट्ठ (अण्णाय)
अदिण्णादाण (पृ १०)
अदिण्णादाण (अधम्मत्थिकाय)
अदिण्णादाणवेरमण (धम्मत्थिकाय)
अदीण (पृ १०)
अदुगुंछिय (सामायिक)
अदृष्ट (अपूर्व)
अद्दीणमाणस (अणाइल)
अद्धकविट्ठग (सट्टक)
अद्धा (पृ १०)
अद्धा (काल)
अद्धा (अवड्ढ)
अद्धितिकरण (अधिकरण)
अधण (पृ १०)
अधण्ण (पृ १०)
अधन्न (पृ ११)
अधम (अधर)
अधम्म (अवभ)
अधम्म (अधम्मत्थिकाय)
अधम्मत्थिकाय (पृ ११)

अधर (पृ ११)
अधर्म (घात)
अधिकरण (पृ ११)
अधिकरण (अधितिकरण)
अधिकार (उपयोग)
अधिकिरण (विउस्सग)
अधिगम (उवचार)
अधिगम (भाव)
अधिगम (णाण)
अधिगम (सविद्)
अधितिकरण (पृ ११)
अधीत (शिक्षित)
अधीत (उवचरित)
अध्रुव (मेउरधम्म)
अध्रुव (विचल)
अध्रुव (अनित्य)
अधेकम्म (आहाकम्म)
अध्यवसाय (ज्ञान)
अध्युपपन्न (सक्त)
अध्युपपन्न (ग्रथित)
अनगार (पृ ११)
अनध्युपपन्न (अगृद्ध)
अननुकूल (असमजस)
अननुमार्ग (व्यवहार)
अनभिप्रेत (असमजस)
अनर्थ (पृ ११)
अनल (पृ १२)
अनलस (व्यवसायन्)
अनाचार (अनायतन)
अनात्मवश (अणप्पज्झ)
अनादर (अश्लाघा)
अनायतन (पृ १२)
अनारभ (अक्रिया)
अनार्जव (माया)
अनिद (सामायिक)
अनित्य (आशाश्वत)
अनित्य (पृ १२)
अनिद्द (सामायिक)
अनुकाश (पृ १४)
अनुकूल (अनुलोम)
अनुकूल (अविजात)
अनुकूलप्रतिकूल (उच्चावच)
अनुक्रम (आनुपूर्विन्)
अनुगत (पृ १२)
अनुगुण (अनुलोम)
अनुद्घाति (गुरुक)
अनुपदेश (व्यवहार)
अनुपद्रव (कल्याण)
अनुपयोग (अनर्थ)
अनुपरिपाटिन् (आनुपूर्विन्)
अनुपलब्धि (छन्न)
अनुपविष्ट (निषन्न)
अनुपशम (क्रोध)
अनुपादेय (अगृहीतव्य)
अनुबद्ध (अनुगत)
अनुबद्ध (सतत)
अनुभव (रयस्)
अनुमत (अनुगत)
अनुराग (हर्ष)
अनुलोम (पृ १२)
अनृत (मिथ्या)
अन्तगमन (पार)

अन्विष्ट (पृ १२)
अपगुत (उद्दित)
अपड्डिय (जड्ड)
अपकड्ढति (नीहारेति)
अपकड्ढित (अपसारित)
अपगल (पृ १२)
अपगत (व्यावृत्त)
अपचय (क्षपणा)
अपच्चल (अणल)
अपच्छुद्ध (अपमट्ठ)
अपच्छुद्ध (अपसारित)
अपडिवद्धया (लाघविय)
अपणत (अपमट्ठ)
अपणत (अपसारित)
अपणामित (अपमट्ठ)
अपणासित (अपसारित)
अपधजात (उद्दित)
अपनीतबन्धन (उद्दामित)
अपमज्जिय (रहस्स)
अपमट्ठ (पृ १२)
अपमाण (पृ १२)
अपरक्कम (अत्थाम)
अपरच्छ (अदिण्णादाण)
अपरिणिव्वाण (असात)
अपरितंतजोगि (अदीण)
अपरिताविय (अकिट्ठ)
अपरिमियबल (अइबल)
अपरिस्पन्द (अक्रिया)
अपरिस्साविं (अणासव)
अपलिखित (अपमट्ठ)
अपलोलित (अपमट्ठ)
अपवट्टित (अपमट्ठ)
अपवत्त (अपमट्ठ)
अपवाम (वाम)
अपविट्ठ (अपमट्ठ)
अपसव्व (वाम)
अपसारित (पृ १२)
अपसारित (अपमट्ठ)
अपहित (अपसारित)
अपहृतचित्त (क्षिप्त)
अपातय (पृ १३)
अपात्र (पृ १३)
अपाय (अध्यवसाय)
अपियत्त (अचियत्त)
अपुणब्भव (सिद्धउपपत्ति)
अपुन्न (अधन्न)
अपुरिसक्कार (अत्थाम)
अपुरुस (णपुंसक)
अपूर्व (पृ १३)
अपृथग् (अणण्ण)
अपेत (अपगत)
अपोह (आभिणिबोहिय)
अपोह (आभोग)
अपोह (ईहा)
अप्प (अणुमात्र)
अप्प (रहस्स)
अप्पकम्मतर (पृ १३)
अप्पकिरियतर (अप्पकम्मतर)
अप्पग्गंथ (अप्पडिबद्ध)
अप्पग्घ (वाम)
अप्पच्चय (अलिय)
अप्पच्चय (अदिण्णादाण)

अप्पडिकटय (ओहयकंटय)
अप्पडिबद्ध (पृ १३)
अप्पमाय (अहिंसा)
अप्पसत (कलुस)
अप्पाय (कम्म)
अप्पासवतर (अप्पकम्मतर)
अप्पिच्छा (लाघविय)
अप्पिय (दुक्ख)
अप्पिय (अणिट्ठ)
अप्पियववहारिय (पृ १३)
अप्पियस्सर (होणस्सर)
अप्पीइ (अरति)
अप्फिडित (अपसारित)
अप्फुडिय (अखड)
अप्रकाश (छन्न)
अप्रमत्त (पयत)
अप्रयोजन (अनर्थ)
अप्रविबुद्ध (मुकुल)
अप्रसूता (नववधू)
अबधव (अत्ताण)
अबभ (पृ १३)
अबल (अत्थाम)
अबहिलेस्स (अणाइलभाव)
अबहुश्रुत (अल्पश्रुत)
अबाल (देसकालण्ण)
अबालसील (पृ १३)
अब्भगण (उस्सिंघण)
अब्भतर (अणुपविट्ठ)
अब्भतरग (अणुपविट्ठ)
अब्भक्खाण (अलिय)
अब्भक्खाण (अधम्मत्थिकाय)
अब्भक्खाणविवेग (धम्मत्थिकाय)
अब्भणुण्णत (वण्णित)
अब्भपलाइत (संगाम)
अब्भसण (परियट्टण)
अब्भहियतर (पृ १३)
अब्भास (पृ १४)
अब्भुक्कढित (णिब्भामित)
अब्भुग्गय (पृ १४)
अब्भुज्जय (अब्भुग्गय)
अब्भुट्ठाण (सक्कार)
अब्भुट्ठि (आउट्टि)
अब्भुट्ठिय (उवट्ठिय)
अब्भुट्ठिय (अब्भुग्गय)
अब्भुण्णय (अब्भुग्गय)
अभय (सात)
अभय (अहिंसा)
अभव (धुवक)
अभाजन (अपात्र)
अभार (अलस)
अभिगच्छइ (जाणइ)
अभिगच्छति (पृ १४)
अभिगयट्ठ (लद्धट्ठ)
अभिग्गह (प्रतिमा)
अभिज्जा (मोहणिज्जकम्म)
अभिज्झा (पृ १४)
अभिज्झा (लोभ)
अभिणिव्वट्ट (अभिसभूत)
अभिणिव्वुड (रवत)
अभिण्ण (अणण्ण)
अभिनन्द (राग)
अभिनव (बाल)

अभिनव (तरुणय)
अभिनिषद्या (तक्का)
अभिन्नाचार (अक्षताचार)
अभिन्नायार (अक्खयायार)
अभिप्पात (विण्णाण)
अभिप्पाय (पृ १४)
अभिप्पाय (पणिहाण)
अभिप्पायति (अभिलसति)
अभिप्राय (संविद्)
अभिप्राय (प्रणिधान)
अभिप्राय (छंद)
अभिप्राय (भाव)
अभिभव (विजय)
अभिरुइय (इच्छिय)
अभिरूव (पासादिय)
अभिलषणीय (कान्त)
अभिलसइ (आसाएइ)
अभिलसइ (कंखइ)
अभिलसति (पृ १४)
अभिलसन (पीहन)
अभिलसमाण (पत्थेमाण)
अभिलाप्य (प्रज्ञापनीय)
अभिलाष (राग)
अभिलाष (लोभ)
अभिलाष (छंद)
अभिलासा (परिज्झा)
अभिवादित (वंदित)
अभिवायण (पृ १४)
अभिशय्या (तक्का)
अभिष्वङ्ग (संस्तव)
अभिसंजात (अभिसंभूत)
अभिसंधान (माया)
अभिसंभूत (पृ १४)
अभिसंवुड्ढ (अभिसंभूत)
अभिसन्दध्यात् (संधयेत्)
अभिसमण्णागत (लद्ध)
अभिसमण्णागय (नाय)
अभिहणति (पृ १४)
अभिहणेज्ज (पृ १४)
अभीय (अणुव्विग्ग)
अभीय (पृ १५)
अभूतिभाव (पृ १५)
अभेद (अणु)
अभ्याश (अंतिक)
अभ्युपगत (प्रतीष्ट)
अमणाम (दुक्ख)
अमणाम (अणिट्ठ)
अमणामस्सर (अणिट्ठस्सर)
अमणुण्ण (अणिट्ठ)
अमणुण्णस्सर (हीणस्सर)
अमनोज्ञ (परुष)
अमम (अणासव)
अमम (संत)
अमर (सिद्ध)
अमर (देव)
अमाघाय (अहिंसा)
अमाण (पृ १५)
अमाया (पृ १५)
अमुच्छा (लाघविय)
अमुत्ति (परिग्गह)
अमुय (अण्णाय)
अमूढ (पृ १५)

अमूर्च्छित (अगृद्ध)
अमोह (पृ १५)
अमोहा (जबू)
अयन (पृ १५)
अयुक्त (अस्थान)
अयोगगत (सिद्धिगत)
अयोग्य (अपात्र)
अयोग्य (अनल)
अरइय (गड)
अरजर (पृ १५)
अरति (पृ १५)
अरभम (असाहस)
अरय (पृ १६)
अरय (कम्म)
अरविंद (उप्पल)
अरविन्द (कमल)
अरमाहार (अताहार)
अरह (पृ १६)
अरि (पृ १६)
अरिट्ठ (पृ १६)
अरिह (पृ १६)
अरुजगत (सिद्धिगत)
अरुणोदय (तमुक्काय)
अरोग (हट्ठ)
अरोगशाला (तेगिच्छियसाला)
अर्थविज्ञान (चित्त)
अर्थव्याख्या (भासा)
अर्थाध्यवसाय (पृ १०)
अर्थापयति (आग्राहयति)
अर्यंते (पृ १६)
अर्पित (पृ १६)
अर्पित (गमित)
अर्यंते (पृ १६)
अर्हद् (पृ १६)
अर्हद्वचन (प्रवचन)
अलदक (करोडक)
अलकपरिक्खेव (तिरीड)
अलक्तक (आदर्श)
अलम् (पृ १६)
अलस (पृ १७)
अलस (पृ १७)
अलाय (मुम्मुर)
अलिंद (अरजर)
अलिय (पृ १७)
अलियधम्मनिरय (अकुसल)
अलियाण (अकुसल)
अलोह (पृ १७)
अल्पश्रुत (पृ १७)
अल्पसत्व (अधितिकरण)
अल्लग (सिंगबेर)
अल्लीण (अनुपविट्ठ)
अवग (णिडालमासक)
अवगुत (उब्भिण्ण)
अवकड्ढित (पृ १७)
अवकिण्ण (विक्खिण्ण)
अवक्कमण (निग्गमण)
अवक्कोस (मोहणिज्जकम्म)
अवक्कोस (माण)
अवगततत्व (बुद्ध)
अवगम (अर्थाध्यवसाय)
अवगम (निश्चय)
अवगम (संविद्)

अवगाढ (पृ १७)
अवगाढावगाढ (आइण्ण)
अवगास (ओवास)
अवगाह (स्पर्शना)
अवगिरण (उस्सग्ग)
अवग्गह (उग्गह)
अवज्ञा (अश्लाघा)
अवट्ठाण (पतिट्ठा)
अवट्ठिय (धुव)
अवट्ठिय (फासिय)
अवड्ढ (पृ १७)
अवतस (मवर)
अवतरति (उवेति)
अवत्थग (अलिय)
अवत्था (पृ १८)
अवत्था (पतिट्ठा)
अवत्थाण (अवत्था)
अवत्थित (अचल)
अवत्थिय (असाहस)
अवत्थु (अलिय)
अवदात (पृ १८)
अवद्य (पृ १८)
अवधान (पृ १८)
अवधारण (उग्गह)
अवधावन (लोटन)
अवधि (अवधान)
अवधित (चोदित)
अवन (पृ १८)
अवबोह (ववसाय)
अवभट्ठ (रहस्स)
अवमाणण (अक्कोस)
अवमाणित (परिभीत)
अवमण्णति (हीलेति)
अवमण्णति (परिभासति)
अवय (नीय)
अवयव (अग)
अवयव (कला)
अवलबण (उग्गह)
अवलोय (अलिय)
अवसक्कित (उट्ठित)
अवसर (पृ १८)
अवसर (देश)
अवसर (योग)
अवसव्व (वाम)
अवसारित (उट्ठित)
अवस्थारूपकाल (भूमि)
अवस्सकम्म (पावकम्मनिसेह किरिया)
अवस्सकरण (आवस्सग)
अवस्सकरणिज्ज (आवस्सय)
अवस्सकायव्व (आवस्सग)
अवस्सकिरिया (पावकम्मनिसेह किरिया)
अवहड (खीण)
अवहार (अदिण्णादाण)
अवहीय (अलिय)
अवाय (पृ १८)
अविकम्पित (केवल)
अविगतचित्त (अविमनस्)
अविग्गहमण (धम्ममण)
अविचालित (अपूर्व)
अविच्चुति (धरण)

अविजात (पृ १८)
अविज्जमाणभाव (असपज्जाय)
अविण्णाय (अण्णाय)
अवितह (जहाभूत)
अवितह (तह)
अवितह (सच्च)
अवितह (सत)
अवितह भाव (विणिच्छय)
अविदित (अपूर्व)
अविद्धत्थ (अविराय)
अविधिपरिहारि (सजमतवय)
अविधूणित्ता (अविविचित्ता)
अविनीत (खलुक)
अविभाग (भाग)
अविमण (धम्ममण)
अविमण (अदीण)
अविमनस् (पृ १८)
अवियाउरी (वझा)
अवियोग (परिग्गह)
अविरति (आरम्भ)
अविरति (अवद्य)
अविरय (पाव)
अविरल (अखड)
अविरहितोवयोग (केवल)
अविराधित (अखड)
अविराय (पृ १८)
अविलीण (अविराय)
अविविचित्ता (पृ १८)
अविवित्त (अविसुद्ध)
अविवित्त (गरहित)
अविसदिद्ध (सच्च)
अविसादि (अदीण)
अविसुद्ध (पृ १९)
अविसोहि (अतियार)
अवीइ (अणुसमय)
अवीरिय (अत्थाम)
अवीर्य (अक्रिया)
अवीमभ (पाणवह)
अवेगिय (असाहस)
अवेयण (पृ १९)
अव्यक्त (पृ १९)
अव्यक्त (प्रकृति)
अव्वय (धुव)
अव्वहित (अणाइल)
अव्वहिय (अकिट्ठ)
अव्वाहय (निव्वाण)
अव्वोकड्ढ (उक्कड्ढ)
अशक्त (मन्द)
अशाश्वत (पृ १९)
अशून्यमनस् (अविमनस्)
अशेष (पृ १९)
अश्रुत (अपूर्व)
अश्लाघा (पृ १९)
असकिलिट्ठ (अणासव)
असक्लिष्टाचार (अक्षताचार)
असखेज्ज (गणणमतिक्कत)
असखेज्जपएसियखंध (पोग्गलत्थिकाय)
असग (असजण)
असग (सिद्ध)
असजण (पृ १९)
असजम (आरम्भ)

असजम (अदिण्णादाण)
असजम (पाणवह)
असजय (पाव)
असतक (अलिय)
असति (भय)
असतोम (परिग्गह)
असदिद्ध (जहाभूत)
असदिद्ध (तह)
असभत (अतुरिय)
असभत (अभीय)
असमुच्छित्ता (अविविंचित्ता)
असंसारोपपत्ति (सिद्धउपपत्ति)
असक्कत (दीण)
असक्कार (अपमाण)
असगल (अग)
असच्च (मिच्छा)
असच्चमधत्तण (अलिय)
असट्ठिय (मिच्छा)
असण (पृ १९)
असपज्जाय (पृ १९)
असब्भलायार (अवखयायार)
असमजम (१९)
असमजस (दुस्सह)
असमञ्जसो (उच्चावच)
असमय (अलिय)
असमञ्जद्धप्रलापिन् (मुखर)
असम्भव (अनायतन)
असरण (अत्ताण)
असरण (पृ १९)
असरीरकध (सिद्ध)
असात (पृ १९)
असात (पाव)
असात (भय)
असाधारण (केवल)
असाम्प्रत (अस्थान)
असाय (दारुण)
असाय (कम्म)
असार (तुच्छ)
असामय (मेउरधम्म)
असाहम (पृ २०)
असिन (कण्ह)
असिद्धत्थ (अधण्ण)
असिद्धत्थ (दीण)
असीलया (अबभ)
असुइ (पृ २०)
असुभ (अणिट्ठ)
असुस्सूसमाण (वुच्चमाण)
असोहि (पडिसेवणा)
असोहिठाण (अणायतन)
अस्थान (पृ २०)
अस्थान (अनायतन)
अस्सि (पृ २०)
अस्सुर (अण्णाय)
अहंकार (माण)
अहकम्म (आहाकम्म)
अहम (दीण)
अहयकम्म (आहाकम्म)
अहरगतीगाहण (अधिकरण)
अहाअत्थ (पृ २०)
अहाकप्प (अहासुत्त)
अहाछद (पृ २०)
अहातच्च (अहाअत्थ)

अहातच्च (अहासुत्त)
अहामग्ग (अहासुत्त)
अहामग्ग (अहाअत्थ)
अहासम्म (अहासुत्त)
अहासुत्त (पृ २०)
अहिंसा (पृ २०)
अहिंसा (तितिक्खा)
अहिकरण (अधिकरण)
अहिकिच्च (पडुच्च)
अहिगच्छइ (जाणइ)
अहिगम (णाण)
अहिगार (पगत)
अहिट्ठयति (पृ २१)
अहिधावति (ओधावति)
अहियासण (परिसहण)
अहियासेइ (सहइ)
अहियासेति (खमिति)
अहीकरण (अधिकरण)
अहीय (उवचार)
अहीरकरण (अधिकरण)
अहेकम्म (आहाकम्म)
अहोकरण (अधिकरण)
अहोतरण (अधिकरण)
आइक्खइ (पृ २१)
आइक्खामि (पृ २१)
आइण्ण (पृ २१)
आइण्ण (आयार)
आइन्न (पृ २१)
आउट्टि (पृ २१)
आउडिज्जमाण (पृ २१)
आउत्त (संजमतवजुय)
आउयकम्मस्स उवद्दव (पाणवह)
आउयकम्मस्स गालणा (पाणवह)
आउयकम्मस्स णिट्ठवण (पाणवह)
आउयकम्मस्स भेय (पाणवह)
आउयकम्मस्स सखेव (पाणवह)
आउयकम्मस्स सवट्टग (पाणवह)
आउल (गण)
आउल (वद)
आओडावेइ (पृ २१)
आओसण (पृ २१)
आओमेज्ज (पृ २२)
आकड्ढ (पहर)
आकार (स्थापना)
आकारित (ज्ञापित)
आकुडिन (रहस्स)
आकुट्टि (पृ २२)
आक्रान्त (आस्पृष्ट)
आक्रोश (पृ २२)
आखोटयति (आओडावेइ)
आख्यात (आहित)
आख्यात (पृ २२)
आख्यातुम् (पृ २२)
आख्यान (आलोचन)
आख्यापयति (आग्राहयति)
आगत (पृ २२)
आगम (पृ २२)
आगम (लाभ)
आगम (छन्द)
आगम (आय)
आगम (आणा)
आगम (णिप्फत्ति)

आगम (सुत्त)
आगम (समय)
आगम (ज्ञान)
आगमित (ज्ञान)
आगमित (आगत)
आगमित (विदित)
आगमिय (उच्चार)
आगमिय (नाय)
आगर (आयार)
आगरिसण (कड्ढण)
आगार (पृ २२)
आगार (पृ २२)
आगारित (आरित)
आगाल (आयार)
आगास (आगासत्थिकाय)
आगासत्थिकाय (पृ २२)
आगिति (आगार)
आगिति (संठाण)
आग्राहयति (पृ २३)
आघवणा (पृ २३)
आघविय (पृ २३)
आचरण (आचार)
आचार (पृ २३)
आचार (कल्प)
आचाल (आयार)
आचिक्खति (पृ २३)
आज्जाइ (आयार)
आढाइ (पृ २३)
आणनरिय (पृ २३)
आणद (तुट्ठि)
आणदकर (णिव्वाणिकर)
आणदकर (मधुर)
आणदिय (हट्ठचित्त)
आणवयण (सुत्त)
आणा (पृ २४)
आणा (उववाय)
आणाए आराहिय (फासिय)
आणाए आराहेइ (फासेइ)
आणाते अणुपालिय (फासिय)
आणुकपिय (हियकामग)
आणुगामिय (हिय)
आणुपुव्वि (पृ २४)
आणेति (पृ २४)
आतट्ठि (पृ २४)
आतव (सूरलेस्सा)
आताहकम्म (आहाकम्म)
आतिक्खिय (अग्घातित)
आतिण्ण (पृ २४)
आतुर (दीण)
आत्मज (अत्तय)
आत्मन् (जीव)
आत्मप्रशसा (श्लोक)
आत्मार्थिन् (आतट्ठि)
आदर्श (पृ २४)
आदान (पृ २४)
आदि (मूल)
आदित्य (पृ २४)
आदियणा (अविण्णावाण)
आदियति (पृ २४)
आदियति (आपिबति)
आदेश (पृ २४)
आदेस (उपदेश)

आद्य (प्रथम)
आद्य (मुद्ध)
आधार (आगासत्थिकाय)
आधार (मूल)
आधार (पात्र)
आधुत (विचल)
आनुपूर्विन् (पृ २५)
आपडित (अपमट्ठ)
आपिबति (पृ २५)
आपियइ (पियति)
आपीड (आमेलक)
आपूरित (पृ २५)
आप्न (पृ २५)
आप्त (पृ २५)
आभिणिबोहिय (पृ २५)
आभिणिबोहियणाण (मइ)
आभोग (पृ २५)
आभोगण (पृ २५)
आभोगण (ईहा)
आमगन्धि (विश्र)
आमेलक (पृ २५)
आमोक्ख (आयार)
आम्बिली (आम्रचिञ्चा)
आम्रचिञ्चा (पृ २६)
आय (पृ २६)
आय (पृ २६)
आय (जीवत्थिकाय)
आय (अज्झयण)
आयत (पृ २६)
आयगुत्त (आयट्ठि)
आयजोगि (आयट्ठि)
आयट्ठि (पृ २६)
आयणिप्फेडय (आयट्ठि)
आयतण (अहिंसा)
आयतन (पृ २६)
आयतस्थित (संविग्न)
आयतार्थिन् (आतट्ठि)
आयपरक्कम (आयट्ठि)
आययण (पृ २६)
आयर (परिग्गह)
आयरइ (अहिट्ठयति)
आयरक्खिय (आयट्ठि)
आयरण (माया)
आयरणा (विहि)
आयरिस (आयार)
आयव (दीव)
आयहिय (आयट्ठि)
आयाकम्म (आहाकम्म)
आयाणभंडमत्तनिक्खेवणाअस्समिति (अधम्मत्थिकाय)
आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिति (धम्मत्थिकाय)
आयाणुकपय (आयट्ठि)
आयाम (पृ २६)
आयार (पृ २६)
आयार (पृ २६)
आयार (कप्प)
आयार (जीवाभिगम)
आयार (पूया)
आयास (परिग्गह)
आयास (पृ २७)
आयाहकम्म (आहाकम्म)

आयुष् (स्थिति)
आयुष्क (जीवित)
आरभ (पृ २७)
आरभ (पाणवह)
आरभ (सरभ)
आरभकड (पृ २७)
आरभइ (पृ २७)
आरम्भ (करण)
आराहणा (आवस्सय)
आराहिय (फासिय)
आरित (पृ २७)
आरिय (पृ २७)
आरियदसि (आरिय)
आरियपण्ण (आरिय)
आरुभति (दुरुहइ)
आरूढ (अवगाढ)
आरोग (णिव्वुत)
आरोवण (ववहार)
आरोह (पृ २७)
आलब (पृ २७)
आलबण (मेढि)
आलय (उवसग)
आलीन (पृ २८)
आलुक्कई (पृ २८)
आलोइज्जइ (पृ २८)
आलोचन (पृ २८)
आलोय (आभोग)
आलोयण (पृ २८)
आलोयण (ववहार)
आलोयणा (पृ २८)
आलोलित (ण्हात)
आवट्टण (अवाय)
आवलिका (वश)
आवस्सग (पृ २८)
आवस्सय (पृ २८)
आवहति (पृ २९)
आवासत (आवस्सय)
आविर्भाव (प्रकाश)
आविल (आयास)
आवीलए (पृ २९)
आश्रय (आह्वान)
आश्रव (आगम)
आसदग (पृ २९)
आसदी (सेज्जा)
आसणाणुप्पदाण (सक्कार)
आसणाभिग्गह (सक्कार)
आसत्ति (परिग्गह)
आसन्न (अतिक)
आसव (अरिट्ठ)
आससणायवसण (अदिण्णादाण)
आसाएइ (पृ २९)
आसारेइ (उव्वत्तेइ)
आसास (अहिसा)
आसास (आयार)
आसासण (लोभ)
आसुरत्त (पृ २९)
आसेवित (सविचिण्ण)
आस्पृष्ट (पृ २९)
आहकम्म (आहाकम्म)
आहणइ (पृ २९)
आहरण (णाय)
आह्वान (पृ २९)

आहाकम्म (पृ २९)
आहातह्यि (सच्च)
आहार (मेढि)
आहार (आलब)
आहार (भोयण)
आहारएसणा (कुमपुप्फिया)
आहार कुरुते (जेमेति)
आहित (पृ ३०)
आहितग्गि (ब्रमण)
आहुणिज्जमाणी (पृ ३०)
आहेवच्च (पृ ३०)
इखिणी (पृ ३०)
इगालछारिगा (पृ ३०)
इद (पृ ३०)
इदियत्थ (राग)
इदीवर (पदुम)
इच्छा (पृ ३०)
इच्छा (छद)
इच्छा (मोहणिज्जकम्म)
इच्छा (राग)
इच्छा (लोभ)
इच्छा (अदिण्णादाण)
इच्छाछद (अहाछद)
इच्छित (पृ ३०)
इच्छिय (पृ ३०)
इच्छियत्ता (इट्ठत्ता)
इच्छियपडिच्छिय (इच्छिय)
इज्जा (पृ ३०)
इज्या (यजन)
इट्टका (सेज्जा)
इट्ठ (अत्त)
इट्ठ (पृ ३१)
इट्ठ (मधुर)
इट्ठ (णिव्वाणिकर)
इट्ठ (आप्त)
इट्ठत्ता (पृ ३१)
इट्ठा (पत्ति)
इत (पृ ३१)
इत्थिया (पत्ति)
इसि (पृ ३१)
इसि (समण)
इसि (ईसिपब्भारपुढवी)
इसु (कुमपुप्फिया)
इस्सर (पृ ३१)
इस्सरी (पत्ति)
इस्सापडक (णपुसक)
ईप्सित (उद्दिष्ट)
ईर्ष्या (माण)
ईश्वर (पृ ३१)
ईसिपब्भार (ईसिपब्भारपुढवी)
ईसिपब्भारपुढवी (पृ ३१)
ईहण (वियालण)
ईहा (आभिणिबोहिय)
ईहा (आभोग)
ईहा (पृ ३२)
ईहामृग (वृक)
उउमास (पृ ३२)
उछ (कुमपुप्फिया)
उक्कचण (पृ ३२)
उक्कपित (पृ ३२)
उक्कड्ढित (वीण)
उक्कड (उज्जल)

उक्कड्ढ (पृ ३२)
उक्कड्ढति (णिकड्ढति)
उक्कड्ढिय (णिच्छुढ)
उक्कत्त (कप्पिय)
उक्कसण (पृ ३२)
उक्किट्ठ (पृ ३२)
उक्किरण (साहरण)
उक्कूइय (रसिय)
उक्कूजिय (अक्कोस)
उक्कूल (अलिय)
उक्कोडभग (खोडभग)
उक्कोस (माण)
उक्कोस (मोहणिज्जकम्म)
उक्कोसेज्ज (पतावेज्ज)
उक्खणाहि (पहर)
उक्खित्त (ओसारित)
उक्खित्त (पूया)
उक्खित्तभत्त (पहेण)
उक्खिन्न (पृ ३३)
उक्तक्रमोल्लघन (व्यत्यय)
उक्ति (पृ ३३)
उखड्डमड्ड (पृ ३३)
उग्गम (पृ ३३)
उग्गय (पृ ३३)
उग्गविस (पृ ३३)
उग्गह (पृ ३३)
उग्गह (पृ ३३)
उग्गह (उवहि)
उग्गहित (ओसारित)
उग्गिण्हण (उग्गह)
उग्गोवणा (एसणा)
उग्घायण (पृ ३३)
उचित (बहुजनाचीर्ण)
उच्च (वीह)
उच्च (उदग्र)
उच्च (ऊसढ)
उच्चच्छद (पृ ३३)
उच्चयरक (पृ ३३)
उच्चारपासवणखेलसिंघाण-
जल्लपरिट्ठावणियाअस्समिति (अधम्मत्थिकाय)
उच्चारपासवणखेल
सिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिति (धम्मत्थिकाय)
उच्चारित (उल्लोइत)
उच्चावच (पृ ३४)
उच्छदण (उस्सिघण)
उच्छल्लिज्जति (चालिज्जति)
उच्छाडित (उल्लोहित)
उच्छायण (घाय)
उच्छाह (जोग)
उच्छाह (योग)
उच्छुद्ध (ओसारित)
उच्छुद्ध (पहर)
उच्छोलेंति (पृ ३४)
उज्जल (पृ ३४)
उज्जल (संख)
उज्जु (भिक्खु)
उज्जु (पृ ३४)
उज्जुगत्तण (पृ ३४)
उज्जुय (पृ ३४)
उज्जोएइ (ओभासेइ)

उज्जोएइ	(पभासति)	उत्तुदति	(तुदति)
उज्जोतित	(सुद्ध)	उत्थित	(उल्लोइत)
उज्झण	(पडण)	उत्पाटित	(उद्धृत)
उज्झणा	(उस्सग्ग)	उत्पादयति	(पृ ३५)
उज्झित	(मुक्त)	उत्प्रेक्षते	(उवेहति)
उज्झित	(छर्दित)	उत्फुल्ल	(फुल्ल)
उज्झिय	(भिण्ण)	उत्सर्ग	(ओघ)
उज्झीयति	(पृ ३४)	उत्सुक	(माण)
उड्डाण	(लुटण)	उत्सृजति	(निसृजति)
उड्डाण	(पृ ३४)	उदक	(पयस्)
उड्डित	(पृ ३५)	उदग्ग	(पृ ३५)
उडुपति	(चन्द्र)	उदग्ग	(ओराल)
उण्णत	(माण)	उदग्ग	(वयत्थ)
उण्णमणी	(अणुण्णा)	उदग्र	(पृ ३५)
उण्णाम	(माण)	उदत्त	(मुदित)
उण्णामित	(उल्लोइत)	उदत्त	(ओराल)
उण्ह	(तेउ)	उदय	(उग्गय)
उत्कोच	(लचा)	उदय	(दुमपुप्फिया)
उत्क्षिप्तभक्त	(पूज्यभक्त)	उदसी	(तक्क)
उत्क्षिप्यति	((चालिज्जति)	उदार	(पृ ३५)
उत्तम	(ओराल)	उदार	(ओराल)
उत्तम	(मदर)	उदीरणा	(एजणा)
उत्तर	(वाम)	उदीरित	(चालित)
उत्तर	(मदर)	उद्घातित	(लघुक)
उत्तरकरण	(पृ ३५)	उद्दवण	(पृ ३५)
उत्तरति	(उवेति)	उद्दवण	(पाणवह)
उत्तरपगडि	(अस)	उद्दवणकरी	(छेयणकरी)
उत्तारिय	(पृ ३५)	उद्दविज्जमाण	(आउडिज्जमाण)
उत्तास	(नील)	उद्दवित्ता	(हता)
उत्तासणग	(महब्भय)	उद्वेज्ज	(अक्कोसेज्ज)
उत्तासणय	(लोमहरिसजणण)		

उद्वेति (अभिहणति)
उद्वेयव्व (हतव्व)
उद्भामित (पृ ३५)
उद्दिट्ठ (पृ ३५)
उद्दिष्ट (पृ ३५)
उदूढ (पृ ३६)
उद्धसण (आओसण)
उद्धरण (कड्ढण)
उद्धर्षणा (आक्रोश)
उद्धार (हत्या)
उद्धारणा (धारणववहार)
उद्धिय (ओहय)
उद्धियकटय (ओहयकटय)
उद्धुय (उक्किट्ठ)
उद्धूत (पृ ३६)
उद्बुद्ध (फुल्ल)
उद्भिन्न (फुल्ल)
उद्यानविहारिन् (सविग्न)
उद्योगवद् (व्यवसायिन्)
उन्नय (मोहणिज्जकम्म)
उन्नाम (मोहणिज्जकम्म)
उन्निद्र (फुल्ल)
उन्मिषित (फुल्ल)
उन्मीलित (फुल्ल)
उपक (पदपाश)
उपकड्ढित (उल्लोइत)
उपकार (गुण)
उपचार (आदेश)
उपणत (उल्लोइत)
उपणद्ध (उल्लोइत)
उपदेश (प्रवचन)
उपदेश (दर्शन)
उपदेश (निमित्त)
उपदेस (पृ ३६)
उपधि (माया)
उपनीत (गमित)
उपनीयते (पृ ३६)
उपपदरिसिते (उपनीयते)
उपपद्यते (पयाति)
उपयोग (भाव)
उपयोग (पृ ३६)
उपयोग (ज्ञान)
उपयोग (पृ ३६)
उपल (पासाण)
उपलब्ध (विदित)
उपलभते (शृणोति)
उपलभते (गृह्णाति)
उपलोलित (उल्लोइत)
उपवत्त (उल्लोइत)
उपवधू (पत्ति)
उपलिप्पित (उल्लोइत)
उपशान्त (शान्त)
उपश्रा (पृ ३६)
उपसारित (उल्लोइत)
उपात्त (बद्ध)
उपादान (आय)
उपाय (प्रयोग)
उप्पज्जते (पृ ३६)
उप्पल (पदुम)
उप्पल (पृ ३६)
उप्पाडेहि (पहर)
उप्पायण (पृ ३७)

उप्पायण (पृ ३६)
उप्पिलावण (पृ ३७)
उब्भिण्ण (पृ ३७)
उभय (पृ ३७)
उम्मुअणा (उस्सग्ग)
उम्मुक्ककम्मकवय (सिद्ध)
उम्मूलण (पाणवह)
उराल (इट्ठ)
उराल (ओराल)
उल्लुत्त (कस)
उल्लोइत (पृ ३७)
उल्लोकित (णमोक्कत)
उल्लोहित (पृ ३७)
उवउत्त (अतिवत्त)
उवएस (सुत्त)
उवकरण (परिग्गह)
उवगम (लाभ)
उवगमण (लाभ)
उवगरण (उवहि)
उवग्गह (उवहि)
उवघाय (पडिसेवणा)
उवचय (परिग्गह)
उवचय (काय)
उवचय (पिंड)
उवचरित (पृ ३७)
उवचार (पृ ३७)
उवचित (थूल)
उवचितदेह (परिवूढ)
उवचिय (परिवुड्ढ)
उवट्ठावित्तए (मुंडावित्तए)
उवट्ठिय (पृ ३७)
उवट्ठिय (उवसत)
उवणय (णिवसण)
उवणामेति (आणेति)
उवत्थड (आइण्ण)
उवदसण (णिवसण)
उवदसिय (आघविय)
उवदेस (आणा)
उवधारण (उग्गह)
उवधारिय (दिट्ठ)
उवधि (पृ ३७)
उवधि (पणिधि)
उवम्म (पृ ३८)
उवयति (पृ ३८)
उवयत्ति (विसय)
उवयोग (नाण)
उवयोग (चेयण्ण)
उवरय (निट्ठिय)
उवलभणा (खज्जणिया)
उववाय (पृ ३८)
उववाय (आणा)
उवविसणा (णिसियणा)
उववुत्त (महव्वय)
उववूह (पृ ३८)
उवसत (णिहय)
उवसत (सत)
उवसत (पृ ३८)
उवसत (निट्ठिय)
उवसधार (णिवसण)
उवसपया (निस्सा)
उवसग (पृ ३८)
उवसम (सति)

उवसम (पृ ३८)
उवसमण (पृ ३८)
उवसमप्पभव (उवसमसार)
उवसममूल (उवसमसार)
उवसमसार (पृ ३८)
उवहाणव (पव्वइय)
उवहि (माया)
उवहि (मोहणिज्जकम्म)
उवहि (पृ ३८)
उवहि-असुद्ध (अलिय)
उवाय (हेतु)
उवेइ (पृ ३९)
उवेति (पृ ३९)
उवेहति (पृ ३९)
उव्वट्टण (उस्सिघण)
उव्वत्तेइ (पृ ३९)
उव्वलित (उल्लोहित)
उव्विग्ग (तत्थ)
उव्विग्ग (भीय)
उव्वियति (तसति)
उव्वेयणय (पाव)
उसभ (पृ ३९)
उसभक (तिरीड)
उस्सग्ग (पृ ३९)
उस्सय (काय)
उस्सय (अहिंसा)
उस्सय (पृ ३९)
उस्सय (अण्ण)
उस्सारित (रहस्स)
उस्सिघण (पृ ३९)
उस्सित (उल्लोइत)
ऊसढ (पृ ३९)
ऊसय (वुड्ढि)
ऊहा (संशय)
ऊहित (पृ ३९)
ऋजु (पृ ४०)
ऋतुबद्ध (द्वितीयसमवसरण)
ऋतुसंवत्सर (पृ ४०)
ऋषि (पृ ४०)
एइज्जमाण (पृ ४०)
एकग्गहणगहिय (कसिण)
एकांश (अणु)
एग (संजय)
एगतपंडिय (केवल)
एगणामभेद (एगपंडिय)
एगपज्जाय (एगपंडिय)
एगपंडिय (पृ ४०)
एजणा (पृ ४०)
एजन (पृ ४०)
एरावणवाहण (सक्क)
एसणा (पृ ४०)
एसणा (मग्गणा)
एसणाअस्समिति (अधम्मत्थिकाय)
एसणासमिति (धम्मत्थिकाय)
ओकड्ढित (ओसारित)
ओकड्ढ (उक्कड्ढ)
ओकड्ढित (ओसारित)
ओगेण्हण (उग्गह)
ओघ (पृ ४०)
ओच्छन्न (अलिय)
ओच्छुद्ध (ओसारित)
ओझीण (णिम्मसक)

ओणत (ओसारित)
ओणामित (ओसारित)
ओतारित (ओसारित)
ओतारिय (ओसारित)
ओतिण्ण (ओसारित)
ओदीवसिहा (हुतासिणसिहा)
ओधावति (पृ ४१)
ओधुत (विचल)
ओपुप्फ (अतिवत्त)
ओभासेइ (पृ ४१)
ओभासेज्ज (पतावेज्ज)
ओमत्थित (ओसारित)
ओमथित (ओसारित)
ओमुक्क (ओसारित)
ओय (कति)
ओयसि (पृ ४१)
ओयण (पृ ४१)
ओराल (पृ ४१)
ओलोकित (ओसारित)
ओलोलित (ओसारित)
ओवट्टित (ओसारित)
ओवत्त (ओसारित)
ओवम्म (णाय)
ओवहिय (वक)
ओवात (सुक्किल)
ओवास (पृ ४१)
ओवासतर (आगासत्थिकाय)
ओवील (अदिण्णादाण)
ओवीलेमाण (पृ ४१)
ओवेढग (केज्जूर)
ओसक्क (नयन)
ओमरित (ओसारित)
ओसा (सिण्ह)
ओसारित (पृ ४१)
ओमारेति (पृ ४२)
ओह (पृ ४२)
ओह (सखेव)
ओहबल (पृ ४२)
ओहय (पृ ४२)
ओहयकटय (पृ ४२)
ओहमित (अतिवत्त)
ओहि (मज्जाया)
ओहिज्जत (अतिवत्त)
कइयव (कवड)
ककण (हत्थभडक)
कखइ (पृ ४२)
कखा (लोभ)
कखा (परिज्झा)
कखा (अदिण्णादाण)
कखा (गेहि)
कखा (मोहणिज्जकम्म)
कखित (सकित)
कखिय (अत्थि)
कचिकलापक (कडीय)
कची (पृ ४२)
कटका (कची)
कट (णावा)
कत (पृ ४२)
कत (अत्त)
कत (आप्त)
कत (इट्ठ)
कत (सुभ)

कतत्ता (इट्टत्ता)
कता (पत्ति)
कति (अहिंसा)
कति (पृ ४३)
कदति (थणति)
कदण (पृ ४३)
कदप्प (णवो)
कदमाणी (रोयमाणी)
कदल (पदुम)
कदित (रुण्ण)
कदित (हक्कार)
कदूग (केज्जूर)
कपेति (अचेति)
कक्क (पृ ४३)
कक्क (पृ ४३)
कक्क (माया)
कक्क (मोहणिज्जकम्म)
कक्कणा (अलिय)
कक्कब (गुलोवलद्धीय)
कक्करण (कूजण)
कक्कस (पृ ४३)
कक्कस (उज्जल)
कक्कस (दारुण)
कक्कससद्द (दारुणसद्द)
कक्कुडिगा (लोमसिका)
कक्कुस (तुस)
कक्खड (उज्जल)
कक्खडी (पृ ४३)
कक्खडीभूत (पुराण)
कच्छभ (राहु)
कज्ज (पृ ४३)
कज्ज (कारण)
कज्जोपक (दीव)
कटुक (ग्राम्यवचन)
कट्ठ (णावा)
कठिन (कक्खडी)
कडग (हत्थिक)
कडग (पृ ४३)
कडग-मद्दण (पाणवह)
कडच्छुकी (दव्वी)
कडपल्ल (पृ ४३)
कडि-उपक (कडीय)
कडीय (पृ ४३)
कडुय (उज्जल)
कडुय (कक्कस)
कड्डिति (णिकड्डति)
कढण (पृ ४३)
कण्णकोवग (कुंडल)
कण्णखीलक (कुंडल)
कण्णधार (निज्जामय)
कण्णपील (कुंडल)
कण्णपूर (कुंडल)
कण्णलोडक (कुंडल)
कण्णा (दारिया)
कण्ह (पृ ४४)
कण्हराति (पृ ४४)
कण्हसप्प (राहु)
कत (अतिवत्त)
कतकज्ज (कतत्थ)
कतत्थ (पृ ४४)
कतपुव्व (णियत)
कति (समण)

कत्त (जीवत्थिकाय)
कत्ताहि (पहर)
कथयन्ति (बेंति)
कथित (आहित)
कथेति (आघिवज्जति)
कप्प (पृ ४४)
कप्प (पृ ४४)
कप्प (अणुण्णा)
कप्प (काल)
कप्प (ववहार)
कप्पण (परूवण)
कप्पिय (पृ ४४)
कप्पिय (अज्झत्थिय)
कम (विहि)
कम (आणुपुव्वि)
कमठ (जल्ल)
कमनीय (कान्त)
कमल (पृ ४४)
कम्पन (एजन)
कम्म (पृ ४४)
कम्म (उट्ठाण)
कम्म (दुक्ख)
कम्म (पाव)
कम्म (वेर)
कम्मकर (दास)
कम्मकरी (दासी)
कम्मक्खय (सति)
कम्ममास (उउमास)
कम्ममास (रिउ)
कम्मारय (दास)
कयत्थ (धण्ण)
कयार (पृ ४५)
करण (पृ ४५)
करण (उवहि)
करण (जोग)
करण (भवन)
करण (संस्कृत)
करणनिप्फण्ण (लिंगिय)
करीस (गोब्बर)
करीसण (धुणण)
करुण (पृ ४५)
करोडक (पृ ४५)
कर्कश (ग्राम्यवचन)
कर्दमरहित (निष्पंक)
कर्पर (छेद)
कर्बुर (बकुश)
कर्म (क्रिया)
कर्म (योग)
कर्मन् (स्थान)
कर्मबन्ध (क्रिया)
कर्मानुभूति (स्थिति)
कलकरहित (निष्पक)
कलभ (बालक)
कलश (घट)
कलस (अरजर)
कलह (पृ ४५)
कलह (अधम्मत्थिकाय)
कलह (अधिकरण)
कलह (आयास)
कलह (समर)
कलह (कोह)
कलह (डिम्ब)

कलह	(मोहणिज्जकम्म)	कवड	(अलिय)
कलह	(विवाद)	कवड	(उक्कचण)
कलह	(वुग्गह)	कवड	(पृ ४६)
कलहसी	(विल्लरी)	कवल्ली	(दव्वी)
कलहविवेग	(धम्मत्थिकाय)	कषाय	(पृ ४६)
कला	(पृ ४५)	कस	(पृ ४६)
कलि	(समर)	कसाय	(पृ ४६)
कलिकरड	(परिग्गह)	कसिण	(पृ ४६)
कलिका	(मुकुल)	कसिण	(सव्व)
कलुण	(दीण)	कसिण	(अणत)
कलुष	(कषाय)	कसिण	(निव्वाण)
कलुषित	(शंकित)	कसिण	(अणत्तर)
कलुस	(पृ ४५)	कहण	(परूवण)
कलुस	(कम्म)	कहेति	(किट्टते)
कलुस	(किव्विस)	कहेस्सामि	(कित्तइस्सामि)
कलुस	(पाव)	काउस्सग्ग	(पृ ४६)
कलेवर	(काय)	कांक्षा	(लोभ)
कल्प	(जीत)	कांत	(इट्ठ)
कल्प	(पृ ४५)	काण	(पृ ४६)
कल्मष	(किव्विस)	कान्त	(पृ ४६)
कल्याण	(पृ ४५)	कापुरिस	(कीव)
कल्याणोपचय	(शुभवृद्धि)	काम	(राग)
कल्लसरीर	(हट्ठ)	कामगम	(पृ ४६)
कल्लाण	(इट्ठ)	कामगुण	(अबम)
कल्लाण	(पृ ४६)	कामभोग-मार	(अबम)
कल्लाण	(अहिंसा)	कामयति	(अभिलसति)
कल्लाण	(भद्दग)	कामासा	(मोहणिज्जकम्म)
कल्लाण	(ओराल)	कामासा	(लोभ)
कल्हार	(उप्पल)	काय	(पृ ४७)
कवचित	(सन्नद्ध)	काय	(गण)
कवड	(कूड)	कायअगुत्ति	(अधम्मत्थिकाय)

कायगुत्ति	(धम्मत्थिकाय)	कितिकम्म	(वदणग)
कायर	(कीव)	कित्तइस्सामि	(पृ ४७)
कायोत्सर्ग	(व्युत्सर्ग)	कित्तण	(पृ ४७)
कारडय	(मयूर)	कित्ति	(पृ ४७)
कारग	(कारण)	कित्ति	(अहिंसा)
कारण	(पृ ४७)	किन्नित	(वण्णित)
कारण	(स्थान)	किब्बिस	(अलिय)
कारण	(नियाण)	किब्बिस	(माया)
कारण	(निमित्त)	किब्बिसिय	(मोहणिज्जकम्म)
कारण	(अत्थ)	किरियति	(उत्पादयति)
कारण	(लिंग)	किरीट	(तिरीड)
कारण	(कज्ज)	किलत	(कुब्बल)
कारण	(हेउ)	किलामिज्जमाण	(आउडिज्जमाण)
कारणोवएस	(हेउगोवएस)	किलामेज्ज	(अभिहणेज्ज)
कार्पटिक	(धूर्त)	किलिट्ठ	(कलुस)
काल	(पृ ४७)	किलिम	(णपुसक)
काल	(अद्धा)	किलेस	(कम्म)
कालक	(कण्ह)	किव्विस	(पृ ४७)
कालक	(गुरुक)	किस	(कस)
काहापण	(पृ ४७)	किस	(सुक्क)
किइकम्म	(सक्कार)	किसिण	(कण्ह)
किंकर	(दास)	किस्सते	(भग्ग)
किंचि	(रहस्स)	कीडति	(रमति)
किट्टति	(रमति)	कीर्ति	(श्लोक)
किट्टते	(पृ ४७)	कीलति	(रमति)
किट्टिय	(फासिय)	कीव	(पृ ४८)
किट्टेइ	(फासेइ)	कुचि	(पृ ४८)
किट्टेमि	(आइक्खामि)	कुजर	(मातग)
किडिकिडियाभूय	(सुक्क)	कुजित	(रुण्ण)
किणिय	(पाण)	कुडग	(अरजर)
कितबुद्धि	(सुबुद्धिक)	कुडल	(पृ ४८)

कुभ (णावा)
कुंभीकपडक (णपुसक)
कुच्छति (पृ ४८)
कुच्छिधार (निज्जामय)
कुट (घट)
कुटिल (कुंचि)
कुटिल (वक्क)
कुटुंब (कुल)
कुट्टण (पृ ४८)
कुट्टिन (पिच्चिय)
कुट्टित (छिन्न)
कुड्मल (मुकुल)
कुढारक (अरजर)
कुथित (विश्र)
कुब्ज (पृ ४८)
कुब्ब (पृ ४८)
कुब्जिक (कुब्ज)
कुमारी (वारिया)
कुमुद (पदुम)
कुमुय (उप्पल)
कुम्भ (घट)
कुरवक (कुडल)
कुरुय (माया)
कुरुय (कक्क)
कुरुय (मोहणिज्जकम्म)
कुल (पृ ४८)
कुल (सघ)
कुलमसि (अदिण्णादाण)
कुवलय (पदुम)
कुविय (रुट्ठ)
कुविय (आसुरत्त)
कुव्वइ (आवहति)
कुव्विज्ज (पउजेज्ज)
कुशल (पृ ४८)
कुसल (देसकालण्ण)
कुसल (छेय)
कुसीलससग्गि (अणायतण)
कुसुम (पुप्फ)
कुह (दुम)
कुहित (वावण्ण)
कुहिय (दोसीण)
कूजण (पृ ४८)
कूट (माया)
कूड (पृ ४९)
कूड (अलिय)
कूड (उक्कचण)
कूड (मोहणिज्जकम्म)
कूड (पदपाश)
कूड (अदिण्णादाण)
कूर (ओयण)
कूरिकड (अदिण्णादाण)
कूविन (विकूणित)
कूविय (रसिय)
कृत (चेतित)
कृत (निष्ठित)
कृत्स्न (पृ ४९)
कृत्स्न (अशेष)
कृत्स्न (सर्व)
कृश (पृ ४९)
केज्जूर (पृ ४९)
केतन पृ ४९)
केतु (पृ ४९)

केवल (पृ ४६)
केवलणाण (केवल)
केवलि (अरहू)
केवलि (सिद्ध)
केवलिठाण (अहिंसा)
कोटक (तुस)
कोकणय (उप्पल)
कोज्जक (पदुम)
कोट्टिव (णावा)
कोट्टिम (डिप्फर)
कोट्ठ (धारणा)
कोडि (अस्सि)
कोप (क्रोध)
कोमल (तरुणय)
कोरक (मुकुल)
कोलाहलभूय (हाहाभूय)
कोव (कोह)
कोव (मोहणिज्जकम्म)
कोह (४६)
कोह (अधम्मत्थिकाय)
कोह (मोहणिज्जकम्म)
कोहनिग्गह (खमा)
कोहविवेग (धम्मत्थिकाय)
कौमुदी (चन्द्रिका)
क्रमति (पृ ४६)
क्रिया (एजन)
क्रिया (पृ ५०)
क्रिया (योग)
क्रीडन (विहरण)
क्रोध (पृ ५०)
क्षपण (अनगार)
क्षपणा (पृ ५०)
क्षपित (क्षामित)
क्षाम (कुब्ब)
क्षामित (पृ ५०)
क्षिप्त (पृ ५०)
क्षिप्त (विरल्लिय)
क्षिप्त (मुक्त)
क्षिप्तचित्त (क्षिप्त)
क्षुण्ण (कुशल)
क्षुद्र (पृ ५०)
खइय (अतिवत्त)
खड (फुडित)
खड (अग)
खडणा (विराहणा)
खडित (पृ ५०)
खडितए (चालित्तए)
खत (पृ ५०)
खन (भिक्खु)
खत (समण)
खति (अहिंसा)
खध (गण)
खज्जमाण (नस्समाण)
खट्टा (सेज्जा)
खट्टिक (सौकरिक)
खडुग (हत्थिक)
खड्डुग (हत्थखड्डुक)
खणता (रयणी)
खण्ड (छेद)
खतय (राहु)
खत्तपक (काहापण)
खत्तियधम्मक (गडूपक)

खत्तियधम्मका	(खिखिणिका)
खद्ध	(पृ ५०)
खम	(हिय)
खमइ	(सहइ)
खमग	(भिक्खु)
खमति	(पृ ५०)
खमा	(पृ ५०)
खमिति	(पृ ५१)
खर	(पृ ५१)
खर	(उज्जल)
खर	(निट्ठुर)
खरय	(राहु)
खलक	(रस)
खलणा	(पडिसेवणा)
खलक	(पृ ५१)
खवण	(विगिंचण)
खवण	(झोसण)
खविय	(खीण)
खह	(आगासत्थिकाय)
खाइम	(असण)
खावट्टिका	(बीहसक्कुलिका)
खान	(पृ ५१)
खाति	(जेमेति)
खामिय	(पृ ५१)
खार	(डिम्ब)
खिखिणिका	(पृ ५१)
खिखिणिका	(पामुद्दिका)
खिंसइ	(पृ ५१)
खिंसण	(अक्कोस)
खिंसणा	(हीलणा)
खिंसणा	(इखिणी)
खिंसणिज्ज	(हीलणिज्ज)
खिंसति	(हीलेति)
खिंसिज्जमाणी	(हीलिज्जमाणी)
खिंसिय	(रुसिय)
खिज्जणिया	(पृ ५१)
खित्त	(उक्कपित)
खिल	(अग)
खिलीभूत	(गाढीकय)
खीण	(पृ ५१)
खीणतराय	(अणतराय)
खीणक्कोह	(अक्कोह)
खीणगोय	(अगोय)
खीणनाम	(अणाम)
खीणमाण	(अमाण)
खीणमाया	(अमाया)
खीणमोह	(अमोह)
खीणलोह	(अलोह)
खीणवस	(महव्वय)
खीणवेयण	(अवेयण)
खीणाउय	(अणाउय)
खीणावरण	(अणावरण)
खीर	(दुद्ध)
खुडित	(रहस्स)
खुड्डतर	(पृ ५१)
खुड्डलक	(पृ ५१)
खुद्द	(पाव)
खुह	(कम्म)
खुह	(पाव)
खेत्तण्ण	(देसकालण्ण)
खेम	(पृ ५२)
खेम	(पृ ५२)

खेव	(अविण्णादाण)
खोडक	(वीहसक्कुलिका)
खोडभग	(पृ ५२)
खोभणा	(एजणा)
खोभित्तए	(चालित्तए)
खोभिय	(वहित)
खोभेइ	(उव्वत्तेइ)
खोरक	(पृ ५२)
गड	(पृ ५२)
गडसेल	(पासाण)
गडि	(पृ ५२)
गडूपक	(पृ ५२)
गडूपयक	(पृ ५२)
गथ	(तत)
गथ	(सुत्त)
गगण	(आगासत्थिकाय)
गच्छ	(राशि)
गच्छ	(सघ)
गच्छइ	(उवेइ)
गच्छति	(वयति)
गच्छति	(वूइज्जति)
गच्छति	(अणुसचरइ)
गच्छति	(कखइ)
गच्छति	(चरति)
गजदन्त	(वक्षस्कार)
गडूल	(अलस)
गड्डुक	(पृ ५२)
गढिय	(मुच्छिय)
गढिय	(लोलुय)
गण	(पृ ५३)
गण	(कुल)
गण	(वव)
गण	(सघ)
गणणमतिक्कत	(पृ ५३)
गणिय	(उद्दिट्ठ)
गणिय	(णाय)
गत	(पृ ५३)
गत	(पृ ५३)
गत	(अतिक्कत)
गत	(इत)
गत	(ठित)
गत	(अतिवत्त)
गतवय	(महव्वय)
गतविवेकचैतन्य	(मूच्छित)
गति	(अहिंसा)
गति	(चरण)
गति	(भव)
गद्दभग	(पदुम)
गन्तृ	(प्रवहण)
गब्भेल्लग	(निज्जामय)
गमन	(अयन)
गमन	(अवन)
गमन	(एजन)
गमन	(चरण)
गमन	(चार)
गमित	(उवचरित)
गमित	(पृ ५३)
गमित	(अर्पित)
गमित	(मुणित)
गम्यते	(अर्च्यते)
गम्यते	(अर्यते)
गम्यते	(चर्यते)

गय	(पृ ५३)	गव्व	(माण)
गय	(विचल)	गव्व	(मोहणिज्जकम्म)
गय	(णाय)	गहण	(पृ ५३)
गय	(मातग)	गहण	(अलिय)
गयतेय	(हयतेय)	गहण	(एसणा)
गरहणा	(हीलणा)	गहण	(माया)
गरहति	(कुच्छति)	गहण	(मोहणिज्जकम्म)
गरहिज्जमाणी	(हीलिज्जमाणी)	गहणपगार	(माण)
गरहित	(पृ ५३)	गहणा	(गहण)
गरिहति	(हीलेति)	गहिय	(बद्ध)
गरिहा	(आलोयणा)	गहियट्ठ	(लद्धट्ठ)
गरिहा	(पडिकमण)	गाढ	(लोलुग)
गरिहिज्जइ	(आलोइज्जइ)	गाढलीण	(अणुपविट्ठ)
गरुलक	(तिरीड)	गाढलीण	(अतिगत)
गर्व	(माण)	गाढीकय	(पृ ५३)
गर्हित	(अवद्य)	गाढोपगूढ	(अणुपविट्ठ)
गलइ	(सडइ)	गाढोपगूढ	(अतिगत)
गलन	(चचल)	गामधम्मतत्ति	(अबभ)
गलन	(पृ ५३)	गार्ध्य	(राग)
गलि	(गडि)	गार्ध्य	(लोभ)
गलि	(खलुक)	गाल	(गलन)
गलि	(तडि)	गाह	(चिट्ठ)
गलियकटय	(ओहयकटय)	गाहा	(पृ ५८)
गलिवद्द	(बुगाव)	गिज्झइ	(सज्जइ)
गवेषणा	(ईहा)	गिज्झिय	(सज्जिय)
गवेसण	(ईहा)	गिण्हाति	(भिणति)
गवेसणा	(आभिणिबोहिय)	गिद्ध	(पृ ५४)
गवेसणा	(आभोग)	गिद्ध	(मुच्छिय)
गवेसणा	(एसणा)	गिद्ध	(लोलुय)
गवेसि	(अत्थि)	गिद्धि	(परिज्झा)
गवेसिय	(अन्विष्ट)	गिद्धि	(मुच्छा)

गिरा (पृ ५४)
गिरा (वक्क)
गिरि (णग)
गिरिक (पासाण)
गिरिराय (मदर)
गिलाण (वाहिय)
गिल्लिरी (तिसरा)
गिल्ली (थिल्ली)
गिह (आगार)
गिह (गाहा)
गिह (लयण)
गीतार्थ (बुद्ध)
गीय (पृ ५४)
गुज्झ (अबभ)
गुण (पृ ५४)
गुण (पृ ५४)
गुण (पज्जव)
गुण (पर्याय)
गुणकार (जावताव)
गुणण (परियट्टण)
गुणमत (सीलमत)
गुणविराहणा (पाणवह)
गुणित (ऊहित)
गुणिय (आगत)
गुणिय (णाय)
गुणेति (पृ ५४)
गुत्त (वतप्प)
गुत्त (पालित)
गुत्त (समण)
गुत्तणाम (धुवक)
गुत्ति (अहिंसा)
गुरुक (कृत्स्न)
गुरुक (पृ ५४)
गुलमग (अरजर)
गुलोवलद्धीय (पृ ५४)
गूहण (णिहण)
गूहण (पृ ५४)
गूहण (मोहणिज्जकम्म)
गूहण (माया)
गृद्ध (सक्त)
गृद्धिमन्त (मूर्च्छित)
गृहिपर्याय (पृ ५५)
गृहीत (उवधृत)
गृहीत (उवचार)
गृहीत (बद्ध)
गृह्णाति (पृ ५४)
गृह्णाति (शृणोति)
गेण्हिति (आवियति)
गेहि (पृ ५५)
गेहि (छद)
गेहि (तण्हा)
गेहि (मोहणिज्जकम्म)
गेहि (लोभ)
गो (वक्क)
गोउल (घोस)
गोखीर (सख)
गोचर (प्राप्ति)
गोज्झक (पृ ५५)
गोज्झकपति (गोज्झक)
गोणस (पृ ५५)
गोधिका (पृ ५५)
गोब्बर (पृ ५५)

गोयर (पृ ५५)
गोयर (कुमपुप्फिया)
गोल (कुमपुप्फिया)
गावण (गूहण)
ग्रथित (पृ ५५)
ग्रहगृहीत (अणप्पज्झ)
ग्रहण (उवचार)
ग्राम (नियोग)
ग्राम्यवचन (पृ ५५)
घट (पृ ५६)
घटना (मेलना)
घट्टण (सवर)
घट्टण (पृ ५६)
घट्टणा (एजणा)
घट्टेइ (उव्वत्तेइ)
घट्ठ (अच्छ)
घट्ठ (पृ ५६)
घडइ (आवहति)
घडक (अरजर)
घडति (क्रमति)
घडिज्ज (परिक्कमिज्ज)
घडितव्व (पृ ५६)
घण (पृ ५६)
घर (भवण)
घर (गाहा)
घाइय (हय)
घाट (पृ ५६)
घाडियय (नायय)
घात (पृ ५६)
घात (वड)
घाय (पृ ५६)
घायण (डड)
घायण (पाणवह)
घायय (पृ ५६)
घायय (अरि)
घिमरा (तिसरा)
घुमति (अवोलति)
घोर (उज्जल)
घोरविस (उग्गविस)
घास (पृ ५६)
चइय (ववगय)
चए (छड्डे)
चएज्ज (पृ ५७)
चगेंग्य (छज्जिय)
चचल (पृ ५७)
चड (पाव)
चड (साहसिक)
चड (उक्किट्ठ)
चड (उज्जल)
चड (सिग्घ)
चडदड (पाव)
चडविस (उग्गविस)
चडाल (पृ ५७)
चडिक्क (कोह)
चडिक्क (मोहणिज्जकम्म)
चडिक्किय (रुट्ठ)
चडिक्किय (आसुरत्त)
चद (पृ ५७)
चदलेम्मा (दोसिणा)
चक्ककमिहुणग (हत्थिक)
चक्खु (मेढि)
चञ्चूर्यंते (चरति)

चतुर्वेद	(श्रमण)
चत्त	(ववगत)
चत्तदेह	(पृ ५७)
चन्द्र	(पृ ५७)
चन्द्रातप	(चन्द्रिका)
चन्द्रिका	(पृ ५७)
चम्मणद्ध	(णिम्मसक)
चय	(पिंड)
चय	(परिग्गह)
चय	(काय)
चयति	(वक्कमति)
चयण	(उस्सग्ग)
चयावचइय	(भेउरधम्म)
चयाहि	(पृ ५७)
चरंत	(अवम)
चरक	(समण)
चरण	(पृ ५७)
चरण	(पृ ५७)
चरण	(चार)
चरण	(चार)
चरण	(जीवाभिगम)
चरणकरणपारविय	(समण)
चरति	(पृ ५७)
चरति	(पृ ५८)
चरय	(भिक्खु)
चरित्तधम्म	(जीवाभिगम)
चरित्तधम्म	(पच्चक्खाण)
चरिया	(चार)
चर्यंते	(पृ ५८)
चल	(चलित)
चल	(अनित्य)
चलणा	(एअणा)
चलित	(पृ ५८)
चलिय	(चलित)
चलिय	(वहित)
चवल	(उक्किट्ठ)
चवल	(खद्ध)
चवल	(चचल)
चवल	(ससमम)
चवल	(सिग्घ)
चहित	(पृ ५८)
चहिय	(पृ ५८)
चाउम्मासित	(पृ ५८)
चाएति	(पृ ५८)
चाण्डाल	(सौकरिक)
चार	(पृ ५८)
चार	(पृ ५८)
चारु	(सुभ)
चालिज्जति	(पृ ५८)
चालित	(पृ ५६)
चालित्तए	(पृ ५६)
चालेइ	(उव्वत्तेइ)
चाविय	(ववगय)
चाहित	(चहित)
चिंता	(ईहा)
चिंतापर	(दीण)
चिंतित	(इच्छित)
चिंतित	(ऊहित)
चिंतिय	(अज्झत्थिय)
चिंतेहिति	(पृ ५६)
चिंध	(लिंग)
चिंधणिप्फण्ण	(लिंगिय)
चिकित्साशाला	(तेगिच्छियसाला)

चिक्कण	(पृ ५९)	चुण्ण	(अग)
चिक्कणीकय	(गाढीकय)	चुय	(गय)
चिञ्चिनिका	(आम्रचिञ्चा)	चुय	(ववगय)
चिट्ठ	(पृ ५९)	चुल्लक	(दीव)
चिट्ठणा	(अवत्था)	चुल्लि	(दीव)
चिट्ठणा	(पतिट्ठा)	चूला	(पृ ५९)
चिडिलीसिहा	(हुतसिणसिहा)	चेट्ठा	(योग)
चितक	(दीव)	चेत	(अतरप्प)
चितिकम्म	(वदग)	चेतण	(णाण)
चित्त	(पृ ५९)	चेतित	(पृ ६०)
चित्त	(अतरप्प)	चेय	(जीवत्थिकाय)
चित्त	(पणिहाण)	चेयण्ण	(पृ ६०)
चित्त	(मधुर)	चेष्टा	(रयस्)
चित्त	(मणसकप्प)	चैत्य	(आयतन)
चित्तल	(सबल)	चोक्ख	(आयत)
चित्तविप्लुति	(विचिकित्सा)	चोक्खा	(अहिंसा)
चिन्तन	(मनन)	चोक्ष	(पृ ६०)
चिन्ता	(उपयोग)	चोण्ण	(वज्ज)
चिन्ता	(उपयोग)	चोदणा	(पुच्छा)
चिन्ता	(सकण)	चोदित	(पृ ६०)
चिर	(पृ ५९)	चोयणा	(पृ ६०)
चिरजुसिय	(चिरससिट्ठ)	चोरिक्क	(अविण्णादाण)
चिरपरिचिय	(चिरससिट्ठ)	छद	(पृ ६०)
चिरसथुय	(चिरससिट्ठ)	छद	(पृ ६०)
चिरससिट्ठ	(पृ ५९)	छद	(इच्छा)
चिराणुगय	(चिरससिट्ठ)	छदत	(पडियाणिया)
चिराणुवत्ति	(चिरससिट्ठ)	छदक	(मणाम)
चिल्लल	(सद्दूल)	छदण	(पृ ६०)
चिल्लिक	(णपुसक)	छदन	(निकाच)
चिह्न	(केतु)	छगण	(गोब्बर)
चुडलि	(दीव)		

छज्जिय (पृ ६०)
छड्डण (विउस्सग)
छड्डुण (उस्सग्ग)
छड्डित (फुलित)
छड्डित (पकिण्ण)
छड्डिय (पृ ६०)
छड्डे (पृ ६०)
छड्डेति (वमेति)
छड्डेहि (चयाहि)
छण (जण्ण)
छण (उस्सय)
छन्द (पृ ६१)
छन्न (पृ ६१)
छर्दित (पृ ६१)
छल्लिक (मणाम)
छविकर (पावय)
छविच्छेय (पाणवह)
छात (पिवासित)
छायण (णिहण)
छाया (जुइ)
छाया (पृ ६१)
छाया (कंति)
छासि (तक्क)
छिंद (पहर)
छिंदत (पृ ६१)
छिंदति (पृ ६१)
छिज्जमाण (नस्समाण)
छिड्ड (पृ ६१)
छिड्ड (आगासत्थिकाय)
छिण्ण (भग्ग)
छिण्णण (निव्वट्टन)
छिण्णबधण (दविय)
छिण्णसोय (सत)
छिद्द (अन्तर)
छिद्द (पृ ६१)
छिद्र (सन्धि)
छिन्न (कप्पिय)
छिन्न (पृ ६१)
छिन्नति (पृ ६१)
छिन्नसोय (अणासव)
छुद्ध (णिच्छुद्ध)
छुभति (उवयति)
छेत्ता (हंता)
छेद (पृ ६१)
छेदन (आकुट्टि)
छेय (उक्किट्ठ)
छेय (पृ ६२)
छेयकर (अण्हयकर)
छेयण (फुडण)
छेयणकरी (पृ ६२)
जइ (भिक्खु)
जइण (उक्किट्ठ)
जइण (सिग्घ)
जतु (जीवत्थिकाय)
जपति (आचिक्खति)
जबू (पृ ६२)
जबूका (कच्ची)
जबूफलक (करोडक)
जग्गतक (पृ ६२)
जघन्य (अधर)
जघन्य (हिट्ठिम)
जज्जर (जुण्ण)

जड (भव)
जडिलय (राहु)
जड्डु (पृ ६२)
जढ (छड्डिय)
जणकलकल (जणसमद्द)
जणपद (रज्ज)
जणबोल (जणसमद्द)
जणवूह (जणसमद्द)
जणसमद्द (पृ ६२)
जणसण्णिवाय (जणसमद्द)
जणुक्कलिया (जणसमद्द)
जणुम्मि (जणसमद्द)
जण्ण (पृ ६२)
जण्ण (उस्सय)
जण्णकत (बभण)
जण्णकारि (बभण)
जण्णमुड (बभण)
जत (वीर)
जति (भिक्खु)
जतितव्व (घडितव्व)
जन्म (भव)
जन्मपर्याय (गृहिपर्याय)
जय (उवसत)
जय (जीवत्थिकाय)
जयणा (अहिंसा)
जरठ (पुराण)
जरती (जरत्का)
जरत्का (पृ ६२)
जरातुर (महव्वय)
जराविमुक्क (सिद्ध)
जलण (अग्गि)
जलन (नयन)
जलपानस्थान (तीर्थ)
जलरुह (कमल)
जलहर (बलाहक)
जलूग (दुमपुप्फिया)
जलोदर (वउदर)
जल्ल (पृ ६२)
जल्लिय (पृ ६३)
जवइत्तय (पृ ६३)
जवण (उक्किट्ठ)
जवित्तय (पृ ६३)
जस (पृ ६३)
जसस (सिद्धत्थ)
जससि (ओयसि)
जसवती (सेसवती)
जसोकामि (पूयणट्ठि)
जसोधरा (जबू)
जहाभूत (पृ ६३)
जहाहि (चयाहि)
जहेज्ज (चएज्ज)
जाइविमुक्क (सिद्ध)
जाणइ (पृ ६३)
जाणति (मन्नति)
जाणितव्वगसामत्थजुत्त (विण्णत्तिकारण)
जाणुकोप्परमाय (वज्झा)
जात (पृ ६३)
जाततेय (अग्गि)
जाम (पृ ६३)
जाय (अरह)
जायकोउहल्ल (जायसड्ढ)

जायमेय (पुट्ठ)
जायमसय (जायसड्ढ)
जायसड्ढ (पृ ६३)
जाल (मुम्मुर)
जाल (तिसरा)
जालक (मुकुल)
जालन (नयन)
जावताव (पृ ६३)
जिइंदिय (खत)
जिण (अरह)
जिन (उद्दूढ)
जिनकरण (पृ ६३)
जिम्ह (माया)
जिम्ह (मोहणिज्जकम्म)
जिय (सिक्खिय)
जिव्हिका (पृ ६४)
जीत (पृ ६४)
जीत (बहुजनाचीर्ण)
जीय (ववहार)
जीर्णा (जरत्का)
जीव (पृ ६४)
जीव (जीवत्थिकाय)
जीव (पाण)
जीवन (पृ ६४)
जीवन (स्थिति)
जीववुड्ढिपय (अणुण्णा)
जीवा (पृ ६४)
जीवाभिगम (पृ ६४)
जीविन (पृ ६४)
जीवित (जीवन)
जीवियंतकरण (पाणवह)
जीवियासा (लोभ)
जीवियासा (मोहणिज्जकम्म)
जुइ (पृ ६५)
जुंजिय (दुब्बल)
जुण्ण (पृ ६५)
जुण्ण (अतिवत्त)
जुण्ण (महव्वय)
जुण्णवय (महव्वय)
जुत्तग्घ (परग्घ)
जुत्ति (कति)
जुद्ध (पृ ६५)
जुद्ध (सगाम)
जुम्म (पिंड)
जुवति (पत्ति)
जुवाण (पृ ६५)
जुवाण (जोव्वण)
जूरइ (दुक्खइ)
जूरण (दुक्खण)
जूस (रस)
जूह (पृ ६५)
जेट्ठ (बभण)
जेट्ठोग्गह (पज्जोसवणा)
जेमण (भोयण)
जेमेति (पृ ६५)
जेया (जीवत्थिकाय)
जोग (पृ ६५)
जोग (पृ ६५)
जोग (वक्क)
जोगनिग्गह (काउस्सग्ग)
जोग्ग (अरिह)
जोग्ग (पभु)
जोणि (जीवत्थिकाय)

जोनि (अग्गि)
जोतिस (संवत्सर)
जोत्तेज्ज (परिक्कमिज्ज)
जोव्वण (पृ ६५)
जोव्वणक (जोव्वण)
जोव्वणत्थ (जुवाण)
जोव्वणत्थ (जोव्वण)
जोसिता (पत्ति)
ज्ञा (ज्ञान)
ज्ञान (संविद्)
ज्ञाप्यते (साध्यते)
ज्येष्ठ (पर)
ज्येष्ठावग्रह (प्रथमसमवसरण)
ज्योत्सना (चन्द्रिका)
झझक (हत्थिक)
झपिन (उक्कपित)
झवणा (अज्झयण)
झविन (णिप्पीलित)
झविय (खामिय)
झाणपर (दीण)
झिज्झा (लोभ)
झिल्लिरी (तिसरा)
झीण (पृ ६६)
झीण (णिप्पीलित)
झीण (महव्वय)
झीण (अतिवत्त)
झुसिर (तुच्छ)
झुसिर (आगासत्थिकाय)
झमित (भग्ग)
झोस (पृ ६६)
झोसण (आभोगण)
झोसण (पृ ६६)
टिट्टियावेइ (उव्वत्तेइ)
ठप्प (पृ ६६)
ठवणा (धारणा)
ठवणा (णिक्खेव)
ठवणा (अणुण्णा)
ठवणा (अवत्था)
ठवणा (पज्जोसवणा)
ठवणिज्ज (ठप्प)
ठवणी (अवत्था)
ठविय (णिक्खित्त)
ठवेति (णिहित)
ठाण (णिसीहिया)
ठाण (पतिट्ठा)
ठाण (पृ ६६)
ठाण (पृ ६६)
ठाण (अचल)
ठाण (उवसग्ग)
ठाण (णाम)
ठाणट्ठित (धुवक)
ठावणा (पतिट्ठा)
ठिइ (विहि)
ठिइकरण (अणुण्णा)
ठित (पृ ६६)
ठिति (अहिंसा)
ठिति (पृ ६६)
ठिति (अवत्था)
ठिति (पतिट्ठा)
ठिय (सिक्खिय)
डड (पृ ६६)

डंभण (कक्क)
डज्झति (रज्झति)
डमर (समर)
डमर (डिंब)
डमर (कलह)
डहरक (खुड्डलक)
डिंब (पृ ६६)
डिप्फर (पृ ६६)
डोब (पाण)
णगल (पृ ६७)
णदि (पृ ६७)
णदिय (हट्ठचित्त)
णग (पृ ६७)
णट्ठ (पृ ६७)
णट्ठ (णिहय)
णत्थिभाव (असपज्जाय)
णपुसक (पृ ६७)
णमसइ (आढाइ)
णमणी (अणुण्णा)
णमोक्कत (पृ ६७)
णरिंद (पृ ६७)
णरेतर (णपुसक)
णलिण (उप्पल)
णलिण (पदुम)
णाण (मइ)
णाण (पृ ६७)
णाणि (मुणि)
णाणि (पृ ६८)
णाम (पृ ६८)
णामण (उवसमण)
णामणी (अणुण्णा)
णामत (पासाण)
णामेति (अवेति)
णाय (पृ ६८)
णाय (पृ ६८)
णाय (अणुण्णा)
णायय (मित्त)
णारी (पत्ति)
णावा (पृ ६८)
णास (णिक्खेव)
णिइय (ध्रुव)
णिउण (दक्ख)
णिंदणा (इंखिणी)
णिकढि (उवधि)
णिकड्ढति (णीहारेति)
णिकड्ढति (पृ ६८)
णिकम्मदरिसि (पृ ६८)
णिकाय (वद)
णिकायण (छदण)
णिकुज्जित (णिस्सारित)
णिकुज्जित (णिम्मज्जित)
णिक्कखित (णिस्सकित)
णिक्कड्ढित (णिस्सारित)
णिक्कड्ढित (णिम्मज्जित)
णिक्खत (पृ ६८)
णिक्खणत (खिवत)
णिक्खणण (णिम्मज्जित)
णिक्खिणण (विकिखण्ण)
णिक्खित्त (णिस्सारित)
णिक्खित्त (पृ ६८)
णिक्खुस्सति (णीहारेति)
णिक्खेव (पृ ६९)

णिगलित (णिप्पीलित)
णिग्गथ (समण)
णिग्गथ (माहण)
णिग्गत (उद्धित)
णिग्गत (णिच्छुद्ध)
णिग्गलित (णिब्भामित)
णिच्च (धुव)
णिच्चमडिया (जबू)
णिच्छय (पृ ६९)
णिच्छय णाहिति (चितेहिति)
णिच्छयत्थपडिवत्ति (ववसाय)
णिच्छालित (णिस्सारित)
णिच्छिड्ड (घण)
णिच्छिय (णियय)
णिच्छुद्ध (पृ ६९)
णिच्छुद्ध (णिस्सारित)
णिच्छुद्ध (णिम्मज्जित)
णिच्छोडण (पृ ६९)
णिच्छोलित (णिस्सारित)
णिच्छोलित (णिम्मज्जित)
णिजुद्ध (जुद्ध)
णिज्जरा (अणुण्णा)
णिज्जरा (पृ ६९)
णिज्जवणा (पुच्छणा)
णिज्जाण (मोत्ति)
णिज्जूढ (अवित्तय)
णिज्झायति (पेक्खते)
णिट्ठित (महव्वय)
णिट्ठित (अतिवत्त)
णिट्ठियट्ठ (पडिय)
णिट्ठुत (णिम्मज्जित)
णिट्ठुर (उज्जल)
णिट्ठुर (फरुस)
णिट्ठुर (कक्कस)
णिट्ठुर (खर)
णिडाल (पृ ६९)
णिडालमासक (पृ ६९)
णिड्डील (णिस्सारित)
णिण्णामित (णिस्सारित)
णिण्णीत (णिम्मज्जित)
णिण्णेहक (पृ ६९)
णितिय (धुव)
णितिय (पृ ६९)
णित्थणित (णिम्मज्जित)
णित्थुद्ध (णिम्मज्जित)
णिदमण (पृ ६९)
णिदसिय (आघविय)
णिदरिसण (णाय)
णिद्दीण (णिम्मज्जित)
णिद्धाडित (णिस्सारित)
णिद्धाडित (णिम्मज्जित)
णिद्धावति (पधावति)
णिप्पकप (धुवक)
णिप्पतित (णिस्सारित)
णिप्पयोग (सिद्ध)
णिप्पीलित (पृ ७०)
णिप्फत्ति (पृ ७०)
णिप्फल (अतिवत्त)
णिप्फाडित (णिस्सारित)
णिप्फावित (णिम्मज्जित)
णिप्फीलित (णिस्सारित)
णिप्फेडित (णिम्मज्जित)

णिब्भच्छिज्जमाण (वुच्चमाण)
णिब्भामित (पृ ७०)
णिमतण (छवण)
णिम्मसक (पृ ७०)
णिम्मज्जित (पृ ७०)
णिम्मट्ठ (रहस्स)
णिम्मम (णीरागदोस)
णिम्मल (निट्ठियट्ठ)
णिम्मल (अरय)
णिम्मल (सेत)
णियक्खेति (पेक्खते)
णियडि (उक्कचण)
णियडिजोग (उवधि)
णियत (पृ ७०)
णियत (अचल)
णियत्ति (दुगुछणा)
णियय (पृ ७०)
णियया (जबू)
णिरणुकप (पाव)
णिरत्ति (रयणी)
णिराकत (णिस्सारित)
णिराकार (अपमाण)
णिरागत (दीण)
णिराणद (णिम्मज्जित)
णिराणत (णिस्सारित)
णिरिक्खति (पेक्खते)
णिरोग (हट्ठ)
णिलिक्खति (पेक्खते)
णिलुचित (भग्ग)
णिलुलित (णिम्मज्जित)
णिलूचित (णिस्सारित)
णिल्लक्खित (णिम्मज्जित)
णिल्लवेति (वोसिरति)
णिल्लालित (उट्ठित)
णिल्लिक्खण (णिच्छोडण)
णिल्लिखित (उट्ठित)
णिल्लुवित (णिम्मज्जित)
णिल्लोकित (उट्ठित)
णिल्लोलित (णिस्सारित)
णिवूढ (दिट्ठ)
णिवाल्लित (णिम्मज्जित)
णिव्वजीयति (पृ ७०)
णिव्वट्टित (णिम्मज्जित)
णिव्वत (महव्वय)
णिव्वत्तणम (उप्पायण)
णिव्वर (धुवक)
णिव्वर (छिन्न)
णिव्वलक (णिच्छोडण)
णिव्वाघाय (अणुत्तर)
णिव्वाडित (णिस्सारित)
णिव्वाण (पृ ७१)
णिव्वाणि (सधि)
णिव्वाणिकर (पृ ७१)
णिव्वाधित (हट्ठ)
णिव्वामित (णिस्सारित)
णिव्वासित (णिम्मज्जित)
णिव्विट्ठ (णिम्मज्जित)
णिव्वितिगिच्छित (णिस्सकित)
णिव्वुत (सिद्ध)
णिव्वुत (पृ ७१)
णिव्वुतिकर (मधुर)
णिव्वुयगत (सिद्धिगत)

णिसरति (णीहारेति)
णिसा (रयणी)
णिसारेति (णीहारेति)
णिसिट्ठ (दिट्ठ)
णिसित्त (णिस्सारित)
णिसियणा (पृ ७१)
णिसीहिया (उवसग)
णिसीहिया (पृ ७१)
णिस्मकित (पृ ७१)
णिस्मग (णीरागदोस)
णिस्सरित (णिस्सारित)
णिस्मरित (णिम्मज्जित)
णिस्ससित (णिस्सारित)
णिस्ससित (णिम्मज्जित)
णिस्सारित (णिम्मज्जित)
णिस्सारित (पृ ७१)
णिस्सावित (णिम्मज्जित)
णिस्सिंधित (णिम्मज्जित)
णिस्सित (णिम्मज्जित)
णिस्सुक्क (णिम्मसक)
णिस्सेयस (हिय)
णिहण (पृ ७१)
णिहय (पृ ७१)
णिहित (पृ ७२)
णिहेति (णिहित)
णीत (तीरित)
णीपुर (गडूपयक)
णोपुरग (गडूपक)
णोयतराय (खुड्डतराय)
णीरक्कय (णिम्मज्जित)
णीरय (घट्ट)
णीरय (सुद्ध)
णीरय (अरय)
णीरय (सिद्ध)
णीरागदोस (पृ ७२)
णील (कण्ह)
णीसल्ल (णीरागदोस)
णीहरति (णीहारेति)
णीहारेति (पृ ७२)
णूम (मोहणिज्जकम्म)
णूम (माया)
णूमण (गूहण)
णूमेति (हरति)
णेय (समण)
णेयाउय (केवल)
णेव्वाण (सति)
णोल्लति (ओधावति)
णोल्लसति (अचेति)
णो सुह (अणिट्ठ)
ण्हाण (सिणाण)
ण्हात (पृ ७२)
ण्हाय (पृ ७२)
तडि (पृ ७२)
तत (पृ ७२)
तत (सुत्त)
तत (सत)
तका (पृ ७२)
तक्क (पृ ७२)
तक्क (पृ ७२)
तक्करत्तण (अविण्णादाण)
तक्केइ (आसाएइ)
तच्च (संत)

तच्चावाय (दिट्ठिवाय)
तच्चित्त (पृ ७४)
तच्चित्त (अज्झोववण्ण)
तच्छण (फुसण)
तज्जण (हीलण)
तज्जण (खिंसण)
तज्जण (अक्कोस)
तज्जण (कुट्टण)
तज्जिज्जमाण (आहडिज्जमाण)
तज्जिज्जमाणी (हीलिज्जमाणी)
तज्जित (खोवित)
तज्जेति (पृ ७४)
तज्जेज्ज (आओसेज्ज)
तज्जेति (अभिहणति)
तज्जेमाण (ओवीलेमाण)
तट्टक (पृ ७३)
तण (काय)
तणपल्ल (कडपल्ल)
तणसोल्लिक (पदुम)
तणु (ईसिपब्भारपुढवी)
तणुतणू (ईसिपब्भारपुढवी)
तणुयतर (ईसिपब्भारपुढवी)
तणूयरी (ईसिपब्भारपुढवी)
तण्णक (उसभ)
तण्णक (वच्छक)
तण्णक (बालक)
तण्णिका (वारिया)
तण्हा (मोहणिज्जकम्म)
तण्हा (लोभ)
तण्हा (परिग्गह)
तण्हा (पृ ७३)
तण्हाइत (पिवासित)
तण्हा-गेही (अदिण्णादाण)
तत्तिव्वज्झवसाण (तच्चित्त)
तत्थ (पृ ७३)
तत्थ (भीय)
तत्थ (वियजित)
तत्थ-तत्थ (पृ ७३)
तत्व (पृ ७३)
तदज्झवसिय (तच्चित्त)
तदट्ठोवउत्त (तच्चित्त)
तदप्पियकरण (तच्चित्त)
तदुभय (अणुण्णा)
तद्दिट्ठि (पृ ७३)
तनु (बोंदि)
तनु (कृश)
तनुतरशरीर (पृ ७३)
तन्निवेसण (तद्दिट्ठि)
तप्पक (णावा)
तप्पण (तुस)
तप्पुरक्कार (तद्दिट्ठि)
तब्भावणाभाविय (तच्चित्त)
तम (तमुक्काय)
तमस् (पृ ७३)
तमुक्काय (पृ ७३)
तम्मण (अज्झोववण्ण)
तम्मण (तच्चित्त)
तम्मोत्ति (तद्दिट्ठि)
तरच्छ (पृ ७४)
तरु (दुम)
तरुण (जोव्वण)
तरुणय (पृ ७४)

तलपत्तक (कुंडल)
तलभ (केज्जूर)
तलिय (डिप्फर)
तल्लेम (तच्चित्त)
तल्लेस (अज्झोववण्ण)
तव (परिहार)
तव (णिज्जरा)
तवरत (भिक्खु)
तवम्सि (पृ ७४)
तवस्सि (पव्वइय)
तवस्सि (भिक्खु)
तवेइ (ओभासेइ)
तसति (पृ ७४)
तसिय (भीय)
तस्सण्णि (तद्दिट्ठि)
तह (पृ ७४)
तहिं तहिं (तत्थ-तत्थ)
तहिय (सच्च)
तहिय (सत)
ताडण (कुट्टण)
ताडणा (हीलणा)
ताडिज्जमाण (आउडिज्जमाण)
ताण (अहिंसा)
ताति (भिक्खु)
तामरस (कमल)
तामरस (पदुम)
तामरस (उप्पल)
तालण (भेसण)
तालण (वध)
तालणा (हीलणा)
तालेति (तज्जेंति)
तालेज्ज (आओसेज्ज)
तालेति (अभिहणति)
तालेमाण (ओवीलेमाण)
तावत (भिक्खु)
तावस (समण)
तासण (अक्कोस)
तासणय (बीहणय)
तासणय (पाव)
तिउल (उज्जल)
तिगिच्छसरिस (पितवण्ण)
तिण्ण (सिद्ध)
तिण्ण (भिक्खु)
तिण्ण (समण)
तिण्ण (पृ ७४)
तिण्णगत (सिद्धिगत)
तितिक्खइ (सहइ)
तितिक्खति (पृ ७४)
तितिक्खा (खमा)
तितिक्खा (पृ ७५)
तित्ति (अहिंसा)
तित्थ (पवयण)
तिपएसियखंध (पोग्गलत्थिकाय)
तिप्पइ (झुरइ)
तिप्पण (झुरण)
तिप्पण (कूजण)
तिप्पण (कंदण)
तिप्पमाणी (रोयमाणी)
तिमि (पाठीण)
तिमिंगिल (पाठीण)
तिमिर (नील)
तिमिर (तमस)

तिरीड (पृ ७५)
तिरोभाव (लय)
तिलक (णिडालमासक)
तिलक्खली (तिलोवलद्धीय)
तिलोवलद्धीय (पृ ७५)
तिवायणा (पाणवह)
तिव्व (उज्जल)
तिसरा (पृ ७५)
तिसला (पृ ७५)
तीतवय (महव्वय)
तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणय (अरह)
तीरट्ठि (पव्वइय)
तीरट्ठि (समण)
तीरट्ठि (भिक्खु)
तीरित (पृ ७५)
तीरिय (फासिय)
तीरेइ (फासेइ)
तीर्थ (पृ ७५)
तुंब (णावा)
तुच्छ (पृ ७५)
तुच्छ (कृश)
तुच्छाहार (अताहार)
तुट्ठ (मुदित)
तुट्ठचित्त (हट्ठचित्त)
तुट्ठाएति (चाएति)
तुट्ठि (पृ ७६)
तुट्ठि (णदी)
तुदति (पृ ७६)
तुयट्टण (त्वग्वर्तन)
तुरिय (ससंभम)
तुरिय (खद्ध)
तुरिय (सिग्ध)
तुरिय (उक्किट्ठ)
तुलना (पृ ७६)
तुस (पृ ७६)
तेगिच्छियसाला (पृ ७६)
तेणिक्का (अदिण्णादाण)
तेय (पृ ७६)
तेय (जुइ)
तेयंसि (ओयंसि)
तोट्ठ (भमर)
त्यक्त (मुक्त)
त्यक्त (छर्दित)
त्रिदशावास (स्वर्)
त्रिदिव (स्वर्)
त्रिविष्टप (स्वर्)
त्वग्वर्तन (पृ ७६)
थंभ (माण)
थंभ (मोहणिज्जकम्म)
थणति (पृ ७६)
थाम (वीरिय)
थाम (योग)
थाम (जोग)
थाल (तट्टक)
थालक (तट्टक)
थावरक (धुवक)
थावरकाय (पावव)
थिग्गलय (पडियाणिया)
थित (परिउसित)
थित (धुवक)
थिर (पृ ७६)

थिरसघयण (पृ ७६)
थिल्ली (पृ ७६)
थुइ (अणुसट्ठि)
थुइ (पृ ७७)
थुक्कारिज्जमाणी (हीलिज्जमाणी)
थुणण (सथुणण)
थुणण (थुइ)
थुत (पृ ७७)
थूल (पृ ७७)
थेज्ज (पृ ७७)
थेर (महव्वय)
थेरकप्प (पृ ७७)
थेरकाल (थेरभूमि)
थेरट्ठाण (थेरभूमि)
थेरभूमि (पृ ७७)
थेरमज्जाता (थेरकप्प)
थेरसमायारि (थेरकप्प)
थोक (खुड्डलक)
थोव (अणुमात्र)
थोव (रहस्स)
दउदर (पृ ७८)
दड (पृ ७७)
दड (घात)
दत (पृ ७७)
दत (समण)
दत (खत)
दत (भिक्खु)
दभ (मोहणिज्जकम्म)
दसिय (आघविय)
दसिय (उब्भिण्ण)
दकादर (दउदर)
दक्ख (छेय)
दक्ख (पृ ७८)
दक्खाणक (कुडल)
दक्खिण्णव (दक्ख)
दक्ष (कुशल)
दगतीर (पृ ७८)
दगपरिगाल (दगवीणिय)
दगब्भास (दगतीर)
दगवाह (दगवीणिय)
दगवीणिय (पृ ७८)
दगासण्ण (दगतीर)
दच्छ (साहसिक)
दढसघयण (थिरसघयण)
दण्ड (पृ ७८)
दति (णावा)
दद्दुर (राहु)
दप्प (मोहणिज्जकम्म)
दप्प (माण)
दप्प (अवम)
दप्पणिज्ज (दीवणिज्ज)
दम्भ (माया)
दया (पृ ७८)
दया (अणुकपण)
दया (अहिसा)
दयामो (लज्जामो)
दरिसण (दिट्ठि)
दरिसणिज्ज (पासादिय)
दर्दरिका (गोधिका)
दर्प (माण)
दर्शन (पृ ७८)
दल (भवय)
दलिक (वस्तु)

दलिय (फुलित)
दवरिका (जीवा)
दविय (व्रत)
दविय (भिक्खु)
दविय (पृ ७८)
दविय (समण)
दव्वसार (परिग्गह)
दव्वी (पृ ७८)
दव्वीकर (गोणस)
दसा (अग)
दसीरिका (दीहसक्कुलिका)
दस्सुगायतण (पच्चंतिक)
दहिघण (सख)
दारक (बालक)
दारिया (पृ ७८)
दारु (जग्गतक)
दारुण (पृ ७९)
दारुण (चिक्कण)
दारुण (उज्जल)
दारुणसद्द (पृ ७९)
दालित (फुलित)
दावणा (पुच्छणा)
दास (पृ ७९)
दासी (पृ ७९)
दाहिणड्ढलोगाहिवइ (सक्क)
दिग्घपस्सि (अलस)
दिजाईपवर (बंभण)
दिजाति (बंभण)
दिजातीवसभ (बंभण)
दिट्ठ (पृ ७९)
दिट्ठ (नाय)
दिट्ठल (णिदसण)
दिट्ठत (णाय)
दिट्ठि (पृ ७९)
दिट्ठिवाय (पृ ७९)
दित्ति (कति)
दिनकर (आदित्य)
दिप्पने (पृ ८०)
दिवस (सुद्ध)
दिव्व (उक्किट्ठ)
दिसाइ (मदर)
दिसादि (मदर)
दिस्सते (उप्पज्जते)
दीण (पृ ८०)
दीणस्सर (हीणस्सर)
दीन (करुण)
दीपक (व्यञ्जक)
दीपकाण (काण)
दीर्घत्व (आरोह)
दीव (अहिंसा)
दीव (पृ ८०)
दीवक (दीव)
दीवणिज्ज (पीणणिज्ज)
दीवसिहा (हुतासिणसिहा)
दीवालिका (दीहसक्कुलिका)
दीविका (दव्वी)
दीविगासिहा (हुतासिणसिहा)
दीविय (पृ ८०)
दीविय (पृ ८०)
दीसति (लब्भति)
दीह (पृ ८०)
दीह (चिर)
दीहसक्कुलिका (पृ ८१)

दु क्षपणीय (दुर्भेद)
दु स्थग (दुहट्ट)
दुक्कड (पृ ८१)
दुक्ख (पृ ८१)
दुक्ख (पृ ८१)
दुक्ख (अणिट्ठ)
दुक्ख (असात)
दुक्ख (भय)
दुक्ख (उज्जल)
दुक्खइ (पृ ८१)
दुक्खक्खव (पव्वइय)
दुक्खण (पृ ८१)
दक्खाणक (कुडल)
दुगुछणा (पृ ८१)
दुगुछा (समण)
दुगुञ्छा (दया)
दुग्ग (उज्जल)
दुग्गत (भग्ग)
दुग्गत (अधण)
दुग्गतिप्पवाय (पाणवह)
दुग्गव (पृ ८१)
दुघाण (पृ ८१)
दुज्झोसय (फुसित)
दुट्ठ (पृ ८२)
दुट्ठगोण (दुग्गव)
दुण्णाम (माण)
दुद्ध (पृ ८२)
दुपएसियखध (पोग्गलत्थिकाय)
दुपरिचय (दुस्सील)
दुपाण (मातग)
दुप्पक्ख (कम्म)
दुप्पण्णवणिज्ज (पच्चतिक)
दुब्बल (पृ ८२)
दुब्बल (कस)
दुभिक्ख (बुधाण)
दुम (पृ ८२)
दुम (पादव)
दुमपुप्फिया (पृ ८२)
दुम्मण (दीण)
दुम्मणिय (दोमणस्स)
दुरणुणेय (दुस्सील)
दुरहियास (उज्जल)
दुरुहइ (पृ ८२)
दुघट (दुहट्ट)
दुर्भेद (पृ ८२)
दुर्मोच (दुर्भेद)
दुव्वय (दुस्सील)
दुव्विघाय (वध)
दुस्पन्नप्प (पच्चतिक)
दुस्सह (पृ ८२)
दुस्सील (पृ ८२)
दुह (पाव)
दुहय (उभय)
दुहट्ट (पृ ८३)
दुहट्ट (अट्ट)
दूइज्जति (पृ ८३)
दूभग (अधण्ण)
दूरत (अतिगत)
दूरातिसरित (अतिगत)
दूरोगाढ (अतिगत)
दूसित (णट्ठ)
दृष्ट (वहित)

दृष्टि (दर्शन)
देति (आणेति)
देव (पृ ८३)
देव (तनुतरशरीर)
देवधगार (तमुक्काय)
देवतमस (तमुक्काय)
देवतमिस (तमुक्काय)
देवपडिक्खोभ (तमुक्काय)
देवपलिक्खोभा (कण्हराति)
देवफलिह (तमुक्काय)
देवफलिहा (कण्हराति)
देवरण्ण (तमुक्काय)
देवराय (गोज्भक)
देवराय (सक्क)
देववूह (तमुक्काय)
देवसेण (महापउम)
देविंद (सक्क)
देश (दर्शन)
देश (पृ ८३)
देश (देशन)
देशन (पृ ८३)
देस (अग)
देस (रज्ज)
देसकालण्ण (पृ ८३)
देसणी (वक्क)
देसिय (वण्णिय)
देसेदेसे (तत्थ-तत्थ)
देह (काय)
देहोवरय (चत्तदेह)
दोमणस्स (पृ ८३)
दोस (कोह)
दोस (अधम्मत्थिकाय)
दोस (मोहणिज्जकम्म)
दोसविवेग (धम्मत्थिकाय)
दोसिणा (पृ ८३)
दोसीण (पृ ८३)
द्रव्य (पृ ८३)
द्रव्य (वस्तु)
द्रव्याक्षर (व्यञ्जनाक्षर)
द्विजातीपुंगव (बमण)
द्वितीयसमवसरण (पृ ८०)
द्वेष (उपश्रा)
धत (भग्ग)
धस (सायण)
धणिता (पत्ति)
धण्ण (पृ ८३)
धण्ण (इट्ठ)
धण्ण (सिद्धत्थ)
धन्न (ओराल)
धन्नशाला (कडपल्ल)
धमणिसतय (सुक्क)
धम्म (सोहि)
धम्म (जीवाभिगम)
धम्म (पृ ८४)
धम्म (कप्प)
धम्म (धम्मत्थिकाय)
धम्मक्खाइ (धम्मिय)
धम्मत्थिकाय (पृ ८४)
धम्मपण्णत्ति (जीवाभिगम)
धम्मपलज्जण (धम्मिय)
धम्मप्पलोइ (धम्मिय)
धम्ममण (पृ ८४)

धम्मसमुदायार	(धम्मिय)	धुत	(पृ ८५)
धम्माणुय	(धम्मिय)	धुत	(विचल)
धम्मावाय	(दिट्ठिवाय)	धुत्त	(कम्म)
धम्मिट्ठ	(धम्मिय)	धुव	(पृ ८५)
धम्मिय	(पृ ८४)	धुव	(अचल)
धरण	(पृ ८४)	धुव	(थिर)
धरणिखील	(मदर)	धुवक	(पृ ८६)
धरणिसिंग	(मदर)	धुवकायव्व	(आवस्सग)
धर्म	(पृ ८४)	धुवनिग्गह	(आवस्सय)
धर्म	(पर्यव)	धूत	(पृ ८६)
धर्म	(पर्याय)	धूमिका	(पृ ८६)
धर्म	(शोधि)	धूम्रवर्ण	(धूमिक)
धर्म	(पृ ८५)	धूर्त	(पृ ८६)
धर्मदेशनाभिज्ञ	(विद्वस्)	धूलि	(कयार)
धवलय	(पडुर)	धूमर	(धूमिक)
धाडेति	(चाएति)	ध्रुव	(पृ ८६)
धाय	(पृ ८५)	ध्वज	(केतु)
धारणववहार	(पृ ८५)	नदा	(अहिंसा)
धारणा	(धरण)	नदिराग	(लोभ)
धारणिज्ज	(थिर)	नदी	(मोहणिज्जकम्म)
धारयति	(पृ ८५)	नखशोधक	(नापित)
धावति	(अणुसचरइ)	नट्ठतेय	(हयतेय)
धिक्कारिज्जमाणी	(हीलिज्जमाणी)	नर्त्तिका	(दासी)
धिज्जा	(दारिया)	नन्दन	(पृ ८६)
धिति	(अहिंसा)	नन्दि	(पृ ८६)
धी	(पृ ८५)	नभ	(आगासत्थिकाय)
धीर	(पृ ८५)	नमसण	(वदण)
धीर	(अमूढ)	नमसण	(थुइ)
धुणण	(पृ ८५)	नमसित	(महित)
धुण्ण	(पाव)	नमस्कार	(प्रणमन)
धुण्ण	(पृ ८५)	नमस्यति	(वन्दते)

नयन (पृ ८६)
नर्कुटिक (नागदन्तक)
नववधू (पृ ८६)
नस्समाण (पृ ८७)
नाइ (मित्त)
नागदन्तक (पृ ८७)
नाण (पृ ८७)
नाण (सण्णा)
नाण (आणा)
नाणि (विदु)
नापित (पृ ८७)
नाय (आवस्सय)
नाय (ववहार)
नाय (पृ ८७)
नाय (विहि)
नायय (जीवत्थिकाय)
नायय (पृ ८७)
निअच्छति (पृ ८७)
निउणसिप्पोवगय (छेय)
निंदणा (होलणा)
निंदणा (आलोयणा)
निंदति (खिसइ)
निंदति (कुच्छति)
निंदा (पडिक्कमण)
निंदिज्जइ (आलोइज्जइ)
निंदिज्जमाण (वुच्चमाण)
निंदिज्जमाणी (होलिज्जमाणी)
निंदिय (हसिय)
निंदेति (होलेति)
निकाच (पृ ८७)
निकाय (पिड)
निकाय (छंद)
निकाय (गण)
निकृति (माया)
निकृष्ट (हिड्डिम)
निक्कलुण (पाव)
निक्कोह (अक्कोह)
निक्खिविय (पणिहि)
निक्षेप (निधान)
निक्षेप (पृ ८७)
निगर (गण)
निगाय (अगाय)
निग्गंथ (भिक्खु)
निग्गच्छति (निअच्छति)
निग्गमण (पृ ८८)
निग्गह (आवस्सग)
निग्गुण (निस्सील)
निग्घिण (पाव)
निग्घुट्ठ (रुण्ण)
निग्रह (दण्ड)
निचय (पिंड)
निचिय (घण)
निच्छोडेज्ज (आओसेज्ज)
निज्जवणा (पाणवह)
निज्जाणमग्ग (सिद्धिमग्ग)
निज्जामय (पृ ८८)
निज्जित (ओहय)
निज्जूढ (दिट्ठ)
निट्ठिय (खीण)
निट्ठिय (पृ ८८)
निट्ठियट्ठ (पृ ८८)
निट्ठुर (पृ ८८)

निट्ठुर (उज्जल)
निण्णाम (अणाम)
निदरिसण (णाय)
निदाण (सताण)
निद्देस (आणा)
निद्देस (उववाय)
निद्धम्म (पाव)
निधान (पृ ८८)
निधि (निधान)
निधुवन (रति)
निन्नेहबंधण (सजत)
निन्हव (आह्वान)
निपुण (कुशल)
निप्पक (अच्छ)
निप्पच्चक्खाण (निस्सील)
निप्परिग्गहरुइ (सजत)
निप्पिवास (पाव)
निप्पीलए (आवीलए)
निब्भच्छण (आओसण)
निब्भछण (अक्कोस)
निब्भच्छेज्ज (आओसेज्ज)
निमतण (छद)
निमत्रण (निकाच)
निमित्त (पृ ८८)
निमित्त (मूल)
निमित्त (लिंग)
निमित्त (हेतु)
निमित्तति (धारयति)
निम्न (कुब्ज)
निम्मस (सुक्क)
निम्मम (सजत)
निम्मल (खीण)
निम्मल (अच्छ)
निम्मल (सत्त)
निम्मलतर (अहिंसा)
निम्माण (अमाण)
निम्माया (अमाया)
निम्मेर (निस्सील)
निम्मोह (अमोह)
नियग (मित्त)
नियडि (पलिउचण)
नियडि (उवकचण)
नियडि (मोहणिज्जकम्म)
नियडि (माया)
नियडि (कक्क)
नियडिआयरण (कूड)
नियडिकम्म (अदिण्णादाण)
नियडिल्ल (वक)
नियत (ध्रुव)
नियति (अलिय)
नियत्ति (पडिकमण)
नियम (पच्चक्खाण)
नियर (गण)
नियाग (पृ ८८)
नियाण (पृ ८८)
नियुक्त (वावड)
नियोग (अणुओग)
नियोग (पृ ८८)
नियोजना (चोयणा)
निरतर (घण)
निरतराय (अणतराय)
निरंश (परमाणु)

निरतिचार (अखड)
निरत्थय (अलिय)
निरन्तर (अणुसमय)
निरन्तर (लोलुग)
निरय (खीण)
निरय (कम्म)
निरय (अच्छ)
निरय-वास-गमण-निघण (पाव)
निरवयक्ख (पाव)
निरवयव (परमाणु)
निरवशेष (सर्व)
निरवसस (पडिपुन्न)
निरवसेस (कसिण)
निरवसेस (सव्व)
निरस्त (मुक्त)
निरहृकार (निमम)
निराउय (अणाउय)
निराणद (दीण)
निरावरण (अणावरण)
निरावरण (निव्वाण)
निरावरण (अणुत्तर)
निरावरण (निष्कटक)
निरावरण (अणंत)
निराश्रव (निर्मम)
निरिक्खण (आभोग)
निरीक्षित (प्रेक्षण)
निरीक्षित (चहित)
निरुपघात (निष्कटक)
निरुपध (ऋजु)
निरुवलेव (अणासव)
निरुवलेव (सत)
निरुवसग्ग (खेम)
निरेयण (निट्ठियट्ठ)
निर्गम (प्रभव)
निर्जरा (क्षपणा)
निर्जीव (प्रासुक)
निर्णय (अर्थाध्यवसाय)
निर्णय (निश्चय)
निर्णीयते (विचीयते)
निर्देश (देशन)
निर्भर्त्सना (आक्रोश)
निर्भेद (परमाणु)
निर्भेद (अणु)
निर्मम (पृ ८९)
निर्मल (विशुद्ध)
निर्मल (अवदात)
निर्मांम (कक्खडी)
निर्विचाल (मुमहत)
निर्विवक (बाल)
निल्लक्खित (णिम्मज्जित)
निल्लालिय (चचल)
निल्लेव (खीण)
निल्लोह (अलोह)
निवायण (वध)
निवारण (वारण)
निवारित (सवरित)
निविशति (विशति)
निव्रत (सयत)
निवत्त (व्यावृत्त)
निवृत्ति (विरति)
निव्वट्टन (पृ ८९)
निव्वय (निस्सील)

निव्वाघाय	(अणत)	निस्सस	(पाव)
निव्वाण	(अहिंसा)	निस्सरण	(निग्गमण)
निव्वाण	(मोत्ति)	निस्सा	(पृ ९०)
निव्वाण	(सति)	निस्सील	(पृ ९०)
निव्वाण	(८९)	निस्सेसिय	(हियकामग)
निव्वाणमग्ग	(सिद्धिमग्ग)	निहतकटय	(ओहयकटय)
निव्विण्ण	(सत)	निहाण	(सण्णिहि)
निव्विण्णाण	(जड्ड)	निहाण	(परिग्गह)
निव्वुइ	(अहिंसा)	निहि	(सण्णिहि)
निव्वुइकर	(मणुण्ण)	नीय	(पृ ९०)
निव्वुड	(पृ ८९)	नीय	(चडाल)
निव्वेयण	(अवेयण)	नीर	(पयस)
निशाकर	(चन्द्र)	नीरय	(निट्ठियट्ठ)
निशान्त	(शान्त)	नील	(पृ ९०)
निश्चय	(पृ ८९)	नीमेस	(हिय)
निश्चय	(अर्थाध्यवसाय)	नूम	(अलिय)
निषन्न	(पृ ८९)	नैकृतिक	(धर्त)
निष्कटक	(पृ ८९)	नैत्यिक	(ध्रुव)
निष्कवच	(निष्कटक)	नैषेधिकी	(स्थान)
निष्कारण	(अनर्थ)	न्यास	(निक्षेप)
निष्कारणप्रतिसेविन्	(वक्र)	न्यास	(निधान)
निष्ठित	(पृ ८९)	पइट्ठा	(धारणा)
निष्ठुर	(ग्राम्यवचन)	पइट्ठा	(अहिंसा)
निष्पक	(पृ ८९)	पइट्ठाण	(बीय)
निष्पाद्यते	(साध्यते)	पइभय	(ओहणय)
निष्प्रदेश	(परमाणु)	पइभय	(पाव)
निसजति	(पृ ८९)	पउजेज्जा	(पृ ९०)
निसग	(साधु)	पउम	(उप्पल)
निसग	(८९)	पउमकेसरवण्ण	(पितवण्ण)
निसीहिया	(ठाण)	पएस	(अग)
निस्सग	(सजल)	पक	(कम्म)

पक (पाव)
पकय (पउम)
पकज (कमल)
पकिय (जल्लिय)
पगुल (अलस)
पडक (णपुसक)
पडर (सुद्ध)
पडर (सेत)
पडित (विसारत)
पडित (विद्वस्)
पडित (देसकालण्ण)
पडित (सपण्ण)
पडितवीरिय (अकम्मवीरिय)
पडिय (पृ ६०)
पडिय (सबुद्ध)
पडुर (पृ ६०)
पतजीवि (अताहार)
पतावेज्ज (पृ ६०)
पताहार (अताहार)
पथ (पृ ६०)
पसुक (कयार)
पकपमाण (एइज्जमाण)
पकप्प (पृ ६०)
पकप्प (पकप्पण)
पकप्पण (पृ ६१)
पकिण्ण (पृ ६१)
पकिण्ण (पम्हुट्ठ)
पकिरण (ववण)
पक्खति (उवयति)
पक्खापक्खि (णपुंसक)
पगडि (पृ ६१)
पगत (पृ ६१)
पगरणोवएस (हेउगोवएस)
पगाढ (उज्जल)
पगार (भेय)
पगार (सघाड)
पगासकरण (आलोयण)
पगासिति (ओभासेइ)
पगासित (दीविय)
पगासेति (पृ ६१)
पग्गह (उवहि)
पग्गहिय (ओराल)
पच्चतिक (पृ ६१)
पच्चक्खाण (पृ ६१)
पच्चक्खायपावकम्म (सजय)
पच्चति (रज्जति)
पच्चाणेति (पगासेति)
पच्चामित्त (अरि)
पच्चावट्टण (अवाय)
पच्छित्त (ववहार)
पज्जव (पृ ६१)
पज्जव (अग)
पज्जव (गुण)
पज्जाय (पगडि)
पज्जाहार (परिगम)
पज्जाहार (पृ ६१)
पज्जुसणा (पज्जोसवणा)
पज्जुसित (परिउसित)
पज्जोसमणा (पज्जोसवणा)
पज्जोसवणा (पृ ६१)
पझझमाण (एइज्जमाण)
पट्टकभत्त (पुव्वभत्त)

पट्टग	(पूया)
पट्टगभत्त	(पूया)
पट्ठवण	(पृ ६२)
पडइ	(सडइ)
पडण	(पृ ६२)
पडण	(सडण)
पडल	(अग)
पडलग	(छज्जिय)
पडिओधुत	(पम्हुट्ठ)
पडिकमण	(पृ ६२)
पडिक्कमिज्जइ	(आलोइज्जइ)
पडिच्छिय	(इच्छिय)
पडिछुद्ध	(पम्हुट्ठ)
पडिणायित	(पम्हुट्ठ)
पडिणिव्वुड	(सत)
पडिणीय	(घायय)
पडिणीयय	(अरि)
पडित	(खंडित)
पडित	(पम्हुट्ठ)
पडिदिन्न	(पम्हुट्ठ)
पडिपुण्ण	(अणत)
पडिपुण्ण	(अणुत्तर)
पडिपुण्ण	(कसिण)
पडिपुण्ण	(केवल)
पडिपुण्ण	(निव्वाण)
पडिपुण्ण	(सव्व)
पडिपुन्न	(पृ ६२)
पडिबद्ध	(आलब)
पडिबद्ध	(परिग्गह)
पडियरणा	(पडिकमण)
पडियाणिया	(पृ ६२)
पडिरूव	(कत)
पडिरूव	(पासादिय)
पडिरूव	(सुद्ध)
पडिलेहा	(आभोग)
पडिलेहा	(आणा)
पडिलोलित	(पम्हुट्ठ)
पडिविरत	(उवसत)
पडिसग	(उवसग)
पडिसरित	(पम्हुट्ठ)
पडिसिद्ध	(पम्हुट्ठ)
पडिसेवणा	(पृ ६२)
पडिहत्थ	(पृ ६२)
पडिहयपावकम्म	(सजय)
पडिहरित	(पम्हुट्ठ)
पडुच्च	(पृ ६२)
पढमजण्ण	(अभण)
पढमसमोसरण	(पज्जोसवणा)
पणग	(कम्म)
पणमित	(वदित)
पणय	(पाव)
पणयण	(पाहुड)
पणसक	(तट्टक)
पणाङ्गना	(मैथुनिकी)
पणाम	(विणय)
पणिधि	(पृ ६२)
पणिहाण	(पृ ६२)
पणिहाण	(पणिहि)
पणिहि	(पृ ६३)
पण्णत्त	(पृ ६३)
पण्णवग	(भिक्खु)
पण्णवण	(उपदेस)

पण्णवण (सुत्त)
पण्णवण (पृ ६३)
पण्णवणा (आघवणा)
पण्णवणी (वक्क)
पण्णवित (पण्णत्त)
पण्णवित (परूवित)
पण्णविय (पृ ६३)
पण्णविय (आघविय)
पण्णवेइ (आइक्खइ)
पण्णा (आभिणिबोहिय)
पण्णा (तक्क)
पण्हाण (सोईभूय)
पतग (भमर)
पति (पृ ६३)
पतिट्ठा (पृ ६३)
पतिट्ठा (अवत्था)
पतिट्ठा (धारणा)
पतिन (वेवित)
पतिभय (महब्भय)
पत्त (अरिह)
पत्त (लद्ध)
पत्तट्ठ (छेय)
पत्तभड (अरजर)
पत्ति (पृ ६३)
पत्तियइ (सद्दहइ)
पत्थति (कखइ)
पत्थकामग (हियकामग)
पत्थण (लोभ)
पत्थणा (परिज्झा)
पत्थयति (अभिलसति)
पत्थयति (अत्थयति)
पत्थर (पासाण)
पत्थरिय (वित्थिन्न)
पत्थित (उद्धित)
पत्थिय (इच्छित)
पत्थिय (अज्झत्थिय)
पत्थेइ (आसाएइ)
पत्थेइ (कखइ)
पत्थेमाण (पृ ६३)
पद (पृ ६४)
पद (पाद)
पदपवर (अणुण्णा)
पदपाश (पृ ६४)
पदुम (पृ ६४)
पदेस (अग)
पद्म (कमल)
पधान (उदग्ग)
पधावति (पृ ६४)
पधोवेति (उच्छोलेंति)
पन्नवेस्सामि (परूवेस्सामि)
पन्नागार (पूया)
पन्नायति (लब्भति)
पप्प (पडुच्च)
पप्फोडित (पम्हुट्ठ)
पब्भट्ठ (पम्हुट्ठ)
पभव (अणुण्णा)
पभव (उग्गम)
पभा (कति)
पभा (जुइ)
पभा (सुद्ध)
पभावणपयार (अणुण्णा)
पभासइ (पृ ६४)
पभासा (अहिंसा)

पभासिय (वोसिय)
पभासेइ (ओभासेइ)
पभु (पृ ९४)
पभु (इस्सर)
पमत्त (अलस)
पमदा (पत्ति)
पमाण (अग्ग)
पमाण (मेढि)
पमिलायति (पृ ९४)
पमुक्क (पम्हुट्ठ)
पमुच्छित (पम्हुट्ठ)
पमुदित (मुदित)
पमोद (णदी)
पमोद (मुदिता)
पमोय (अहिंसा)
पम्हठ (पृ ९४)
पम्हुट्ठ (पृ ९४)
पय (बुद्ध)
पयड (उज्जल)
पयत्त (पृ ९५)
पयत्त (ओराल)
पयत्तकड (आरभकड)
पयत्तवद् (पयत)
पयलाइत्त (वेवित)
पयस् (पृ ९५)
पयाति (पृ ९५)
पयावति (पितामह)
पर (बुद्ध)
पर (पृ ९५)
पर (वज्ज)
परपरगय (सिद्ध)
परक्कम (योग)
परक्कम (वीरिय)
परक्कम (जोग)
परक्कम (उट्ठाण)
परक्कमण्णु (देसकालण्ण)
परक्कमितव्व (घडितव्व)
परग्घ (पृ ९५)
परग्घतरक (उच्चयरक)
परज्झ (पृ ९५)
परिधणम्मि गेहि (अदिण्णादाण)
परनिमित्तनिप्फण्ण (लिंगिय)
परपरिवाय (अधम्मत्थिकाय)
परपरिवाय (माण)
परपरिवाय (मोहणिज्जकम्म)
परपरिवायविवेग (धम्मत्थिकाय)
परभव-सकामकारय (पाणवह)
परम (पृ ९५)
परममुइभूय (आयत)
परमसोमणस्सिय (हट्ठचित्त)
परमाणु (पृ ९५)
परमाणु (अणु)
परमाणुपोग्गल (पोग्गलत्थिकाय)
परमार्थ (तत्व)
परमासक (गडूपक)
परम्मुह (अवकड्ढित)
परलाभ (अदिण्णादाण)
परवस (परज्झ)
परहड (अदिण्णादाण)
पराजय (अपमाण)
पराजय (विजय)
पराजित (अवकड्ढित)

पराजित (ओहय)
पराजित (उव्वूढ)
पराभव (खिजय)
परायित (दीण)
परावत्त (पम्हुट्ठ)
परासर (सरभ)
पराहृत (अवकड्ढित)
परिउसिन (पृ ९५)
परिकम्मण (पृ ९६)
परिकर्म (पृ ९६)
परिकर्मन् (तुलना)
परिकस (कस)
परिकुविय (रुट्ठ)
परिक्कमिज्ज (पृ ९६)
परिक्कभासि (परिज्जभासि)
परिक्खित्त (पृ ९६)
परिक्खीण (झीण)
परिक्षिप्त (परिक्खित्त)
परिगण्यमान (पृ ९६)
परिगम (पृ ९६)
परिग्गह (पृ ९६)
परिग्गह (अधम्मत्थिकाय)
परिग्गहवेरमण (धम्मत्थिकाय)
परिघुमति (अदोलति)
परिघेतव्व (हतव्व)
परिचय (सस्तव)
परिचेट्ठति (पृ ९६)
परिच्चयति (वमेति)
परिच्छिदति (मिणति)
परिच्छित्ति (लाभ)
परिच्छेद (माण)
परिच्छेद (अयन)
परिजाणेइ (आढाइ)
परिजाणेज्ज (बुज्झेज्ज)
परिजिय (सिक्खिय)
परिज्जभासि (पृ ९६)
परिज्झा (पृ ९७)
परिठविय (पम्हुठ)
परिणत (महव्वय)
परिणाम (निसर्ग)
परिणामक (पात्र)
परिणामठाण (संजमठाण)
परिणाह (आरोह)
परिणिट्ठाण (सात)
परिणिव्वाण (सात)
परिणिव्वुड (सत)
परितत (दीण)
परितत (सत)
परितप्पइ (दुक्खइ)
परितप्पण (दुक्खण)
परितालेति (अभिहणति)
परितावण-अण्हय (पाणवह)
परितावणकरी (छेयणकरी)
परिताविज्जमाण (आउडिज्जमाण)
परितावेति (अभिहणति)
परित्याग (परिहार)
परित्राण (सन्त्राण)
परिदेवण (कदण)
परिदेवित (वेवित)
परिधावति (पधावति)
परिधि (परिरय)
परिनिव्वाइ (सिज्झइ)

परिनिव्वुड (सत)
परिनिव्वुड (सिद्ध)
परिनिव्वुय (सोईभूय)
परिपाटि (पर्याय)
परिपाटिन् (आनुपूर्विन्)
परिपाटिन् (लता)
परिपालइत्ता (विपरिणामइत्ता)
परिपूर्ण (अलम्)
परिपूर्ण (सकल)
परिपूर्णक (कृत्स्न)
परिब्भम (अवोलति)
परिभवति (खिसइ)
परिभवति (परिभासति)
परिभवति (हीलेति)
परिभवति (हापयति)
परिभासति (पृ ९७)
परिभीत (पृ ९७)
परिभोग (भजना)
परिभोग (विज्ञापना)
परिमज्जित (विमल)
परिमलित (महव्वय)
परिमाण (अग्ग)
परिमित (मित)
परियट्टण (पृ ९७)
परियट्टति (गुणेति)
परियण (मित्त)
परियत्तेइ (उव्वत्तेइ)
परियाय (कसाय)
परियायवत्थवणा (पज्जोसवणा)
परियावेज्ज (अभिहणेज्ज)
परियावेयव्व (हतव्व)

परिरय (पृ ९७)
परिरय (परिगम)
परिरय (पज्जाहार)
परिवदण (पृ ९७)
परिवत्तत्ते (परिवेढ्ढति)
परिवढ्ढित (पम्हुट्ठ)
परिवयण (पृ ९७)
परिवहेति (तज्जेति)
परिवाडि (आणुपुव्वि)
परिवाडि (विहि)
परिवात (परिवयण)
परिवायय (समण)
परिविद्धसइत्ता (विपरिणामइत्ता)
परिवुड्ढ (पृ ९७)
परिवूढ (पृ ९७)
परिवूढ (पुट्ठ)
परिव्वाय (भिक्खु)
परिसडित (परहुट्ठ)
परिसडित (महव्वय)
परिसवणा (पज्जोसवणा)
परिसहण (पृ ९७)
परिसाडइत्ता (विपरिणामइत्ता)
परिसाडण (ववण)
परिसाडणा (उस्सग्ग)
परिसाडित (फुलित)
परिसाडिय (पकिण्ण)
परिसुक्ख (महव्वय)
परिसुद्धगत (सिद्धिगत)
परिसोडित (पम्हुट्ठ)
परिस्पन्द (क्रिया)
परिस्सत (पिवासित)

परिहरण (समण)
परिहरणा (पडिकमण)
परिहरणीय (गरहित)
परिहायत (अधण)
परिहायति (उज्झीयति)
परिहार (पृ ६८)
परिहार (पृ ६८)
परिहीण (णिम्मसक)
परिहेरक (गडूपयक)
परिहेरग (केज्जूर)
परीक्ष्यमाण (परिगण्यमान)
परूपित (पण्णत्त)
परूवण (पृ ६८)
परूवण (उपदेस)
परूवण (पण्णवण)
परूविन (पृ ६८)
परूविय (आघविय)
परूविय (पण्णविय)
परूवेइ (आइक्खइ)
परूवेस्सामि (कित्तइस्सामि)
पर्यय (पर्याय)
पयव (पर्याय)
पयव (पृ ६८)
पर्याप्त (अलम्)
पर्याय (पृ ६८)
पर्याय (भवन)
पर्याय (देश)
पर्याय (पृ ६८)
पर्यालोचन (मनन)
पर्यालोचयति (सपेहेति)
पर्यालोचयन्ति (सञ्चालयति)
पर्यालोच्यते (विचीयते)
पर्याहार (परिरय)
पलल (तिलोवलद्धीय)
पलात (णट्ठ)
पलायण (निग्गमण)
पलिउचग (वक)
पलिउचण (पृ ६८)
पलिउचण * (माया)
पलिकुचण (मोहणिज्जकम्म)
पलिच्छेद (भाग)
पलिमथ (पृ ६६)
पलिमन्थ (विक्षेप)
पलियचण (गूहण)
पलिहत (वगडा)
पलुक्कइ (आलुक्कइ)
पलोट्टण (लुटण)
पलोयण (आभोग)
पलोलित (ण्हात)
पलोलित (पम्हुट्ठ)
पलोट्ठित (ण्हात)
पल्लीण (अनुपविट्ठ)
पवण (अग्गि)
पवत्त (वयत्थ)
पवयण (पृ ६६)
पवयण (सुत्त)
पविट्ठ (पृ ६६)
पविट्ठ (अतिगत)
पवित्ता (अहिंसा)
पवित्थर (परिग्गह)
पवित्र (चोक्ष)
पवित्र (पुण्य)

पविद्धसति	(पमिलायति)
पवियक्खण	(सपण्ण)
पवियक्खण	(सबुद्ध)
पविसित	(पम्हुट्ठ)
पवीलए	(आवीलए)
पवेइय	(पृ ९९)
पवेदेमि	(आइक्खामि)
पव्व	(सताण)
पव्व	(अग)
पव्वइज्जा	(पृ ९९)
पव्वइय	(पृ ९९)
पव्वइय	(णिक्खत)
पव्वइय	(समण)
पव्वत	(णग)
पव्वतक	(पासाण)
पव्वतिद	(मदर)
पव्वयराय	(मदर)
पव्वयिय	(भिक्खु)
पव्वहिज्जमाणी	(हीलिज्जमाणी)
पव्वहेति	(तज्जेंति)
पव्वाविय	(पृ ९९)
पसग	(अबभ)
पसत	(णिहय)
पसत	(सत)
पसतडमर	(खेम)
पसतडिब	(खेम)
पससण	(कित्तण)
पससा	(उववूह)
पसण्णबुद्धि	(सुबुद्धिक)
पसत्थ	(वण्णित)
पसत्थ	(सामायिक)
पसव	(पुप्फ)
पसारित	(णिस्सारित)
पसिद्ध	(पण्णविय)
पसुत्त	(वेवित)
पसूइ	(उग्गम)
पहट्ठ	(मुदित)
पहर	(पृ ९९)
पहाण	(अग्ग)
पहाण	(परम)
पहारेत्थ	(पृ ९९)
पहिज्जते	(अतिवत्त)
पहिट्ठ	(हसित)
पहीण	(अतिवत्त)
पहेण	(पृ १००)
पहेण	(पाहुड)
पहेणग	(पाहुड)
पाअमूचिका	(पामुद्दिका)
पाकसासण	(सक्क)
पागइत	(पज्जोसवणा)
पागडिय	(उब्भिण्ण)
पागार	(पृ १००)
पाघट्टिका	(पामुद्दिका)
पाटयति	(ओसारेति)
पाठीण	(पृ १००)
पाडल	(पडुम)
पाढ	(मुत्त)
पाण	(पृ १००)
पाण	(जीव)
पाण	(असण)
पाण	(जीवत्थिकाय)
पाण	(पृ १००)

पाण (चण्डाल)
पाण (काय)
पाणवह (पृ १००)
पाणाइवाय (अधम्मत्थिकाय)
पाणाइवायवेरमण (धम्मत्थिकाय)
पाणातिपातविरइ (अहिंसा)
पाणिय (रस)
पात (वज्ज)
पात्र (पृ १००)
पात्र (पृ १००)
पात्र (भव्य)
पाद (पृ १००)
पादकलावग (गडूपक)
पादखडुयक (गडूपक)
पादफल (आसदग)
पादत्र (पृ १०१)
पादोपका (खिखिणिका)
पाप (अवद्य)
पाप (किव्विस)
पापढक (गडूपक)
पामुद्दिका (खिखिणिका)
पामुद्दिका (पृ १०१)
पायच्छित्तकरण (उत्तरकरण)
पायव (दुम)
पार (पृ १०१)
पारगमण (पारण)
पारगय (सिद्ध)
पारण (पृ १०१)
पालण (पारण)
पालित (पृ १०१)
पालित्तु (वसित्तु)
पालिय (फासिय)
पाली (पृ १०१)
पालेइ (फासेइ)
पाव (पृ १०१)
पाव (पृ १०१)
पाव (कम्म)
पाव (धुण्ण)
पाव (मल)
पावइ (अभिगच्छति)
पावति (निअच्छति)
पावकम्मकरण (अदिण्णादाण)
पावकम्मनिसेहकिरिया (पृ १०२)
पावकम्ममासेवित (कुक्कड)
पावकाव (पाणवह)
पावण (आय)
पावय (पृ १०२)
पावयण (पवयण)
पावलोभ (पाणवह)
पास (पृ १०२)
पासइ (जाणइ)
पासडि (भिक्खु)
पासडि (समण)
पासाण (पृ १०२)
पासादिय (पृ १०२)
पाहुड (पृ १०२)
पिअवभण (बभण)
पिंड (पृ १०२)
पिंड (ओह)
पिंड (गण)
पिंड (परिग्गह)
पिंडण (पिंड)

पिंडय (गड)
पिंडार्थ (समास)
पिंडिका (णावा)
पिच्च (पयस्)
पिच्चिय (पृ १०३)
पिज्ज (पृ १०३)
पिट्टण (कुट्टण)
पिट्टण (दुक्खण)
पिट्ठय (मग्गत)
पिढरक (अरजर)
पिण्ड (सहर्ष)
पित (अतिवत्त)
पितवण्ण (पृ १०३)
पितामह (पृ १०३)
पिथकरण (मग्गण)
पिय (अत्त)
पिय (आप्त)
पिय (इट्ठ)
पियइ (पृ १०३)
पियकारिणी (तिसला)
पियति (पृ १०३)
पियत्ता (इट्ठत्ता)
पियदसण (कत)
पियदसण (भवर)
पियदसण (मणाम)
पियदसण (सोम)
पियदसणा (अणोज्जा)
पिया (पत्ति)
पिलय (मयूर)
पिल्लक (बालक)
पिल्लक (बच्छक)
पिल्लिका (वारिया)
पिवासित (पृ १०३)
पिवासिय (अत्थि)
पिसुण (अधम्मत्थिकाय)
पिहण (सवर)
पीइगम (कामगम)
पीइमण (हट्ठचित्त)
पीडइ (दुक्खइ)
पीढफलक (डिप्फर)
पीण (थूल)
पीणक (खोरक)
पीणणिज्ज (पृ १०३)
पीणित (णिव्वुत)
पीणिनदेह (परिवूढ)
पीणिय (परिवुड्ढ)
पीतक (पितवण्ण)
पीति (मुदिता)
पीलित (रहस्स)
पीलु (दुद्ध)
पीवर (थूल)
पीहन (पृ १०३)
पीहेइ (आसाएइ)
पीहेइ (कखइ)
पीहेमाण (पत्थेमाण)
पुज (गण)
पुडरीक (पदुम)
पुक्खरपत्तग (तट्टक)
पुक्खल (उप्पल)
पुक्खलच्छिभग (उप्पल)
पुच्छणा (पृ १०४)
पुच्छणा (विप्फालण)

पुच्छा (पृ १०४)
पुच्छा (घट्टण)
पुच्छियट्ठ (लद्धट्ठ)
पुज्ज (पृ १०४)
पुट्ठ (पृ १०४)
पुट्ठि (अहिंसा)
पुणो पुणो (उखड्डमड्ड)
पुण्ण (घण्ण)
पुण्य (पृ १०४)
पुत्त (दुमपुप्फिया)
पुत्तक (वच्छक)
पुत्थव्व (थूल)
पुप्फ (पृ १०४)
पुरंदर (इंद)
पुरंदर (सक्क)
पुराण (पृ १०४)
पुराण (अतिवत्त)
पुराण (काहापण)
पुरिसक्कार (उट्ठाण)
पुरोवर्तित्व (पोरेवच्च)
पुव्वगत (दिट्ठिवाय)
पूइय (अमुइ)
पूइय (अच्चिय)
पूइय (दोसीण)
पूइय (चहिय)
पूइय (धुत)
पूजा (प्रणमन)
पूजाकम्म (वदणग)
पूजित (वंदित)
पूजित (महित)
पूजित (अर्हद्)
पूजित (आतिण्ण)
पूजोचित (अर्हद्)
पूज्यभक्त (पृ १०४)
पूति (वावण्ण)
पूयण (अभिवायण)
पूयण (वंदण)
पूयण (परिवंदण)
पूयणट्ठि (पृ १०४)
पूयणिज्ज (पुज्ज)
पूया (पृ १०४)
पूया (पृ १०५)
पूया (अहिंसा)
पूया (थुइ)
पूयित (णमोक्कत)
पूरेइ (फासेइ)
पूर्ण (स्पृष्ट)
पूर्व (पृ १०५)
पूसित (मग्ग)
पृथग् (अण्ण)
पृथग्भाव (विवेक)
पृथु (पृ १०५)
पेंडित (रहस्स)
पेक्खण (आभोग)
पेक्खति (पेक्खते)
पेक्खते (पृ १०५)
पेच्छति (पेहति)
पेच्छते (पेक्खते)
पेज्ज (इट्ठ)
पेज्ज (प्रीति)
पेढिका (सेज्जा)
पेम (पृ १०५)

पेम	(प्रीति)	प्रकाशन	(आलोचन)
पेम	(हास)	प्रकृति	(अव्यक्त)
पेसी	(दासी)	प्रकृति	(पृ १०६)
पेसुणविवेग	(धम्मत्थिकाय)	प्रकृति	(पृ १०६)
पेस्स	(दास)	प्रक्षीणदोष	(आप्त)
पेहुति	(पृ १०५)	प्रख्यात	(सिद्ध)
पेहा	(धी)	प्रगतासु	(प्रासुक)
पोअड	(जुवाण)	प्रगाढ	(लोलुग)
पोअड	(वयत्थ)	प्रगुण	(ऋजु)
पोडरीय	(उप्पल)	प्रचोदयति	(तुवति)
पोग्गल	(पोग्गलत्थिकाय)	प्रज्ञापनीय	(पृ १०६)
पोग्गल	(जीवत्थिकाय)	प्रज्ञापयितुम्	(आख्यातुम्)
पोग्गलत्थिकाय	(पृ १०५)	प्रज्ञावद्	(मेधाविन्)
पोट्टह	(गड्डिक)	प्रणमन	(पृ १०६)
पोण्ड	(मुकुल)	प्रणाम	(प्रणमन)
पोत	(णावा)	प्रणाला	(जिह्निका)
पोत	(पोत्थ)	प्रणिधान	(पृ १०६)
पोतक	(बालक)	प्रणिधि	(माया)
पोतक	(वच्छक)	प्रतिगमन	(पृ १०६)
पोतिका	(दारिया)	प्रतिज्ञा	(प्रतिमा)
पोत्थ	(पृ १०५)	प्रतिबद्ध	(पृ १०६)
पोरेवच्च	(पृ १०५)	प्रतिभञ्जन	(प्रतिगमन)
पोरेवच्च	(आहेवच्च)	प्रतिभाग	(प्रदेश)
पोहट्टी	(पत्ति)	प्रतिमा	(पृ १०६)
प्रकटत्व	(प्रकाश)	प्रतिलोम	(खलुक)
प्रकम्पित	(धुत)	प्रतिष्ठा	(मूल)
प्रकार	(जात)	प्रतिष्ठान	(मूल)
प्रकार	(विधि)	प्रतीप्सित	(प्रतीष्ट)
प्रकार	(भग)	प्रतीष्ट	(पृ १०६)
प्रकार	(पृ १०५)	प्रत्यग्र	(बाल)
प्रकाशते	(प्रभाति)	प्रत्यञ्चा	(जीवा)

प्रत्यय	(निमित्त)	प्रयत्न	(करण)
प्रत्यायति	(आप्राहयति)	प्रयत्नवद्	(यत)
प्रत्येति	(पृ १०६)	प्रयोग	(पृ १०७)
प्रथम	(प्रशस्त)	प्रयोजन	(पगत)
प्रथम	(पृ १०६)	प्ररूपित	(आख्यात)
प्रथम	(पूर्व)	प्रलबित	(उद्दामित)
प्रथमसमवसरण	(पृ १०७)	प्रलोटन	(लोटन)
प्रथित	(सिद्ध)	प्रवचन	(पृ १०७)
प्रथित	(खात)	प्रवर्तन	(पट्ठवण)
प्रदर्शित	(गमित)	प्रवहण	(पृ १०७)
प्रदेश	(पृ १०७)	प्रवारण	(वारण)
प्रधान	(प्रशस्त)	प्रवाह	(प्रवृत्ति)
प्रधान	(मुद्ध)	प्रवाह	(वश)
प्रधान	(ओराल)	प्रविबुद्ध	(मुकुल)
प्रधान	(प्रथम)	प्रविशति	(विशति)
प्रधान	(पर)	प्रवृत्ति	(पृ १०७)
प्रधान	(वर)	प्रवेशयति	(आओडावेइ)
प्रधान	(प्रकृति)	प्रव्रजित	(अनगार)
प्रधान	(अग्र)	प्रशम्न	(पृ १०७)
प्रधानप्रज्ञ	(महापण्ण)	प्रशान्त	(शान्त)
प्रपन्न	(अवगाढ)	प्रसर	(अनुकाश)
प्रभव	(आगम)	प्रसारित	(विरल्लिय)
प्रभव	(पृ १०७)	प्रसूति	(आदान)
प्रभव	(णिप्फत्ति)	प्रसूति	(प्रवृत्ति)
प्रभाति	(पृ १०७)	प्रसूति	(आगम)
प्रभु	(ईश्वर)	प्रसूति	(प्रभव)
प्रभु	(पति)	प्रसूति	(णिप्फत्ति)
प्रमाण	(निमित्त)	प्रस्तार	(निधान)
प्रमाणयुक्त	(आलीन)	प्रस्ताव	(देश)
प्रमोद	(हर्ष)	प्रस्ताव	(अवसर)
प्रयत	(रत)		

प्रस्ताव	(योग)	फदणा	(एजणा)
प्राणधारण	(जीवन)	फदेइ	(उव्वसेइ)
प्राणिन्	(जीव)	फरल	(काण)
प्रादुष्करण	(आलोचन)	फरुस	(पृ १०८)
प्राप्त	(गत)	फरुस	(निट्ठुर)
प्राप्तनिष्ठ	(सिद्ध)	फरुस	(णिण्णेहक)
प्राप्तवयस्	(युवा)	फरुस	(कक्कस)
प्राप्ति	(आय)	फरुस	(उज्जल)
प्राप्ति	(स्पर्शना)	फरुस	(अक्कोस)
प्राप्ति	(पृ १०७)	फरुस	(खर)
प्राप्ति	(लाभ)	फरुसेज्ज	(पतावेज्ज)
प्राप्यते	(चर्यते)	फल	(रयस)
प्राभृत	(अधिकरण)	फलकी	(सेज्जा)
प्रायश्चित्त	(विशोधि)	फलगोच्छ	(फलपिंडी)
प्रारभ	(पट्ठवण)	फलपिंडी	(पृ १०८)
प्रारब्ध	(सतत)	फलमाला	(फलपिंडी)
प्रार्थन	(पीहन)	फला	(फलपिंडी)
प्रार्थना	(छद)	फलिका	(फलपिंडी)
प्रार्थना	(भाव)	फलिह	(पागार)
प्रार्थना	(अभिज्झा)	फलिह	(आगासत्थिकाय)
प्रार्थयेत्	(सधयेत्)	फाणित	(गुलोवलद्धोय)
प्रासुक	(पृ १०७)	फालिय	(कप्पिय)
प्रीति	(पृ १०७)	फालेत	(छिंदत)
प्रेक्षण	(पृ १०८)	फासिय	(पृ १०८)
प्रेक्षा	(प्रेक्षण)	फासेइ	(पृ १०८)
प्रेक्षित	(चहित)	फुफक	(दीव)
प्रेम	(पिज्ज)	फुट्ट	(णिण्णेहक)
प्रेरणा	(चोयणा)	फुड	(आइण्ण)
प्रेरयन्ति	(विनयन्ति)	फुडण	(पृ १०८)
प्लव	(णावा)	फुडित	(पृ १०८)
प्लावण	(उप्पिलावण)	फुडीकज्जति	(णिव्वजीयति)

फुरफुरेंत (चचल)
फुलित (पृ १०८)
फुल्ल (पृ १०८)
फुल्ल (पुप्फ)
फुसित (पृ १०६)
फेण (सख)
बध (सदाण)
बधण (विग्घ)
बधण (पास)
बधण (सग)
बधणविमुक्क (सिद्ध)
बधणुम्मुक्क (दविय)
बधुविप्पहूण (अत्ताण)
बधेज्ज (आओसेज्ज)
बधेज्ज (अक्कोसेज्ज)
बभ (पितामह)
बभ (ईसिपब्भारपुढवी)
बभ (बभण)
बभचेर (आचार)
बभचेर-विग्घ (अबभ)
बभण (पृ १०६)
बभण (वडु)
बभण (भिक्खु)
बभण्णु (बभण)
बभरिसि (बभण)
बभवडेसय (ईसिपब्भारपुढवी)
बभवत्थ (बभण)
बक (कडल)
बकुश (पृ १०६)
बज्झति (रज्जति)
बद्ध (१०६)
बद्ध (सन्नद्ध)
बल (उट्ठाण)
बल (वीरिय)
बल (उज्जल)
बलाहक (पृ १०६)
बलितसरीर (थिरसघयण)
बलिय (हट्ठ)
बलिवद्द (उसभ)
बहल (कषाय)
बहल (थूल)
बहिद्ध (उब्भिण्ण)
बहु (पृ १०६)
बहुजणाचीर्ण (पृ ११०)
बहुमय (थेज्ज)
बहुमाण (अबभ)
बहुमाण (भक्ति)
बहुसो (उक्खडुमड्डु)
बाधित (चोदित)
बाल (क्षुद्र)
बाल (मूढ)
बाल (पृ ११०)
बाल (पृ ११०)
बालक (पृ ११०)
बालवीरिय (सकर्मवीरिय)
बालिया (दारिया)
बाहणा पदाण (अबभ)
बाहिर (चडाल)
बाह्यवस्त्वालोचनप्रकार (पर्याय)
बिहणिज्ज (पीणणिज्ज)
बीभिति (तसति)
बीय (पृ ११०)

बीहणग (उज्जल)
बीहणय (पृ ११०)
बीहणय (पाव)
बुइय (वण्णित)
बुदि (काय)
बुज्झइ (जाणइ)
बुज्झइ (सिज्झइ)
बुज्झावेति (पगासेति)
बुज्झेज्ज (पृ ११०)
बुद्ध (नाय)
बुद्ध (सिद्ध)
बुद्ध (फुल्ल)
बुद्ध (पृ ११०)
बुद्ध (भिक्खु)
बुद्धि (अवाय)
बुद्धि (पृ ११०)
बुद्धि (अभिप्पाय)
बुद्धि (प्रणिधान)
बुद्धि (सण्णा)
बुद्धि (अहिंसा)
बुद्धि (धी)
बुद्धिअज्झवसाय (ववसाय)
बुद्धिमत (विसारत)
बेति (पृ १११)
बोदि (पृ १११)
बोल (डिंब)
बोहि (अहिंसा)
ब्रवति (बेंति)
भग (पृ १११)
भग (पडिसेवणा)
भज (पहर)
भजग (दुम)
भजग (लूसग)
भजण (फुडण)
भजणा (विराहणा)
भजित्तए (चालित्तए)
भडग (उवहि)
भडण (आयास)
भडण (कलह)
भडण (कोह)
भडण (मोहणिज्जकम्म)
भडण (वुग्गह)
भत (पृ १११)
भभ०भूय (हाहाभूय)
भभाभूय (हाहाभूय)
भक्खति (चरंति)
भक्खते (जेमेंति)
भक्ति (पृ १११)
भग्ग (पृ १११)
भग्ग (पृ १११)
भग्ग (छिन्न)
भग्ग (फुडित)
भग्ग (फुलित)
भजना (पृ १११)
भजना (विकल्प)
भट्टित्त (आहेवच्च)
भट्ठ (णट्ठ)
भट्ठ (णिहय)
भट्ठतेय (हयतेय)
भणंति (आचिक्खंति)
भणित (वुत्त)
भणिय (पृ १११)

भणिय	(रसिय)	भव्य	(द्रव्य)
भत्त	(ओयण)	भस्स	(इंगालछारिगा)
भत्त	(पूया)	भाइल्ल	(दास)
भत्थ	(काय)	भाइल्लग	(दास)
भदत	(भत्त)	भाग	(पृ ११२)
भद्दग	(पृ ११२)	भाग	(अग)
भद्दपीढ	(आसदग)	भाग	(अस)
भद्दय	(आइण्ण)	भाजन	(पात्र)
भद्दा	(अहिंसा)	भायण	(अरिह)
भमते	(अदोलति)	भायण	(आगासत्थिकाय)
भमर	(पृ ११२)	भार	(परिग्गह)
भय	(पृ ११२)	भारती	(वक्क)
भय	(असात)	भाव	(पृ ११३)
भयकर	(पाणवह)	भाव	(पृ ११३)
भयकर	(महब्भय)	भाव	(भवन)
भयग	(दास)	भाव	(ज्ञान)
भयभैरव	(भीम)	भाव	(णाण)
भयय	(दास)	भाव	(विण्णाण)
भयानक	(भीम)	भाव	(सविद्)
भयान्त	(भत)	भाव	(पर्याय)
भल्ल	(तरच्छ)	भाव	(कसाय)
भव	(पृ ११२)	भावणा	(अब्भास)
भव	(धुवक)	भावना	(अज्झोस)
भवत	(भिक्खु)	भावना	(परिकर्म)
भवण	(पृ ११२)	भावना	(तुलना)
भवति	(पृ ११२)	भावस्सिय	(मणाम)
भवन	(पृ ११२)	भाविन्	(भविय)
भवान्त	(भत)	भाषण	(देशन)
भविय	(पृ ११२)	भासते	(दिप्पते)
भव्य	(पृ ११२)	भासा	(पृ ११३)
भव्य	(भविय)	भासा	(अणुओग)

भासा	(वक्क)	भुंजते	(जेमेति)
भासाअस्समिति	(अधम्मत्थिकाय)	भुत्त	(अतिवत्त)
भासाविजय	(दिट्ठिवाय)	भूत	(आपूरित)
भासासमिति	(धम्मत्थिकाय)	भूतपुव्व	(णियत)
भासेइ	(आइक्खइ)	भूताधिकरण	(पद)
भास्कर	(आदित्य)	भूताभिसकण	(पावय)
भिंद	(पहर)	भूति	(इंगालछारिगा)
भिंदत	(छिंदत)	भूति	(भवन)
भिंदति	(छिंदति)	भूमि	(पृ ११३)
भिक्खु	(पृ ११३)	भूय	(जीवत्थिकाय)
भिक्खु	(माहण)	भूय	(पाण)
भिक्खु	(समण)	भूयत्थ	(उज्जुय)
भिक्खु	(साधु)	भूयवाय	(दिट्ठिवाय)
भिज्जमाण	(नस्समाण)	भूयो भूयो	(उलडुडमडुड)
भिज्जा	(मोहणिज्जकम्म)	भृश	(लोलुग)
भिण्ण	(पृ ११३)	भेउरधम्म	(पृ ११४)
भिण्ण	(खडित)	भेत्ता	(हता)
भिण्ण	(अण्ण)	भेद	(पृ ११४)
भिण्ण	(भग्ग)	भेद	(विधि)
भिन्न	(छिन्न)	भेद	(भग)
भिन्न	(शकित)	भेद	(पकप्पण)
भिल्लिरी	(तिसरा)	भेद	(विह)
भिस	(उप्पल)	भेद	(विधि)
भिसकटक	(वीहसक्कुलिका)	भेद	(ठाण)
भिसमुणाल	(उप्पल)	भेद	(प्रकृति)
भिसरा	(तिसरा)	भेद	(अग)
भिसी	(सेज्जा)	भेद	(प्रदेश)
भीम	(पृ ११३)	भेद	(पज्जव)
भीम	(लोमहरिसजणण)	भेद	(पगडि)
भीय	(पृ ११३)	भेद	(णाम)
भीरु	(अलस)	भेद	(पर्याय)

भेद (जात)
भेद (अस)
भेद (ठाण)
भेदकर (अण्हयकर)
भेय (पृ ११४)
भेयणकरी (छेयणकरी)
भेसण (पृ ११४)
भोगपुरिस (दास)
भोगासा (मोहणिज्जकम्म)
भोगासा (लोभ)
भोज्ज (पृ ११४)
भोयण (पृ ११४)
मउ (पृ ११४)
मइ (आभिणिबोहिय)
मइलणा (पडिसेवणा)
मइल्ल (कम्म)
मइल्लिय (जल्लिय)
मउड (तिरीड)
मउलि (गोणस)
मगन्न (अहिंसा)
मगलिज्ज (णिव्वाणिकर)
मगल्ल (इट्ठ)
मगल्ल (ओराल)
मचक (डिप्फर)
मड (थूल)
मडलि (गोणस)
मतुलित (खडित)
मतेहिति (घितेहिति)
मथर (अलस)
मद (पृ ११४)
मद (बाल)
मदर (पृ ११४)
मक्खण (उस्सिघण)
मगर (राहु)
मगरक (तिरीड)
मग्ग (अणुण्णा)
मग्ग (आगासत्थिकाय)
मग्ग (आवस्सय)
मग्ग (कप्प)
मग्ग (पवयण)
मग्ग (परूवण)
मग्ग (ववहार)
मग्ग (बोधि)
मग्गइ (अत्थयति)
मग्गण (पृ ११५)
मग्गण (पृ ११५)
मग्गण (आभोगण)
मग्गण (वियालण)
मग्गण (ईहा)
मग्गणा (आभिणिबोहिय)
मग्गणा (आभोग)
मग्गणा (विजय)
मग्गणा (एसणा)
मग्गण्ण (देसकालण्ण)
मग्गत (पृ ११५)
मग्गविदु (देसकालण्ण)
मग्गस्स गतिआगतिण्ण (देसकालण्ण)
मघव (सक्क)
मघा (कण्हराति)
मच्चु (मरण)
मच्चु (पाणवह)
मच्छ (राहु)

मज्जगरस (सुरा)
मज्जणा (सिणाण)
मज्जा (इज्जा)
मज्जाता (पकप्प)
मज्जाया (पृ ११५)
मज्जाया (अणुण्णा)
मज्जाया (कप्प)
मज्जाया (विहि)
मज्जाया (वेला)
मज्जिय (ण्हात)
मज्झ (पृ ११५)
मज्झ (मज्झ)
मज्झतिक (मज्झ)
मज्झट्ठिय (मज्झ)
मज्झण्ह (मज्झ)
मज्झत्थ (मज्झ)
मज्झत्थ (अलस)
मज्झत्थसील (अबालसील)
मज्झदेसक (मज्झ)
मज्झिम (मज्झ)
मट्ठ (अच्छ)
मट्ठ (घट्ठ)
मडहक (रहस्स)
मडहकोट्ठा (वडभिका)
मणअगुत्ति (अधम्मत्थिकाय)
मणगुत्ति (धम्मत्थिकाय)
मणसकप्प (पृ ११५)
मणसखोभ (अबभ)
मणहर (मणुण्ण)
मणाभिराम (इट्ठ)
मणाम (पृ ११६)
मणाम (इट्ठ)
मणामत्ता (इट्ठत्ता)
मणामा (पत्ति)
मणि (पासाण)
मणुण्ण (अत्त)
मणुण्ण (पृ ११६)
मणुण्ण (इट्ठ)
मणुण्णत्ता (इट्ठत्ता)
मणोगम (कामगम)
मणोगयसकप्प (अज्झत्थिय)
मणोरम (कामगम)
मणोरम (मदर)
मणोहर (मधुर)
मत (दिट्ठि)
मत (दर्शन)
मति (धी)
मति (बुद्धि)
मतिअणुगय (मतिसहित)
मतिग (मातग)
मतिम (अमूढ)
मतिविप्लुत (वितिगिच्छा)
मतिसहित (पृ ११६)
मत्थक (णिडाल)
मत्थक (सिखड)
मत्थकटक (तिरीड)
मत्थकत (वीहसकुलिका)
मत्थग (कुडल)
मत्सर (माण)
मद (माण)
मद (मोहणिज्जकम्म)

मघअग्गि (दीव)
मघु (अरिट्ठ)
मधुकर (भमर)
मधुर (पृ ११६)
मनन (पृ ११६)
मनस् (चित्त)
मनोज्ञ (उदार)
मन्नति (पृ ११६)
ममत्व (राग)
मम्मण (अलिय)
मय (गय)
मय (विट्ठ)
मयग (चडाल)
मयणिज्ज (पीणणिज्ज)
मयाम (चडाल)
मयूर (पृ ११६)
मरण (पृ ११६)
मरण (भय)
मरणविमुक्क (सिद्ध)
मरणवेमणस (पाव)
मरणामा (लोभ)
मरणासा (मोहणिज्जकम्म)
मराल (खलुक)
मराली (गड्डि)
मराली (तडी)
मरिमेति (खमति)
मरुभूतिक (पासाण)
मर्यादा (अवधान)
मर्यादा (चरण)
मर्यादा (जीत)
मर्यादा (धर्म)
मर्यादा (वेला)
मर्यादा (मेरा)
मर्यादा (सीमा)
मर्यादाव्यवस्थित (मेधाविन)
मल (पृ ११६)
मल (कम्म)
मलित (अतिवत्त)
मलित (णिम्मसक)
मलित (महव्वय)
मलियकटय (ओहयकटय)
मल्ल (जल्ल)
मल्लकमूलक (करोडक)
मल्लगभड (अरजर)
मसूरक (डिप्फर)
मसृण (श्लक्ष्ण)
महत (दीह)
महततर (विच्छिन्नतर)
महती (अहिंसा)
महधकार (तमुक्काय)
महग्घ (महत्थ)
महग्घ (परग्घ)
महतरक (उच्चयरक)
महत्तरगत्त (आहेवच्च)
महत्थ (पृ ११६)
महद्दि (परिगग्ह)
महब्बल (अइबल)
महब्बल (ओहबल)
महब्भय (पृ ११६)
महब्भय (असात)
महब्भय (पाव)
महब्भय-पवड्ढय (पाव)

महरिह (महत्थ)
महर्षि (ऋषि)
महव्वय (पृ ११७)
महाकम्मतर (पृ ११७)
महाकाय (परिवुड्ढ)
महाकाय (थूल)
महाकिरियतर (महाकम्मतर)
महाजण (वद)
महाणुभाग (ओराल)
महानाणि (महामुणि)
महापउम (पृ ११७)
महापण्ण (पृ ११७)
महापोंडरीय (उप्पल)
महाभाग (बुद्ध)
महामुणि (पृ ११७)
महाविस (उग्गविस)
महावीर्य (तनुतरशरीर)
महासवतर (महाकम्मतर)
महासार (थूल)
महिच्छ (परिग्गह)
महित (पृ ११७)
महिय (चहिय)
महिय (हय)
महिला (पत्ति)
महिसाहा (सेज्जा)
महीरुह (दुम)
महेज्ज (आओसेज्ज)
महेश्वर (ईश्वर)
महोदर (पुट्ठ)
माइ (कम्म)
माइय (मिय)
मासल (थूल)
माघवई (कण्हराति)
माण (पृ ११७)
माण (पृ ११८)
माण (अधम्मत्थिकाय)
माण (मोहणिज्जकम्म)
माणक (अरजर)
माणकामय (पूयणट्ठि)
माणण (उक्कसण)
माणण (परिवदण)
माणण (वदण)
माणव (जीवत्थिकाय)
माणविवेग (धम्मत्थिकाय)
माणिय (अच्चिय)
मात (णिम्मसक)
मातग (पृ ११८)
माया (पृ ११८)
माया (कक्क)
माया (कूड)
माया (पणिधि)
माया (मोहणिज्जकम्म)
माया (अधम्मत्थिकाय)
माया (इज्जा)
माया (उक्कचण)
माया (पलिउंचण)
मायामोस (अलिय)
मायामोस (अधम्मत्थिकाय)
मायामोसविवेग (धम्मत्थिकाय)
मायाविन् (कुचि)
मायाविवेग (धम्मत्थिकाय)
मार (अवध)

मार (मरण)
मारण (घात)
मारण (दड)
मारण (डड)
मारणा (पाणवह)
मारय (घायय)
मार्ग (पथ)
मार्ग (दर्शन)
मार्गणा (ईहा)
मालण (वध)
मासाल (डिप्फर)
माहण (समण)
माहण (मुणि)
माहण (पृ ११८)
मिच्छत्त (अवद्य)
मिच्छा (पृ ११८)
मिच्छादसणसल्ल (अधम्मत्थिकाय)
मिच्छादसणसल्लविवेग (धम्मत्थिकाय)
मिच्छापच्छाकड (अलिय)
मिणइ (पियइ)
मिणति (पृ ११८)
मित (पृ ११८)
मित्त (पृ ११८)
मित्तसगम (समागम)
मित्ति (पृ ११६)
मित्ति (सधि)
मिथ्या (पृ ११६)
मिय (पृ ११६)
मिय (सिक्खिय)
मिलक्खु (पच्चतिक)
मिलाण (महव्वय)
मिसीमिसीयमाण (आसुरत्त)
मिसिमिसेमाण (आसुरत्त)
मिहुणग (हत्थिक)
मीमासा (तक्क)
मीमासा (वितर्क)
मीमास्यमान (परिगण्यमान)
मीलनक (समूह)
मुचण (झोसण)
मुडक (खोरक)
मुडग (तट्टक)
मुडावित्तए (पृ ११६)
मुडाविय (पव्वाविय)
मुकुट (तिरीड)
मुकुल (पृ ११६)
मुक्क (पृ ११६)
मुक्क (अणाइल)
मुक्क (उब्भिण्ण)
मुक्कगन (सिद्धिगत)
मुक्कहत्थ (साहसिक)
मुक्त (पृ ११६)
मुक्तिगमनयोग्य (द्रव्य)
मुख (पृ ११६)
मुखर (पृ ११६)
मुच्चइ (सिज्झइ)
मुच्छा (पृ १२०)
मुच्छा (अविण्णावाण)
मुच्छा (मोहणिज्जकम्म)
मुच्छा (लोभ)
मुच्छिय (पृ १२०)
मुच्छिय (लोलुय)

मुच्छिय (गिद्ध)
मुज्झइ (सज्जइ)
मुज्झिय (सज्जिय)
मुञ्चति (निसृजति)
मुणि (पृ १२०)
मुणि (उज्जु)
मुणि (णाणि)
मुणि (भिक्खु)
मुणि (समण)
मुणित (पृ १२०)
मुणित (गीय)
मुणित (विदित)
मुत्त (तिण्ण)
मुत्त (भिक्खु)
मुत्त (समण)
मुत्त (सिद्ध)
मुत्तालय (ईसिपब्भारपुढवी)
मुत्ति (ईसिपब्भारपुढवी)
मुत्ति (मइ)
मुत्तिमग्ग (सिद्धिमग्ग)
मुदित (पृ १२०)
मुदित (हसित)
मुदिता (पृ १२०)
मुद्देयक (अगुलेयक)
मुद्ध (पृ १२०)
मुनि (पृ १२०)
मुनि (अनगार)
मुनि (साधु)
मुम्मुर (पृ १२०)
मुय (विट्ठ)
मुसावाय (अधम्मत्थिकाय)
मुसावायवेरमण (धम्मत्थिकाय)
मुहफलक (णिडालमासक)
मूढ (मूर्च्छित)
मूढ (पृ १२०)
मूढ (जड्ड)
मूढ (बुड्ढ)
मूढ (बाल)
मूर्च्छा (लोभ)
मूर्च्छा (राग)
मूर्च्छित (पृ १२१)
मूर्ति (स्थापना)
मूल (पृ १२१)
मूल (बीय)
मूलगुणपडिवाय (मूलच्छेज्ज)
मूलच्छेज्ज (पृ १२१)
मृत (गत)
मेखला (कच्ची)
मेखलिका (कडीय)
मेघ (बलाहक)
मेढि (पृ १२१)
मेदित (थूल)
मेधस् (बुद्धि)
मेधाविन् (पृ १२१)
मेधावि (देसकालण्ण)
मेधावि (छेय)
मेरक (अरिट्ठ)
मेरग (सुरा)
मेरा (पृ १२१)
मेरा (वेला)

मेरा	(पाली)	मोहणिज्जकम्म	(पृ १२२)
मेरा	(ठिति)	मोहपवड्डय	(पाव)
मेरा	(विहि)	मोहेति	(रमति)
मेरा	(कप्प)	मौनी	(अनगार)
मेरा	(मज्जाया)	मौनीन्द्राभिप्राय	(तत्व)
मेरा	(सीमा)	यजन	(पृ १२२)
मेरु	(मदर)	यत	(पृ १२२)
मेरुक	(पामाण)	यति	(ऋषि)
मेरुवर	(णग)	यति	(अनगार)
मेलना	(पृ १२१)	यथारुचि	(छद)
मेस	(कुमपुप्फिया)	याग	(यजन)
मेहन	(सागारिक)	यान	(प्रवहण)
मेहराति	(कण्हराति)	याचित	(अनविष्ट)
मेहा	(उग्गह)	यातना	(दण्ड)
मेहावि	(साहसिक)	युक्त	(प्रतिबद्ध)
मेहावि	(पडिय)	युज्यते	(क्रमति)
मेहुण	(अबम)	युवा	(पृ १२२)
मेहुण	(अबम्मत्थिकाय)	यूथ	(कुल)
मेहुणवेरमण	(धम्मत्थिकाय)	याग	(पृ १२२)
मैथुनाजीवा	(मैथुनिकी)	योग	(पृ १२२)
मैथुनिकी	(पृ १२१)	योग्य	(पात्र)
मोक्ख	(सति)	योग्य	(भव्य)
मोक्ख	(सिद्धउपपत्ति)	योजना	(मेलना)
मोक्खदरिसि	(णिकम्मदरिसि)	यौवनस्थ	(युवा)
मोक्ष	(धूत)	रइ-अरइ	(अधम्मत्थिकाय)
मोक्ष	(नियाग)	रइ-अरइविवेग	(धम्मत्थिकाय)
मोक्षमार्गगामि	(आप्त)	रइय	(बद्ध)
मोक्षमार्गाभिज्ञ	(कुशल)	रइल्लिय	(जल्लिय)
मोचन	(निक्षेप)	रगण	(जीवत्थिकाय)
मात्ति	(पृ १२२)	रक्खा	(अहिंसा)
मोह	(अबम)	रक्खित	(पालित)

रक्षण	(सन्त्राण)	रसिय	(पृ १२३)
रचन	(निक्षेप)	रहस्स	(पृ १२३)
रचित	(विकल्पित)	रहस्स	(अबभ)
रजनिकर	(चन्द्र)	राइ	(छिड्ड)
रज्ज	(पृ १२२)	राग	(अधम्मत्थिकाय)
रज्जइ	(सज्जइ)	राग	(पृ १२४)
रज्जति	(पृ १२३)	राग	(अबभ)
रज्जिय	(सज्जिय)	राग	(मोहणिज्जकम्म)
रत	(रति)	राग	(लोभ)
रति	(पृ १२३)	राग	(पेम)
रति	(सात)	राग	(पिज्ज)
रति	(अबभ)	रागद्दोसवसग	(परज्झ)
रति	(अहिंसा)	रागविवेग	(धम्मत्थिकाय)
रत्त	(कक्क)	रायहसी	(विल्लरी)
रत्ति	(नील)	राशि	(पृ १२४)
रत्था	(वीथि)	राशि	(समूह)
रन्न	(गहण)	रासि	(पिड)
रमति	(हसति)	रासि	(समुस्सय)
रमति	(पृ १२३)	रासि	(गण)
रमणिज्ज	(सोभत)	राहु	(पृ १२४)
रमणिज्ज	(कत)	रिउ	(पृ १२४)
रय	(कयार)	रिण	(अण)
रय	(पाव)	रित्तक	(तुच्छ)
रयणियरप्पयास	(मख)	रिद्धि	(अहिंसा)
रयणी	(पृ १२३)	रियाअस्समिति	(अधम्मत्थिकाय)
रयणुच्चय	(मदर)	रियासमिति	(धम्मत्थिकाय)
रयणोच्चय	(मदर)	रिसि	(इसि)
रयस्	(पृ १२३)	रीन	(पृ १२४)
रयितपुव्व	(णियत)	रीनि	(रीत)
रस	(पृ १२३)	रीयति	(वुइज्जति)
रसणा	(कची)	रुइय	(पृ १२४)

रुइल (कत)
रुइल (सोभत)
रुटणा (खिज्जणिया)
रुभेज्ज (अक्कोसेज्ज)
रुक्ख (दुम)
रुक्ख (पादव)
रुचक (कडग)
रुट्ठ (पृ १२४)
रुट्ठ (आसुरत्त)
रुण्ण (विकूणित)
रुण्ण (पृ १२४)
रुदित (हक्कार)
रुद्द (पाव)
रुद्ध (रहस्स)
रुद्धापित (पृ १२४)
रुपाकड (भग्ग)
रुयकड (भग्ग)
रुसिय (पृ १२४)
रेणु (कयार)
रोएइ (सद्दहइ)
रोगिय (वाहिय)
रोयमाणी (पृ १२५)
रोवग (दुम)
रोवण (ववण)
रोष (क्रोध)
रोस (कोह)
रोस (मोहणिज्जकम्म)
लगल (णगल)
लचा (पृ १२५)
लभ (स्पर्शना)
लक्खण (धम्म)
लघुक (पृ १२५)
लज्जा (ह्री)
लज्जा (दया)
लज्जामो (पृ १२५)
लज्जिय (पृ १२५)
लण्ह (अच्छ)
लता (पृ १२५)
लद्ध (पृ १२५)
लद्धट्ठ (पृ १२५)
लद्धमईय (पृ १२५)
लद्धसण्ण (लद्धमईय)
लद्धसुईय (लद्धमईय)
लद्धि (अहिंसा)
लब्भति (पृ १२६)
लय (सघाड)
लय (पृ १२६)
लयण (पृ १२६)
ललति (रमति)
ललति (हसति)
लहुक (साहसिक)
लहुभूय (अप्पडिबद्ध)
लाघविय (पृ १२६)
लाढेत्तय (जवइत्तय)
लाभ (आय)
लाभ (णिप्फत्ति)
लाभ (पृ १२६)
लालप्पण (लोभ)
लालप्पणपत्थणा (अदिण्णादाण)
लिंग (पृ १२६)
लिंग (सागारिक)
लिंगिय (पृ १२६)

लीण (पविट्ठ)
लीनता (लय)
लूपणा (पाणवह)
लूपणा घणाण (अदिण्णादाण)
लुंपित्ता (हंता)
लुक्कई (आलुक्कई)
लुक्ख (सुक्क)
लुटण (पृ १२६)
लुठण (लोटन)
लुत्तेय (हयतेय)
लुद्धग (अत्थि)
लप्पमाण (नस्समाण)
लुब्ध (धूर्त)
लुब्भिय (सज्जिय)
लूसग (पृ १२६)
लूह (समण)
लूह (भिक्खु)
लूह (पव्वइय)
लूहाहार (अंताहार)
लेण (भवण)
लेसा (जुइ)
लेसा (कंति)
लेसा (जुइ)
लेमेज्ज (अभिहणेज्ज)
लोकपडिपूरण (ईसिपब्भारपुढवी)
लोगंधगार (तमुक्काय)
लोगग्गचूलिया (ईसिपब्भारपुढवी)
लोगतमस (तमुक्काय)
लोगतमिस (तमुक्काय)
लोगनाभि (मंदर)
लोगमज्झ (मंदर)
लोटन (पृ १२६)
लोट्टण (लुटण)
लोभ (छव)
लोभ (तण्हा)
लोभ (अभिज्झा)
लोभ (मोहणिज्जकम्म)
लोभ (पृ १२७)
लोमसिका (पृ १२७)
लोमहरिसजणण (पृ १२७)
लोयग्ग (ईसिपब्भारपुढवी)
लोयग्गथूभिगा (ईसिपब्भारपुढवी)
लोयग्गपडिबुज्झणा (ईसिपब्भारपुढवी)
लोलिक्का (अदिण्णादाण)
लोलुग (पृ १२७)
लोलुय (पृ १२७)
लोह (अधम्मत्थिकाय)
लोहप्प (परिग्गह)
लोहविवेग (धम्मत्थिकाय)
लोहिल्ल (अविसुद्ध)
ल्हाय (सीईभूय)
वइअगुत्ति (अधम्मत्थिकाय)
वइगुत्ति (धम्मत्थिकाय)
वइजोग (वक्क)
वइर (पासाण)
वइर (पृ १२७)
वक (पृ १२७)
वकसमायार (वक)
वचण (उक्कचण)
वचण (मोहणिज्जकम्म)
वचण (कूड)

वचण (माया)
वचण (अलिय)
वझा (पृ १२७)
वटग (वड)
वड्ग (वड)
वत (भग्ग)
वद (पृ १२७)
वदइ (आढाइ)
वदण (प्रणमन)
वदण (पृ १२८)
वदण (थुइ)
वदण (अभिवायण)
वदणग (पृ १२८)
वदणग (सथुणण)
वदन (प्रणमन)
वदित (णमोक्कत)
वदित (पृ १२८)
वदिय (अच्चिय)
वश (पृ १२८)
वक्क (पृ १२८)
वक्कमति (पृ १२८)
वक्खाण (परूवण)
वक्खेव (पलिमथ)
वक्खोड (पलिमथ)
वक्खोड (सग)
वक्खोड (विग्घ)
वक्त्र (मुख)
वक्र (पृ १२८)
वक्रजघ (कुब्ज)
वक्राध काय (वडभिका)
वक्षस्कार (पृ १२८)
वगडा (पृ १२८)
वग्ग (गण)
वग्घ (सग)
वचन (पृ १२८)
वचन (उक्ति)
वच्चसि (ओयसि)
वच्छ (दुम)
वच्छक (पृ १२९)
वच्छक (उसभ)
वच्छक (बालक)
वच्छिका (दारिया)
वज्ज (पृ १२९)
वज्ज (पृ १२९)
वज्ज (वइर)
वज्ज (वेर)
वज्ज (कम्म)
वज्ज (पाव)
वज्ज (पाणवह)
वज्जण (उस्सग्ग)
वज्जणा (दुगुछणा)
वज्जपाणि (सक्क)
वज्जपाणि (इद)
वज्जा (इज्जा)
वट्टक (खोरक)
वट्टपीढक (आसदग)
वट्टमाणक (करोडक)
वड (पृ १२९)
वडभिका (पृ १२९)
वडेंस (मवर)
वट्टु (थूल)
वण (गहन)

वण (दुमपुप्फिया)
वण्ण (जस)
वण्ण (कित्ति)
वण्णित (पृ १२९)
वण्णिय (पृ १२९)
वण्णिस्सामि (कित्तइस्सामि)
वति (भिक्खु)
वति (पागार)
वतिपरिक्खेव (वगडा)
वत्तिय (अणुओग)
वत्थुगय (महव्वय)
वत्तेज्ज (अभिहणेज्ज)
वत्थिन (वित्थिन्न)
वध ((पृ १२९)
वधु (पत्ति)
वधू (पत्ति)
वन्दते (पृ १२९)
वप्फति (जेमेति)
वमण (पृ १३०)
वमेति (पृ १३०)
वम्मिका (पामुद्दिका)
वय (जाम)
वयति (पृ १३०)
वयति (उवेइ)
वयस (मित्त)
वयण (आणा)
वयण (मुख)
वयण (वक्क)
वयण (गिरा)
वयत्थ (पृ १३०)
वयमत (सीलमत)
वयर (पाव)
वर (पृ १३०)
वर (अग्ग)
वरढ (थूल)
वर्ग (समूह)
वर्जन (परिहार)
वर्णयति (वृणीते)
वर्तन (भवन)
वर्द्धन (पृ १३०)
वर्य (अग्र)
वर्षावास (प्रथमसमवसरण)
वलय (कडपल्ल)
वलय (माया)
वलय (मोहणिज्जकम्म)
वलय (अलिय)
वलयग (केज्जूर)
वल्लभ (इट्ठ)
वल्लभिका (पत्ति)
ववगत (पृ १३०)
ववगय (पृ १३०)
ववण (पृ १३०)
ववत्था (पतिट्ठा)
ववसाय (पृ १३१)
ववसाय (अहिंसा)
ववहार (पृ १३१)
ववहार (पृ १३१)
वसट्ट (अट्ट)
वसति (वसुम)
वसधि (उवसम)
वसित्तु (पृ १३१)
वसिम (वसुम)

वसुम (पृ १३१)
वसुमत (अट्ठ)
वस्तु (पृ १३१)
वस्त्र (पोत्थ)
वह (घाय)
वहण (पाणवह)
वहय (अरि)
वहित (पृ १३१)
वाग् (वचन)
वाग्योग (उक्ति)
वाघात (पृ १३१)
वाचाल (मुखर)
वाञ्छितस्याधिगति (नन्दन)
वाट (पृ १३१)
वाटक (वाट)
वाणी (गिरा)
वाणी (वक्क)
वात (महव्वय)
वातफलिह (तमुक्काय)
वातफलिहखोभ (तमुक्काय)
वाति (वेरति)
वातिक (णपुंसक)
वान (वेच्च)
वाम (पृ १३१)
वामत (वाम)
वामदेस (वाम)
वामपक्ख (वाम)
वामभाग (वाम)
वामसील (वाम)
वामायार (वाम)
वामावट्ट (वाम)
वायपलिक्खोभा (कण्हराति)
वायफलिहा (कण्हराति)
वारक (अरजर)
वारण (पृ १३२)
वारणा (पडिकमण)
वारिक (नापित)
वार्तिककर (व्यक्तिकर)
वालु (वुड्ढ)
वावड (पृ १३२)
वावण्ण (पृ १३२)
वावण्ण (दोसीण)
वावत्ति (अबम)
वावार (जोग)
वाविद्ध (णिस्सारित)
वासारत्तिय (चाउम्मासित)
वासावास (पज्जोसवणा)
वासित (आपूरित)
वासेहि (चाएति)
वाहिय (पृ १३२)
विअत्त (देसकालण्ण)
विउक्कमति (वक्कमति)
विउट्टणा (आलोयणा)
विउट्टणा (दुगुछणा)
विउट्टिज्जइ (आलोइज्जइ)
विउल (उज्जल)
विउल (विच्छिन्न)
विउलतर (अब्भहियतर)
विउसग्ग (काउस्सग्ग)
विउस्सग (पृ १३२)
विउस्सरण (उस्सग्ग)
विकच (फुल्ल)

विकटन	(आलोचन)	विगिंचण	(पृ १३३)
विकड्ड	(पहर)	विगिंचण	(वमण)
विकड्डति	(णिकड्डति)	विग्गह	(विवाद)
विकड्डति	(णोहारेति)	विग्घ	(पृ १३३)
विकड्डित	(णिच्छूढ)	विग्घ	(सग)
विकत्ता	(जीवत्थिकाय)	विग्घ	(पलिमथ)
विकत्ताहि	(पहर)	विग्घित	(पृ १३३)
विकप्प	(मेय)	विघाय	(अवभ)
विकल्प	(पृ १३२)	विचल	(पृ १३३)
विकल्प	(पृ १३२)	विचलित	(चलित)
विकल्प	(भेद)	विचारणा	(विजय)
विकल्पित	(पृ १३२)	विचालण	(घट्टण)
विकल्पितवद्	(पहारेत्थ)	विचिकित्सा	(पृ १३३)
विकसित	(फुल्ल)	विचीयते	(पृ १३३)
विकाश	(फुल्ल)	विच्छुण्ण	(पृथु)
विकाश	(अनुकाश)	विच्छिदति	(छिदति)
विकिरण	(सडण)	विच्छिण्णतर	(पृ १३३)
विकूणित	(पृ १३२)	विच्छिण्णदोहला	(सपुण्णदोहला)
विकोच	(फुल्ल)	विच्छिण्णसव्वदुक्ख	(सिद्ध)
विक्कत	(सूर)	विच्छित्त	(भग्ग)
विक्कदिन	(विकूणित)	विच्छिन्न	(पृ १३३)
विक्ख	(णपुसक)	विच्छिन्न	(भग्ग)
विक्खभ	(आयाम)	विच्छुद्ध	(णिम्मज्जित)
विक्खलण	(पृ १३२)	विच्छुद्ध	(भग्ग)
विक्खिन्न	(उक्खिन्न)	विच्छुभ	(पहर)
विक्खिन्न	(भग्ग)	विजय	(पृ १३३)
विक्खेव	(अदिण्णादाण)	विजय	(पृ १३३)
विक्रान्त	(वीर)	विजय	(मग्गण)
विक्षेप	(पृ १३३)	विजृम्भित	(फुल्ल)
विगत	(पृ १३३)	विज्जमाण	(सत)
विगय	(णट्ठ)	विज्जमाणभाव	(सपज्जाय)

विज्जा (णाण)
विज्जु (दीव)
विज्जुता (दीव)
विज्झवित (भग्ग)
विज्झाय (निट्ठुय)
विज्झीयति (उज्झीयति)
विज्ञान (चित्त)
विज्ञापन (पृ १३४)
विज्ञापयितुम् (आख्यातुम्)
विडवि (पावव)
विडिमी (दुम)
विड्ड (लज्जिय)
विणट्ठ (वावण्ण)
विणट्ठ (भग्ग)
विणट्ठ (खीण)
विणट्ठ (झीण)
विणट्ठ (णट्ठ)
विणट्ठतेय (हयतेय)
विणय (पृ १३४)
विणय (पूया)
विणय (उववाय)
विणय (आयार)
विणयकम्म (ववणग)
विणस्समाण (नस्समाण)
विणास (घाय)
विणास (सायण)
विणास (पलिमथ)
विणास (पाणवह)
विणास (वाघात)
विणासभाव (अभूतिभाव)
विणासित (विक्खिण्ण)
विणासित (भग्ग)
विणासिय (खामिय)
विणिग्गत (अतिवत्त)
विणिच्छिय (पृ १३४)
विणिच्छियट्ठ (लद्धट्ठ)
विणियत्त (अतिवत्त)
विणीय (आइण्ण)
विणीयदोहला (संपुण्णदोहला)
विण्णवण (पण्णवण)
विण्णवणा (आघवणा)
विण्णाण (पृ १३४)
विण्णाण (सण्णा)
विण्णाण (अवाय)
विण्णाय (विट्ठ)
विण्णु (जीवत्थिकाय)
विण्णु (पाण)
वितडकमाइन्न (दुक्कड)
वितत (वित्थिन्न)
वितथ (मिथ्या)
वितर्क (सशय)
वितर्क (पृ १३४)
वितह (मिच्छा)
वितिकिण्ण (आइण्ण)
वितिगिच्छा (पृ १३४)
वितिगिच्छित (सकित)
वितिगिण्ण (उक्खिन्न)
वितिमिर (निट्ठियट्ठ)
वितिमिर (निव्वुड)
वितिमिर (अरय)
वितिमिर (अणुत्तर)
वितिमिर (सेत)

वितिमिरतर (अब्भहियतर)
वितोसिय (खामिय)
वित्थत (वित्थिण्ण)
वित्थिन्न (पृ १३४)
विदित (पृ १३४)
विदु (पृ १३४)
विदु (समण)
विदु (भिक्खु)
विदेहजंबू (जंबू)
विदेहदिण्णा (तिसला)
विद्देसगरहणिज्ज (अलिय)
विद्धसण (सडण)
विद्धसणधम्म (भेउरधम्म)
विद्धसणधम्म (सडण)
विद्धसति (पमिलायति)
विद्धत्थ (खीण)
विद्धि (अहिंसा)
विद्वस् (पृ १३४)
विध (विहि)
विधान (विधि)
विधावति (पधावति)
विधि (पृ १३५)
विधि (भजना)
विधि (कल्प)
विनष्ट (व्यापन्न)
विनष्ट (विगत)
विनाश (विवेक)
विनाश (दण्ड)
विनाश (गलन)
विनाशित (क्षामित)
विनाशिन् (अशाश्वत)
विनीत (अविजात)
विनीत (जितकरण)
विन्नत्तिकारण (पृ १३५)
विन्नत्तिहेउभूय (विन्नत्तिकारण)
विन्नव (अत्तव)
विपण्ण (णट्ठ)
विपन्न (व्यापन्न)
विपन्न (गत)
विपरिणामइत्ता (पृ १३५)
विपरिणामधम्म (भेउरधम्म)
विपरिणामित्तए (चालित्तए)
विपरीतभाव (वैगुण्य)
विपर्यास (व्यत्यय)
विपाडित (भग्ग)
विपुल (ओराल)
विपुलतर (विच्छिण्णतर)
विप्प (बंभण)
विप्पइण्ण (उक्खित्त)
विप्पकिण्ण (विक्खिण्ण)
विप्पकिण्ण (पकिण्ण)
विप्पगुणोवेय (बंभण)
विप्पजढ (ववगत)
विप्पपवर (बंभण)
विप्पमुचण (उट्ठित)
विप्परिचेट्ठते (परिचेट्ठति)
विप्परिवत्तते (परिचेट्ठति)
विप्परिसि (बंभण)
विप्पलोट्टित (वेवित)
विप्पित (विग्घित)
विप्पिय (पिच्छिय)
विप्फालण (पृ १३५)

विप्फालण (घट्टण)
विबुध (देव)
विब्भम (अबम)
विभग (अबम)
विभजन (पृ १३५)
विभयति (हरति)
विभयामि (आइक्खामि)
विभाग (अवसर)
विभाग (वड)
विभाग (विभजन)
विभाग (अवसर)
विभाग (देश)
विभाविज्जति (णिज्जवजीयति)
विभावेमि (आइक्खामि)
विभासा (अणुओग)
विभासा (भासा)
विभूति (अहिंसा)
विभूसण (चूला)
विमसा (आभिणिबोहिय)
विमर्श (तक्क)
विमर्श (उपयोग)
विमर्ष (ईहा)
विमर्ष (वितिगिच्छा)
विमल (ण्हाय)
विमल (सत्त)
विमल (सेत)
विमल (सुद्ध)
विमल (पृ १३५)
विमल-पभासा (अहिंसा)
विमलवाहण (महापउम)
विमाणित (परिभीत)
विमुत्त (सजत)
विमुत्ति (अहिंसा)
विमुह (आगासत्थिकाय)
विमोक्खित (उत्तारिय)
वियजित (पृ १३५)
वियजिय (उद्दिट्ठ)
वियग्घ (वीचिय)
वियट्ट (आगासत्थिकाय)
वियडणा (आलोयणा)
वियरत्ति (रयणी)
वियाणक (वित्थन्न)
वियारण (घट्टण)
वियालण (पृ १३५)
विरचना (निधान)
विरत (मुक्क)
विरत (सयत)
विरत (विद्वस्)
विरत (भिक्खु)
विरत (पृ १३५)
विरति (पृ १३६)
विरति (विरमण)
विरति (सति)
विरति (सजम)
विरति (अहिंसा)
विरमण (पृ १३६)
विरमण (विरति)
विरय (तिण्ण)
विरय (सजय)
विरय (अरय)
विरय (समण)
विरल्लिय (पृ १३६)

विरसाहार	(अंताहार)	विवाद	(कोह)
विरह	(अतर)	विवाय	(मोहणिज्जकम्म)
विरह	(छिद्द)	विवेक	(पृ १३६)
विराहण	(उद्दवण)	विवेग	(विउस्सग)
विराहणा	(पृ १३६)	विवेग	(उस्सग्ग)
विराहणा	(पडिसेवणा)	विवेग	(विगिंचण)
विराहणा	(अबभ)	विवयण	(मग्गण)
विरिय	(योग)	विशति	(पृ १३६)
विरिय	(जोग)	विशालता	(आरोह)
विरेयण	(साहरण)	विशुद्ध	(पृ १३६)
विरेयण	(वमण)	विशेप	(पर्यव)
विलअ।	(पत्ति)	विशेप	(पर्याय)
विलग्गइ	(दुरुहइ)	विशेपयति	(उवेहति)
विलवण	(कूजण)	विशोधि	(पृ १३६)
विलवमाणी	(रोयमाणी)	विश्व	(पृ १३७)
विलासिणी	(पत्ति)	विष्कभ	(आरोह)
विलिय	(लज्जिय)	विसधित	(भग्ग)
विलुचण	(फुडण)	विसत	(गायर)
विलुपति	(हापयति)	विसम	(आगासत्थिकाय)
विलुपित्ता	(हता)	विसय	(पृ १३६)
विलुप्पमाण	(नस्समाण)	विसरा	(तिसरा)
विलोकन	(प्रेक्षण)	विसल्लीकरण	(उत्तरकरण)
विल्लरी	(पृ १३६)	विसारत	(पृ १३७)
विवक्ख	(अलिय)	विसाल	(ओराल)
विवडिय	(हय)	विसाला	(जबू)
विवर	(छिड्ड)	विसिट्ठदिट्ठि	(अहिसा)
विवर	(सन्धि)	विसिण्ण	(अतिवत्त)
विवर	(आगासत्थिकाय)	विसुद्ध	(ण्हाय)
विवाडेंत	(छिवत)	विसुद्ध	(निट्ठियट्ठ)
विवाद	(वुग्गह)	विसुद्ध	(खीण)
विवाद	(पृ १३६)	विसुद्ध	(अरय)

विसुद्ध	(अणुत्तर)	विहि	(उस्सय)
विसुद्ध	(निव्वुड)	वीतगेहि	(खत)
विसुद्धतर	(अब्भहियतर)	वीतराग	(निर्मम)
विसुद्धि	(अहिंसा)	वीतरागादेस	(आणा)
विसूरण	(आयास)	वीथि	(पृ १३७)
विसेसक	(णिडालमासक)	वीभिति	(तसति)
विसेसादिट्ठ	(अप्पियववहारिय)	वीमसा	(आभिणिबोहिय)
विसोधेति	(वोसिरति)	वीमसा	(ईहा)
विसोहण	(वमण)	वीमसा	(सशय)
विसोहि	(आलोयण)	वीयि	(आगासत्थिकाय)
विसोहि	(आवस्सय)	वीर	(पृ १३७)
विसोहिज्जइ	(आलोइज्जइ)	वीर	(पृ १३७)
विसोहीकरण	(उत्तरकरण)	वीर	(बुद्ध)
विस्नग	(विभजन)	वीर	(सूर)
विस्नराल	(ओराल)	वीर	(पडिय)
विस्तार	(पृथु)	वीरिय	(जोग)
विस्तारित	(परिक्खित्त)	वीरिय	(उट्ठाण)
विस्तीर्णप्रज्ञ	(महापण्ण)	वीरिय	(पृ १३७)
विस्वर	(करुण)	वीवाह	(समागम)
विह	(पृ १३७)	वीसास	(अहिंसा)
विह	(आगासत्थिकाय)	वुग्गह	(अबभ)
विहूण	(पहर)	वुग्गह	(पृ १३८)
विहम्मेमाण	(ओवीलेमाण)	वुग्गाहित	(दुट्ठ)
विहरण	(पृ १३७)	वुच्चमाण	(पृ १३८)
विहल	(उद्दूढ)	वुड्ढ	(जुण्ण)
विहाण	(विहि)	वुड्ढ	(पृ १३८)
विहार	(पथ)	वुड्ढ	(महव्वय)
विहार	(विहरण)	वुत्त	(भणिय)
विहारग	(लूसग)	वुत्त	(पृ १३८)
विहारणा	(धारणववहार)	वुसिम	(वसुम)
विहि	(पृ १३७)	वृक	(पृ १३८)

वृक्षमाला (साहा)
वृणीते (पृ १३८)
वृणोति (वृणीते)
वृत्त (स्थान)
वृत्त (चरण)
वृद्धि (वर्द्धन)
वृन्त (मुकुल)
वेइज्जमाण (एइज्जमाण)
वेइय (सिग्घ)
वेइय (खद्ध)
वेटक (अगुलेयक)
वेग (रयस्)
वेच्च (पृ १३८)
वेड्ड (लज्जिय)
वेढक (हत्थभडक)
वेद (बभण)
वेद (छन्द)
वेद (पाण)
वेदज्झाइ (बभण)
वेदणा (एजणा)
वेदन (अवन)
वेदपारग (बभण)
वेदित (अपगत)
वेय (जीवत्थिकाय)
वेयण (णाण)
वेयणा (विण्णाण)
वेर (पृ १३८)
वेर (वज्ज)
वेर (आयास)
वेर (कम्म)
वेर (डिंब)
वेर (पाव)
वेर (अबंभ)
वेरति (तितिक्खा)
वेरति (पृ १३८)
वेरमण (वेरति)
वेरिय (अरि)
वेला (पृ १३८)
वेलु (णावा)
वेवित (पृ १३८)
वेश्या (मैथुनिकी)
वेस्सासिय (थेज्ज)
वैगुण्य (पृ १३९)
वैधर्मता (वैगुण्य)
वोगड (दिट्ठ)
वोच्छिण्ण (दिट्ठ)
वोण्ण (कम्म)
वोम (आगासत्थिकाय)
वोरमण (पाणवह)
वोसट्ठ (पृ १३९)
वोसट्ठकाय (वत)
वोसिरण (विउस्सग)
वोसिरति (पृ १३९)
वोसिरिय (वोसट्ठ)
वोसिरे (छड्डे)
व्यक्तिकर (पृ १३९)
व्यञ्जक (पृ १३९)
व्यञ्जनाक्षर (पृ १३९)
व्यत्यय (पृ १३९)
व्यपलाप (आह्वान)
व्यवशमित (शामित)
व्यवसायिन् (पृ १३९)

व्यवस्था	(ओत)	शात	(पृ १४०)
व्यवस्था	(धर्म)	शापित	(पृ १४०)
व्यवहार	(पृ १३६)	शास्त्र	(नन्दि)
व्यवहार	(आवेश)	शिक्षित	(पृ १४०)
व्यवहार	(कल्प)	शिव	(कल्याण)
व्याकुल	(दुस्सह)	शीलहीन	(क्षुद्र)
व्याकोश	(फुल्ल)	शुक्ल	(लघुक)
व्याख्या	(वर्द्धन)	शुद्ध	(आदर्श)
व्याघात	(विक्षेप)	शुभ	(पुण्य)
व्यापन्न	(पृ १३६)	शुभवृद्धि	(पृ १४०)
व्यापार	(योग)	शृणोति	(पृ १४०)
व्यापृत	(वावड)	शेखरक	(आमेलक)
व्याप्त	(आस्पृष्ट)	शोधि	(पृ १४०)
व्याप्त	(आपूरित)	शोभते	(प्रभाति)
व्याप्त	(स्पृष्ट)	शोभन	(उदार)
व्याप्त	(सकीर्ण)	शोभन	(उदग्ग)
व्यावृत्त	(पृ १३६)	श्रद्धाति	(प्रत्येति)
व्याहृति	(विकल्प)	श्रमण	(अनगार)
व्युत्सर्ग	(पृ १३६)	श्रेणि	(लता)
व्यूत	(वेच्च)	श्रेयस्	(कल्याण)
व्रतमोक्ष	(प्रतिगमन)	श्रेष्ठ	(वर)
व्रतिन्	(अनगार)	श्लक्ष्ण	(पृ १४०)
शकित	(पृ १४०)	श्लाघा	(श्लोक)
शठ	(खलुक)	श्लोक	(पृ १४०)
शठ	(धूर्त)	श्वपच	(सौकरिक)
शबल	(बकुश)	सअट्ठ	(पृ १४०)
शब्दित	(शापित)	सइ	(आभिणिबोहिय)
शयन	(त्वग्वर्तन)	सइ	(मइ)
शरीर	(बोंदि)	सउक्केस	(पावय)
शरीरभृद्	(जीव)	सउज्जाय	(सप्पभ)
शशिन्	(चन्द्र)	सउज्जोव	(सप्पभ)

सकण (पृ १४०)
सकप्प (अबभ)
सकर (परिग्गह)
सकर (णपुसक)
सका (सकण)
सकित (पृ १४१)
सकीर्ण (पु १४१)
सकुयति (तसति)
सकेत (केतन)
सकेत (समय)
सकेतन (केतन)
सक्षप (ओघ)
सक्षेप (ओह)
सक्षेप (जूह)
सख (पृ १४१)
सखडि (भोज्ज)
सखित्त (रहस्स)
सखेव (पृ १४१)
सखेव (समास)
सखेव (ओह)
सखोभिज्जमाणी (आहुणिज्जमाणी)
सग (राग)
सग (पाव)
सग (पृ १४१)
सग (पृ १४१)
सग (पृ १४१)
सग (कम्म)
सग (लोभ)
सगइय (मित्त)
सगतपास (सन्नतपास)
सगलिका (लोमसिका)
सगह (अणुण्णा)
सगह (उवहि)
सगाम (पृ १४१)
सगाम (जुद्ध)
सगाम (समर)
सगोवेमाण (सारक्खेमाण)
सघ (वद)
सघ (पृ १४१)
सघ (कुल)
सघट्टेज्ज (अभिहणेज्ज)
सघाट (घाट)
सघाड (णावा)
सघाड (पृ १४१)
सघात (समूह)
सघात (पृ १४२)
सघाय (गण)
सघाय (काय)
सचय (परिग्गह)
सचारयति (सचालयति)
सचालयति (पृ १४२)
सचालिज्जमाणी (आहुणिज्जमाणी)
सचिट्ठते (सजायते)
सजत (पृ १४२)
सजत (साधु)
सजत (भिक्खु)
सजम (अहिंसा)
सजम (दया)
सजम (जस)
सजम (आचार)
सजम (पृ १४२)
सजमठाण (पृ १४२)

सजमणा (दुगुछणा)
सजमतवड्ढय (पृ १४२)
सजमति (धारयति)
सजमबहुल (पव्वइय)
सजमबहुल (पृ १४२)
सजमरत (भिक्खु)
सजमेज्जा (पव्वइज्जा)
मजय (समण)
सजय (प १४२)
मजलण (कोह)
सजलण (मोह णिज्जकम्म)
सजातदेह (परिवूढ)
सजाय (परिवुड्ढ)
सजायते (पृ १४२)
सजायभय (तत्थ)
सजूह (जूह)
सज्ञापयितुम् (आख्यातुम्)
सठाण (आगार)
सठाण (पृ १४३)
सठिति (पतिट्ठा)
सठिति (अवत्था)
सढ (णपुसक)
सत (पृ १४३)
सत (पृ १४३)
सत (पृ १४३)
सत (पृ १४३)
सत (सोईभूय)
सतप्पमाण (रुद्धापित)
सतापित (रुद्धापित)
सतास (आयास)
सति (पृ १४३)
सति (उवसम)
सति (सामायिक)
सति (समण)
सथव (सथुणण)
सथव (परिग्गह)
सथड (आइण्ण)
सथुणण (पृ १४३)
सथुत (बदित)
सदमाणिका (थिल्ली)
सदाण (पृ १४३)
सदीपण (जग्गतक)
सदेह (सशय)
सदेह (वितिगिच्छा)
सधयेत् (पृ १४४)
सधान (पृ १४४)
सधमज्ज (अभिहणेज्ज)
सधारणा (धारणववहार)
सधावति (पधावति)
सधि (सधान)
मधि (पृ १४४)
सधुन (विचल)
सपओगबहुल (उवक्कमण)
मपडिका (कचो)
सपण्ण (पृ १४४)
सपण्णदोहला (संपुण्णदोहला)
सपत्तमणोरध (कयत्थ)
सपधूमिय (घट्ट)
सपराग (जुद्ध)
सपराय (कम्म)
सपहारणा (धारणववहार)
सपापुप्पायक (परिग्गह)
सपायण (उप्पायण)
संपिडण (पिंड)

संपिडित (रहस्स)
सपिहणा (णिसियणा)
सपीड (संधि)
सपीति (समागम)
सपीति (मित्ति)
सपीलित (रहस्स)
सपुण्णदोहला (पृ १४४)
सपूर्ण (सर्व)
सपेहेति (पृ ११४)
सप्रधारितवद् (पहारेत्थ)
सप्रेक्षत (सपेहेति)
सबधि (मित्त)
सबद्ध (ग्रथित)
सबृद्ध (पृ १४४)
सभव (आययण)
सभव (विसय)
सभवट्ठाण (आययण)
सभवति (सजायते)
संभार (परिग्गह)
समट्ठ (घट्ठ)
समय (पृ १४४)
समाणियदोहला (संपुण्णदोहला)
सयत (मुनि)
सयत (पृ १४४)
सयम (धूत)
सयम (सवर्जु)
सयम (ह्री)
सरभ (पृ १४४)
सरक्खणा (परिग्गह)
सराग (सगाम)
सलुक्कई (आलुक्कई)

सवच्छरिय (चाउम्मासित)
सवर (अणुण्णा)
सवर (पृ १४५)
सवर (अहिंसा)
सवर (आचार)
सवरबहुल (पव्वइय)
सवरबहुल (सजमबहुल)
सवरित (पृ १४५)
सवरेज्जा (पव्वइज्जा)
सविग्न (पृ १४५)
सविचरित (सविचिण्ण)
सविचिण्ण (पृ १४५)
सवित्ति (ज्ञान)
सविद् (पृ १४५)
सवुड (सजय)
सवुडबहुल (सजमबहुल)
सवेदण (णाण)
सवेल्लित (रहस्स)
सशय (पृ १४५)
सशयज्ञान (विचिकित्सा)
सशिलष्ट (प्रतिबद्ध)
ससग्गि (अबभ)
ससार (सधान)
ससारविप्पमोक्ख (सिद्धउपपत्ति)
ससारेइ (उव्वत्तेइ)
ससुद्ध (केवल)
सस्कृत (पृ १४५)
सस्तव (पृ १४५)
सहर्ष (पृ १४५)
सहित (रहस्स)
सकर्मवीरिय (पृ १४५)
सकल (केवल)

सकल (पृ १४५)
सकारण (सअट्ठ)
सकिरिय (पावय)
सक्क (इव)
सक्क (पृ १४५)
सक्क (पृ १४६)
सक्कत (ववित)
सक्कार (पृ १४६)
सक्कारिय (अच्चिय)
सक्कारेइ (आढाइ)
सक्केइ (चाएति)
सक्त (पृ १४६)
सग्गुण (सुसील)
सचित्त (अणाइलभाव)
सचेतन (अणतरिय)
सच्च (पृ १४६)
सज्जइ (पृ १४६)
सज्जिय (पृ १४६)
सडइ (पृ १४६)
सडण (पृ १४६)
सढ (अलिय)
सढया (कवड)
सण्णवणा (आघवणा)
सण्णा (अभिणिबोहिय)
सण्णा (मइ)
सण्णा (तक्क)
सण्णा (पृ १४६)
सण्णिचय (सण्णिहि)
सण्णिरुद्ध (रहस्स)
सण्णिहि (पृ १४७)
सण्ह (अच्छ)
सतपत्त (पउम)
सतेरक (काहापण)
सत्त (पाण)
सत्त (जीवत्थिकाय)
सत्त (गिद्ध)
सत्ति (योग)
सत्ति (वीरिय)
सत्ति (जोग)
सत्ति (अहिंसा)
सत्तिय (सूर)
सत्थ (सुत्त)
सत्थिय (झिप्फर)
सत्व (जीव)
सत्सयमवद् (यत)
सदसद्विवेकविकल (बाल)
सद्द (कित्ति)
सद्दहइ (पृ १४७)
सद्दूल (तरच्छ)
सद्दूल (वीविय)
सद्दूल (पृ १४७)
सद्ध (साहसिक)
सद्धम (नियाग)
सद्धर्म (सर्वज्ञ)
सद्धाजणण (उववूह)
सनिमित्त (सअट्ठ)
सन्त्राण (पृ १४७)
सन्धि (पृ १४७)
सन्नतपास (पृ १४७)
सन्नद्ध (रहस्स)
सन्नद्ध (पृ १४७)
सन्नाह (संगाम)

सन्निकासिय (रहस्स)
सपज्जाय (पृ १४७)
सप्प (दुमपुप्फिया)
सप्पभ (सुक्किल)
सप्पभ (पृ १४७)
सप्पभ (सेत)
सप्फ (पदुम)
सबल (पृ १४७)
सबलीकरण (पडिसेवणा)
सब्भाव (धम्म)
सब्भाव (णिच्छय)
सब्भावदायणा (आलोयणा)
सब्भूय (सत)
सब्भूय (सच्च)
सभाव (धम्म)
सभिन्न (सकीर्ण)
सम (आगासत्थिकाय)
समत (सव्वओ)
समकरण (झोस)
समजोगि (समण)
समण (पृ १४८)
समण (पृ १४८)
समण (भिक्खु)
समण (उवसम)
समण (माहण)
समण (मुणि)
समतिच्छिय (अतिवत्त)
समत्त (समण)
समत्ताराहण (अहिसा)
समत्थ (हट्ठ)
समय (पृ १४८)
समय (धर्म)
समय (काल)
समया (सामायिक)
समर (पृ १४८)
समरवहिय (चट्ठ)
समवतरन्ति (समवयन्ति)
समवयन्ति ((पृ १४८)
समवाय (पिंड)
समागम (सघात)
समागम (पृ १४८)
समाणधम्मिय (पृ १४८)
समायारी (पकप्प)
समारभ (सरभ)
समारभइ (आरभइ)
समारम्भ (पाणवह)
समास (सखेव)
समाम (उस्सय)
समास (जूह)
समास (पृ १४९)
समास (ओह)
समास (ओघ)
समाहि (अहिसा)
ममाहिबहुल (पव्वइय)
समाहिबहुल (सजमबहुल)
समाहिमण (धम्ममण)
ममाहिय (समण)
समिइ (अहिसा)
समित (पृ १४९)
समित (वीर)
समिति (सघात)
समिद्धि (अहिसा)

समिध	(अग्गंतक)
समिय	(उवसंत)
समिय	(विरत)
समिय	(दतप्प)
समिरीय	(सप्पभ)
समीप	(अंतिक)
समीरिइय	(सप्पभ)
समुच्छ्रित	(उदग्र)
समुदाण	(कम्म)
समुदाय	(समूह)
समुदाय	(सहर्ष)
समुसरण	(पिंड)
समुस्सय	(काय)
समुस्सय	(पृ १४६)
समूह	(पृ १४६)
समूह	(पिंड)
समूह	(गण)
समृद्ध	(खात)
समृद्धीभवन	(नन्दन)
समेर	(सुसील)
समोसरण	(पिंड)
सम्पूर्ण	(अशेष)
सम्मज्जित	(ण्हात)
सम्मत्त	(सामायिक)
सम्मद्दित	(अतिवत्त)
सम्मय	(थेज्ज)
सम्माण	(सक्कार)
सम्माणकामय	(पूयणट्ठि)
सम्माणिय	(अच्चिय)
सम्माणेइ	(आढाइ)
सम्मावाय	(विट्ठिवाय)
सम्मिलन्ति	(समवयन्ति)
सम्मोइ	(मित्ति)
सम्मोइ	(समागम)
सम्मोइ	(संधि)
सम्यग्दर्शन	(धर्म)
सयपभ	(मदर)
सयमु	(जीवत्थिकाय)
सयमु	(पितामह)
सयक्कतु	(सक्क)
सयण	(मित्त)
सयपत्त	(उप्पल)
सयय	(पृ १४६)
सया जय	(विरत)
सरक	(तट्टक)
सरग	(तट्टक)
सरण	(भत्रण)
सरण	(अहिंसा)
सरभ	(पृ १४६)
सरस्सती	(वक्क)
सरिस	(उवम्म)
सरीर	(काय)
सरोज	(कमल)
सर्व	(अशेष)
सर्व	(पृ १४६)
सर्वज्ञ	(आप्त)
सर्वज्ञु	(पृ १४६)
सलाघण	(उववूह)
सलोल	(चचल)
सल्ल	(कम्म)
सल्लुद्धरण	(आलोयणा)
सवण	(उग्गह)

सवितृ (आदित्य)
सव्व (पृ १४९)
सव्वओ (पृ १४९)
सव्वकाल (सयय)
सव्वजीवसुहावह (दिट्ठिवाय)
सव्वजीवसुहावहा (ईसिपब्भारपुढवी)
सव्वण्णु (अरह)
सव्वदरिसि (अरह)
सव्वदुक्खप्पहीण (सिद्ध)
सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग (सिद्धिमग्ग)
सव्वदुक्खाणमंत करेइ (सिज्झइ)
सव्वपाणसुहावह (दिट्ठिवाय)
सव्वपाणसुहावहा (ईसिपब्भारपुढवी)
सव्वभावदरिसि (अरह)
सव्वभूतसुहावह (दिट्ठिवाय)
सव्वभूयसुहावहा (ईसिपब्भारपुढवी)
सव्वरी (रयणी)
सव्वसत्तसुहावह (दिट्ठिवाय)
सव्वसत्तसुहावहा (ईसिपब्भारपुढवी)
ससंभम (पृ १४९)
ससरीरि (जीवत्थिकाय)
ससि (चंद)
सस्सत (थिर)
सस्सत (अचल)
सस्सवापत्ति (अपातय)
सस्सिरीय (ओराल)
सहइ (पृ १५०)
सहति (खमिति)
सहति (तितिक्खति)
सहति (खमति)
सहय (सक्क)
सहस्सक्ख (सक्क)
सहस्सक्ख (इंद)
सहस्सपत्त (उप्पल)
सहस्सपत्त (पदुम)
सहा (नायय)
सहा (मित्त)
सहाव (धम्म)
सहित (उवसंत)
सहित (वीर)
सहित (वीर)
सहिय (विरत)
सही (मित्त)
सहेउ (सअट्ठ)
साइ (उक्कंचण)
साइम (असण)
सागय (पृ १५०)
सागारिक (पृ १५०)
सागारिय (पृ १५०)
साठ्य (माया)
साडणा (उस्सग्ग)
साणधण (चंडाल)
सात (पृ १५०)
साति (अलिय)
सातिजोग (माया)
सातिजोग (मोहणिज्जकम्म)
सातिजोगकरण (उवधि)
साधन (गुण)

साधु	(पृ १५०)	सावणमास	(उउमास)
साधु	(अनगार)	सावद्ययोगनिवृत्ति	(विरमण)
साधु	(सयत)	सावनमवत्सर	(ऋतुसवत्सर)
साध्यते	(पृ १५०)	सावित	(आरित)
साध्यते	(अर्यते)	सासण	(सुत्त)
साम	(आगासत्थिकाय)	सासत	(णितिय)
सामत्थ	(जोग)	सासय	(धुव)
सामत्थ	(वीरिय)	साहण	(कारण)
सामत्थ	(योग)	साहति	(चाएति)
सामाइय	(सजम)	साहम्मिय	(समाणधम्मिय)
सामाचारी	(मेरा)	साहरण	(पृ १५१)
सामान्य	(ओघ)	साहस	(खद्ध)
सामायिक	(पृ १५०)	साहसिक	(पृ १५१)
सामि	(इस्सर)	साहसिय	(पाव)
सामिक	(णरिंद)	साहा	(पृ १५१)
सामिणी	(पत्ति)	साहा	(अग)
सामित्त	(आहेवच्च)	साहा	(साला)
साय	(णिव्वाण)	साहु	(तवस्सि)
सायण	(पृ १५१)	साहु	(भिक्खु)
सार	(कयार)	साहुकड	(सुकड)
सारक्खमाण	(पृ १५१)	साहुली	(साहा)
सारभड	(आरभड)	सिगक	(वच्छक)
सारित	(आरित)	सिगक	(बालक)
साला	(पृ १५१)	सिंगबेर	(पृ १५१)
सालिका	(णावा)	सिंगिका	(दारिया)
सावग	(वुड्ढ)	सिंचति	(उच्छोलेंति)
सावज्ज	(पावय)	सिंवितान्नित	(भग्ग)
सावज्ज	(अणायतण)	सिक्ख	(पृ १५१)
सावज्ज	(कलुस)	सिक्खावित्तए	(मुडावित्तए)
सावज्जकड	(आरभकड)	सिक्खाविय	(पव्वाविय)
सावज्जमणुट्ठित	(दुक्कड)	सिक्खिय	(पृ १५१)

सिखड	(पृ १५१)	सिलोच्चय	(णग)
सिग्घ	(पृ १५१)	सिलोच्चय	(मंदर)
सिग्घ	(उक्किट्ठ)	सिव	(खेम)
सिंघाडय	(राहु)	सिव	(सामायिक)
सिज्झइ	(पृ १५२)	सिव	(ओराल)
सिणाण	(पृ १५२)	सिव	(इट्ठ)
सिणावेंति	(उच्छोलेंति)	सिव	(अहिंसा)
सिण्ह	(पृ १५२)	सिवणाम	(धुवक)
सिद्ध	(पृ १५२)	सिव्वण	(परिकम्मण)
सिद्ध	(पृ १५२)	सिस्स	(दास)
सिद्धउपपत्ति	(पृ १५२)	सिहर	(चूला)
सिद्धत	(सुत्त)	सिहरि	(णग)
सिद्धत्थ	(पृ १५३)	सीईभूय	(पृ १५३)
सिद्धत्थ	(पृ १५३)	सीईभूय	(णिव्वाण)
सिद्धदरिसि	(णिकम्मदरिसि)	सीउक	(तिरीड)
सिद्धान्त	(दर्शन)	सीत	(पृ १५३)
सिद्धालय	(ईसिपब्भारपुढवी)	सीतल	(णगुमक)
सिद्धावास	(अहिंसा)	मीतल	(सीत)
सिद्धि	(ईसिपब्भारपुढवी)	सीमतक	(सिखड)
सिद्धिगत	(पृ १५३)	सीमतिका	(पाली)
सिद्धिमग्ग	(पृ १५३)	सीमा	(पृ १५३)
सिबिका	(थिल्ली)	सीमा	(वेला)
सिरिकठ	(मयूर)	सीमा	(विहि)
मिरिकसग	(तट्टक)	सील	(अहिंसा)
मिरिकुड	(तट्टक)	सीलपरिघर	(अहिंसा)
मिला	(सेज्जा)	सीलमत	(पृ १५३)
सिलातल	(डिप्फर)	सीस	(णिडाल)
मिलापट्ट	(पासाण)	सीस	(सिखड)
सिलिट्ठीकय	(गाढीकय)	सीस	(सिक्ख)
सिलुच्चय	(मवर)	सीह	(तरच्छ)
सिलोग	(कित्ति)	सीह	(उक्किट्ठ)

सीह (वोविय)
सीह (सब्बूल)
सीहभडक (तिरीड)
सुंठी (सिंगबेर)
सुदरपास (सन्नतपास)
सुकड (पृ १५३)
सुकहिय (सुभासिय)
सुक्क (कयार)
सुक्क (पृ १५४)
सुक्कल (णिम्मसक)
सुक्किल (पृ १५४)
सुक्ख (अतिवत्त)
सुक्ख (गोक्खर)
सुख (सात)
सुखवर्धन (शुभवृद्धि)
सुगंधिय (उप्पल)
सुचिम (सेत)
सुजातपास (सन्नतपास)
सुजाया (जबू)
सुट्ठुकड (सुकड)
सुणिक्खत (सुविवेग)
सुत (अत्तय)
सुत (आणा)
सुति (अहिंसा)
सुत्त (पृ १५४)
सुत्त (तत)
सुत्त (ववहार)
सुत्त (पवयण)
सुत्थित (धुवक)
सुदसण (मदर)
सुदसणा (जबू)
सुदर्शन (मंदर)
सुदिट्ठ (सुभासिय)
सुद्ध (पृ १५४)
सुद्ध (केवल)
सुद्ध (अणासव)
सुद्ध (विमल)
सुद्ध (सेत)
सुद्धभावि (सिद्धत्थ)
सुपतिट्ठक (तट्टक)
सुपन्नत्त (पवेइय)
सुपव्वज्जा (सुविवेग)
सुपुरिस (णरिंद)
सुप्पबुद्धा (जबू)
सुबुद्धिक (पृ १५४)
सुबुद्धिमत (सुबुद्धिक)
सुभ (इट्ठ)
सुभ (पृ १५४)
सुभग (सिद्धत्थ)
सुभग (सोम)
सुभग (गड्डिक)
सुभग (उप्पल)
सुभत्ता (इट्ठत्ता)
सुभद्दा (जबू)
सुभासिय (पृ १५४)
सुभिक्ख (धाय)
सुभिक्ख (खेम)
सुमण (पुप्फ)
सुमण (मुदित)
सुमण (समण)
सुमणा (जबू)
सुयग (अहिंसा)

सुयक्खाय	(पवेइय)	सुहमण	(धम्ममण)
सुयधम्म	(पवयण)	सुय	(विट्ठ)
सुर	(देव)	सुय	(सुत्त)
सुरगिरि	(मदर)	सुहि	(नायय)
सुरसद्म	(स्वर्)	सुहित	(णिव्वुत)
सुरा	(पृ १५४)	सुहिय	(मित्त)
सुरिंद	(सक्क)	सुहुम	(खुड्डलक)
सुरूव	(कत)	सुहुम	(पुप्फ)
सुरूव	(सोम)	सूइभूय	(अप्पडिबद्ध)
सुविवेग	(पृ १५४)	सूचीका	(कडग)
सुविहिय	(सामायिक)	सूयते	(उप्पज्जते)
सुव्वत्त	(उब्भिण्ण)	सूर	(वीर)
सुव्वय	(सुभासिय)	सूर	(पृ १५५)
सुव्वय	(सुसील)	सूर	(साहसिक)
सुश्लिष्ट	(आलीन)	सूर	(धीर)
सुश्लिष्ट	(सुसहत)	सूरलेस्सा	(पृ १५५)
सुसहत	(पृ १५५)	सूरियावत्त	(मदर)
सुसमाहित	(सयत)	सूरियावरण	(मदर)
सुसागय	(सागय)	सेज्जस	(सिद्धत्थ)
सुसाणवित्ति	(चडाल)	सेज्जा	(पृ १५५)
सुसील	(पृ १५५)	सेज्जा	(उवसग)
सुसुइभूय	(ण्हाय)	सेज्जातर	(सागारिय)
सुसुणाग	(अलस)	सेज्जादाता	(सागारिय)
सुह	(सामायिक)	सेज्जाधर	(सागारिय)
सुह	(हिय)	सेज्जायर	(सागारिय)
सुह	(णिव्वाण)	सेत	(पृ १५५)
सुह	(सात)	सेतु	(वेला)
सुहकामग	(हियकामग)	सेय	(पडुर)
सुहत	(धुवक)	सेय	(रुइय)
सुहभागि	(अड्ढ)	सेल	(णग)
सुहभागि	(सिद्धत्थ)	सेल	(पासाण)

सेवणाधिकार (अवम)
सेवना (भजना)
सेवा (भक्ति)
सेवित (समित)
सेसवती (पृ १५५)
सेह (सिक्ख)
सेहाविय (पव्वाविय)
सोऊण (पृ १५५)
सोकत्त (दीण)
सोगंधिय (उप्पल)
सोगपाग (अरति)
सोच्चाण (सोऊण)
सोभत (पृ १५५)
सोभत (कत)
सोभण (भद्दग)
सोभते (दिप्पते)
सोभेइ (फासेइ)
सोम (समण)
सोम (चंद)
सोम (पृ १५५)
सोमणसा (जंबू)
सोमपा (समण)
सोमपाइ (समण)
सोयइ (दुक्खइ)
सोयति (थणति)
सोयण (कंदण)
सोयण (दुक्खण)
सोयमाणी (रोयमाणी)
सोवाग (पाण)
सोवाग (चंडाल)
सोहण (कल्लाण)
सोहि (पृ १५६)
सोहि (पडिक्कमण)
सोहि (ववहार)
सोहि (आलोयणा)
सोहिय (फासिय)
सौकरिक (पृ १५६)
सौहार्द (घाट)
स्तब्ध (धूर्त)
स्तम्भ (माण)
स्तोक (मित)
स्तोक (ओह)
स्तौति (वन्दते)
स्थगित (सवरित)
स्थान (पृ १५६)
स्थान (पृ १५६)
स्थान (पृ १५६)
स्थान (भूमि)
स्थान (ओवास)
स्थान (आयतन)
स्थापना (पृ १५६)
स्थापना (निधान)
स्थित (निषण्ण)
स्थित (इत)
स्थित (गत)
स्थिति (पृ १५६)
स्थिति (जीत)
स्थिति (धर्म)
स्थिरस्वभाव (अचपल)
स्नातक (विशुद्ध)
स्निग्ध (अवदात)
स्निग्ध (श्लक्ष्ण)
स्नेह (राग)

स्नेह (लोभ)
स्पृशति (प्रत्येति)
स्पृष्ट (पृ १५६)
स्पर्शना (पृ १५६)
स्फटिक (आदर्श)
स्फटित (घुत)
स्फाटयति (ओसारेति)
स्मय (माण)
स्वप्रवचनप्रतिपन्न (समाणधम्मिय)
स्वभाव (धर्म)
स्वभाव (निसर्ग)
स्वभाव (रीत)
स्वर् (पृ १५६)
स्वरूप (णिच्छय)
स्वर्ग (स्वर्)
स्वामिन् (पति)
स्वेच्छाकल्पित (विकल्पित)
हतव्व (पृ १५६)
हता (पृ १५७)
हदोलक (अदोलति)
हक्कार (पृ १५७)
हट्ठ (पृ १५७)
हट्ठ (मुदित)
हट्ठचित्त (पृ १५७)
हण (पहर)
हणति (छिन्नति)
हणण (पव)
हणेज्ज (आओसेज्ज)
हत्थकलावग (केज्जूर)
हत्थखड्डुग (पृ १५७)
हत्थभडक (पृ १५७)

हत्थलहुत्तण (अदिण्णादाण)
हत्थिक (पृ १५७)
हत्या (पृ १५७)
हनन (हत्या)
हम्ममाण (आउज्जिज्जमाण)
हय (पृ १५७)
हयतेय (पृ १५७)
हरति (पृ १५८)
हरण (हार)
हरण-विप्पणास (अदिण्णादाण)
हरिएस (चडाल)
हरित (कण्ह)
हरिस (णदी)
हरिम (तुट्ठि)
हरिसवसविसप्पमाणहियय (हट्ठचित्त)
हर्ष (पृ १५८)
हल (लगल)
हवइ (भवति)
हसति (पृ १५८)
हसित (फुल्ल)
हस्सतराय (खुड्डतराय)
हापयति (पृ १५८)
हायति (उज्झीयति)
हार (पृ १५८)
हास (मुदित)
हाहाभूय (पृ १५८)
हिंदुय (जीवत्थिकाय)
हिंसति (आहणइ)
हिंसविहिंसा (पाणवह)
हिंसा (आकुट्टि)
हिंसा (घात)

हिड्डिम	(पृ १५८)	हीलिज्जमाणी	(पृ १५६)
हित	(णट्ठ)	हीलिय	(हसिय)
हितइच्छिता	(पत्ति)	हीलेति	(पृ १५६)
हिम	(सीत)	हुतवह	(अग्गि)
हिमकूट	(हिमानि)	हुतासिणसिहा	(पृ १५६)
हिमपटल	(हिमानि)	हेउ	(अत्थ)
हिमपुञ्ज	(हिमानि)	हेउगोवएस	(पृ १५६)
हिमानि	(पृ १५८)	हेउवाय	(विट्ठिवाय)
हिय	(पृ १५८)	हेतु	(मूल)
हिय	(अणुण्णा)	हेतु	(णिदसण)
हियकामग	(पृ १५६)	हेतु	(आय)
हिययगमणिज्ज	(इट्ठ)	हेतु	(निमित्त)
हिरी	(तितिक्खा)	हेतु	(नियाण)
हिल्लिरी	(तिसरा)	हेतु	(पृ १६०)
हीणस्सर	(पृ १५६)	हेतु	(आगम)
हीलणा	(पृ १५६)	हेय	(अगृहीतव्य)
हीलणा	(इखिणी)	ह्रियते	(हार)
		ह्री	(पृ १६०)

परिशिष्ट २

विशेष शब्द-विवरण

(प्रस्तुत परिशिष्ट मे जिन शब्दो के एकार्थक दिए गए हैं, उनको अनुक्रम से गहरे अक्षरो मे, तथा ब्रैकेट मे उन शब्दो का सस्कृत रूप दिया गया है, फिर एकार्थक अभिवचनो की व्याख्या दी गई है ।)

अंग (अङ्ग)

'अग' शब्द के १५ पर्याय शब्दो का उल्लेख यहा हुआ है[1]। ये सभी पर्याय समग्र वस्तु के छोटे-बडे अवयव हैं। कुछ शब्दो का विश्लेषण इस प्रकार है—

दसा—वस्त्र का किनारा ।

प्रदेश—स्कन्ध का एक भाग ।

शाखा—वृक्ष का अवयव ।

पर्व—इक्षु का खण्ड ।

पटल—कमल की पाखुडी ।

अंताहार (अन्ताहार)

जैन परम्परा मे भोजन-ग्रहण के आधार पर भिक्षुओ के अनेक प्रकार किये गये हैं। इनमे अर्थगत भेद होते हुए भी भोजन की सामान्य विवक्षा के आधार पर इनको एकार्थक माना गया है[2]—

अताहार—वल्ल, चने आदि सामान्य धान खाने वाला ।

पताहार—बचा-खुचा अथवा बासी भोजन करने वाला ।

रूक्षाहार—रूक्षभोजी ।

---

१. उशाटी प १४४ : पर्यायाभिधान च नानादेशविनेयानुग्रहार्थम् ।

२. औपटी पृ ७५ ।

तुच्छाहार—तुच्छ, अल्प या असारभोजी ।

अरसाहार—रसविहीन भोजन करने वाला ।

विरसाहार—विरस आहार करने वाला ।

अकम्मवीरिय (अकर्मवीर्य)

जैन दर्शन मे वीर्य/शक्ति के तीन प्रकार माने हैं—बालवीर्य, पडितवीर्य, बालपडितवीर्य । सूत्रकृताग चूर्णि मे अकर्मवीर्य और पडित-वीर्य को एकार्थक माना है । जो शक्ति कषाय और प्रमाद से सवलित नही होती, उससे कर्मबन्ध नही होता । वह अकर्मवीर्य/पडितवीर्य कहलाती है ।

अकुसल (अकुशल)

प्रश्न व्याकरण सूत्र मे 'अकुसल' शब्द के पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है । यहा ये शब्द भाषा-विवेक से विकल व्यक्ति के लिए प्रयुक्त है[1]—

अकुशल—कथ्य और अकथ्य का विवेक न करने वाला ।

अनार्य—पापकारी भाषा बोलने वाला ।

अलीकाज्ञा—पापकारी प्रवृत्तियो की आज्ञा देने वाला ।

अलीकधर्मनिरत—असत्य कथन मे सलग्न रहने वाला ।

अक्कोस (आक्रोश)

आक्रोश आदि शब्द क्रोध की विभिन्न अवस्थाओ के अर्थ मे समानार्थक है । इनका अर्थभेद इस प्रकार है[2]—

आक्रोश—कुपित होकर 'तू मर जा' ऐसे वचन बोलना ।

परुष—कठोर वचन कहना ।

खिसन—'तू चरित्रहीन है' ऐसे निंदावचन कहना ।

अपमान—नीच सम्बोधन से पुकारना ।

तर्जन—तर्जनी अगुली दिखाते हुए फटकारना ।

---

१. प्रटी प ४० ।

२ प्रटी प १६० ।

निर्भर्त्सन—'मेरी दृष्टि से दूर हो जा' इस प्रकार कहकर अपमान करना।

त्रासन—पीडादायक और भयोत्पादक शब्दोच्चारण करना।

उत्कूजित—अव्यक्त ध्वनि करना, क्रोध मे बडबडाना।

अक्कोह (अक्रोध)

ये तीनो शब्द क्रोध के अभाव के द्योतक हैं—

१ अक्रोध—प्रतिकूल परिस्थिति मे क्रोध आ जाने पर भी सन्तुलन न खोना।

२ निक्रोध—किसी भी स्थिति मे क्रोध न करना।

३ क्षीणक्रोध—क्रोध मोहनीय कर्म का क्षय हो जाना।

वृत्तिकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

अग्गि (अग्नि)

'अग्गि' शब्द के सभी पर्याय अग्नि के स्पष्ट वाचक हैं। सभी नाम उसकी भिन्न-भिन्न विशेषता के द्योतक है। कुछ शब्दो का वाच्यार्थ इस प्रकार है—

१. अग्नि—जो ऊर्ध्व गति करती है।[2]

२ जाततेज—जो प्रारम्भ से ही तेजस्वी हो।

३ हुतवह—हुत/हवन द्रव्य को वहन करने वाली।

४ ज्वलन—सबको जलाने वाली, ज्वलनशील।

५. पवन—पवित्र करने वाली।

अच्चिय (अर्चित)

'अच्चिय' आदि शब्द सम्मान व्यक्त करने के अर्थ मे समानार्थक हैं। उनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१ अर्चना—चदन, गध आदि द्रव्यो का लेप करना।

२ वदना—स्तुति करना।

३ पूजा—अक्षत आदि से पूजा करना।

---

१. औपटी पृ २०२ · एकार्था वैते शब्दाः।

२. अचि पृ २४५ . अगत्यूर्ध्वं याति अग्निः।

४ मान—उचित सम्मान देना ।

५ सत्कार—वस्त्र आदि देकर आदर करना ।

६. सम्मान—बहुमान देना, हार्दिक अनुराग व्यक्त करना ।

अज्झत्थिय (आध्यात्मिक)

ये सभी शब्द चिन्तन की क्रमिक अवस्थाओ के द्योतक हैं—

आध्यात्मिक—अध्यवसायगत चिंतन ।

चिंतित—विकल्पात्मक चिंतन ।

कल्पित—उभयरूप चिन्तन ।

प्रार्थित—अभिलाषात्मक चिन्तन ।

मनोगतसकल्प—वस्तु को प्राप्त करने का मानसिक सकल्प ।

इनमे अर्थभेद होते हुए भी टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

अणासव (अनास्रव)

'अणासव' आदि शब्द मुनि के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त है। इनकी अर्थपरम्परा इस प्रकार है[2]—

अनाश्रव—नवीन कर्मों के आस्रव से रहित ।

अकलुष—पाप रहित ।

अछिद्र
अपरिस्रावी } —कर्म जल आने वाले छिद्रो को रोकने वाला ।

असक्लिष्ट—चैतसिक क्लेश से मुक्त

शुद्ध—निर्दोष ।

इस प्रकार ये सभी शब्द विशुद्ध चेतना की क्रमिक अवस्थाओ के वाचक हैं ।

देखें—'सत' ।

अणुओग (अनुयोग)

अनुयोग का अर्थ है—व्याख्या पद्धति । किसी भी पदार्थ के सभी

---

१. विपाटी प ३८ . एतान्यप्येकार्थानि ।

२ प्रटी प ११३ ।

धर्मों पर विचार व व्याख्या करना अनुयोग है। इनके एकार्थक शब्दो का आशय इस प्रकार है—

१ नियोग—सूत्र के साथ अर्थ का निश्चित व अनुकूल योग करना।

२. भाषा—शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थमात्र कहना।

३ विभाषा—शब्द की विभिन्न पर्यायो के आधार पर अनेक अर्थ निरूपित करना।

४ वार्तिक—शब्द की समस्त पर्यायो के आधार पर अर्थ निरूपित करना।[1]

विशेषावश्यक भाष्य मे भाषा, विभाषा और वार्तिक को एक उदाहरण द्वारा समझाया गया है। वस्तुत ये सभी शब्द व्याख्या की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं। जैसे—एक व्यक्ति है। वह इतना मात्र जानता है कि रत्न है। दूसरा व्यक्ति उन रत्नो की जाति व मूल्य का ज्ञाता है और तीसरा व्यक्ति इसके साथ-साथ उन रत्नो के गुण-दोष भी जानता है। इस प्रकार भाषक प्रारम्भिक अवबोध देता है, विभाषक उसकी विशेष व्याख्या करता है और वार्तिककर उसकी सर्वांग व्याख्या प्रस्तुत करता है।[2]

अणुण्णा (अनुज्ञा)

अनुज्ञा का अर्थ है—आचार्य द्वारा अपने उत्तराधिकारी को गण का उत्तरदायित्व सौंपना। आचार्य कहते है—वत्स! मैं आज तुम्हे यह गण, शिष्य, वस्त्र, पात्र आदि सारी वस्तुए समर्पित करता हू। आज से तुम इनके स्वामी हो। गुरु का यह वचन-विशेष अनुज्ञा कहलाता है। अनुज्ञा के छह प्रकार निर्दिष्ट हैं—नाम अनुज्ञा, स्थापना अनुज्ञा, द्रव्य अनुज्ञा, क्षेत्र अनुज्ञा, काल अनुज्ञा और भाव अनुज्ञा।

अनुज्ञा के बीस एकार्थक/अभिवचन यहा सगृहीत हैं। व्याख्याकार स्वय इनके स्पष्टीकरण मे सदिग्ध है। उनका कहना है कि परम्परा के अभाव मे इन एकार्थ अभिवचनो का स्पष्ट अर्थ नही बताया जा सकता।[3]

---

१ नदीटी पृ १०२।

२. विभा १४२५।

३. अनुनदीटी पृ १७९ एतेषां च पदानामर्थ सम्प्रदायाभावान्नोच्यते।

अणुत्तर (अनुत्तर)

अणुत्तर से विशुद्ध तक के शब्द केवलज्ञान के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हैं। केवलज्ञान सपूर्ण ज्ञान है। वह विशुद्ध और अनन्त है। ये सभी शब्द उसकी विशेषताओ के द्योतक हैं।

अनुत्तर—सर्वोत्तम।

निर्व्याघात—बाधाओ से अप्रतिहत।

निरावरण—क्षायिक होने से आवरण रहित।

कृत्स्न—सकल ज्ञेय पदार्थों को जानने वाला।

प्रतिपूर्ण—जो अपने आप मे पूर्ण है।

वितिमिर—प्रकाश से युक्त।

विशुद्ध—निर्मल।[1]

इस प्रकार भावार्थ मे सभी शब्द उत्कृष्ट अर्थ को व्यक्त करते हैं।

अणुपविट्ठ (अनुप्रविष्ट)

अणुपविट्ठ के अन्तर्गत ६ पर्याय शब्दो का उल्लेख हुआ है। लगभग सभी शब्द आत्मलीन व्यक्ति के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त है। कुछ विशिष्ट शब्दो का अर्थबोध इस प्रकार है—

१ आलीन—कछुए की भाति सब ओर से सवृत, काय चेष्टा का निरोध करने वाला।

२ प्रलीन—विशेष रूप से सवृत अथवा आवश्यकता उपस्थित होने पर यतनापूर्वक शारीरिक प्रवृत्ति करने वाला।

३ आभ्यन्तरक—भीतर झाकने वाला।

अतिवत्त (अतिवर्त)

'अतिवत्त' शब्द के पर्याय मे २७ शब्द और १ धातु का उल्लेख है। अतिवत्त शब्द का अर्थ है—बीत जाना, पुराना होना और व्यर्थ होना। इसमे कुछ शब्द पुरानेपन के वाचक हैं जैसे—पुराण, मलित, जीर्ण इत्यादि। निष्फल, ओपुप्फ आदि शब्द व्यर्थता के बोधक हैं। कुछ शब्द समाप्ति के वाचक हैं, जैसे—निष्ठित, कृत, क्षीण, प्रहीण, अतीत

१. औपटी पृ १९५।

इत्यादि। इस प्रकार ये सारे शब्द क्षीणता की विभिन्न पर्यायो के वाचक हैं।

अदिण्णादाण (अदत्तादान)

प्रश्नव्याकरण सूत्र मे अदत्तादान के तीस पर्याय शब्दो का उल्लेख हुआ है। अदत्त का अर्थ है—चोरी। प्रस्तुत नामो की सूची मे चौरिक्य, परहृत, अदत्त, तस्करत्व, अपहार आदि शब्द इसके स्पष्ट वाचक हैं।

अदत्त ग्रहण मे मानव की आकाक्षा, गृद्धि आदि वृत्तिया कार्य करती है, अत कारण मे कार्य का उपचार कर अदत्तादान की प्रेरक वृत्तियो को भी अदत्तादान मान लिया गया है। जैसे—परलाभ, लौल्य, काक्षा, लालपन, प्रार्थना, इच्छा, मूर्च्छा, तृष्णा, गृद्धि, आदियणा आदि।

असयम, अप्रत्यय व अवपीड भी चोरी की ही फलश्रुति है, क्योकि असयमी व्यक्ति पदार्थ-प्रतिबद्धता के कारण चोरी करता है। जो चोरी करता है, वह अप्रत्यय—अविश्वास का कारण बनता है तथा जिसका धन चुराया जाता है, उसको पीडा होती है। इसलिए अप्रत्यय व अवपीड शब्द भी सार्थक है। आक्षेप, क्षेप और विक्षेप भी चोरी के ही वाचक हैं, क्योकि इनमे दूसरा के धन का प्रक्षेप होता है।

चोरी माया के बिना नही हो सकती, अत कूट, हस्तलघुत्व, निकृतिकर्म आदि शब्द भी इसके पर्याय है।

अधम्मत्थिकाय (अधर्मास्तिकाय)

यह लोकव्यापी अजीव द्रव्य है। अधर्म द्रव्य स्थिति/अवस्थिति का माध्यम है। यहा उल्लिखित दो अभिवचनो (अधर्म और अधर्मास्तिकाय) के अतिरिक्त शेष—प्राणातिपात अविरमण से काय-अगुप्ति तक के सारे शब्द अधर्म के द्योतक हैं। अधर्मास्तिकाय के अधर्म शब्द की सदृशता के कारण यहा उनको पर्यायवाची मान लिया गया है।

अबंभ (अब्रह्म)

प्रश्नव्याकरण सूत्र मे अब्रह्मचर्य के तीस एकार्थक बताए हैं। इनमे कुछ शब्द अब्रह्म की उत्पत्ति के साधन तथा कुछ शब्द उसकी परिणति के द्योतक हैं। मैथुन, ससर्गि, रति, कामगुण आदि शब्द उसके स्वरूप के वाचक हैं। इन शब्दो का अर्थबोध इस प्रकार है—

१ अब्रह्म—असत् प्रवृत्ति ।

२. मैथुन—स्त्री पुरुष का सयोग ।

३ चरत—सभी प्राणियो द्वारा अनुसृत ।

४ ससर्गि—स्त्री-पुरुष के ससर्ग से होने वाली प्रवृत्ति ।

५ सेवनाधिकार—अनेक अनर्थों मे प्रवृत्त करने वाला ।

६. सकल्प—विकल्प से उत्पन्न होने वाला ।

७ बाधन—सयम मे अवरोध उत्पन्न करने वाला ।

८ दर्प—शरीर की दृप्तता से उत्पन्न होने वाला ।

९ मोह—मूढता उत्पन्न करने वाला । वेदमोहनीय के उदय से होने वाला ।

१०. मन सक्षोभ—मानसिक क्षुब्धता पैदा करने वाला ।

११ अनिग्रह—मन को उच्छृखल करने वाला ।

१२ व्युद्ग्रह—दृष्टिकोण का विपर्यास करने वाला ।

१३ विघात—गुणो का घातक ।

१४. विभग—व्रतो को भग करने वाला ।

१५ विभ्रम—भ्रान्ति पैदा करने वाला ।

१६ १७ अधर्म, अशीलता—चरित्र के विपरीत प्रस्थान कराने वाला ।

१८ ग्राम्यधर्मतप्ति—इन्द्रिय विषयो के उपभोग तथा रक्षण मे सदा आकुल व्याकुल रहने के लिए बाध्य करने वाला ।

१९ रति—कामक्रीडा का प्रेरक ।

२० राग—अनुरक्ति बढाने वाला ।

२१ कामभोगमार—कामभोगो के आसेवन से मृत्यु तक पहुचाने वाला ।

२२ वैर—शत्रुता का हेतु ।

२३ रहस्य—एकान्त मे आचरणीय ।

२४ गुह्य—गोपनीय ।

२५. बहुमान—अधिक व्यक्तियो द्वारा अनुमत ।

२६. ब्रह्मचर्यविघ्न—अब्रह्म-विरति मे बाधा उपस्थित करने वाला ।

२७ व्यापत्ति—गुणो का नाशक ।

२८. विराधना—सद्‌गुणो का नाशक ।

२६ प्रसग—आसक्ति का उत्पादक ।

३० कामगुण—कामदेव की प्रवृत्ति का बोधक ।[1]

अब्भहियतर (अभ्यधिकतर)

इनमे प्रथम दो 'अभ्यधिकतर' और 'विपुलतर' ये वस्तु की लंबाई और गहराई की दृष्टि से पूरिपूर्णता/अत्यधिकता के द्योतक हैं। शेष दो शब्द 'विशुद्धतर' और 'वितिमिरतर' ये भाव विशुद्धि की दृष्टि से परिपूर्णता के द्योतक है। भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक होने पर भी ये एकार्थक है।[2]

अरंजर (अलजर)

अरजर शब्द के पर्याय मे १२ शब्दो का उल्लेख है। ये सभी विभिन्न आकृति वाले घडो की भिन्न-भिन्न जातियो के वाचक हैं। ये सभी मिट्टी से निर्मित होने के कारण, उपादान की समानता से एकार्थक माने गए है। कुछेक शब्दो की पहचान इस प्रकार है—

कुडग—कुड के आधार का घडा।

घटक—छोटा घडा।

कलश—बडा घडा।

वारक—लघु कलश, सुराही।

अरजर—पानी भरने का बडा बर्तन।

उपासक दशा ७/७ मे करक, वारक, घट, अलिजर आदि अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तनो का उल्लेख मिलता है।

अरह (अर्हत्)

आगमो मे अनेक स्थलो पर 'अरह' शब्द के साथ प्रसगोपात्त उसके पर्याय शब्दो का उल्लेख मिलता है। पच परमेष्ठी मे अरिहन्तो का

---

१. प्रटी प ४३-४४।

२. नदीटी पृ ३६ अथवैकार्थिका एवैते शब्दा नानादेशजाना विनेयानां कस्यचित् कश्चित् प्रसिद्धो भवतीत्युपन्यस्ता।

प्रथम स्थान है। यद्यपि ये सभी शब्द अर्हद्/केवली के द्योतक हैं, लेकिन समभिरूढ नय की दृष्टि से इनकी व्याख्या अलग-अलग की जा सकती है।

१ अर्हत्—अध्यात्म की उच्च भूमिका को प्राप्त।

२ जिन—कर्म शत्रु को जीतने वाले।

३. केवली—केवल/सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वाले।

४ सर्वज्ञ—भूत, भविष्य और वर्तमान के सभी विषयो के ज्ञाता, त्रिकालज्ञ।

५ सर्वदर्शी—त्रिकालदर्शी, अथवा सब प्राणियो को आत्मवत् देखने वाले।

६ जात—निसर्गत शुद्ध।[1]

अरि (अरिन्)

अरि का अर्थ है—शत्रु। कार्यभेद से इन सभी शब्दो का अर्थ-भेद इस प्रकार है[2]—

१ अरि—शत्रु।

२ वैरी—जातिगत वैरी, जैसे—सर्प और नकुल।

३ घातक—किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा अपने शत्रु को मरवाने वाला।

४ वधक—स्वय मारने वाला।

५ प्रत्यमित्र—जो पहले मित्र होकर कारणवश फिर अमित्र/शत्रु बन जाये।

इस प्रकार ये सभी शब्द शत्रुता की उत्पत्ति मे साधक अथवा शत्रु के प्रकारो के द्योतक है।

अलिय (अलीक)

अलीक का अर्थ है—असत्य। यहा इसके तीस अभिवचन दिये गये हैं। वे असत्य की विभिन्न अवस्थाओ और फलश्रुतियो के द्योतक है। अनेक शब्द असत्य के हेतु बनते है जैसे नूम (माया) आदि। यहा

---

१ अनुद्वामटी प १०७।

२. जबूटी प १२३।

कारण मे कार्य का उपचार कर उन्हें भी अलीकवाची शब्द मान लिया गया है। उनके अर्थबोध से यह सब स्पष्ट हो जाता है—

१. शठ—मायावी व्यक्ति का कार्य।

२ अनार्य—अनार्य वचन।

३ मायामृषा—माया और मृषा से अनुगत असत्य वचन।

४ असत्क—अयथार्थ का वाचक।

५ कूट-कपट-अवस्तु—असत्य वचन मे सत्य का अपलाप, भाषा का विपर्यय और अभिधेय का अप्रतिपादन।

६ निरर्थक-अपार्थ—अर्थहीन वचन।

७ विद्वेषगर्हणीय—सज्जन व्यक्तियो द्वारा गर्हणीय।

८ अनृजुक—वक्र वचन।

९-१० कल्कना, वञ्चना—माया युक्त व पापकारी वचन।

११ मिथ्यापश्चात् कृत—मिथ्या होने के कारण अनाश्रयणीय।

१२ साति—असत्य वचन अविश्वास का कारण बनता है।

१३ अपछन्न—अपने दोषो तथा दूसरो के गुणो को ढकना।

१४ उत्कूल—सन्मार्ग से च्युत करनेवाला (उन्मार्ग की ओर ले जाने वाला)।

१५. आर्त्त—पीडित व्यक्ति द्वारा आश्रित।

१६ अभ्याख्यान—झूठा आरोप।

१७ किल्विष—पाप का हेतु।

१८ वलय—वक्रता का उत्पादक।

१९. गहन—सघन वचन जाल।

२० मन्मन—मेमने की भाति अस्पष्ट भाषण।

२१ नूम—माया युक्त वचन।

२२. निकृति—माया को छिपाना।

२३. अप्रत्यय—अविश्वसनीय भाषण।

२४ असमय—असम्यक् आचरण ।

२५ असत्यसधान—असत्य की परम्परा को चलाना ।

२७. विपक्ष—सत्य और सुकृत का विपक्षी ।

२७ अपधीक—निंद्य बुद्धि से उत्पन्न ।

२८ उपधि-अशुद्ध—माया से सावद्य भाषण ।

२९ अपलोप—यथार्थ को छिपाने वाली वाणी ।

इस प्रकार ये सारे अभिवचन असत्य के उत्पादक, पोषक और असद् मार्ग के प्रतिष्ठापक हैं ।

अवाय (अवाय)

'अवाय' जैन ज्ञानमीमासा का पारिभाषिक शब्द है । मतिज्ञान के चार भेदो मे इसका तीसरा स्थान है । किसी भी पदार्थ के बारे मे निश्चयात्मक ज्ञान अवाय है ।

नदीसूत्र मे प्रयुक्त 'आवट्टण' आदि शब्द अवाय के एकार्थक माने गए हैं । अभिधान की भिन्नता से वे भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं ।[1] जैसे—

१ आवर्तन—निश्चित किये हुए अर्थ का आवर्तन करना ।

२ प्रत्यावर्तन—उसका बार बार प्रत्यावर्तन करना, पुनरावृत्ति करना ।

३ अवाय—उस अर्थ को भली भाति जानना ।

४ बुद्धि—उसी अर्थ को और अधिक स्पष्टता से जानना ।

५ विज्ञान—उस अर्थ को दृढता से जानना ।

उमास्वाति ने इसके निम्न पर्याय शब्दो का उल्लेख किया है—अपगम, अपनोद, अपव्याध, अपेत, अपगत, अपविद्ध, अपनुत इत्यादि ।[2] ये शब्द निषेधात्मक है ।

अविराय (अविलीन)

'अविराय' का सस्कृत रूप अविलीन होता है । वि पूर्वक लीङ्च—

---

१. नदीचू पृ ३६ अवायसामण्णतो णियमा एगट्ठिता चेव, अभिधान-भिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था ।

२ त० भा० १।१५ ।

श्लेषणे धातु को विरा आदेश होता है। हेमचन्द का प्राकृत व्याकरण (४।५६) मे पविराय और पविलीण इन दोनो को एकार्थक माना है। अविध्वस्त इस अर्थ मे स्पष्ट ही है।

असण (अशन)

अशन, पान, खादिम, स्वादिम आदि शब्द स्पष्ट रूप से अलग अलग अर्थ के वाचक हैं, किन्तु आहार से सम्बन्धित होने से टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

अहासुत्त (यथासूत्र)

यथासूत्र आदि सभी शब्द व्रत-पालन की विशिष्ट अवस्था के द्योतक है। व्रत-पालन मे भावो की निर्मलता, विधि का अनुसरण तथा काल-मर्यादा का परिपालन आवश्यक होता है। ये शब्द इसीकी ओर सकेत करते हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१ यथासूत्र —सूत्र के अनुसार।

२ यथाकल्प—प्रतिमा आदि व्रत की आचार सहिता के अनुसार।

३ यथामार्ग—ज्ञानादि मोक्ष मार्ग का अतिक्रमण न करना अथवा क्षायोपशमिक आदि भावो का अतिक्रमण न करना।

४ यथातथ्य—स्वीकृत व्रत का व्रत-भावना के अनुसार पालन।

५ यथासम्यक्—अतिचार रहित समभावना से पालन।[2]

अहिंसा (अहिंसा)

अहिंसा के साठ नामो का उल्लेख प्रश्न व्याकरण सूत्र मे मिलता है। अहिंसा मूल धर्म है। उसके अगभूत अनेक गुण हैं जैसे—विरति, दया, विमुक्ति, क्षान्ति, समता, धृति, स्थिति, नन्दा, भद्रा, कल्याण, मगल, रक्षा, अनाश्रव, समिति, शील, सयम, सवर, गुप्ति, यतना, विश्वास अभय आदि। ये सारे अहिंसा के वाचक हैं। अहिंसा के अभाव मे इनका कोई मूल्य नही है। अहिंसा है तो ये हैं, अहिंसा नही हैं तो

१. प्रसाटी प ५१ : परमार्थत एकार्थिका एवैते शब्दा इति भेदकल्पनसयुक्तं, एवं समयभणितनिरुक्तविधिनाऽप्येकार्थत्वमेवैषामिति।

२. उपाटी पृ ७३।

इनके अस्तित्व का आभास मात्र है। इसी प्रकार अन्यान्य पर्याय भी अहिंसा के ही सपोषक या सरक्षक तत्त्व हैं। कुछेक शब्दो की व्याख्या इस प्रकार है—

१ गति—अहिंसा सम्पदाओ की जननी है। कल्याण के इच्छुक व्यक्ति इसका आश्रय लेते है, इसलिए यह गति है।

२ प्रतिष्ठा—यह समस्त गुणो की प्रतिष्ठा—आधारभूमि है।

३ निर्वाण—यह मोक्ष की हेतु है।

४ निर्वृति—यह स्वास्थ्य की हेतुभूत है।

५. शक्ति—यह अन्यान्य शक्तियो की प्राण-प्रतिष्ठा करती है।

६ श्रुताग—श्रुतज्ञान से निष्पन्न होने से श्रुताग है।

७ क्षान्ति—क्षान्ति की उत्पत्ति मे हेतुभूत।

८ सम्यक्त्वाराधना—जो सम्यक्त्व मे प्रतिष्ठित है।

९ बृहती – सभी धर्मानुष्ठानो मे प्रधान।

१० बोधि—बोधि का अर्थ है—सर्वज्ञ धर्म की प्राप्ति। सर्वज्ञ धर्म अहिंसा प्रधान होता है।

११ बुद्धि—अहिंसा बुद्धि को निर्मल बनाती है, सफल बनाती है, इसलिए अहिंसा बुद्धि है।

१२ धृति—अहिंसा धृति—चित्त की स्थिरता पैदा करती है।

१३ स्थिति—मुक्त स्थिति की प्रापक होने से स्थिति।

१४ पुष्टि—पुण्य का उपचय करने वाली।

१५ नन्दा—समृद्धि की ओर ले जाने वाली।

१६ भद्रा—कल्याणकारी।

१७ विशिष्टदृष्टि—जैनधर्म के विशिष्ट दर्शन की जननी।

१८ प्रमोद—प्रमोद भावना को बढाने वाली।

१९ समिति—सम्यक् प्रवृत्ति होने से समिति।

२० शीलपरिगृह—चरित्र का स्थान।

२१ व्यवसाय—विशिष्ट अध्यवसाय की कारण भूत।

२२. यज्ञ—अहिंसा भावदेवपूजा है।

२३ यजन—अभयदान की प्रेरक।

२४ आश्वास—प्राणियो मे विश्वास उत्पन्न करने वाली।

२५ अमाघात—किसी भी प्राणी को न मारने का सकल्प।

२६ विमल—पवित्रता की प्रेरक।

२७ प्रभासा—दीप्ति की जननी।

२८ निर्मलतर—प्राणी को विशेष निर्मल बनाने वाली, स्वय अत्यन्त निर्मल।

आइण्ण (आकीर्ण)

'आइण्ण' आदि शब्द जन-समवसरण के बोधक है। ये शब्द एकत्रित होने वाले देव या मनुष्यो की विभिन्न अवस्थाओ के वाचक है—

१ आकीर्ण—एकत्रित होकर फैल जाना।

२ विकीर्ण—अपनी सीमा से बाहर जाकर एकत्रित होना।

३ उपस्तीर्ण—क्रीडा करते हुए एक दूसरे को आच्छादित कर रहना।

४ सस्तीर्ण—परस्पर सश्लेष करना।

५ स्पृष्ट—आसन, शयन, रमण, परिभोग के द्वारा सश्लिष्ट होना।

यद्यपि ये शब्द देवक्रीडा के प्रसग मे आये हैं और देव समूह के विभिन्न अगो के अभिवाचक है, फिर भी समूहगत मन स्थिति के द्योतक हैं।[1]

आउडिज्जमाण (आकुट्यमान)

'आउडिज्जमाण' आदि सभी शब्द पीडा देने की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। कुछ शब्द वाचिक रूप से पीडा देने का बोध कराते हैं, जैसे—तर्जना, ताडना आदि। कुछ शब्द शारीरिक रूप से दुख देने के वाचक हैं, जैसे—परितापन, उपद्रवण इत्यादि।

---

१. भटी प १५५ : आइन्नमित्यादयः एकार्था अत्यन्तव्याप्तिदर्शनाय।

आओसणा (आक्रोशना)

'आओसण' आदि शब्द आक्रोश व्यक्त करने की विभिन्न अवस्थओं के द्योतक हैं[1]—

१ आक्रोश—क्रोध करना।

२ निर्भर्त्सन—भर्त्सना करना।

३ उद्धसण—अपमानित करना।

आगासत्थिकाय (आकाशास्तिकाय)

आकाश के अभिवचन/पर्यायवाची नाम २७ हैं। व्युत्पत्तिगत भिन्नता भगवती टीका मे उल्लिखित है।

१ आकाश—जिसमे सभी पदार्थ अपने अपने स्वरूप मे प्रकाशित होते है।

२ गगन—अबाधित गमन का कारण।

३. नभ—शून्य होने से जो दीप्त नही होता।

४ सम—जो एकाकार है, विषम नही है।

५ विषम—जिसका पार पाना दुष्कर है।

६ खह—भूमि को खोदने से अस्तित्व मे आने वाला।

७ विध—जिसमे क्रियाए की जाती हैं।

८ वीचि—विविक्त स्वभाव वाला।

९ विवर—आवरण न होने के कारण विवर।

१० अम्बर—माता की भाति जनन सामर्थ्य से युक्त पानी का दान करने वाला।

११ अबरस—जल को धारण करने वाला।

१२ छिद्र—छेदन से उत्पन्न होने वाला।

१३ झुषिर—पोलाल—रिक्तता को प्रस्तुत करने वाला।

१४ मार्ग—गमन करने का मार्ग।

१५ विमुख—प्रारम्भिक बिन्दु के अभाव के कारण विमुख।

---

१. निरटी पृ १२ : एते समानार्था।

१६. अर्द्—जिससे गति की जाती है।

१७ आधार—आधार देने वाला।

१८. व्योम—जिसमे विशेष रूप से गमन किया जाता है।

१६. भाजन—समस्त विश्व का आश्रयभूत।

२० अतरिक्ष—जिसके बीच (नक्षत्र आदि) देखे जाते हैं।

२१ श्याम—नीला होने के कारण श्याम।

२२ अवकाशान्तर—दो अवकाशो के बीच होने वाला।

२३. अगम—जो स्थिर है, गमन क्रिया से रहित है।

२४. स्फटिक—स्फटिक की भाति स्वच्छ।

२५. अनन्त—अन्त रहित।[1]

आघविय (आख्यापित)

'आघविय' आदि शब्द कथन की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। इनका विशेष अर्थ इस प्रकार है—

१ आख्यापित—सामान्य कथन।

२ प्रज्ञापित—भेदप्रभेद सहित कथन।

३ प्ररूपित—सदर्भ सहित कथन।

४ दर्शित—उपमा सहित व्याख्यान।

५ निर्दशित—हेतु, दृष्टान्त आदि के माध्यम से कथन।

६ उपदर्शित—उपनय, निगमन पूर्वक कथन, मतान्तर का कथन।

आणा (आज्ञा)

आज्ञा शब्द कई अर्थों मे प्रयुक्त होता है। जैसे—आदेश देना, उपदेश देना इत्यादि। इसके अतिरिक्त जैन आगमो मे वीतराग व्यक्ति के उपदेश के अर्थ मे भी आज्ञा शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी दृष्टि से आज्ञा को ज्ञान और श्रुत भी कहा जा सकता है। जिसके द्वारा जाना जाता है, वह आगम भी आज्ञा का पर्याय है।

---

१. भटी पृ १४३१।

आभिणिबोहिय (आभिनिबोधिक)

आभिनिबोधिक शब्द मतिज्ञान का पर्याय है। इसके पर्याय शब्दो मे कुछ-कुछ भेद है, लेकिन समष्टि रूप मे सभी मतिज्ञान के वाचक हैं।[1]

१ ईहा—वस्तु को जानने की चेष्टा।

२ अपोह—ज्ञान का निश्चय।

३ विमर्श—चिन्तन करना। यह ईहा और अवाय की मध्यवर्ती अवस्था है।

४ मार्गणा—अन्वय धर्म की खोज करना।

५ गवेषणा—व्यतिरेक धर्म की आलोचना।

६ सज्ञा—व्यञ्जनावग्रह के पश्चात् होने वाली बुद्धि।

७ स्मृति—पूर्वानुभूत पदार्थों के आलम्बन से होने वाला ज्ञान।

८ मति—सूक्ष्म धर्मों को जानने वाली बुद्धि।

९ प्रज्ञा—विशिष्ट क्षयोपशम जन्य वस्तु को यथार्थ रूप मे जानने वाला ज्ञान।

इस प्रकार ये सभी शब्द मतिज्ञान की विविध अवस्थाओ के वाचक हैं।

आभोग (आभोग)

प्रतिलेखना का अर्थ है—निरीक्षण। जैन पारिभाषिक शब्दावलि मे 'प्रतिलेखना' मुनि की एक चर्या है, जिसमे मुनि अपने उपयोग मे आने वाली समस्त वस्तुओ का निरीक्षण करता है। यह शब्द उसी अर्थ मे रूढ है। यहा उसकी विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक दस पर्याय शब्दो का उल्लेख है—

१ आभोग—विधिपूर्वक निरीक्षण।

२ मार्गणा—किसी को पीडा पहुचाए बिना निरीक्षण।

३ गवेषणा—दोष रहित शुद्ध वस्तु की याचना।

---

१. नवीटी पृ ५८ · किञ्चिद्भेदाद् भेद. प्रदर्शितः, तत्त्वतस्तु मतिवाचकाः सर्व एते पर्यायशब्दा।

४ ईहा—शुद्ध वस्तु की अन्वेषणा ।

५ अपोह—मुनि द्वारा उपयोग मे लाए जाने वाले पदार्थों मे ससक्त जीव आदि को यतनापूर्वक अलग करना ।

६ प्रतिलेखना—आगमानुसार उसका निरूपण करना, आचरण करना ।

७ प्रेक्षण—सावधानी पूर्वक निरीक्षण करना ।

८ निरीक्षण—सूक्ष्मता से देखना ।

९ आलोचन—मर्यादा पूर्वक निरीक्षण करना ।

१० प्रलोकन—सघनता से निरीक्षण करना ।[1]

आयट्ठि (आत्मार्थिन्)

'आयट्ठि' शब्द के पर्याय मे ८ शब्दो का उल्लेख है । आत्मार्थी का तात्पर्य है मोक्षार्थी । आत्मा की रक्षा करने वाला ही मोक्षार्थी हो सकता है । इस प्रकार सभी शब्द आत्मार्थी शब्द के स्पष्ट वाचक हैं ।

आयाम (आयाम)

यद्यपि आयाम और विष्कम्भ ये दोनो शब्द अलग-अलग अर्थ के द्योतक है । आयाम का अर्थ है लम्बाई और विष्कम्भ का अथ है चौडाई, लेकिन य दानो माप के प्रकार है । अत नदी चूर्णिकार ने इनको एकार्थक माना है ।[2]

आयार (आचार)

'आयार' शब्द के दस पर्याय यहा सगृहीत हैं । यद्यपि सभी शब्द भिन्न भिन्न अर्थ के वाचक है, लेकिन तात्पय मे सभी आचार अर्थ के वाचक है । अत टीकाकार ने इनका एकार्थक माना है । इनका वाच्यार्थ इस प्रकार है[3]—

१ आयार—जिसका आचरण किया जाता है ।

२ आचाल—जिससे सघन कर्मों को प्रकम्पित किया जाता है ।

१ ओनिटी प १२, १३ ।

२. नदी चू पृ २५ ।

३. आटी प ५ . एते किञ्चिद् विशेषादेकमेवार्थं विशिषन्त. प्रवर्त्तन्ते इत्येकार्थिकानि, शक्रपुरन्दरादिवत् ।

३. आगाल—आत्म प्रदेशो को समस्थिति मे स्थित करने वाला।
४ आगर—जो ज्ञान आदि का आकर/खजाना है।
५ आश्वास—जहां व्यक्ति आश्वस्त होता है अथवा सुख की सास लेता है।
६ आदर्श—जिसमे व्यक्ति स्वय को देखता है।
७ अंग—जिसमे भाव आचार की अभिव्यक्ति की जाती है।
८ आचीर्ण—जो आचरित होता है।
९ आजाति—जिसमे ज्ञान आदि उत्पन्न होते हैं।
१० आमोक्ष—कर्म बन्धन से सर्वथा मुक्त करने वाला।

आलोयणा (आलोचना)

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है—चारो ओर से देखना। साधक अपनी भूलो को विशेष रूप से देखता है, वह आलोचना है। आलोचना के विविध रूप प्रस्तुत पर्याय-शब्दो मे उल्लिखित हैं। उनका आशय इस प्रकार है—

१ आलोचना—विधिपूर्वक अपनी भूल का गुरु के सामने निवेदन करना।
२ विकटना—अपनी भूल को स्पष्टता व सरलता से स्वीकारना।
३ शोधि—अतिचार मल को धोना।
४ सद्भावदायना—यथार्थ का अभिव्यक्तीकरण।
५ निंदा—आत्मसाक्षी से अपने दोषो की आलोचना करना।
६ गर्हा—गुरुसाक्षी से अपने दोषो की निंदा करना।
७ विकुट्टन—अतिचार/गल्ती के अनुबंध का छेद करना।
८ शल्योद्धार—मिथ्यादर्शन आदि शल्यो का निवारण करना।

आवस्सग (आवश्यक)

देखें—'आवस्सय'।

आवस्सय (आवश्यक)

जो साधु एव श्रावको द्वारा अवश्यकरणीय है, वह आवश्यक है। इसका अपर नाम प्रतिक्रमण है। इसके लगभग सभी पर्याय गुणनिष्पन्न हैं।

१ आवश्यक—ज्ञानादि गुणो को अथवा मोक्ष को चारो ओर से वश मे

करने वाला अथवा इन्द्रिय, कषाय आदि शत्रुओ को वश मे करने वाला।

२ आवासक—गुणो से आत्मा को भावित करने वाला।

३ ध्रुवनिग्रह—अनादि ससार का निग्रह करने वाला।

४ विशोधि—कर्म-मलिन आत्मा को विशुद्ध करने वाला।

५. अध्ययनषट्वर्ग—सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वदना, प्रतिक्रमण कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान—इन छह अध्ययनो से युक्त।

६. न्याय—अभीष्टार्थ की सिद्धि मे सहायक।

७ आराधना—मोक्ष की आराधना का हेतु।

८ मार्ग—मोक्ष तक पहुचाने का मार्ग।

आसंदग (आसदक)

पादपीठ के अर्थ मे 'आसदग' शब्द के पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है। यद्यपि इन चारो मे आकार-प्रत्याकार कृत भिन्नता है लेकिन सभी आसन विशेष का अर्थ व्यक्त करते है, अत ये एकार्थक हैं। निशीथ-चूर्णि मे काष्ठमय आसन्दक का उल्लेख मिलता है।

आसुरत्त (आसुरत्व)

कोपातिशय को प्रकट करने के लिए 'आसुरत्त' आदि शब्द एकार्थक हैं।[1] लेकिन इनका अवस्था कृत भेद इस प्रकार है—

आसुरत्व—शीघ्र कुपित होना, असुर की भाति कोप करना।

रुष्ट—रोष युक्त रहना।

कुपित—मानसिक क्रोध।

चाडिक्य—चेहरे पर कठोरता के भाव प्रकट होना।

मिसिमिसेमाण—क्रोधाग्नि से जलना। इस अवस्था मे व्यक्ति की आखें व मुंह लाल हो जाता है।

आहाकम्म (आधाकर्मन्)

साधुओ को लक्ष्य कर की जाने वाली पचन-पाचन की प्रवृत्ति

---

१. उपाटी पृ १०५ : एकार्थाः शब्दाः कोपातिशयप्रदर्शनार्थाः।

आधाकर्म कहलाती है। यह भिक्षा के ४२ दोषो मे प्रथम दोष है। आत्मा का हनन करने से आयाहम्म (आत्मघ्न), साधुओ के लिए दोष पूर्ण होने से अध कर्म तथा सयमी के निमित्त से बनाये जाने के कारण आत्मकर्म आदि इसके पर्यायनाम है।

आहेवच्च (आधिपत्य)

नेतृत्व के द्योतक 'आहेवच्च' शब्द के पर्याय मे ५ शब्द प्रयुक्त हैं। इनका अर्थ-भेद इस प्रकार है—

१ आधिपत्य—अनुशासन।

२. पौरपत्य—अग्रगामिता।

३ भर्तृत्व—सरक्षण व पोषण।

४ स्वामित्व—स्वामिभाव।

५. महत्तरकत्व—श्रेष्ठीभाव।

इंद (इन्द्र)

देखे—'सक्क'।

इज्जा (दे)

माता के अर्थ मे 'इज्जा' शब्द देशी है। उस समय वज्रा आदि विविध प्रकार की देविया माता के रूप मे प्रसिद्ध थी। चूर्णिकार ने इसका एक अर्थ यज्ञ भी किया है।[1]

गर्भ निगमन के समय बच्चे का जो आकार होता है वह आकार देवपूजा मे होना चाहिए। अनुयोग द्वार सूत्र मे इज्याञ्जलि शब्द का प्रयोग उसी रूप मे हुआ है। प्राचीन काल मे हर पूजा के साथ विशेष प्रकार की देविया सम्बन्धित रहती थी, इसलिए सभव है ये चारो शब्द किसी एक देवी विशेष के लिए प्रयुक्त हो।

इट्ठ (इष्ट)

इट्ठ के पर्यायवाची शब्दो का अनेक स्थलो से सग्रहण है। ये पर्यायवाची शब्द भिन्न-२ स्थलो पर भिन्न-२ वस्तु के विशेषण के रूप

१ अनुद्वाचू पृ १३।

में प्रयुक्त हैं। औपपातिक सूत्र मे 'इट्ठ' से लेकर हिययपल्हायणिज्ज तक के शब्द वाणी के विशेषण के रूप मे एकार्थक हैं।[1] इनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—

१. इष्ट—मन को प्रीतिकर।
२ कान्त—कमनीय, सहज सुन्दर।
३. प्रिय—प्रियता पैदा करने वाली।
४ मनोज्ञ—मनोहर, भावो से सुन्दर।
५ मणाम—मन को भाने वाली।
६. मनोभिराम—चिरकाल तक मन को प्रसन्न करने वाली।
७ उदार—महान् शब्द और अर्थ वाली।
८ कल्याण—शुभप्राप्ति की सूचना देने वाली।
९ शिव—उपद्रव रहित, शब्द और अर्थ के दोषो से रहित।
१० धन्य—धन्यता प्राप्त कराने वाली।
११ मगल—अनर्थ का प्रतिघात करने वाली।
१२ हृदयगमनीय—सुबोध, शीघ्र समझ मे आने वाली।
१३. हृदयप्रल्हादनीय—हृदय गत क्रोध, शोक आदि की ग्रंथि को नष्ट करने वाली।

ईसिपब्भारपुढवी (ईषत्प्राग्भारापृथ्वी)

ईषत्प्राग्भारापृथ्वी समय क्षेत्र के बराबर लम्बी चौडी है। उसके मध्य भाग की लम्बाई आठ योजन की है और उसका अन्तिम भाग मक्खी के पख से भी अधिक पतला है। इसका आकार सीधे छत्ते जैसा है तथा यह श्वेत स्वर्णमयी है। वहां सिद्ध/मुक्त जीव निवास करते हैं अत सिद्धालय, सिद्धि, मुक्तालय, मुक्ति आदि इसके पर्याय हैं। यह अन्य पृथ्वियो से छोटी है अत तनु, तनुतरी, आदि नाम हैं। लोकाग्र मे स्थित होने से लोकाग्र, लोकाग्र चूलिका भी इसके पर्याय हैं। यह समस्त देवलोको से ऊपर है इसलिए इसका एक नाम ब्रह्मा-

---

१. ओपटी प १३८-३९ : एकार्थिकानि वा प्रायः इष्टादीनि वाग्विशेषणा-नीति।

वतंसक भी है। यह ईषत्/कुछ झुकी हुई है अत ईषत् प्राग्भारा कहलाती है।[1]

ईहा (ईहा)

'अमुकेन भाव्यमिति प्रत्यय ईहा' 'यह ही होना चाहिए' इस प्रकार निश्चयात्मक ज्ञान ईहा है। तत्त्वार्थसूत्र मे ऊह, तर्क, परीक्षा, विचारणा, जिज्ञासा ईहा के पर्यायवाची हैं।[2] प्रस्तुत एकार्थक सामान्य रूप से ईहा के पर्याय हैं, लेकिन अर्थ के विकल्प से इनमे भिन्नता भी है[3]—

१ आभोगण—अर्थाभिमुख आलोचना।

२ मार्गणा—अन्वय-व्यतिरेक पूर्वक समालोचन।

३ गवेषणा—व्यतिरेक धर्म को छोडकर अन्वय धर्म के आधार पर समालोचन।

४ चिंता – पुनः पुन समालोचन।

५ विमर्श—पदार्थ के अनित्य आदि धर्मों का विमर्श।

इस प्रकार सभी शब्द ईहा के अन्तर्गत क्रमिक भूमिकाओ के द्योतक हैं। इन भूमिकाओ को पार करने मे अन्तर्मुहूर्त का समय लगता है।

उउमास (ऋतुमास)

प्रत्येक ऋतुमास ३० दिन का होता है। अत एक युग के (१८३०—३०) इकसठ ऋतुमास होते हैं। इसके दो नाम हैं—सावन-सवत्सर और कर्मसवत्सर। स्थानाग सूत्र मे कर्म-सवत्सर की व्याख्या इस प्रकार है—

जिस सवत्सर मे वृक्ष असमय मे अकुरित हो जाते हैं, असमय मे फूल तथा फल आ जाते हैं, वर्षा उचित मात्रा मे नही होती, उसे कर्म-सवत्सर कहते हैं।

---

१. निपीचू पृ ३२।

२. त० भा० १।१५।

३. नंदीचू पृ २६ : ईहा सामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणातो पुण भिण्णत्था।

उक्कंचण (उत्कञ्चन)

'उक्कचण' से 'साइसंपयोग' तक के शब्द माया के एकार्थवाची हैं। टीकाकार ने इन शब्दो का सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

१ उत्कञ्चन—गुणहीन पदार्थों के गुणो का उत्कर्ष प्रतिपादन करना जिससे ज्यादा मूल्य प्राप्त किया जा सके।

२ वञ्चन—दूसरो को ठगना।

३ माया—छलने की बुद्धि।

४ निकृति—बकवृत्ति से जेबकतरे की तरह व्यवहार करना।

५ कूट—तोल-माप सम्बन्धी न्यूनाधिकता।

६ कपट—वेश बदलकर अथवा भाषाविपर्यय से किसी को ठगना।

७ सातिसप्रयोग—बहुलता से वक्रता का प्रयोग अथवा सातिशय द्रव्य कस्तूरी आदि मे अन्य द्रव्यो की मिलावट।

'सो होइ साइजोगो, दव्व ज छुहिय अन्नदव्वेसु।
दोसगुणा वयणेसु य, अत्थविसवायण कुणइ॥'[1]

उक्किट्ठ (उत्कृष्ट)

उक्किट्ठ आदि शब्द गति के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हैं। ये सभी शब्द गति-त्वरा के अर्थ मे एकार्थक हैं।[2]

कुछ शब्दो की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

१ उत्कृष्ट—उत्कृष्ट गति से चलना।

२ त्वरित शरीर को हिलाते हुए चलना।

३ चड—आकुल-व्याकुल होकर गति करना।

४ छेक—कुशलता पूर्वक चलना।

५ सिंह—सिंह के समान बिना आयास के चलना।

उक्कडमड्ड (दे)

कुछ शब्द ध्वनि से अपना अर्थ अभिव्यक्त करते हैं। इसे अंग्रेजी

---

१. प्राटी प ८६।
२. भटी प १७८ : एकार्था वैते शब्दाः प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय।

मे 'ओनोमोटोपिया' कहते हैं, जैसे—चमचमाना इत्यादि । उब्बुमहु शब्द बार बार के अर्थ मे देशी है । उच्चारणमात्र से यह शब्द अपना अर्थ अभिव्यक्त करता है ।

उग्गविस (उग्रविष)

'उग्गविस' आदि चारो शब्द विष की उत्तरोत्तर भयकरता को द्योतित करते हैं—

१ उग्रविष—दुर्जर विष ।

२ चण्डविष—शरीर मे शीघ्र ही व्याप्त होने वाला विष ।

३ घोरविष—आगे से आगे हजारो पुरुषो तक फैलने वाला विष ।

४. महाविष—शीघ्र मारने वाला विष ।[1]

उग्गह (अवग्रह)

इन्द्रियार्थयोगे दर्शनान्तर सामान्यग्रहणमवग्रह —इन्द्रिय और अर्थ का सम्बन्ध होने पर नाम आदि की विशेष कल्पना से रहित सामान्य ज्ञान को अवग्रह कहते हैं । यह मतिज्ञान का भेद है तथा इस अवस्था में निश्चयात्मक ज्ञान नही होता । तत्वार्थ भाष्य मे अवग्रह, ग्रह, ग्रहण, आलोचन, और अवधारण को एकार्थक माना है ।[2]

'उग्गह' के सभी शब्द सामान्य रूप से एकार्थक होने पर भी अवग्रह के विभाग करने पर भिन्न-२ अर्थों के वाचक बनते है ।[3]

अवग्रह के दो भेद है—व्यजनावग्रह और अर्थावग्रह । प्रस्तुत एकार्थको मे प्रथम दो व्यञ्जनावग्रह से और तीसरा, चौथा भेद अर्थावग्रह से सम्बन्धित है। पाचवा भेद 'मेधा' उत्तरोत्तर विशेष-सामान्य अर्थावग्रह से सम्बन्धित है। विशेष व्याख्या के लिए देखें—नदीचू पृ ३५ ।

---

१. भटी पृ १२३५ ।

२. तत्त्वार्थ भाष्य १।१५ ।

३. नदीचू पृ ३५ . ओग्गहसामण्णतो पच वि णियमा एगट्ठिता । उग्गह-विभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागसेण भिण्णत्था भवति ।

उच्चच्छंद (उच्चच्छंद)

यहां संगृहीत तीनों शब्द स्वच्छंद व्यक्ति के अर्थ मे एकार्थक हैं। जैसे—

१ उच्चच्छद - आत्म-श्लाघा मे प्रवण।

२ अनिग्रह—स्वच्छन्दचारी।

३ अनियत—अव्यवस्थित।[1]

उज्जल (उज्ज्वल)

'उज्जल' आदि शब्द वेदना के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हैं। समवेत रूप मे एकार्थक होते हुए भी इन शब्दो मे अवस्थाकृत भेद है।[2] कुछ शब्दो की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

उज्ज्वल—वह वेदना जिसमे सुख का अश भी नही हो।

विपुल—सम्पूर्ण शरीर मे व्याप्त।

त्रितुल—मन, वचन और काया तीनो की कसौटी करने वाली।

प्रगाढ—मर्म प्रदेशो मे व्याप्त होने वाली।

कर्कश—कर्कश पत्थर के स्पर्श की तरह आत्मप्रदेशो को प्रभावित करने वाली।

कटुक—कटुक द्रव्य की भाति व्याकुल करने वाली।

निष्ठुर—प्रतीकार करने मे अशक्य।

चण्ड, प्रचण्ड—रौद्र, शीघ्र ही सम्पूर्ण शरीर मे व्याप्त होने वाली।

तीव्र—अतिशय वेदना।

दु ख—दु ख देने वाली।

बीहणग—भयोत्पादक।

दुरहियास—असह्य वेदना।

उज्जुय (ऋजुक)

ऋजु, अकुटिल और भूतार्थ ये तीनो एकार्थक हैं। भूतार्थ का अर्थ

---

१. प्रटी प ३१।

२. विपाटी प ४१ : उज्जला ' दुरहियास त्ति एकार्था एव।

है—यथार्थ। यथार्थ ऋजु ही होता है। बौद्धसूत्रों में ऋजुता के पर्याय में उजुता, उजुकता, अजिम्हता, अवङ्कता अकुटिलता आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है।[१]

उट्ठाण (उत्थान)

'उट्ठाण' आदि पाचो शब्द विभिन्न प्रकार के पुरुषार्थ के द्योतक हैं, जैसे—

१ उत्थान—उठना, चेष्टा करना आदि।

२ कर्म—प्रवृत्ति।

३ बल—शारीरिक-सामर्थ्य।

४ वीर्य—जीवनी-शक्ति, आन्तरिक सामर्थ्य।

५ पराक्रम—कार्य-निष्पत्ति मे प्रबल प्रयत्न।

६ पुरुषकार—अभिमान से उत्पन्न पुरुषार्थ।

उत्तरकरण (उत्तरकरण)

'उत्तरकरण' आदि चारो शब्द भिन्न भिन्न अर्थ के द्योतक होते हुए भी समवेत रूप से सभी विशुद्धीकरण के अर्थ को व्यक्त करते हैं। अत चूर्णिकार ने इनको एकार्थक माना है।[२] इनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—

१ उत्तरकरण—व्रत आदि को और अधिक उत्कृष्ट बनाना।

२ प्रायश्चित्तकरण—अतिचार लगने पर उसकी आलोचना करना।

३ विशोधीकरण—अतिचार आदि दोषो को विशुद्ध करना।

४ विशल्यीकरण—तीनो शल्यो से आत्मा को मुक्त करना।

उद्दिट्ठ (उद्दिष्ट)

'उद्दिट्ठ' आदि शब्द वर्णन की विविध पद्धतियो के वाचक हैं—

१ उद्दिष्ट—सामान्य रूप से कथन करना।

२ गणित—सख्या द्वारा वर्ण्य विषय को निर्दिष्ट करना।

३ व्यञ्जित—नामोल्लेखपूर्वक कथन करना।

---

१. धस पृ ७८।

२ आवचू २ पृ २५१।

उप्पल (उत्पल)

'उत्पल' शब्द के पर्याय में जिन शब्दो का उल्लेख हुआ है वे द्रव्यास्तिक नय से सभी पर्यायवाची हैं, लेकिन पर्यायास्तिक नय की अपेक्षा से सभी शब्द कमल की भिन्न-भिन्न जाति और वर्ण के आधार पर व्यवहृत है।[1] जैसे—

१ उत्पल—नीलकमल।

२ पद्म—सूर्यविकासी रक्त कमल।

३ कुमुद—चन्द्रविकासी कमल।

४ नलिन—कुछ लाल कमल।

५. सुभग—कमल का प्रकार।

६ सौगन्धिक—शरद् ऋतु मे होने वाला सुगन्धि कमल।

७ पुण्डरीक—श्वेत कमल।

८ महापुण्डरीक—बडा श्वेत कमल।

९ शतपत्र—सौ पत्तो वाला कमल।

१० सहस्रपत्र—हजार पत्तो वाला कमल।

११ कोकनद—रक्त कमल।

१२. अरविंद—पखुडियो के द्वारा जाना जाने वाला।

१३. तामरस—पानी मे उत्पन्न होने वाला कोई फूल,[2] कमल।

१४ भिस—कमलनाल।

१५ पुष्कल—श्रेष्ठ कमल।

उप्पायण (उत्पादन)

भोजन के ४२ दोषो मे उत्पादन के दस दोष हैं। भोजन की उत्पत्ति मे जो दूषण होते हैं वे उत्पादन दोष कहलाते हैं। ये तीनो शब्द इसी अर्थ के वाचक है।

---

१. औपटी पृ १९४ : उप्पलादीनां चार्थभेदो वर्णाविभि·।

२. देसी पृ ३५७ : 'तामरसं' जलोद्भव पुष्पम्। टिप्पण १ 'तामरस' शब्द. म्लेच्छभाषासबन्धी, न तु आर्यभाषासबन्धी—इत्येवं मीमांसासूत्र-भाष्यकारो जैमिनिमुनि: प्राह स्वभाष्ये (अ १ पा ३ सू १० अधि ५)।

उवसय (उपाश्रय)

'उवसग' आदि सभी शब्द स्थानवाचक हैं। इनकी अभिव्यञ्जना भिन्न भिन्न होने पर भी आश्रय देने के आधार पर ये सभी एकार्थक हैं।[1]

उवहि (उपधि)

उपधि शब्द के पर्याय मे आठ शब्दो का उल्लेख है। सभी शब्द उपधि के विशेष गुणो को व्यक्त करते हैं—[2]

१. उपधि—जो धारण करता है, पुष्ट करता है।

२ उपग्रह—जो समीप से धारण किया जाता है।

३ सग्रह—जिसका सग्रह किया जाता है।

४. प्रग्रह—जिसका विशेष रूप से सग्रह किया जाता है।

५ अवग्रह—जिसको बार-बार ग्रहण किया जाता है।

६ भण्डक—पात्र विशेष, यह भी उपधि है।

७. उपकरण—जो उपकार करता है।

८ करण—जो सयम-यात्रा मे सहायक बनता है।

एजण (एजन)

कपन के अर्थ मे 'एजण' आदि सात शब्दो का उल्लेख है। ये सभी शब्द हलन-चलन की उत्तरोत्तर अवस्थाओ के द्योतक हैं—

१. एजन—सामान्य कपन।

२ व्येजन—विशेष कपन।

३ चालन—इधर-उधर थोडा हिलाना।

४ घट्टन—दो वस्तुओ का आपस मे सघर्षण।

५ क्षोभण—तीव्रता से क्षुब्ध करना, मथना।

६ उदीरण—प्रबलता से इधर-उधर करना या गति कराना।

---

१. बृकटी पृ ६२५ · एतान्येकार्थानि नामाव्यञ्जनानि पृथगक्षराण्युपाश्रयस्य नामानि।

२. ओनिटी प २०७ . 'तत्त्वभेदपर्यायैर्व्याख्या' इति न्यायात् . ।

ओयंसि (ओजस्विन्)

महानता एक और अखण्ड होती है। उसके अनेक कोण हैं। वे कोण अखण्ड महानता को ही परिपुष्ट करने वाले होते हैं। यहां चार कोण ये हैं—

१ ओजस्वी—मानसिक अवष्टम्भ वाला।

२ तेजस्वी—शारीरिक कांति से युक्त।

३ वर्चस्वी } —प्रभावशाली अथवा वचनातिशय से युक्त।
वचस्वी }

४ यशस्वी—ख्याति वाला।

ओराल (उदार)

'ओराल' शब्द के पर्याय में तेरह शब्दो का उल्लेख है। ये सभी शब्द विपुलता और प्रशस्तता का बोध कराते हैं। अन्तकृतदशा की टीका मे ये सभी शब्द तप के विशेषण के रूप मे एकार्थक माने गए हैं।[१] इनकी अर्थपरम्परा इस प्रकार है—

१. उदार—आकाक्षा/आशसा रहित तप।

२ विपुल—दीर्घकालीन तप।

३. प्रयत—प्रमाद रहित होकर किया जाने वाला।

४. प्रगृहीत—विशिष्ट व्यक्तियो के द्वारा आचीर्ण।

५ कल्याण—नीरोगकर।

६ शिव—कल्याणकारी।

७ धन्य—धार्मिक अनुष्ठान के कारण धन्यता से युक्त।

८ मगल—पाप को शमित करने वाला।

९ सश्रीक—सत् परिणाम देने वाला।

१०. उदग्र—उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त।

११ उदात्त—निस्पृह तप।

---

२. अंतटी प २६ : एते तपोविशेषणशब्दा एकार्थाः। अर्थभेदविवक्षायां तु प्रथमशतकविवरणानुसारेण ज्ञेयाः।

१२ उत्तम—सर्वश्रेष्ठ।

१३. महानुभाग—महाप्रभावशाली।

ओवीलेमाण (अवपीडयत्)

'ओवीलेमाण' आदि शब्द पीड़ा देने की विभिन्न अवस्थाओं के वाचक हैं। देखें—'आउडिज्जमाण'।

ऋतुसवत्सर (ऋतुसवत्सर)

देखें—'उउमास'।

कंची (काञ्ची)

ये सभी शब्द विभिन्न प्रकार की करधनी (कटि के आभूषण) के वाचक है। प्राचीन काल मे करधनी पहनने की परम्परा अनेक जातियो मे थी और आज भी यह परम्परा प्रचलित है।

देखें—'कडीय'।

कति (कान्ति)

कान्ति, दीप्ति आदि शब्द अवस्था भेद से प्रकाश के वाचक हैं। देखें—'जुइ'।

कवण (क्रन्दन)

देखें—'रोयमाणी'।

कक्क (कर्क)

कक्क (वक्क ?) और रत्न—ये दोनो शब्द इन्द्रनील आदि सर्वोत्तम रत्न के लिए प्रयुक्त होते हैं।

कक्क (कल्क)

देखें—'माया'।

कण्हराति (कृष्णराजि)

कृष्ण का अर्थ है—काली और राजि का अर्थ है—रेखा। काले रंग की पुद्गल रेखा को कृष्णराजि कहते हैं। भिन्न-भिन्न स्थितियो के

आधार पर इसके आठ नाम हैं। इन नामो की सार्थकता इस प्रकार है[1]—

मेघराजि—यह काले मेघ के समान कृष्ण वर्ण वाली।

मघा
माघवती } —छठी और सातवीं नरक की भांति सघन अन्धकारमय।

वातपरिघ—वायु के लिए अर्गला के समान। इसमे से वायु भी प्रवेश नहीं कर सकती।

वातपरिक्षोभ—प्रवेश न देने के कारण वायु को क्षुब्ध करने वाली।

देवपरिघ—देवताओ के लिए अर्गला के समान।

देवपरिक्षोभ—देवताओ के क्षोभ का हेतु।

कमल (कमल)

देखें—'उप्पल'।

कम्म (कर्मन्)

कर्म आत्मा को मलिन करते हैं। इस आधार पर कर्म के कुछ नाम मलिनता के वाचक हैं जैसे—पणग, पक, मइल्ल, कलुष, मल इत्यादि। कर्म दुख परम्परा का मूल है अत कारण मे कार्य का उपचार कर खुह, असात, क्लेश, दुप्पक्ख आदि शब्द कर्म के वाचक हैं। सपराय का अर्थ है—ससार। कर्म ससार का कारण है। इसे प्रकम्पित किया जाता है, इसलिए धुत्त भी इसका पर्याय है। मइल्ल, वोण्ण आदि शब्द इसी अर्थ मे देशी हैं।

करोडक (दे)

करोडग आदि शब्द विभिन्न प्रकार के छोटे-बडे कटोरे के वाचक हैं। जैसे—गोल, चपटा, चतुष्कोण कटोरा इत्यादि।

कसाय (कषाय)

कषाय का अर्थ है—आत्मा का रागद्वेषात्मक उत्ताप, परिणति, भाव और पर्याय भी आत्म-परिणाम के वाचक हैं।

कसिण (कृत्स्न)

'कसिण' आदि चारो शब्द परिपूर्णता के द्योतक हैं—

---

१ भटी प २६१।

१ कृत्स्न—सभी दृष्टियो से पूर्ण ।

२ प्रतिपूर्ण—आत्म-स्वरूप से परिपूर्ण ।

३ निरवशेष—स्व स्वभाव से अन्यून ।

४ एकग्रहणगृहीत—एक शब्द से अभिधेय ।[1]

काण (दे)

काने व्यक्ति के लिए प्रयुक्त ये तीनो शब्द देशी हैं ।

काय (काय)

'काय' शब्द के पर्याय मे तेरह शब्दो का उल्लेख है । काय का अर्थ है शरीर । शरीर की विभिन्न अवस्थाओ के आधार पर ये पर्याय शब्द बने हैं । जैसे—शरीर पुष्ट होता है इसलिए काय, उपचय, संघात, उच्छ्रय, समुच्छ्रय, देह आदि शब्द इसके पर्याय हैं । यह जीर्ण-शीर्ण होता है, इसलिए शरीर कहलाता है । शरीर प्राण ग्रहण करता है इसलिए प्राणु तथा धोकनी की तरह श्वास लेता है इसलिए भस्त्र (भस्त्रा) कहलाता है । बुदी आदि शब्द इसी अर्थ मे देशी हैं ।

काल (काल)

काल, अद्धा और समय—ये तीनो शब्द पारिभाषिक दृष्टि से भिन्नार्थवाची हैं । समय काल का ही एक सूक्ष्मतम भेद है । व्यवहारिक नय से तीनो शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं । अद्धा शब्द इसी अर्थ मे देशी है ।

काहापण (कार्षापण)

'काहापण' शब्द के पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है । कार्षापण भारत वर्ष का अत्यधिक प्रचलित सिक्का था । मनुस्मृति मे इसे पुराण भी कहा है । चादी के कार्षापण या पुराण का वजन ३२ रत्ती था ।[2] खत्त-पक (क्षत्रपक) राजाओ का प्रसिद्ध सिक्का होता था ।[3]

कित्ति (कीर्ति)

कीर्त्ति आदि शब्द प्रशसा के अर्थ मे एकार्थक हैं । उनका अर्थ-

---

१. भटी प १४६ : एकार्था. वैते शब्दा: ।

२. मनु ८/१३५-६३६ ।

३. अवि प्र पृ १३ ।

भेद इस प्रकार है—

१. कीर्त्ति—दूसरो के द्वारा गुणकीर्तन, दान, पुण्य आदि से होने वाली प्रसिद्धि ।

२. वर्ण—लोकव्यापी यश ।

३ शब्द—लोक प्रसिद्धि ।

४ श्लोक—ख्याति ।

दशवैकालिक सूत्र के टीकाकार हरिभद्र ने क्षेत्र के आधार पर इनका अर्थ भेद किया है, जैसे—सर्व दिग्व्यापी प्रशसा कीर्ति, एक दिग्व्यापी प्रसिद्धि वर्ण, अर्धदिग्व्यापी प्रशसा 'शब्द', तथा स्थानीय प्रशसा श्लोक है।[1]

कुंडल (कुण्डल)

'कुडल' शब्द के पर्याय मे ११ शब्दो का उल्लेख है। लगभग सभी शब्द कर्ण से प्रारम्भ हैं। बक, तलपत्तक, दक्खाणक, मत्थग आदि शब्द आज अप्रचलित हैं। कुछ शब्दो का आशय इस प्रकार है—

१ कर्णकोपक—भारी होने से कान को लम्बा करने वाला कुडल ।

२ कर्णपीड—कान को पीडा पहुचाने वाला ।

३ कर्णपूर—पूरे कान को ढकने वाला ।

४ कर्णकीलक—कान मे पहनी जाने वाली बाली ।

५ कर्णलोटक—कान के नीचे लटकने वाले लम्बे झूमके ।

कुल (कुल)

देखें—'सघ' ।

केज्जूर (केयूर)

'केज्जूर' शब्द के पर्याय मे ७ शब्दो का उल्लेख है। बाजूबध के अर्थ मे इन शब्दो का प्रयोग हुआ है। लेकिन इनमे आकृतिगत भिन्नता अवश्य है। 'तलभ' कडूग, परिहेरग आदि शब्द इसी अर्थ मे देशी हैं।

---

१. दसहाटी पृ ४७१ ।

केवल (केवल)

यहा 'केवल' शब्द केवलज्ञान के अर्थ मे प्रयुक्त है। इस ज्ञान में सतत उपयोग रहता है इसलिए इसे अनिवारितव्यापार व अविरहितोपयोग कहते हैं। यह अपने आप मे परिपूर्ण है इसलिए एक तथा इसका कभी अंत नही होता अत अनन्त है। विकल्पो से रहित होने से अविकल्पित तथा मोक्ष प्राप्त कराने का साधन होने से नैर्यात्रिक आदि इसके पर्याय नाम हैं।

कोह (क्रोध)

क्रोध शब्द के प्रसग मे दस पर्याय शब्दो का उल्लेख भगवती सूत्र मे हुआ है। कलह से विवाद तक के शब्द क्रोध के कार्य हैं। लेकिन कारण मे कार्य का उपचार करके इनको टीकाकार ने एकार्थक माना है[1]—

१ क्रोध—सामान्य अवस्था।

२ कोप—क्रोध आने पर स्वभाव से चलित होना।

३. रोष—क्रोध की परम्परा, लम्बे समय तक क्रोध का अनुबन्ध मन मे रखना।

४ दोष—स्वय को अथवा दूसरो को किसी घटना के लिए दोषी ठहराना अथवा अप्रीति मात्र द्वेष।

५ अक्षमा—दूसरो के अपराध को सहन न करना।

६ सज्वलन—क्रोध से निरन्तर मन ही मन जलते रहना।

७ कलह—जोर जोर से शब्द करते हुए परस्पर अनुचित शब्द बोलना।

८ चाडिक्य—रौद्र रूप धारण करना। जैसे—नसो का फडकना, आख व मुह का लाल होना आदि।

९ भडण—लकडी आदि से लडना।

१० विवाद—परस्पर एक दूसरे के लिए निरन्तर आक्षेपात्मक शब्द बोलना।[2]

दोष तक क्रोध मानसिक रूप मे रहता है। कलह तक वाचिक तथा

---

१. भटी प १०५१ : क्रोधैकार्था वैते शब्दा.।

२. वही १०५१।

चांडिक्य से विवाद तक के शब्दो में क्रोध शारीरिक स्तर पर उतरने लगता है ।

पाली साहित्य मे आघात, पटिघात, पटिघ, पटिविरोध, कोप, पकोप, सम्पकोप, दोस, पदोस, चित्तस्स व्यापत्ति, मनोपदोस, कोध, कुज्भना, कुज्भितत्त, दुस्सना, दुस्सितत्त, विरोध, पटिविरोध, चण्डिक्क, असुरोप, आदि शब्द क्रोध के वाचक माने हैं ।[1]

खंत (क्षान्त)

जो विषय और कषायो से शान्त रहता है, वह क्षान्त कहलाता है । यहा ये पाचो शब्द इसी भावना के द्योतक हैं—

१. क्षान्त—क्रोध-निग्रह करने वाला ।

२ अभिनिर्वृत—सभी तरह से प्रशान्त ।

३ दान्त—इन्द्रिय-सयम करने वाला ।

४. जितेन्द्रिय—विषयों मे अनासक्त ।

५ वीतगृद्धि—जो आसक्तियो से दूर है ।

खद्ध (दे)

ये पांचो शब्द भोजन के प्रसग मे प्रयुक्त हैं । शीघ्रता के अर्थ मे ये सभी एकार्थक हैं । इनका अर्थबोध इस प्रकार है[2]—

खद्ध—जल्दी जल्दी भोजन करना ।

वेगित—ग्रास को शीघ्रता से निगलना ।

त्वरित—कवल को शीघ्रता से मुह मे डालना ।

चपल—शरीर को हिलाते हुए भोजन करना ।

साहस—बिना विमर्श किये भोजन करना ।

खलुक (दे)

दुष्ट, वक्र आदि के अर्थ मे 'खलुक' शब्द का प्रयोग होता है । जब यह पशु या मनुष्य के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है—दुष्ट मनुष्य या पशु, अविनीत मनुष्य या पशु और जब यह

१. अस पृ २७१ ।

२. प्रटी पृ १२६ ।

लता, गुल्म, वृक्ष आदि के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होता है, तब इसका अर्थ वक्र लता या वृक्ष, ठूठ, गांठो वाली लकडी या वृक्ष होता है[1]।

देखें—'गड्डि'।

खिज्जणिया (खेदनिका)

'खिज्जणिया' आदि तीनो शब्द प्रताडना की ही विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। जैसे—

खेदनिका—तिरस्कृत करना।

रुंटणिया—रुलाना। यह देशी शब्द है।

उपलम्भना—उपालम्भ देना, बुरा भला कहना।

खीण (क्षीण)

जैन आगामो मे पल्योपम को उपमा से समझाया गया है। पल्य/कोठे के खाली होने के प्रसग मे क्षीण आदि शब्दो का उल्लेख हुआ है। हरिभद्र ने क्षीण, नीरज, निर्मल, निष्ठित आदि सभी शब्दो को एकार्थक माना है।[2]

खोडभग (दे)

खोडभग आदि तीनो शब्द देशी हैं। राजकुल के लिए जो स्वर्ण-मुद्राए या द्रव्य कर के रूप मे देय होता है, उसे खोड कहा जाता है। वह देय द्रव्य व देना खोडभग है। राजाओ के युग मे 'वेढ' (बेगार) देने की परम्परा थी। वह प्रत्येक परिवार के लिए अनिवार्य देनी होती थी। इसी प्रकार राजा के वीर पुरुषो को भोजन आदि देना भी अनिवार्य माना जाता था। ये तीनो शब्द इसी के द्योतक हैं।[3]

खोरक (दे)

यहा सगृहीत सारे शब्द विभिन्न आकृति वाले कटोरे-खप्पर के द्योतक है। दशवैकालिक की जिनदासकृत चूर्णि के एक कथानक के प्रसग

---

१ उटि पृ १९९।

२ अनुहाहाटी पृ ८५ : एकार्थिकानि वैतानि पदानि।

३ निचूभा ४ पृ २८० खोड णाम ज रायकुलस्स हिरण्णादि दव्वं दायव्व वेट्ठिकरण पर परिणयणं चोरभडादियाण य चोल्लगादिप्पदाण तस्स भंगो खोडभगो।

मे 'खोरय' (खोरक) शब्द का प्रयोग हुआ है। वह इस प्रकार है— एगम्मि नगरे एगो परिव्वायओ सोवण्णेण खोरएण गहिएण हिंडति—एक नगर मे एक परिव्राजक स्वर्णमय खोरक को लेकर घूम रहा था।[1] यहाँ खोरक का अर्थ कटोरा या खप्पर ही होना चाहिए।

गंडि (गण्डि)

अविनीत बैल के अर्थ मे ये तीनो शब्द प्रयुक्त हैं। गलि शब्द गडि से बना प्रतीत होता है।[2] जो हाकने पर उल्टे मार्ग से जाता है और उछलता कूदता है वह गडि है।[3] जो केवल खाता है, न भार ढोता है, न चलता है, वह गलि—दुष्ट बैल होता है।[4] 'मराली' शब्द इसी अर्थ मे देशी है।

गंडूपक (दे)

'गडूपक' शब्द के पर्याय मे ८ शब्दो का उल्लेख है। ये सभी शब्द पैरो के विविध आभूषणो के बोधक हैं।

गड्डिक (दे)

भाग्यशाली व्यक्ति के अर्थ मे 'गड्डिक' शब्द के पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है। आढ्यक और सुभग ये दोनो शब्द इस अर्थ को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। 'गड्डिक' और 'पोट्टह'—दोनो शब्द इसी अर्थ मे देशी है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल मे जिसके पास गाडी होती थी वह भाग्यशाली माना जाता था। 'गड्डिक' शब्द उसी अर्थ का सवाहक प्रतीत होता है।

'पोट्ट' शब्द पेट के अर्थ मे देशी है। सभव है जिसे पेट भर भोजन प्राप्त होता था, वह भाग्यशाली होता था। 'पोट्टह' शब्द सभवत इसी अर्थ की सूचना देता है।

---

१. वशाजिचू पृ ५५।

२ आप्टे पृ ६४३ : गुणानामेव दौरात्म्याद्धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असजातकिणस्कध. सुख स्वपिति गौर्गडिः।

३ उशाटी प ४१ : गच्छति प्रेरितः प्रतिपथाविना डीयते च कूर्दमानो विहायोगमनमनेनेति गण्डि·।

४. वही प ४६ : गिलत्येव केवल न तु वहति गच्छति वेति गलिः।

गण (गण)

गण आदि शब्द भिन्न-२ वर्गों के समूह के द्योतक हैं। कुछ शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

गण—मल्ल आदि गण-समूह ।

काय—पृथ्वीकाय आदि ।

स्कन्ध—परमाणुओ का समूह ।

सघात—तीर्थ-यात्रा के लिए प्रस्थित व्यक्तियो का समूह ।

आकुल—राजकुल के आगन मे सम्मिलित जन-समूह ।

इस प्रकार ये सभी शब्द समूह के स्पष्ट वाचक हैं ।[1]

गहण (गहन)

गहन, वन, अरण्य और अटवी—इन चारो शब्दो को कोशकारों ने एकार्थक माना है । लेकिन क्षेत्र, अवस्था व अवस्थिति से इनका अर्थ-भेद ज्ञातव्य है—

गहन—वह वन जो अत्यन्त सघन हो तथा जिसमे प्रवेश पाना अत्यन्त दुष्कर हो ।

वन—नगर से दूर स्थित तथा जहा एक जाति के वृक्ष हो ।

अरण्य—वैसा जगल जहा तापस आदि रहते है तथा उपासक अपने अतिम वय मे वहा जाकर शेष जीवन व्यतीत करता है ।[2]

अटवी—वह जगल जहा शिकारी शिकार की खोज मे घूमते हैं ।[3]

गुण (गुण)

गुण और पर्याय दोनो द्रव्य मे रहते हैं । जो धर्म द्रव्य का सहभावी होता है उसे गुण और जो धर्म क्रमभावी—बदलता रहता है उसे पर्याय कहते हैं । एक दृष्टि से गुण भी पर्याय ही है ।

गुरुक (गुरुक)

प्रायश्चित्त के दो प्रकार हैं—उद्घातिक और अनुद्घातिक ।

---

१. अनुद्वामटी प ३८-३९ . पर्यायवाचका ध्वनयः ।

२. आप्टे, पृ २१४ : अर्यते गम्यते शेषे वयसि 'इति अरण्यम् ।

३. आप्टे पृ ३६ : अटन्ति...मृगयाविहारार्थं वा यत्र ।

उद्घातिक लघु प्रायश्चित्त है और अनुद्घातिक गुरु प्रायश्चित्त है। मास-गुरुक, चतुर्गुरुक आदि अनुद्घातिक प्रायश्चित्त होते हैं। इसके तीन पर्याय नाम हैं।

१ गुरुक—यह लघु प्रायश्चित्त की अपेक्षा गुरु होता है, बडा होता है।

२ अनुद्घातिक—इसको वहन करना ही होता है, इसका उद्घात नहीं होता।

३ कालक—काल की अपेक्षा से उद्घातिक सान्तर है और अनुद्घातिक निरतर होता है। इसलिए इसे 'कालक' कहा गया है।[1]

गोणस (गोनस)

'गोणस' आदि शब्द सर्प की विभिन्न जातियो के वाचक हैं। उनकी विभिन्न आकृतियो के आधार पर ये शब्द प्रचलित हुए हैं। जैसे—

१ गोनस—गाय जैसी नासिका वाला सर्प।

२ मडली—मण्डलाकृति वाला सर्प।

३ दर्वीकर—प्रहार आदि के लिए फण का प्रयोग करने वाला सर्प।

घट (घट)

घट, कुट, कुम्भ, आदि शब्दो को कोशकारो ने एकार्थक माना है, लेकिन समभिरूढ नय की दृष्टि से व्युत्पत्ति कृत भेद यह है[2]—

घट—जो चेष्टा द्वारा घडा जाता है।

कुट—जो टुकडे-टुकडे हो जाता है, अथवा जो विभिन्न आकारो मे मोडा जाता है।[3]

कुम्भ—जो कु/पृथ्वी पर सुशोभित होता है[4]। अथवा जिसे पृथ्वी पर स्थित कर भरा जाता है।[5]

कलश—बडे पेट वाला घडा।

देखे—'अरजर'।

---

१ बृकटी पृ १३१०-११।

२ सूटी २ प ४२७ पर्यायाणा नानार्थतया समभिरोहणात् 'समभिरूढो, नह्य घटादिपर्यायाणामेकार्थतामिच्छति तथाहि घटनाद् घट

३. अनुद्वामटी प १२५।

४ वही प १२५ : कौ भातीति कुम्भः।

५. नटि पृ १६०।

घट्ठ (घृष्ट)

'घट्ठ' आदि शब्द परिकर्म के विभिन्न प्रकार हैं। इसका अर्थबोध इस प्रकार है—

१. घृष्ट—गोबर आदि से लीपना।

२. मृष्ट—खडिया से पोतना।

३ नीरज—रज रहित करना।

४. समृष्ट—ऊबड-खाबड भूमि को समान करना।

५ सप्रघूपित—दुर्गन्ध आदि दूर करने के लिए धूप खेना।

घाय (घात)

इसके अन्तर्गत गृहीत सभी शब्द मारने की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक है।

१ घात—चोट पहुचाना।

२. वध—लकडी आदि से मारना।

३ उच्छादन—निर्मूल नाश।

चाउम्मासित (चातुर्मासिक)

सामान्यत चतुर्मास चार मास का होता है अत उसे चातुर्मासिक कहा जाता है। प्राचीन काल मे साल का प्रारम्भ चातुर्मास से होता था अत वर्षावास का एक नाम सावत्सरिक भी है।

चडाल (चण्डाल)

प्रस्तुत शब्द कार्य के आधार पर विभाजित चडाल की विभिन्न जातियो के द्योतक हैं—

हरिकेश—चण्डाल की जाति।

चाण्डाल—फासी और शूली देने के लिए नियुक्त।

श्वपाक—कुत्ते का मास पकाकर खाने वाला।

मातग—निषिद्ध कार्य करने वाला।

बाहिर—गाव के प्रान्तभाग मे रहने वाला।

पाण—चडाल के अर्थ मे देशी शब्द।

श्वानधन—कुत्तो को पालने वाला।

मृताशा—मृत व्यक्तियो से श्मशान घाट पर प्राप्त होने वाली वस्तुओ पर जीने वाला।

श्मशानवृत्ति—श्मशानघाट पर कार्य करने वाला।

नीच—अन्यान्य नीच कार्य करने वाला।

इस प्रकार कार्यगत विभिन्नता होने पर भी जातिगत एकता के आधार पर सभी एकार्थक हैं।[1]

चालित्तए (चालयितुम्)

एक प्रकार से ये सारे शब्द मूलस्थान से च्युत करने की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

चालित—स्वीकृत व्रत के प्रति अन्यथा भाव पैदा करना।

क्षुभित—कृत सकल्प के प्रति सशय पैदा करना।

खडित—व्रत को आशिक रूप से खडित करना।

भजित—व्रत को सम्पूर्ण रूप से तोड देना।

विपरिणामित—सकल्प के विपरीत अध्यवसाय करना।

चित्त (चित्त)

चित्त, मन और विज्ञान—ये तीनो शब्द सामान्य रूप से पर्यायवाची हैं, लेकिन इनमे कुछ अर्थ-भेद भी है—

चित्त—चेतना का अश।

मन—मनोवर्गणा के पुद्गलो से उपरजित पौद्गलिक द्रव्य।[2]

विज्ञान—विवेक चेतना या विशिष्ट चेतना।

बौद्ध साहित्य मे भी चित्त शब्द के पर्याय मे चित्त, मन, मानस, हृदय, पण्डर, मनायतन, मनिन्द्रिय, विञ्ञाण आदि शब्दो का उल्लेख हुआ है।[3]

---

१. उशाटी प ३२४।

२. (क) अनुद्वाचू पृ १३ : चित्त इत्यात्मा।

(ख) वही, पृ १३ : तदेव मनोद्रव्योपरञ्जितं मनः।

३. धस पृ ३६।

चेयण्ण (चैतन्य)

जैन धर्म-परम्परा मे यह मान्यता है कि सभी जीवो मे अक्षर (चेतना) का अनन्तवा भाग नित्य उद्घाटित रहता है। यह जीवत्व का नियामक तत्त्व है। यदि यह न हो तो जीव और अजीव मे कोई अन्तर नही रह पाता। प्रस्तुत प्रसग मे अक्षर का अर्थ है—चैतन्य। उपयोग चैतन्य की प्रवृत्ति है। इस प्रकार ये तीनो शब्द एकार्थक हैं।[1]

छज्जिय (दे)

छज्जिय आदि तीनो शब्द टोकरी के अर्थ मे प्रयुक्त देशी शब्द हैं। आजकल प्रसिद्ध 'छाबडी' शब्द छज्जिय का ही अपभ्रंश लगता है।

छन्द (छन्द)

छन्द, वेद और आगम भिन्नार्थवाची होने पर भी भावार्थ मे एकार्थक है। धर्मशास्त्र के छ अग है, उनमे छद का चौथा स्थान है। जिससे धर्म जाना जाता है वह वेद है तथा जो आप्त पुरुषो से प्राप्त होता है वह आगम है। इस प्रकार तीनो ही शब्द आगम/धर्मशास्त्र के बोधक हैं।

छिद्द (छिद्र)

छिद्र का सामान्य अर्थ है—छेद, विवर। छिद्र का एक अर्थ अवसर भी होता है। छिद्रान्वेषी या घात करने वाला व्यक्ति अनेक प्रकार से छिद्रो (अवसरो) की अन्वेषणा करता है। छिद्र आदि शब्द उसी के द्योतक हैं—

छिद्र—अकेलापन।

अन्तर—अवसर।

विरह—एकान्त, विजनस्थान।

उपासकदशा ८/१९ मे रेवती के प्रसग मे ये तीनो शब्द व्यवहृत हैं। रेवती अपनी सौतो की घात के लिए अन्तर, छिद्र और विरह की अन्वेषणा करती है। ये तीनो शब्द 'अवसर' के वाचक हैं।

छेय (छेक)

कुशल व्यक्ति के लिए यहा छेक आदि शब्दो का उल्लेख हुआ है।

---

१. दशाजिचू पृ ४६।

भिन्न-भिन्न क्षेत्र की कुशलता की दृष्टि से सभी शब्द विमर्शनीय हैं। जैसे—

१ छेक—७२ कलाओ मे पडित।

२ दक्ष—शीघ्र कार्य सपादित करने वाला।

३ प्रष्ठ—वाग्मी, कुशल वक्ता।

४ कुशल—सभी क्रियाओ का सम्यक् ज्ञाता।

५ मेधावी—आपस मे अविरोधी तथा पूर्वापर का अनुसधाता।

६. निपुण—शिल्प आदि क्रियाओ मे कुशल।[1]

जंबू (जम्बू)

जम्बूद्वीप के नामकरण का एक आधार है—जम्बूवृक्ष। इस वृक्ष के बारह पर्यायवाची मिलते हैं। उनकी अभिधा एक है, किन्तु व्यञ्जना से उनकी पर्यायगत भिन्नता भी है—

१ सुदर्शन—आखो के लिए मनोहारी।

२ अमोघ—फलवान।

३ सुप्रबुद्ध—सदा पुष्पित व फलित।

४ यशोधर—जम्बूद्वीप के नाम का आधारभूत वृक्ष होने के कारण यशस्वी।

५ सुभद्र—सदा कल्याणकारी।

६ विशाल—विस्तीर्ण।

७. सुजात—शुद्ध उत्पत्ति से युक्त।

८ सुमन—अति रमणीय होने के कारण मन को प्रसन्न करने वाला।

९ विदेहजबू—स्थानगत नाम।

१०. सौमनस्य—मन को भाने वाला।

११ नियत—शाश्वत रहने वाला।

१२ नित्यमडित—सदा अलकृत दीखने वाला।[2]

---

१. राजटी पृ ६३।

२. जीवटी प २९९-३००।

जणसंमद्द (जनसम्मर्द)

ये सभी शब्द विभिन्न प्रकार के जन समुदाय और उससे होने वाले कोलाहल के प्रतीक हैं। जनव्यूह, जनसमर्द, जनोर्मि, जनोत्कलिका आदि शब्द सामान्यत जनसमुदाय को अभिव्यक्त करते हैं तथा भिन्न-भिन्न स्थानो से आए लोगो का एक स्थान पर मिलन जन-सन्निपात है। कोलाहल के आधार पर जनसमुदाय का बोध होता है, इसलिए जनबोल व जनकलकल भी इसी के अन्तर्गत पर्याय शब्दो मे लिए गए हैं।

जण्ण (यज्ञ)

'जण्ण' आदि तीनो शब्द विभिन्न प्रकार के उत्सवो के वाचक हैं। इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

यज्ञ—नागादि की पूजा का उत्सव।

क्षण—जिस उत्सव मे अनेक लोगो को भोजन कराया जाता है तथा दान किया जाता है।

उत्सव—इन्द्र, कार्तिकेय आदि का महोत्सव।

जल्ल (दे)

ये तीनो शब्द मैल के लिए प्रयुक्त होने वाले देश्य शब्द हैं।

जल्ल—जो आकर पसीने के साथ चिपक जाता है।

मल्ल—स्वल्प प्रयत्न से दूर किया जाने वाला मैल।[1]

कमढ—चिकना मैल।[1]

जवइत्तए (यापयितुम्)

जवइत्तए और लाढेत्तए—दोनो एकार्थक हैं। लाढेत्तए शब्द 'लाढ' शब्द से बना प्रतीत होता है। भगवान् महावीर ने लाढ देश मे विहार कर अनेक कष्ट सहे थे, अत आगे चलकर यह शब्द कष्ट-सहने वालो के लिए श्लाघा-सूचक बन गया।[2]

उत्तराध्ययन की बृहद्वृत्ति मे लाढे का अर्थ सत् अनुष्ठान से प्रधान किया है।[3]

---

१. राजटी पृ ३१

२. उटि पृ १८।

३ उशाटी प ४१४।

जस (यशस्)

यश का सामान्य अर्थ है—कीर्ति। वर्ण का तात्पर्य है—प्रशसा तथा सयम का अर्थ है—नियत्रण। व्यवहार टीका मे भगवती सूत्र (४१/१६) मे आये आयजस का अर्थ आत्मसयम किया गया है। तथा यश, संयम और वर्ण को एकार्थक माना है।[1] हरिभद्र ने भी यश शब्द का अर्थ सयम किया है।[2]

जावंताव (यावत्तावत्)

स्थानाग सूत्र मे दस प्रकार के सख्यान/गणित का वर्णन है। इसमे जावताव (यावत्तावत्) छठा सख्यान है। गुणकार इसका पर्याय नाम है। पहले जो सख्या सोची जाती है, उसे गच्छ कहते है। इच्छानुसार गुणन करने वाली सख्या को वाञ्छा या इष्ट सख्या कहते हैं। गच्छ सख्या को इष्ट सख्या से गुणन करते हैं। उसमे फिर इष्ट सख्या मिलाते है। उस सख्या को पुन गच्छ से गुणा करते हैं। तदन्तर गुणनफल मे इष्ट के दुगुने का भाग देने पर गच्छ का योग आता है। इस प्रक्रिया को यावत्तावत् कहते हैं। उदाहरणार्थ—

कल्पना करें कि गच्छ १६ है, इसको इष्ट १० से गुणा किया—१६×१०=१६० इसमे पुन इष्ट १० मिलाया (१६०+१०=१७०) इसको गच्छ से गुणा किया (१७०×१६=२७२०) इसमे इष्ट की दुगुनी सख्या से भाग दिया २७२०—२०=१३६, इस वर्ग को पाटी गणित भी कहा जाता है।[3]

जीवत्थिकाय (जीवास्तिकाय)

जीव के अभिवचन/पर्याय २३ है। ये जीव की विभिन्न क्रियाओ, अवस्थाओ के आधार पर उल्लिखित हैं, जैसे—

विज्ञ—जो सब कुछ जानता है।

वेद—जो सुख-दुःख का सवेदन करता है।

---

१. व्यभा ६ टी प ५६।

२ दशहाटी प १८८ : यशः शब्देन संयमोऽभिधीयते।

३. स्थाटी प ४७१।

चेता—कर्म पुद्गलो का चय/उपचय करने वाला।

जेता—कर्म रिपु को जीतने वाला।

रगण—राग-आसक्ति से युक्त।

हिंडुक—एक गति से दूसरी गति मे जाने वाला।

पुद्गल—शरीर आदि पुद्गलो का चय-अपचय करने वाला।

मानव—अनादि होने से जो नया नहीं है।

कर्ता—कर्मों को करने वाला।

विकर्ता—कर्मों का छेदन करने वाला।

जगत्—निरन्तर गतिशील।

जतु—जननशील।

योनि—दूसरो को उत्पन्न करने वाला।

स्वयभू—स्वय पैदा होने वाला।

सशरीरी—शरीर के साथ रहने वाला।

अतरात्मा—जो चेतनामय है, पुद्गलमय नही।

इस प्रकार सभी अभिवचन जीव को परिभाषित करते है।[1]

जीव आदि के लिए देखे—'पाण'।

जीवाभिगम (जीवाभिगम)

यह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन का नाम है। निर्युक्तिकार ने इसके सात पर्यायवाची नाम गिनाते हुए उनकी सार्थकता का प्रतिपादन किया है—

१ जीवाभिगम }
२ अजीवाभिगम } —इस अध्ययन मे जीव और अजीव के लक्षणो का सुन्दर निरूपण है।

३ आचार—षड्जीवनिकाय के प्रति मुनि के आचार का निरूपक।

४ धर्मप्रज्ञप्ति—भगवान् महावीर की धर्म प्रज्ञापना का मूल।

५. चारित्र-धर्म—इसमे चारित्र-धर्म महाव्रतो का सागोपाग वर्णन है।

६. चरण—मुनि के मूल नियमो का प्रतिपादक।

---

१ भटी पृ १४३२।

७. धर्म—श्रुतधर्म का सारभूत अध्ययन है।

इस प्रकार ये एकार्थक शब्द अध्ययन मे प्रतिपाद्य विभिन्न विषयो का अवबोध देते हैं।[1]

दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन मे सूत्र और पद्य दोनो हैं। उसमे प्रथम नौ सूत्र तक जीव और अजीव का अभिगम है। दसवें से सत्रहवें सूत्र तक चारित्र धर्म के स्वीकार की पद्धति का निरूपण है। अठारहवें से तेइसवें सूत्र तक यतना का वर्णन है। पहले से ग्यारहवें श्लोक तक बन्ध और अबन्ध की प्रक्रिया का उपदेश है। बारहवें श्लोक से पच्चीसवें श्लोक तक धर्मफल की चर्चा है।

जुइ (द्युति/युति)

'जुइ' आदि शब्द व्यक्ति की समृद्धि व तेजस्विता के द्योतक हैं। ये व्यक्ति की विशिष्ट अवस्था की विभिन्न पर्यायो को अभिव्यक्त करते हुए भी एकार्थक हैं[2]—

१ द्युति, युति—काति, इष्ट पदार्थों का सयोग।

२ प्रभा—यान वाहन की समृद्धि।

३ छाया—शोभा।

४ अर्चि—शरीर पर पहने हुए आभूषणो की दीप्ति।

५ तेज—शरीर की तेजस्विता।

६ लेश्या—शरीर का वर्ण।

जोग (योग)

जीव और शरीर के साहचर्य से होने वाली प्रवृत्ति 'योग' है। यहा योग शब्द शक्ति/सामर्थ्य के अर्थ मे प्रयुक्त है। इनमे कुछ शब्दो का आशय इस प्रकार है—

वीर्य—मानसिक शक्ति।

स्थाम—शरीरिक सामर्थ्य।

---

१. दशहाटी प १६० : एकार्थिका एते शब्दा.।

२. भटी प १३२ : एकार्था वैते शब्दाः।

पराक्रम—स्वाभिमान से युक्त सामर्थ्य।

सामर्थ्य—क्षमता।

उत्साह—मानसिक सकल्प।

पालि मे विरियारम्भ, निक्कम, परक्कम, उय्याम, वायाम, उस्साह, उस्सोलही, थाम, धिति, असिथिलपरक्कमता, अनिक्खित्तछन्दता, अनिक्खित्त धुरता, धुरसम्पग्गाह, विरिय आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त हैं।[1] इसमे अनेक शब्द प्रस्तुत एकार्थक 'जोग' के सवादी हैं।

झोस (दे)

झोस का अर्थ है—वह राशि जिससे समीकरण हो जाता है। इस प्रकार समीकरण के अर्थ मे यह गणित का देशी पद है।

डिंब (डिम्ब)

'डिम्ब' आदि शब्द उपद्रव के अर्थ मे एकार्थक हैं—

१ डिम्ब—विघ्न।

२ डमर—राजकुमार आदि द्वारा उत्पन्न उपद्रव।

३ कलह—वाचिक लड़ाई।

४ बोल—जोर-जोर से बोलकर लडना।

५ क्षार—परस्पर ईर्ष्याभाव से कलह करना।

६ वैर—शत्रुता रखना।

डिप्फर (दे)

'डिप्फर' आदि शब्द बैठने व सोने के लिए काम मे आने वाले आसन विशेष के नाम हैं। यद्यपि इनमे आकार-प्रत्याकार की भिन्नता है, लेकिन आसन की समानता से इनको एकार्थक माना है। इनमे कुछ विशिष्ट शब्दो का अर्थ इस प्रकार है—

१ डिप्फर—बैठने के आसन के लिए प्रयुक्त देशी शब्द।

२. पीढफलक—पलाल अथवा बेंत से निर्मित बैठने का आसन।

---

१. धस पृ ७८।

३ सत्थिय—स्वस्तिक के आकार का आसन ।

४ तलिक(म)—सोने का बिछौना ।

५ मसूरक—वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन ।

६ आशालक—अवष्टम्भ वाला—जिसके पीछे सहारा हो वह आसन ।

७. मचक—दो लट्ठो को बाधकर बैठने के लिए बनाया जाने वाला आसन ।

णंदी (नन्दि)

प्रमोद व प्रसन्नता के अर्थ मे नदी शब्द के पर्याय प्रयुक्त हैं । कदर्प प्रमोद का कारण है अत कारण मे कार्य का उपचार से यह नदी का एकार्थक है ।

णग (नग)

'णग' शब्द के पर्याय मे प्रयुक्त सभी शब्द सामान्यत पर्वत के एकार्थक है । भगवती सूत्र मे पर्वत, गिरि, डुगर, उच्छल (उत्स्थल) भट्ठि (दे) आदि को एकार्थक मानते हुए भी इनमे भेद स्वीकार किया है,[1] जैसे—

पर्वत—जहा उत्सव मनाये जाते हैं । जैसे वैजयन्त, वैभारगिरि पर्वत आदि ।

गिरि—लोगो के निवास के कारण जहा कोलाहल रहता है । जैसे गोपालगिरि, चित्रकूट आदि ।

डुगर—शिला समूह से निर्मित अथवा जहा चोर निवास करते हैं ।

उत्स्थल—रेतीला टीला जो पर्वत के आकार का प्रतीत होता है ।

भट्ठि—धूल से रहित पर्वत ।[2]

णपुंसक (नपुसक)

निशीथ भाष्य मे नपुसक के १६ भेद प्राप्त हैं—

---

१. भटी पृ ३०६ पर्वतादयोऽन्यत्रैकार्थतया रूढास्तथापीह विशेषो दृश्यः ।

२ भटी प ३०६-७ ।

१. पडक	६. शकुनि	११. बद्धित
२ वातिक	७ तत्कर्मसेवी	१२ चिप्पित
३ क्लीब	८ पक्ष-अपक्ष	१३ मत्र से वेदोपहत
४ कु भी	९ सौगन्धिक	१४ औषधि से वेदोपहत
५ ईर्ष्यालुक	१० आसक्त	१५ ऋषि द्वारा शप्त
		१६ देव द्वारा शप्त ।

इन सबकी व्याख्या निशीथ भाष्य मे प्राप्त है। प्रस्तुत कोश मे 'णपु सक' के एकार्थं नामो मे अनेक नाम सवादी हैं। कुछेक शब्दो की व्याख्या इस प्रकार है—

१. चिल्लिक—(चिप्पित) जिसके जन्म से ही अगुष्ठ व अगुलिया चढी रहती हैं।

२ पडक—महिला स्वभाव वाला, मृदु वाणी वाला, सशब्द मूत्र करने वाला आदि आदि।

३ वातिक—जिसकी जननेन्द्रिय वायु के कारण स्तब्ध रहती है।

४ क्लीब—जो शीघ्र स्खलित हो जाता है।

५ कु भी—जिसकी जननेन्द्रिय सूजन से युक्त होती है।

६ ईर्ष्यालुक—बलात् ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण जो नपु सक हो जाता है।

७ पाक्षिक-अपाक्षिक—शुक्ल या कृष्णपक्ष मे जिसके मोह उदय अति तीव्र होता है और अपाक्षिक मे कम होता है। निरोध करने के कारण कालान्तर मे वह नपु सक हो जाता है।

इस प्रकार अन्यान्य शब्द भी विभिन्न प्रकार के नपु सको के वाचक हैं। कुछ नाम उनके स्वभाव की सूचना देते हैं और कुछ उनकी शरीरगत अवस्थाओ के द्योतक हैं।

विशेष विवरण के लिए देखे—निभा ३५६१-३६००।

णमोक्कत (नमस्कृत)

देखे—'अच्चिय'।

णाण (ज्ञान)

ज्ञान, सवेदन, अधिगम, चेतना और भाव—ये पाचो शब्द ज्ञान

के वाचक है। जानना, सवेदन करना, सूक्ष्म अध्यवसायो का उत्पन्न होना—ये सारे ज्ञान के ही विविध पर्याय हैं। जीव का लक्षण है—ज्ञान। ज्ञान से व्यतिरिक्त जीव नही होता। ये सारी अवस्थाए जीव—चेतन तत्त्व मे ही पायी जाती हैं।

णावा (नौ)

णावा शब्द के पर्याय मे १४ शब्दो का उल्लेख है। कुछ शब्द विभिन्न प्रकार की नावो के वाचक हैं। जैसे—नाव, पोत, तप्रक आदि। नाव तैरने मे सहयोगी है, इसी प्रकार नाव के अतिरिक्त अन्य साधन जो तैरने मे सहयोगी हैं उनको 'णावा' शब्द के पर्याय के अन्तर्गत लिया गया है। जैसे वेलु (बास), कु भ (घडा), दृति (चमडे की मशक) आदि, ये सभी तैरने मे सहयोगी होने से णावा के पर्याय हैं।

कोट्टिब, सालिका आदि शब्द इस अर्थ मे देशी हैं।

णिडालमासक (ललाटमाशक)

'णिडालमासक' का अर्थ है—ललाट पर किया जाने वाला तिलक। सभी शब्द इसके स्पष्ट वाचक हैं। 'अवग' शब्द सभवत इसी अर्थ मे देशी होना चाहिए।

णिम्मसक (निर्मासक)

'णिम्मसक' शब्द के पर्याय मे अनेक शब्दो का उल्लेख है। जिसका शरीर तपस्या या किसी कारण से सूख कर काटा हो जाता है, हड्डियो का ढाचा मात्र रह जाता है वह निर्मासक होता है। अस्थिकलेवर आदि शब्द उसी के वाचक हैं। शुष्क, निशुष्क, परिहीन, अवक्षीण आदि शब्द शरीर की उसी अवस्था के बोधक हैं।

णिव्वाण (निर्वाण)

'णिव्वाण' शब्द के पर्याय मे ५ शब्दो का उल्लेख है। टीकाकार ने इनको 'निर्वाणसुख' का एकार्थक माना है।[1] मोक्ष का सुख बाधा रहित होता है, इसलिए अनाबाध तथा वहा कषायाग्नि शान्त हो जाती है इसलिए शीतीभूतपद भी इसका एक पर्याय है।[1]

१. आटी प १५०

णिस्संकित (नि.शकित)

शका रहित चेतना के विशेषण के रूप मे इन तीनो शब्दो का उल्लेख है।

देखें—'सकित'।

णिसीहिया (निषीधिका)

स्वाध्याय-भूमि प्राय उपाश्रय से भिन्न होती थी। वृक्षमूल आदि एकान्त स्थान को स्वाध्याय के लिए चुना जाता था। वहा जनता के आवागमन का निषेध रहता था। 'निषेध' शब्द से ही नैषेधिकी शब्द बना है ऐसा प्रतीत होता है। दिगम्बरो मे प्रचलित 'नसिया' शब्द इसी का वाचक है।

तडि (दे)

देखे—'गडि'।

तक्क (तक्र)

छाछ के अर्थ मे 'तक्क' शब्द के पर्याय मे तीन शब्दो का उल्लेख है। छाछ पानी की भाति पतली होती है अत उपचार से इसका एक नाम उदग माना है। तथा भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से 'छाछ' शब्द छासि का ही बना हुआ प्रतीत होता है। छासि→छास→छाछ। खानदेश मे बोली जाने वाली अहिराणी भाषा मे छाछ को आज भी 'छास' कहते हैं।

तक्क (तर्क)

तर्क, सञ्ञा, प्रज्ञा, विमर्श आदि शब्द ज्ञान की विविध पर्यायो के द्योतक हैं—

१ तर्क—ईहा से पहले तथा अवाय से पूर्व होने वाला ज्ञान अथवा अन्वय-व्यतिरेक पूर्वक होने वाला बोध।

२ सज्ञा—वस्तु को जानने का सम्यक् बोध।

३ प्रज्ञा—हेयोपादेय का निश्चय करने वाली बुद्धि।

४ मीमासा—वस्तु के सूक्ष्म धर्म का पर्यालोचन करने वाली बुद्धि।

बौद्ध साहित्य मे भी तक्क, वितक्क, सङ्कप्प, अप्पना, व्यप्पना आदि शब्द एक अर्थ मे प्रयुक्त हैं।[1]

---

१ धस पृ १६।

तट्टक (दे)

'तट्टक' शब्द के पर्याय मे 'अगविज्जा' में बारह शब्दो का उल्लेख हुआ है। ये शब्द भिन्न-२ आकृति वाले थालो के वाचक हैं। आज लगभग सभी शब्द अप्रचलित हैं। सभव है ये शब्द विभिन्न देशो मे विभिन्न प्रकार के थालों के लिए प्रयुक्त रहे हो। कन्नड भाषा में आज भी थाल को तट्टे कहते हैं।

तच्चित्त (तच्चित्त)

तच्चित्त आदि शब्द भावक्रिया/तन्मयता के अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। यद्यपि चित्त, मन, लेश्या, अध्यवसाय, करण और भावना—ये सभी शब्द अलग अलग अर्थों के द्योतक हैं, लेकिन यहा सभी शब्द समस्त पद होने से तन्मयता/एकाग्रता के अर्थ मे एकार्थक हैं।[1]

तत्थ-तत्थ (तत्र-तत्र)

यहा तीन शब्द हैं—तत्र-तत्र, देशे-देशे, तस्मिन्-तस्मिन्। यद्यपि इन तीनो का अर्थ भिन्न है, फिर भी विस्तार की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक होने के कारण इन्हे एकार्थक माना है।[2] ये तीनो शब्द पुष्करणी मे अवस्थित कमलो की व्यापकता के बोधक हैं—

१ तत्र-तत्र—यहा वहा वे कमल व्याप्त थे।

२ देशे-देशे—कही कही वे अधिक व्याप्त थे।

३. तस्मिन्-तस्मिन्—उस पुष्करिणी का एक भी भाग ऐसा नही था जो कमलो से व्याप्त न हो।

तमुक्काय (तमस्काय)

अरुणवरद्वीप जम्बूद्वीप से असख्यातवा द्वीप है। उसकी बाहरी वेदिका के अन्त से अरुणवर समुद्र मे ४२ हजार योजन जाने पर एक प्रदेश (तुल्य अवगाहन) वाली श्रेणी उठती है और वह १७२१ योजन ऊची जाने के पश्चात् विस्तृत होती है। वह सौधर्म आदि चारो देवलोकों को घेरकर पाचवे देवलोक (ब्रह्मलोक) के रिष्ट नामक विमान-प्रस्तट तक चली गई है। यह जलीय पदार्थ है। उसके पुद्गल अधकारमय हैं,

---

१. अनुद्वामटी प २७. एकार्थिकानि वा विशेषणान्येतानि प्रस्तुतोपयोग-प्रकर्षप्रतिपादनपराणि।

२. सूटी प २७२ : अत्यादरख्यापनार्थैकार्थान्येवैतानि त्रीण्यपि पदानि।

इसलिए उसे तमस्काय कहा जाता है। लोक मे उसके समान कोई दूसरा अधकार नहीं है, इसलिए इसे लोकाधकार कहा जाता है। देवो का प्रकाश भी उस क्षेत्र मे हत-प्रभ हो जाता है, इसलिए उसे देवांधकार कहा जाता है। उसमे वायु प्रवेश नही पा सकती, इसलिए उसे वातपरिघ और वातपरिघक्षोभ कहा जाता है। यह देवो के लिए भी दुर्गम है, इसलिए उसे देव-आरण्य और देवव्यूह कहा जाता है।[1]

तरच्छ (तरक्ष)

'तरच्छ' आदि शब्द वर्ण, आकार आदि के आधार पर व्याघ्र की भिन्न-२ जातियो के बोधक हैं।

तितिक्खा (तितिक्षा)

तितिक्षा, अहिंसा और ह्री को निर्युक्तिकार ने सयम का पर्याय माना है। तथा इसके साथ दया, सयम लज्जा, दुगुञ्छा और अछलना को भी इसी के पर्यायवाची माना है। टीकाकार ने इसकी व्याख्या मे यह स्पष्ट किया है कि ये सभी शब्द नाना देश के विद्यार्थियो को अर्थबोध कराने के लिए प्रयुक्त है।[2]

देखें—'दया'।

तिरीड (किरीट)

प्रस्तुत एकार्थक मे मस्तक पर पहने जाने वाले विभिन्न आकृति के मुकुटो का उल्लेख है। कुछ शब्द विभिन्न देशो मे प्रसिद्ध मुकुटो के वाचक हैं। सामान्यत मुकुट और किरीट एकार्थक हैं लेकिन इनमे कुछ अन्तर है। जिसमे तीन शिखर हो वह किरीट तथा चार शिखर वाले को मुकुट कहते हैं।

तिलोवलद्धीय (तिलोपलब्धिक)

'तिलोवलद्धीय' आदि तीनो शब्द तिल से निष्पन्न खाद्य पदार्थ के वाचक हैं। वर्तमान मे इसे तिलपपडी कहा जाता है।

तिसरा (दे)

'तिसरा' के पर्याय मे यहा नौ शब्दो का उल्लेख है। ये सारे शब्द मछली पकडने के जाल विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाले देश्य शब्द है। आज इनकी पहचान दुर्लभ है।

---

१. ठाण पृ ५१०।
२ उशाटी प १४४।

तिसला (त्रिशला)

महावीर की माता के लिए आचारचूला मे तीन पर्याय शब्दो का उल्लेख है। त्रिशला उनका सर्वप्रसिद्ध नाम है। वे विदेह-जनपद से सम्बन्धित थी इसलिए विदेहदत्ता तथा सबका प्रिय करने से उनका एक नाम प्रियकारिणी भी हो गया।

तुलना (तुलना)

जिससे आत्मा तोली जाये वह तुलना है। यहा तुलना, भावना और परिकर्म को एकार्थक माना है। विशिष्ट साधक (जिनकल्पी) की सहिष्णुता की कसौटी के लिए पाच तुलाए मान्य है। जब साधक उन तुलाओ मे उत्तीर्ण हो जाता है तब वह विशिष्ट साधना की ओर अग्रसर होता है। वे पाच तुलाए ये हैं—तप, सत्व, सूत्र, एकत्व और बल।

तप भावना से साधक क्षुधा पर विजय पा लेता है। सत्त्व भावना से भय और निद्रा को पराजित करता है। सूत्र भावना के अभ्यास से साधक श्रुत को अपने नाम की तरह परिचित कर लेता है और सूत्र परावर्तन के द्वारा कालज्ञान कर लेता है। एकत्व भावना मे वह ममत्व का मूलत नाश कर देता है और बल भावना से शारीरिक बल, मनोबल और धृतिबल का पूर्णत विकास कर लेता है। इस प्रकार ये पाच भावनाए साधक को जिनकल्प साधना के लिए सक्षम बनाती हैं।[1]

थिल्लि (दे)

ये चारो शब्द भिन्न-भिन्न आकार वाली पालकी के लिए प्रयुक्त हैं। लेकिन वाहन अर्थ की अभिव्यक्ति करने के कारण ये एकार्थक है—

१ थिल्लि—दो खच्चरो से वाहित यान विशेष, दो घोडो की बग्घी[2]।

२ गिल्लि—दो पुरुषो द्वारा उठाई जाने वाली झोलिका।

३ सिबिका—कूटाकार तथा चारो ओर से आच्छादित पालकी। प्रश्न व्याकरण की टीका के अनुसार हजार पुरुषो द्वारा उठायी जाने वाली पालकी सिबिका है।

४ स्यदमानिका—पुरुषप्रमाण पालकी।

---

१. प्रसाटी पृ १२६, १२७।

२. पास पृ ४४९।

थुइ (स्तुति)

स्तुति, स्तवन, वदन, अर्चना आदि सारे शब्द गुणानुवाद के अभिव्यजक हैं। कुछेक आचार्यों ने स्तुति और स्तव मे आकारगत भेद किया है। उनके अनुसार एक श्लोक से सात श्लोक अथवा तीन श्लोक पर्यन्त जो गुणगाथा की जाती है वह 'स्तुति', और आठवें श्लोक से आगे गुणगाथा को 'स्तव' कहा जाता है।[1] सभी व्याख्याकार इसमे एकमत नहीं हैं।

लेकिन चूर्णिकार ने स्तुति, स्तवन आदि शब्दो को एकार्थक माना है[2]।

थूल (स्थूल)

मोटे व्यक्ति के लिए स्थूल शब्द के पर्याय मे १५ शब्दो का उल्लेख है। शरीर की स्थूलता, दीर्घता और पुष्टता के आधार पर इन शब्दो का चयन किया गया है। इन शब्दो मे वड्ड और वरढ दोनो शब्द देशी हैं।

थेज्ज (स्थैर्य)।

विश्वसनीय व्यक्ति के ये पाच गुण हैं। सभी समवेत रूप मे एक अर्थ के अवबोधक होने से एकार्थक हैं—

स्थैर्य—जो अपनी वाणी पर स्थिर रहता है।

वैश्वासिक—जिस पर विश्वास किया जा सके।

सम्मत—जिसकी बात सबके द्वारा मननीय होती है।

बहुमत—लोगो के द्वारा बहुमान प्राप्त।

अनुमत—सबके द्वारा समर्थित।

थेरभूमि (स्थविरभूमि)

स्थविर की तीन भूमिकाए हैं—जातिस्थविर, श्रुतस्थविर, पर्यायस्थविर। ६० वर्ष की आयु वाला जातिस्थविर, स्थानाग व समवायाग को धारण करने वाला श्रुतस्थविर तथा २० वर्ष मुनि-पर्याय पालने वाला पर्यायस्थविर कहलाता है। यहा भूमि का अर्थ है भूमिका। वह जन्म, ज्ञान और दीक्षा पर्याय से अभिव्यक्त होती है।

---

१. (क) व्यभा ७।१८३ टी एकश्लोकादिसप्तश्लोकपर्यन्ता· स्तुति ।
   (ख) वही, तत परमष्टश्लोकादिका. स्तवा ।

२. नदीचू पृ ४६ . अन्योन्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचना. ।

दया (दया)

सयम के अर्थ मे प्रयुक्त दया के पर्याय में पाच शब्दो का उल्लेख है। दया, सयम आदि सयम के स्पष्ट वाचक हैं। दुगुछा का अर्थ है—पाप के प्रति घृणा तथा अछलना का अर्थ है—सरलता। इस प्रकार ये दोनो शब्द भी सयम का अर्थबोध कराते हैं। तितिक्षा, अहिंसा और ह्री भी सयम के ही वाचक हैं।

देखें—'तितिक्खा'।

दव्वी (दर्वी)

दर्वी का अर्थ है—कड़छी। इसके पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है। इसमे 'कडच्छी' और 'कवल्ली' दोनो देशीपद हैं। आजकल व्यवहार मे प्रयुक्त 'कड़छी' शब्द इसी का रूपान्तरण प्रतीत होता है। 'कवल्ली' शब्द कड़ाही के लिए भी प्रसिद्ध है।

दारिया (दारिका)

देखें—'दारय'।

दास (दास)

नौकरो के अनेक प्रकार रहे हैं। उनमे दास, किंकर आदि प्रमुख हैं। इन सबकी अलग-अलग पहचान है। जैसे—

१ दास—खरीदा हुआ नौकर, घर की दासी का पुत्र।

२ प्रेष्य—काम के लिए बाहर गाव भेजा जाने वाला।

३ भृतक—दैनिक वेतन पर कार्य करने वाला अथवा वह नौकर जो बचपन से ही घर पर पला-पुसा हो।

४ भागी—आय और हानि का हिस्सेदार।

५ किंकर—जो काम के विषय मे निरन्तर पूछता रहे 'अब क्या करू? अब क्या करू?'

६ कर्मकर—नियत काल मे आदेश पालन करने वाला।[1]

इस आधार पर प्रस्तुत पर्याय मे प्रयुक्त सभी शब्द दास/नौकर के पर्याय के रूप में सगृहीत हैं।

---

१ सूटी २ प ३३१।

दिट्ठ (दृष्ट)

दृष्ट, श्रुत, ज्ञात आदि शब्द ज्ञान प्राप्त करने की विविध अवस्थाओ के वाचक है। दृष्ट पहली अवस्था है तथा उसकी अन्तिम अवस्था है—उपधारण। आचाराग चूर्णि मे इनको एकार्थक माना है।

दिट्ठिवाय (दृष्टिवाद)

श्रुत के दो विभाग है—अग और अगबाह्य। अग बारह हैं। उनमे बारहवा अग है—दृष्टिवाद। आज यह अप्राप्त है। स्थानाग सूत्र मे इसके दस नाम उल्लिखित है। वे सारे नाम उसमे प्रतिपादित विषयवस्तु के आधार पर दिये गये हैं। टीकाकार ने उनकी व्याख्या इस प्रकार की है—

१ दृष्टिवाद—समस्त दर्शनो के मत को प्रकट करने वाला तथा सभी नयो से वस्तु-बोध कराने वाला।

२ हेतुवाद—जिज्ञासाओ का सहेतुक समाधान देने वाला।

३ भूतवाद—यथार्थ तत्त्वो का व्याख्याता।

४ तत्त्ववाद—तत्त्वो का निरूपण करने वाला।

५ सम्यग्वाद—सम्यग् कथन करने वाला।

६ धमवाद—द्रव्य की विभिन्न पर्यायो का अथवा चारित्र धर्म की व्याख्या करने वाला।

७ भापाविजय (विचय)—भाषा का विवेक देने वाला।

८ पूर्वगत—चौदह पूर्वों का प्रतिपादक।

९ अनुयोगगत—प्रथमानुयोग तथा गडिकानुयोग का प्रतिपादक।

१० सर्व प्राणभूतजीवसत्त्व सुखावह—सयम का प्रतिपादक होने से सभी प्राणियो के लिए सुखकर।

द्वितीयसमवसरण

चातुर्मास के अतिरिक्त शेष आठ मास का काल द्वितीयसमवसरण कहलाता है।

दीण (दीन)

ये सभी शब्द दीन/दु खी व्यक्ति की विविध अवस्थाओ के वाचक हैं। जैसे—

१. परितन्त—मानसिक व शारीरिक रूप से दु खी ।

२. उत्कर्षित—दूसरो के द्वारा तिरस्कृत ।

३. चिन्ताध्यानपर—आर्त्त-रौद्र ध्यान मे मग्न ।

४ अकृतार्थ—जिसका प्रयोजन सिद्ध नही होता ।

५ शोकार्त्त—जो शोक से सदा दु.खी रहता है ।

दीव (दीप)

'दीव' शब्द के पर्याय मे १३ शब्दो का उल्लेख है । सभी शब्द विविध प्रकार की अग्निया तथा उसके स्थान के वाचक हैं । कुछ शब्दो का अर्थबोध इस प्रकार है—

१ दीपक—दीया ।

२ चुडली—उल्का, जलती हुई लकडी (दे) ।

३ चुल्लक—बडा चूल्हा (दे) ।

४ विद्युत्—बिजली, अग्नि ।

५ आतप—प्रकाश (प्रकाश अग्नि से पैदा होता है अत कारण मे कार्य के उपचार से यह 'दीव' शब्द का एकार्थक है ।)

६ चुल्लि—छोटा चूल्हा (दे) ।

७ फुफक—करीषाग्नि (दे) ।

दीविय (द्वीपिन्)

'दीविय' आदि सभी शब्द व्याघ्र की विभिन्न जातियो के वाचक हैं । वर्ण, आकार के आधार पर इनका भेद किया गया है ।

दीहसक्कुलिका (दीर्घशष्कुलिका)

'दीहसक्कुलिका' आदि शब्द दिवाली और होली आदि पर्वों के अवसर पर बनायी जाने वाली मिठाई के वाचक हैं । यह गुड से बनायी जाती थी । आज भी राजस्थान मे इन पर्वों पर खजली बनाने का रिवाज है । मीठी खाद्य वस्तु के अर्थ मे प्रज्ञापना मे 'भिसकदय' शब्द का उल्लेख है ।[1] जो भिसखटक का सवादी प्रतीत होता है । खाखट्टिका, खोरक, दीवालिका, दसीरिका, मत्थकत आदि शब्द इसी अर्थ मे देशीपद हैं ।

१. प्रज्ञाटी प ५३३ ।

दुक्ख (दु:ख)

कर्म दु ख का कारण है, अत कारण मे कार्य का उपचार कर दु.ख और कर्म—इन दोनो को एकार्थक माना है।[1]

दुक्खण (दु खन)

पीडा अनेक रूपो मे अभिव्यक्त होती है। यहा 'दुक्खण' आदि शब्द पीडा की विभिन्न भूमिकाओ के बोधक हैं—[2]

दु:ख—इष्ट के वियोग से उत्पन्न दु ख।

जूरण—क्रमा, शारीरिक कमजोरी से समुद्भूत पीडा।

शोचन—शोक व दीनता से उत्पन्न दु ख।

तेपन—अश्रुविमोचन।

पिट्टण—लकडी आदि से पीटना।

परितापन—शारीरिक, मानसिक पीडा देना।

दुट्ठ (दुष्ट)

दुर्बोध्य व्यक्ति के पर्याय मे तीन शब्दो का उल्लेख है। इनकी अर्थ परम्परा इस प्रकार है—

१ दुष्ट—जो दुष्टता करता रहता है।
२ मूढ—गुण-दोष के विवेक से विकल।
३ व्युद्ग्राहित—कदाग्रही द्वारा भिडकाया हुआ।

दुद्ध (दुग्ध)

दुद्ध शब्द के पर्याय मे ५ शब्दों का उल्लेख है। इनमे कुछ शब्द दूध के लिए प्रयुक्त प्रसिद्ध शब्द हैं। लेकिन 'पीलु' और 'वालु' शब्द दूध के लिए प्रयुक्त देशी शब्द हैं। पीलु और वालु शब्द प्रान्तीय भाषा से आया प्रतीत होता है। कन्नड मे दूध को 'हालु' कहते हैं। तमिल मे दूध को 'पाल' कहते है, अत पीलु और वालु शब्द सभवत इन्ही शब्दो के कोई रूप होने चाहिए।

दुम (द्रुम)

'दुम' शब्द के प्राय सभी पर्याय वृक्ष के स्पष्ट वाचक हैं लेकिन

१. वधुचू पृ २८।
२. भटी प २७४।

चूर्णिकार ने व्युत्पत्तिकृत भेद इस प्रकार किया है—

द्रुम—जो धरती और आकाश के बीच में समाता है।

पादप—जो पैरों (जडो) से पीता है।

रुक्ख—जो पृथ्वी से आहार ग्रहण करता है।[1]

विटपी—जो शाखाओ से सुशोभित होता है।

अग—जो गति नही करता।

तरु—जिससे नदी मे तैरा जाता है।

कुह—जो भूमि के द्वारा धारण किया जाता है।

महीरुह—जो पृथ्वी पर उगता है।

वच्छ—जो पुत्र की भांति स्नेह से पाला जाता है।

रोपक—जिसे पृथ्वी पर रोपा जाता है।

भञ्जक—जो काटा जाता है।[2]

दुमपुप्फिया (द्रुमपुष्पिका)

दशवैकालिक सूत्र के वृत्तिकार हरिभद्रसूरि (वि० आठवीं शताब्दी) ने द्रुमपुष्पिका के १४ पर्याय गिनाये हैं—

१ द्रुमपुष्पिका	६ मेष	११ इषु
२ आहारएषणा	७ जलूक	१२ गोलक
३ गोचर	८ सर्प	१३ पुत्रमास
४ त्वक्	९ व्रण	१४ पूति-उदक।
५ उञ्छ	१० अक्ष	

द्रुमपुष्पिका—यह दशवैकालिक सूत्र का पहला अध्ययन है। इसमे मुनि की भिक्षाचर्या सम्बन्धी सूत्र हैं। उन सूत्रो की भावना के अनुरूप इन शब्दो का चयन किया गया है।

ये सभी शब्द भोजन की गवेषणा, ग्रहणैषणा और परिभोगैषणा अर्थात् भोजन के ग्रहण और उपभोग से सम्बन्धित है। इसलिए इन्हे द्रुमपुष्पिका शब्द के अन्तर्गत गृहीत कर लिया गया है। गोचर शब्द

१. निचू २ पृ ३०६ रुक् पृथिवी तं खातीति रुक्खो।

२. दशअचू पृ ७, दशजिचू पृ ११।

माधुकरी वृत्ति का द्योतक है। मुनि गाय की तरह अनेक घरो से थोडा-थोडा ले। वह त्वक् की तरह असार भोजन ले। वह उछ—अज्ञातपिण्ड ले। जो स्वामी अशुद्ध भोजन देना चाहे, उसे मृदुता से समझाए। वह सर्प की भाति एक दृष्टि वाला हो। जैसे व्रण पर बिना किसी राग द्वेष से लेप किया जाता है, वैसे ही मुनि भी बिना राग-द्वेष के भोजन करे। जैसे बाण (इषु) लक्ष्य का वेध डालता है, वैसे ही भिक्षु लक्ष्य प्राप्ति के लिए भोजन करे। जैसे लाख के गोले का निर्माण अग्नि से न अति दूर और न अति निकट रखकर ही किया जाता है वैसे ही मुनि-गृहस्थ सहवास से न अति दूर रहे और न अति निकट रहे। मुनि भोजन का अस्वाद लेते हुए निरपेक्ष भाव से 'पुत्र मास भक्षण' की भाति खाए। मुनि सयम निर्वहण के लिए जैसा मिले वैसा खा ले।[1]

इन उपमाओ से मुनि की माधुकरी वृत्ति को उपमित किया जाता है। इस दृष्टि से ये दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन के नाम है।

देव (देव)

'देव' आदि शब्द देवता के स्पष्ट वाचक होने पर भी इनका निरुक्त कृत अर्थ इस प्रकार है—

देव—जो क्रीडा करते है अथवा जो दिव/आकाश मे रहते है।

अमर—जो कभी मरते नही हैं। (चिरकाल तक स्थायी रहने के कारण अमर शब्द देव के लिए रुढ है)।

सुर—जो अत्यन्त सुशोभित होते है। अथवा समुद्र-मथन के समय जिन्होने सुरा का पान किया था।

विबुध—जो अवधिज्ञान से विशेप जानते हैं।[3]

देसकालण्ण (देशकालज्ञ)

'देसकालण्ण' आदि सभी शब्द साधु के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त है। भावार्थ मे एक ही व्यञ्जना होने पर भी इनका अर्थभेद इस प्रकार है[4]—

देशकालज्ञ—देश और काल को जानने वाला।

---

१ दशजिचू पृ ११-१२ : एतेहिं उवम्म कीरइ त्ति काउं ताणि भण्णंति नामाणि तस्स अज्झयणस्स।

२. दशजिचू पृ १५ : दीव आगास तमि आगासे जे वसति ते देवा।

३ अचि पृ १७-१८।

४. सूचू २ पृ ३१२ एगट्ठिताइं वा सव्वाइ एयाइ।

क्षेत्रज्ञ—आत्मा को जानने वाला।

कुशल—हित की प्रवृत्ति और अहित की निवृत्ति मे निपुण।

पडित—पाप से घृणा करने वाला।

व्यक्त—प्रौढ बुद्धि वाला।

मेधावी—उपायो को जानने वाला। अथवा मर्यादा तथा मेधा से सम्पन्न।

अबाल—मध्यम वय वाला।

मार्गज्ञ—सत् मार्ग को जानने वाला।

पराक्रमज्ञ—यथार्थ स्थान को प्राप्त करने की कला जानने वाला अथवा अपनी शक्ति को जानने वाला।[1]

दोसीण (दे)

'दोसीण' बासी अन्न के लिए प्रयुक्त होने वाला देशी शब्द है। बासी अन्न वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श की दृष्टि से विद्रूप हो जाता है अत व्यापन्न, कुथित आदि सभी शब्द पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से एकार्थक है।

धम्मत्थिकाय (धर्मास्तिकाय)

यह लोकव्यवस्था के अन्तर्गत लोकव्यापी अजीव द्रव्य है। यह सभी प्रकार की गति और प्रकपन का माध्यम है। प्रस्तुत प्रसग मे इसके जो अभिवचन गिनाये है इनमे दो अभिवचन (धर्म, धर्मास्तिकाय) स्वाभाविक है। शेष सारे अभिवचन नामसाम्य के कारण निर्धारित प्रतीत होते है। जैसे शब्दकोष मे स्वर्ण और धतूरे के सदृश नामो का विधान है, वैसे ही धर्म के नाम-साम्य से ये अभिवचन उल्लिखित हैं। वास्तव मे प्राणातिपात विरमण से कायगुप्ति तक के सारे शब्द धर्म के विभिन्न अग हैं। धर्म शब्द की सदृशता के कारण इन्हे धर्मास्तिकाय के पर्याय शब्द मान लिये हैं। इसके अतिरिक्त चारित्र धर्म के वाचक सामान्य या विशेष सभी शब्द धर्मास्तिकाय के अभिवचन हो सकते है।[2]

---

१ सूटी प २७२।

२. भटी पृ १४३१ ततश्च धर्मशब्दसाधर्म्यादस्तिकायरूपस्यापि धर्मस्य प्राणातिपातविरमणादय. पर्यायतया प्रवर्तन्त इति, ये चान्येऽपि तथा प्रकाराः चारित्रधर्माभिधायका' सामान्यतो विशेषतो वा शब्दास्ते सर्वेऽपि धर्मास्तिकायस्याभिवचनानीति।

धम्ममण (धर्ममनस्)

'धम्ममण' के पर्याय के रूप मे ५ शब्दो का उल्लेख है । पांचों शब्द धार्मिक चेतना से युक्त व्यक्ति के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं । इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

१ धर्ममन—धर्म मे अनुरक्त ।

२ अविमन—अशून्य चित्त, भावक्रिया से युक्त ।

३ शुभमन—असक्लिष्ट चित्त वाला ।

४ अविग्रहमन—विकल्प शून्य चेतना वाला ।

५ समाधिमन—रागद्वेष रहित अथवा उपशम प्रधान स्वस्थ मन वाला ।[1]

धम्मिय (धार्मिक)

धम्मिय शब्द के पर्याय मे छह शब्दो का उल्लेख है । धर्म का अनुसरण करने वाला, उससे प्रेम करने वाला, धर्म कहने वाला, प्रतिक्षण धर्म को ही देखने वाला, धार्मिक आचरण करने वाला व्यक्ति धार्मिक ही होता है अत ये सभी एकार्थक हैं ।

धर्म (धर्म)

धार्मिक की प्रथम पहचान है—दृष्टि की समीचीनता । आत्म-धर्म और आत्मस्वभाव ये दोनो सम्यग्दर्शन के ही वाचक हैं । यहां 'धर्म' शब्द सम्यक्दर्शन के लिए प्रयुक्त है ।

धरणा (धरणा)

ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया के चार घटक हैं—अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा । किसी भी ज्ञान की चिरकाल तक स्मृति बनाये रखना धारणा है । सामान्यत सभी शब्द एकार्थक होते हुए भी धारण करने की अनेक अवस्थाओ के वाचक हैं[2]—

धरणा—ज्ञात अर्थ को कुछ समय तक स्मृति मे रखना ।

धारणा—विस्मृत अर्थ को पुन स्मृत करना ।

---

१ प्रटी प १११ ।

२ नदी चू पृ ३७ : सामण्णधारण पडुच्च णियमा एगट्ठिया, धारणत्थ-विकप्पणताए भिण्णत्था ।

स्थापना—ज्ञात अर्थ की समीक्षा कर हृदय में स्थापित करना।

प्रतिष्ठा—ज्ञात अर्थ को उसके भेद-प्रभेद पूर्वक धारण करना।

कोष्ठ—सूत्र और अर्थ को चिरकाल तक धारण करना, वह विस्मृत न हो, उस रूप मे धारण करना (कोठे मे रखे धान की भांति उपदिष्ट अर्थ को सकल रूप मे चिरकाल तक धारण करना।)

उमास्वाति ने प्रतिपत्ति, अवधारणा, अवस्थान, निश्चय, अवगम और अवबोध आदि शब्दो को धारणा के पर्याय माने हैं।[1]

धारणववहार (धारणाव्यवहार)

किसी गीतार्थ आचार्य ने किसी समय किसी शिष्य की अपराध शुद्धि के लिए जो प्रायश्चित्त दिया हो, उसे याद रखकर, वैसी ही परिस्थिति मे उसी प्रायश्चित्त विधि का उपयोग करना 'धारणाव्यवहार' है। इसके पर्याय शब्दो का आशय इस प्रकार है—

१ उद्धारणा—छेदसूत्रो से उद्‌घृत अर्थपदो को निपुणता से जानना।

२ विधारणा—विशिष्ट अर्थपदो को स्मृति मे धारण करना।

३ सधारणा—धारण किये हुए अर्थपदो को आत्मसात् करना।

४ सप्रधारणा—पूर्ण रूप से अथपदो को धारण कर प्रायश्चित्त का विधान करना।[2]

धुण्ण (दे)

'धुण्ण' शब्द पाप के अर्थ मे प्रयुक्त होने वाला देशी शब्द है।

धुव (ध्रुव)

ध्रुव आदि छहो शब्द ध्रुवता के ही बोधक हैं। उनका शब्दगत अर्थभेद इस प्रकार है—

१ ध्रुव—अचल।

२ नित्य—सदा एक रूप रहने वाला।

३ शाश्वत—प्रतिक्षण अस्तित्व मे रहने वाला।

४ अक्षय—अविनाशी।

---

१. तभा १।१५।

२. व्यभा १० टी प ३०२।

५ अव्यय—एक भी आत्म प्रदेश का जिसमे व्यय नहीं होता।

६ अवस्थित—अनन्त पर्यायो की अवस्थिति।[1]

धुवक (ध्रुवक)

'धुवक' का अर्थ है—ध्रुव, निष्प्रकप, शाश्वत। इसमे शिव, गुत्त (गोत्र) भव, अभव ये पर्याय भी हैं। इनमे शिव मोक्ष का, गोत्र सयम का, भव आत्मा का और अभव सिद्धालय का वाचक है। ये सभी शाश्वत है, अत इनका समावेश यहा कर लिया गया है।

धूत (धूत)

'धुत' और 'धूत'—ये दोनो रूप प्रचलित हैं। 'धुत' साधना की विशेष पद्धति रही है। आचाराग के छठे अध्ययन का नाम 'धुत' है। बौद्ध परम्परा मे अनेक धुनागो की चर्चा है।

'धूत' का अर्थ है—वह प्रक्रिया जिससे कर्मों का धुनन किया जाता है। सूत्रकृताग के चूर्णिकार ने 'धूत (धुत)' के अनेक अर्थ किए हैं—वैराग्य, चारित्र, उपशम, सयम, ज्ञान आदि।[2] ये सारे अर्थ साधना से सबधित हैं।

धूत्तं (धूर्त्त)

धूर्त्त शब्द के पर्याय मे ६ शब्दो का उल्लेख है। सभी शब्द धूर्त्त/शठ के विभिन्न प्रकारो के वाचक हैं—

१ धूर्त्त—जो हिंसा करके ठगता है।[3]

२ नैकृतिक—माया करके ठगने वाला।

३ स्तब्ध—आश्चर्य मे डालकर धोखा देने वाला।

४ लुब्ध—लोभ दिखाकर ठगने वाला।

५ कार्पटिक—साधु के वेश मे ठग।

६ शठ—वेश बदलकर लोगो को धोखा देने वाला।

---

१ भटी प ११६।

२ सूचू १ पृ १६२ धुअ वैराग्य चारित्र उपशमो वा सजमो णाणादि वा।

३. अचि पृ ८८ : धूर्वति हिनस्ति धूर्त।

णन्दि (नन्दि)

नन्दी और शास्त्र—इन दोनो शब्दो को बृहत्कल्प मे एकार्थक माना है[1]। प्रत्यक्षत ये दोनो शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों के वाचक हैं। नन्दी का अर्थ है—मगल। शास्त्र अर्थात् ग्रन्थ। ग्रन्थ/शास्त्र मगलकर होते हैं, अत इनको एकार्थक माना है। अथवा नन्दी सूत्र मे लगभग सभी शास्त्रो का उल्लेख है, इसलिए भी इन दोनो शब्दो को एकार्थक माना जा सकता है।

नववधू (नववधू)

नववधू शब्द के पर्याय मे तीन शब्दो का उल्लेख है। जिसने प्रसव नही किया है अथवा गर्भ धारण नही किया है, वह भी नववधू ही है।

नस्समाण (नश्यत्)

'नस्समाण' शब्द के पर्याय मे सात शब्दो का उल्लेख है। लगभग सभी शब्द समवेत रूप मे नष्ट होने के अर्थ मे प्रयुक्त हैं।

नायय (ज्ञातक)

देखें—'मित्त'।

निग्गमण (निर्गमन)

'निग्गमण' आदि चारो शब्द गण से बहिर्भूत होने के अर्थ मे पर्यायवाची हैं।[2]

निज्जामय (निर्यामक)

निर्यामक—नौका चालक।
कुक्षिधार—नौका के विभिन्न कार्यों मे नियुक्त नौकर।
गब्भेल्लय—नौका मे छोटे बडे कार्य करने वाला। (दे)

इस प्रकार ये सभी शब्द नौका सचालक के वाचक होने से एकार्थक हैं।[3]

निट्ठियट्ठ (निष्ठितार्थ)

'निट्ठियट्ठ' आदि शब्द सिद्ध अवस्था प्राप्त व्यक्तियो के लिए

---

१ बृकटी पृ ११।
२. व्यभा टी प १२४।
३ ज्ञाटी प १४३।

प्रयुक्त हैं। सभी शब्द उनकी विभिन्न विशेषताओ को व्यक्त करते हैं। जैसे—

निष्ठितार्थ—अपने लक्ष्य को प्राप्त।

निरेजन—निश्चल।

नीरज—कर्म-रज से मुक्त।

निर्मल—पवित्र।

वितिमिर—केवल ज्ञान से आलोकित।

विशुद्ध—कर्मों की विशुद्धि से प्रकर्ष स्थिति को प्राप्त।[1]

नियाग (नियाग)

नियाग का अर्थ है—मोक्ष। सद्धर्म मोक्ष का साधन है। अन्तिम अवस्था मे साधन ही साध्य के रूप मे परिणत हो जाता है, अत ये तीनो शब्द एकार्थक हैं।

निव्वाण (निर्वाण)

देखे—'अणुत्तर'।

निस्सील (निश्शील)

'निस्सील' आदि शब्द व्रत-सवर रहित (असयमी) व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हैं। चारो शब्दो की क्षेत्र सीमा भिन्न होते हुए भी समान अर्थ को व्यक्त करते हैं—

निश्शील—ब्रह्मचर्य आदि व्रत से रहित।

निर्व्रत—अहिंसा व्रत अथवा अणुव्रतो से रहित।

निर्गुण—क्षान्ति आदि दस श्रमण गुणो से विकल।

निर्मर्याद—आचार सम्बन्धी मर्यादा से रहित।

नील (नील)

नील के दो अर्थ हैं—काला और नीला। यहां नील शब्द काले रग का प्रतीक है। अधकार और रात्रि का रग काला है, अत गुण के साधर्म्य से इन दोनो शब्दो को काले रग का पर्याय माना है।

---

१ औपटी पृ २१७।

भय का एक बड़ा कारण है—अंधकार और कालिमा। अतः उत्रास को भी उपचार से इसका पर्याय मान लिया है।

पंडिय (पडित)

'पडिय' आदि चारो शब्द आचारांग मे मुनि/ज्ञानी के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हैं। वाच्यार्थ अलग होने पर भी भावार्थ मे सभी एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं—

१. पडित—ज्ञेय को जानने वाला।

२ मेधावी—मर्यादावान् तथा मेधा/बुद्धि से सुशोभित।

३ निष्ठितार्थ—अर्थ के अन्तिम छोर तक पहुचने में समर्थ।

४ वीर—कर्म विदारण करने मे कुशल।

पच्चंतिक (प्रात्यन्तिक)

प्रस्तुत एकार्थक मे ग्राम के अन्तराल-बाहिर रहने वाले अनेक प्रकार के व्यक्तियो तथा जातियो का उल्लेख है। वे प्राय नीच कर्म करने वाले होने के कारण उनकी परिगणना म्लेच्छ के अतर्गत की गयी है। इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

१ प्रात्यन्तिक—गाव के बाह्य भाग मे रहने वाले मातग, चाडाल आदि।

२ दस्यु-आयतन—चोरो की पल्लिया।

३ म्लेच्छ—बर्बर, शबर, पुलिन्द्र आदि म्लेच्छ जातियों की वसतिया।

४ अनार्य—साढे पच्चीस आर्य देशो के व्यतिरिक्त देशो वाले व्यक्तियों के निवास स्थान।

५ दु सज्ञाप्य—मद बुद्धि वाले व्यक्ति।

६ दु प्रज्ञाप्य—ऐसे व्यक्ति जिनको समझाना अत्यन्त दुष्कर होता है।

ये सारे स्थल तथा व्यक्ति म्लेच्छवत् हैं, इसलिए इन्हें म्लेच्छ के अन्तर्गत माना है।[1]

पज्जोसवण (पर्युपशमन)

इसका अर्थ है—पर्युषणा के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर

---

१. आटी प २५२ न तेषु म्लेच्छस्थानेषु · · ।

घूमते रहते हैं और वर्षाकाल के चार महीनों तक एक स्थान पर अवस्थित हो जाते हैं। यह अवस्थान-काल पर्युषणा कहलाता है। इसके आठ पर्याय नाम हैं। उनका अर्थ-बोध इस प्रकार है—

१. पर्यायव्यवस्थापन—पर्युषणा के दिन मुनि अपनी दीक्षा पर्याय का व्यवस्थापन करता है। जैसे—मुझे प्रव्रज्या ग्रहण किये इतने वर्ष हो गये।

२. पर्युपशमन—ऋतुबद्ध काल के द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव आदि पर्याय होते हैं। मुनि वर्षावास मे इन सबका त्याग करता है और वर्षावास के योग्य पदार्थों को ग्रहण करता है।

३. परिवसना—एक स्थान पर चार मास तक वास करना।

४. पर्युषणा—ऋतुबद्ध विहार से निवृत्त होकर वर्षाकाल को अत्यन्त निकट जानकर एक स्थान पर वास करना।

५ वर्षावास—वर्षाकाल के लिए एकत्र वास करना।

६. प्रथमसमवसरण—वर्ष का प्रथम दिन होने, अनेक मुनियो का एक साथ रहने तथा धर्म परिषद् के जुडने का प्रथम दिन होने से भी इसे प्रथमसमवसरण कहते हैं।

७. स्थापना—वर्षाकाल के कल्प की स्थापना करना।

८ ज्येष्ठावग्रह—ऋतुबद्ध काल में एक स्थान पर एक मास का निवास उत्कृष्ट काल होता है, किन्तु वर्षावास का ज्येष्ठ—बडा काल चार मास का होता है।

पडिसेवणा (प्रतिसेवना)

प्रतिसेवना जैन दर्शन का पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है—अतिचार का सेवन, व्रतो मे दोष लगाना।

विराधना, स्खलना, उपघात, अशोधि आदि शब्द इसके स्पष्ट वाचक हैं। शबलीकरण का तात्पर्य है—व्रतों को दोषो से चितकबरा करना।

पत्ति (पत्नी)

'पत्ति' शब्द के पर्याय मे कुछ शब्द पत्नी शब्द के वाचक तथा कुछ शब्द स्त्रीवाचक है। पत्नी, वधू, उपवधू आदि शब्द पत्नी के बोधक हैं। स्त्री, पद्मा, अगना, महिला, नारी, प्रिया आदि शब्द सामान्यतः

स्त्रियो के बोधक हैं। ईश्वरी, स्वामिनी—ये शब्द स्त्री की आढ्यता के द्योतक हैं। इसी प्रकार इष्टा, कान्ता, प्रिया आदि उसकी प्रियता की ओर सकेत करते हैं। स्त्री स्वभावत लज्जालु होती है अतः 'विलिका' भी उसका एक पर्याय है। 'मणामा' और 'पोहट्टी' इसी अर्थ मे देशी है।

पदुम (पद्म)

'पदुम' के पर्याय के अन्तर्गत १७ शब्दो का उल्लेख है। सामान्यत एकार्थक होते हुए भी इनमे जाति एव वर्णगत भेद है। 'सप्फ', 'तणसोल्लिक', कोज्जक' आदि शब्द पद्म के लिए प्रयुक्त होने वाले देशी शब्द हैं। 'इदीवर' नील कमल का और 'पाटल' रक्त कमल का द्योतक है।

देखें—'उप्पल'।

परिग्गह (परिग्रह)

परिग्रह का अर्थ है—स्वीकरण। सैद्धान्तिक दृष्टि से परिग्रह का अर्थ है—मूर्च्छा आसक्ति। लौकिक भाषा मे परिग्रह से तात्पर्य है—पदार्थों का सचय। सूत्रकार ने इसके तीस नाम गिनाये हैं जिनमें परिग्रह, सचय, चय, उपचय, निधान, सभार, आकर, सकर, पिड, सरक्षण आदि शब्द सग्रह और उपचय के वाचक हैं क्योकि धन का ही सग्रहण, उपचय और सरक्षण किया जाता है। इस आधार पर इन सबको परिग्रह माना गया है।

महेच्छा, प्रतिबध, लोभात्मा, आसक्ति, अमुक्ति, तृष्णा, असतोष आदि शब्द परिग्रह को पुष्ट करने वाली अथवा आदमी मे परिग्रह बुद्धि उत्पन्न करने वाली वृत्तिया हैं, अत कारण मे कार्य के उपचार से ये शब्द परिग्रह के वाचक हैं। कुछ शब्द परिग्रह से उत्पन्न विषम स्थितियो के वाचक हैं, जैसे—परिग्रह कलह का भाजन होने से कलिकरड कहलाता है। परिग्रही व्यक्ति हमेशा खेदखिन्न रहता है इसलिए परिग्रह का एक नाम आयास भी है। परिग्रह परिचय बढाता है अत सस्तव, धन-धान्य का विस्तार करने से प्रविस्तार, तथा अत्यागभाव होने से परिग्रह को अवियोग भी कहते हैं। इस प्रकार ये तीस नाम परिग्रह, परिग्रह वृत्ति और परिग्रह परिणाम के द्योतक है।

पवयण (प्रवचन)

वस्तु मे दो धर्म होते है—सामान्य और विशेष। सामान्य अभेद का

और विशेष भेद का प्रतिपादक है। टीकाकारो ने सामान्य धर्मों के आधार पर भी शब्दो को एकार्थक माना है।[1]

आवश्यक निर्युक्ति मे सूत्र, अर्थ और प्रवचन तीनो को एकार्थक मानते हुए भी भिन्न-भिन्न रूप से इनके ५-५ एकार्थक दिये हैं।[2] सूत्र व्याख्येय और अर्थ व्याख्यान होने से दोनो भिन्नार्थक हैं, किन्तु प्रवचन का अग होने से एकार्थक भी हैं। भाष्यकार ने इसी बात को फूल और कली के माध्यम से समझाया है। अर्थ और अनुयोग—ये दोनो एकार्थक शब्द हैं।[3] विशेष व्याख्या के लिए देखें—विभामहेटी पृ ५०४-५०७।

देखें—'सुत्त', 'अणुओग'।

पवेइय (प्रवेदित)

'पवेइय' आदि तीनो शब्द सम्यक् प्ररूपण के अर्थ मे प्रयुक्त किये गये हैं। इनका सूक्ष्म अर्थ-भेद इस प्रकार है—

प्रवेदित—अच्छी तरह ज्ञात, विविध रूप से कथित।

सुआख्यात—भली-भाति विवेचित।

सुप्रज्ञप्त—अनुभव के आधार पर कथित।[4]

पव्वइय (प्रव्रजित)

प्रव्रजित का अर्थ है—दीक्षित अर्थात् मुनि। जो मुनि होता है वह सयम, सवर तथा समाधि से युक्त होता ही है। मुनि का शरीर परुष, कठोर और स्निग्धता से शून्य होता है तथा मन भी स्नेह शून्य होता है अत वह रुक्ष कहलाता है। अथवा जो कर्ममल का अपनयन करता है, वह लूष या रूक्ष है। वह ससार का पार पाने के कारण तीरार्थी कहलाता है। मुनि श्रुताध्ययन के साथ तपस्या करता है इसलिए उपधानवान्, विभिन्न तपस्याओ मे रत रहने के कारण तपस्वी और कर्मक्षय के लिए उद्यत रहने के कारण दुख क्षपक कहलाता है।[5]

---

१ विभामहेटी पृ ५०६।

२. विभा १३६६ एगट्ठियाणि तिन्नि उ पवयण सुत्त तहेव अत्थो य।
एक्केक्कस्स य एत्तो नामा एगट्ठिया पच॥

३. विभामहेटी पृ ५०६. अर्थ व्याख्यानमनुयोग इत्यनर्थान्तरम्।

४ दशजिचू पृ १३२।

५ स्याटी प १७४।

पव्वाविय (प्रव्राजित)

'पव्वाविय' आदि चारो शब्द प्रव्रज्या की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं। इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

प्रव्राजित—शिष्य के रूप मे स्वीकार करना।

मुण्डापित—शिष्य बनाना, दीक्षित करना।

सेधित—व्रतों का आरोपण करना।

शिक्षापित—सूत्र और अर्थ की वाचना देना।

पाण (प्राण)

प्राण आदि शब्द जीव तत्त्व के वाचक होने पर भी इनमे जातिगत भेद है। जैसे—

प्राण—द्वीन्द्रिय आदि।

भूत—वनस्पति।

सत्त्व—पृथ्वी, अप् आदि।

जीव—पञ्चेन्द्रिय प्राणी।

प्राणा द्वित्रिचतु प्रोक्ता, भूताश्च तरव स्मृता।
जीवा पञ्चेन्द्रिया ज्ञेया, शेषा सत्वा उदीरिता॥
देखें—'जीवत्थिकाय'।

पाणवह (प्राणवध)

प्रस्तुत प्रकरण मे प्राणवध के लगभग सभी नाम गुण निष्पन्न हैं। ये सभी नाम प्राणवध की भावना के निकट तथा उसकी विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। प्रत्यक्षत जीवहिंसा के द्योतक न होने पर भी उसकी ओर अभिमुख करने वाली प्रवृत्तियो के वाचक होने से एकार्थक हैं। जैसे—'जीवितान्तकरण' 'व्युपरमण' 'उन्मूलना' 'परितापन-आस्नव', निर्यापना, घातना, मारणा, उपद्रवण, विच्छेद, आरंभ, समारभ 'कटकमर्दन' आदि शब्दो को कार्य मे कारण का उपचार मानकर एकार्थक मान लिया है। प्रस्तुत नामो की सूची मे तीसरा नाम है—अवीसभ (अविश्रम्भ) अर्थात् अविश्वास। प्राणवध मे प्रवृत्त व्यक्ति जीवो के लिए अविश्वसनीय बन जाता है अत अविश्वसनीयता भी एक दृष्टि से हिंसा ही

है । पाचवा नाम है—अकृत्य । जितने भी अकृत्य—अकरणीय कार्य हैं वे हिंसा के द्योतक है, क्योकि उनमे मानसिक, वाचिक या शारीरिक हिंसा रहती है । दुर्गति का कारण होने से दुर्गति प्रपात, वज्र की भाति कठोर व अधोगमन का हेतु होने से वज्ज (वज्र) नाम भी सार्थक है । इसे वर्ज्य भी कहा जाता है, क्योकि हिंसा विवेकी व्यक्तियो के द्वारा वर्जनीय है । हिंसा गुणो की विराधक होने से 'गुणाना विराधना' कहलाती है ।

अपुण्य प्रकृतियो की वृद्धि के कारण पापकोप और उन प्रकृतियो के प्रति लोभ बढाने से पापलोभ भी इसके पर्याय है ।

प्रस्तुत प्रकरण मे इसका एक नाम है—मच्चु (मृत्यु) । आचारांग मे भी हिंसा को मृत्यु कहा है, क्योकि हिंसा आयुष्य कर्म को प्रभावित करती है, अत प्राणवध के 'आयुष्यकर्मस्य भेद' आदि नाम भी गुण-निष्पन्न है ।

पादव (पादप)

देखे—'दुम' ।

पामुद्दिका (पादमुद्रिका)

'अगविज्जा' मे 'पामुद्दिका' शब्द के पर्याय मे पाच शब्दो का उल्लेख है । ये पाचो शब्द पैरो के आभूषण के वाचक है । इन शब्दो का आशय इस प्रकार है—

१ पादमुद्रिका—पैरो मे पहने जाने वाली अगूठी या बिछुवे ।

२ वमिका—जालीदार आभूषण ।

३ खिखिणिका—चलते समय आवाज करने वाला आभूषण पायजेब आदि ।

इसी प्रकार 'पादसूचिका', 'पादघट्टिका' आदि शब्द भी पैरो के भिन्न-भिन्न आभूषणो के नाम है ।

पाव (पाप)

'पाव' शब्द के पर्याय प्राणवध के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हुए हैं तथा उपचार से रौद्र कार्य करने वाले पापी के लिए भी इन शब्दो का प्रयोग किया जा सकता है । इनमे अर्थभेद होते हुए भी क्रूरता व हिंसक-वृत्ति की सर्वत्र समानता है—

पाप—पाप प्रकृति के बन्धन का हेतु होने से पाप तथा पाप प्रकृति का सेवन करने से पापी ।

चंड—कषाय की उत्कटता से चण्ड ।

रौद्र—क्रूर कार्य करने वाला ।

क्षुद्र—अधम व द्रोही ।

साहसिक—बिना विचारे कार्य करने वाला ।

अनार्य—जो आर्य/श्रेष्ठ कर्मों से दूर है ।

निर्घृण—जिसमे पाप के प्रति घृणा नही है ।

नृशस—दयाहीन ।

महाभय—जिससे प्रतिपल भय बना रहे ।

प्रतिभय—प्रत्येक प्राणी जिससे भयभीत रहे ।

बीहणक—दूसरो को भयभीत करने वाला (दे)]।

त्रासनक—आकस्मिक भय पैदा करने वाला जिससे शरीर व मन में कपन पैदा हो जाये ।

निरपेक्ष—दूसरो के प्रति उदासीन ।

निर्द्धर्म—श्रुत, चरित्र आदि धर्म से रहित ।

निष्करुण—करुणा रहित, कठोर हृदय वाला ।[1]

पावय (पापक)

प्रस्तुत प्रसग मे सगृहीत सभी शब्द अप्रशस्तमनोविनय के वाचक है—

१ पापक—अशुभ चिन्तन करने वाला ।

२ सावद्य—गर्हित कार्य मे प्रवृत्त ।

३ सक्रिय—मानसिक सताप पैदा करने वाली क्रियाओ मे प्रवृत्त ।

४ सोत्क्लेश—शोक आदि से अनुगत ।

५ आस्नवकर—आस्रवो से सवलित ।

६. छविकर—प्राणियो को पीडा पहुचाने की प्रवृत्ति से युक्त ।

---

१ प्रटी प ५ ।

७ भूताभिशकन—प्राणियो के लिए भयावह।

पासाण (पाषाण)

'पासाण' शब्द के पर्याय मे तेरह शब्दो का उल्लेख है। कुछ शब्द पत्थर के स्पष्ट वाचक हैं। मणि, वज्र आदि शब्द पत्थर के रूपान्तरण हैं। पर्वतक, गिरिक, मेरुक आदि शब्द शिलाखण्ड के वाचक हैं। मरुभूमि की कठोर मिट्टी पत्थर के समान कठोर होती है। उसे मरुभूतिक कहा जा सकता है। इस प्रकार सभी शब्द पाषाण के विभिन्न रूपान्तरण हैं।

पासादिय (प्रासादीय)

'पासादिय' शब्द के पर्याय के रूप में चार शब्दो का उल्लेख है। ये चारो ही अत्यधिक सुन्दरता को व्यक्त करने वाले विशेषण हैं।[1] जैसे—

१ प्रासादीय—मन को प्रसन्न करने वाला।

२. दर्शनीय—चक्षु को आनन्द देने वाला।

३ अभिरूप—सदा मनोज्ञ रहने वाला।

४ प्रतिरूप—असाधारण रूप।

पिंड (पिण्ड)

'पिण्ड' शब्द के एकार्थक मे बारह शब्दो का उल्लेख है। यद्यपि ये सभी शब्द प्रतिनियत व भिन्न-भिन्न समूहो के वाचक हैं, लेकिन सामान्य रूप से समूह अर्थ के वाचक होने से इन सभी को एकार्थक माना है[2]—

१. पिण्ड—बहुत चीजो को मिलाकर एक पिण्ड बनाना।

२. निकाय– भिक्षुओ का समूह।

३ समूह—मनुष्यो का समुदाय।

---

१. सूटी प १८२ : चत्वारोऽप्यतिशयरमणीयत्वख्यापनार्थमुपात्ता.।

२ राजटी पृ ६।

३ यद्यपि पिंडादय. शब्दा लोके प्रतिनियत एव सघात विशेषे रूढा, तथापि सामान्यतो यद् व्युत्पत्तिनिमित्त संघातत्वमात्रलक्षणं तत् सर्वेषामप्यविशिष्टमिति कृत्वा सामान्यत· सर्वेऽपि पिण्डादयः शब्दा एकार्थिका उक्ता· न कश्चिद्दोष ।

४ समवाय—वणिको का समूह ।

५. समवसरण—तीर्थंकरो की परिषद्, अनेक वादियो का मिलन-स्थल ।

६. निचय—सूअर आदि पशुओं का सघात ।

७. उपचय—पूर्व समूह मे वृद्धि होना ।

८. चय—ईटो की रचना, दीवार आदि बनाना ।

९. युग्म—दो पदार्थों का मिलना ।

१०. राशि—ढेर ।

पितवण्ण (पीतवर्ण)

'पितवण्ण' और पीतक ये दोनो शब्द पीले रंग के स्पष्ट पर्याय हैं। पद्मकेशर व तिगिच्छ (पराग) का रग पीला होता है अत इनको भी पीतवर्ण का पर्याय माना है ।

पितामह (पितामह)

'पितामह' शब्द के पर्याय मे चार शब्दो का उल्लेख है। ये सारे शब्द ब्रह्मा के द्योतक हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

ब्रह्म—जिसमे सारी सृष्टि वृद्धिगत होती है ।[1]

स्वयभू—जो स्वय पैदा होता है ।

प्रजापति—समस्त सृष्टि का स्वामी तथा उसका पालनकर्ता ।

पीणणिज्ज (प्रीणनीय)

आहार का एक कार्य है—शरीर को पुष्ट करना । विभिन्न प्रकार के आहार शरीर के रस, धातु, मास आदि को पुष्ट करते हैं, इसलिए समवेत रूप मे इन्हे एकार्थक माना है—

१ प्रीणनीय—सप्त धातुओ को सम करने वाला ।

२ दीपनीय—दृप्त करने वाला, जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला ।

३ दर्पनीय—बलवर्धक ।

४ मदनीय—कामोत्तेजक ।

५ बृंहणीय—शरीर को उपचित करने वाला ।

---

१. अचि पृ ५२ : बृहन्ति वर्धन्ते चराचराणि भूतान्यत्र ब्रह्मा ।

पूयणट्ठि (पूजनार्थिन्)

पूजा, यश, मान और सम्मान—इन चारों मे शब्दगत अर्थभेद होने पर भी सामान्यत ये एकार्थक हैं। अक्षत आदि से अर्चना करना पूजा है। वाचिक स्तुति करना यश, वदना करना, आने पर खडा होना मान तथा वस्त्र आदि देना सम्मान है। इस प्रकार सम्मान व्यक्त करने के अर्थ मे चारो शब्द एकार्थक हैं।

पोग्गलत्थिकाय (पुद्गलास्तिकाय)

भगवती सूत्र मे षड्द्रव्य के अभिवचन के प्रसग मे पुद्गलास्तिकाय के अभिवचनो का उल्लेख है। इसमे प्रारम्भ के दो शब्द—पुद्गल और पुद्गलास्तिकाय—ये इसके वास्तविक पर्याय हैं। शेष द्विप्रदेशीस्कन्ध से लेकर अनन्तप्रदेशीस्कन्ध तक के सारे शब्द पुद्गल की विभिन्न अवस्थाओ के वाचक हैं।

प्रकृति (प्रकृति)

प्रकृति, प्रधान और अव्यक्त—ये तीनो शब्द एकार्थक माने गए हैं। साख्य के २४ तत्वो मे प्रधान तत्त्व को प्रकृति एव अव्यक्त भी कहा है। मूल तत्व होने से सांख्य दर्शन मे प्रकृति को प्रधान तत्त्व माना है। इसे अव्यक्त भी कहा जाता है क्योकि महान् आदि व्यक्त तत्त्वो की तुलना मे वह अव्यक्त है। महान् आदि विकृतियो की तुलना मे प्रकृति शब्द व्यवहृत होता है। इस प्रकार तीनो शब्दो के अभिवचन सार्थक हैं।

प्रथमसमवसरण (प्रथमसमवसरण)

चातुर्मास का प्रथम दिन सावन बदी एकम होता है। यह धर्म परिषद् के एकत्रित होने का प्रथम दिन है तथा इसी दिन से जैन सवत् शुरु होता है, अत वर्षावास को प्रथमसमवसरण कहते हैं। अवग्रह का अर्थ है—स्थान। ज्येष्ठ अर्थात् प्रधान। चातुर्मास साधुओ के लिए एक स्थान पर रहने का सबसे बडा काल होता है अत इसे ज्येष्ठावग्रह कहते हैं। चातुर्मास मे मुनि एक स्थान पर चार महीने रहता है और शेष आठ महीने वह कही पाच दिन, कही दस दिन और कही एक मास रह सकता है। चार मास वह कही नहीं रह सकता। चार मास का काल ज्येष्ठ बडा होता। अत इसे ज्येष्ठावग्रह कहते हैं।

फासिय (स्पृष्ट)

'फासिय' आदि सातो शब्द व्रत-पालन की उत्तरोत्तर अवस्थाए हैं,

किन्तु एक दूसरे से सम्बद्ध होने से ये समानार्थक हैं। इनका क्रमिक अर्थबोध इस प्रकार है—

१. स्पृष्ट—उचित समय में व्रत का सम्यक् स्वीकरण।

२ पालित—सतत सम्यक् उपयोग से उसका पालन।

३ शोधित—अतिचार वर्जन तथा अन्य क्रियाओ से शोधन करना।

४ तीरित—व्रत पालन की उत्कृष्ट अवस्था प्राप्त करना।

५ कीर्तित—उसके बारे मे दूसरो को कहना।

६ आराधित—उक्त प्रकारो से व्रत की सम्यक् आराधना।[1]

फुडण (स्फुटन)

१ स्फुटन—स्वत ही वस्तु का दो भागो मे विभक्त होना।

२ भञ्जन—टुकडो मे विभक्त करना।

३ छेदन—छेदना।

४ तक्षण—कुल्हाडी आदि से काटना।

५ विलुञ्चन—शरीर के रोम आदि खीचना।

बंभण (ब्राह्मण)

इसमे सगृहीत ब्राह्मणवाची शब्द गुणो से, ज्ञान से और क्रियाओं से सम्बन्धित है, जैसे—कृतयज्ञ, यज्ञकारी, प्रथमयज्ञ, यज्ञमुड, अग्निहोत्र, आहिताग्नि, अग्निहोत्ररति आदि शब्द क्रिया से सबधित हैं। वेद, वेदध्यायी, वेदाभ्यासी, वेदपारग आदि शब्द ज्ञान से सम्बन्धित हैं। ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञ, प्रियब्रह्म आदि शब्द गुणवाची है।

कुछ शब्द पेय-पदार्थ के आधार पर भी निर्मित हैं। ब्राह्मण को सोमरस पीने वाला माना जाता है, अत सोमपा, सोमपाइ, सोमनाम आदि शब्द भी ब्राह्मण के लिए प्रयुक्त हैं।

सामान्यत विप्र और द्विज ब्राह्मण के अर्थ मे प्रयुक्त होते हैं। लेकिन जो ब्राह्मणजाति मे पैदा होते हैं वे विप्र तथा उस जाति मे उत्पन्न होकर योग्य वय मे यज्ञोपवीत धारण करने वाले द्विज कहलाते हैं।

---

१ प्रटी प ११३।

बहुजनाचीर्ण (बहुजनाचीर्ण)

ये तीनो शब्द 'जीतव्यवहार' के द्योतक हैं। अनेक गीतार्थ आचार्यों द्वारा आचीर्ण विधि को 'जीत' कहा जाता है। उसी विधि को परम्परा से व्यवहृत करना अथवा अपनी बहुश्रुतता से उस विधि के आधार पर अन्य विधि प्रवर्तित करना 'जीत' व्यवहार कहलाता है। ये तीनो शब्द इसी भावना के प्रतीक हैं। यह युगानुकूल परिवर्तन की प्रामाणिकता की ओर सकेत करता है।

बालक (बालक)

बालक शब्द के पर्याय मे आठ शब्दो का उल्लेख है। इनमे कुछ शब्द अन्य जाति (पशुजाति) के बच्चो के वाचक है, जैसे—

पिल्लक—कुत्ते का बच्चा (दे)

तर्णक }—गाय का बछडा।
वत्सक

कलभ—हाथी का बच्चा।

इन सभी शब्दो को अवस्थागत समानता से बालक के पर्याय मे माना है।

भंत (भदन्त)

'भत' आदि शब्द ईश्वर तुल्य व्यक्ति के अर्थ मे प्रयुक्त हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

भदन्त—जो भद्र/कल्याण और सुख से युक्त है।

भयान्त—जिसने भय/त्रास का अन्त कर दिया है।

भवान्त—जिसने ससार का अन्त कर दिया है।

('भत' शब्द के सस्कृत मे भदन्त, भयान्त और भवान्त आदि रूप बन जाते हैं।)

भय (भय)

दुःख, मृत्यु, अशाति और अनर्थ का कारण है–भय, इसलिए कारण मे कार्य का उपचार करके इन शब्दो को भी भय का पर्याय माना है। यद्यपि सस्कृत के कोशकारो ने भय के पर्याय मे इन शब्दो का उल्लेख नही किया है लेकिन चूर्णिकार एव टीकाकारो ने अनेक स्थलो पर इन्हें

एकार्थक माना है।[1]

भवण (भवन)

आकार प्रकार मे भेद होते हुए भी 'भवण' आदि चारो शब्द घर के अर्थ मे एकार्थक हैं। जैसे—

१ भवन—चतु शाल आदि।

२. गृह—सामान्य घर।

३ शरण—तृण आदि से बनी झोपडी।

४ लयन—पर्वत को खोदकर बनाया गया घर अथवा पत्थर से निर्मित घर।

भिक्खु (भिक्षु)

'भिक्खु' शब्द के पर्याय मे तेतीस शब्दो का उल्लेख हुआ है। प्रवृत्ति लभ्य दृष्टि से सभी शब्द भिक्षु के पर्याय है लेकिन व्युत्पत्ति लभ्य (समभिरूढ नय की) दृष्टि से सभी शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ के वाचक हैं। कुछ शब्दो का तात्पर्य इस प्रकार है—

१ तीर्ण—ससार समुद्र को पार करने का इच्छुक।

२ त्रायी—षड्जीवनिकाय का रक्षक।

३ द्रव्य—शुद्धचैतन्य स्वरूप।

४ मुनि—ज्ञानी।

५. प्रज्ञापक—धर्मदेशना देने वाला।

६ पाषण्डी—अनेक दर्शनो का ज्ञाता, पाप से पलायन करने वाला।

७ ब्राह्मण—ब्रह्मचर्य मे रत।

८ श्रमण—श्रम करने वाला, सम रहने वाला तथा अच्छे मन वाला।

९ निर्ग्रन्थ—बाह्य और आभ्यन्तर ग्रथि से मुक्त।

१० तपस्वी—तपस्या मे रत।

११ क्षपक—कर्म-क्षय करने वाला।

१२ भवान्त—ससार प्रवाह का अन्त करने वाला।

---

१ आचू पृ २६ भय दुक्ख असात मरण असति अणत्थाणमिति एगट्ठा।

ये सभी नाम भिक्षु के विभिन्न गुणो के आधार पर प्रचलित हैं। पाषण्डी, मुनि, प्रज्ञापक, बुद्ध, विदु आदि शब्द भिक्षु की ज्ञान चेतना को व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार व्रती, क्षान्त, दान्त, विरत, यति, प्रव्रजित, सयत, साधु, तपरत, सयमरत आदि शब्द सयम चेतना के द्योतक हैं। तथा मुक्त, अगार, तीर्ण, द्रव्य, निर्ग्रन्थ, भवान्त, क्षपक, तीरार्थी आदि शब्द साधु की मोहरहित वीतराग चेतना के आधार पर प्रचलित हैं।

भीय (भीत)

भयभीत के अर्थ मे चारों शब्द एकार्थक हैं।[1] इनका आशय इस प्रकार है—

भीत—डरपोक।

त्रस्त—क्षुब्ध, एव भय के कारण पसीने से तरबतर।

उद्विग्न—चिन्ता से भयभीत।

भूमि (भूमि)

देखे—'थेरभूमि'।

भेसण (भेषण)

'भेसण' आदि शब्द भयभीत करने के अर्थ मे प्रयुक्त हैं—

१ भेषण—डराना।

२ तर्जन—अगुली निर्देश पूर्वक डाटते हुए भयभीत करना।

३. ताडन—लकडी आदि से पीटते हुए डराना।

भोज्ज (भोज्य)

भोज और सखडि—ये दोनो जीमनवार के प्रतीक हैं। 'सखडि' जीमनवार के अर्थ मे प्रयुक्त देशी शब्द हैं। सखडि शब्द का शाब्दिक अर्थ है—हिंसा। जीमनवार मे हिंसा होती है, इसलिए इसे 'सखडि' कहा जाता है। इसका दूसरा अर्थ सस्कृति भी किया जा सकता है क्योकि भोज आदि मे अन्न का सस्कार किया जाता है—पकाया जाता है।[2]

---

१. त्रिपाटी प ४३ भीया — इति भयप्रकर्षाभिधानार्थैकार्थाः।

२. दस पृ ३६२।

मंदर (मन्दर)

मदर पर्वत के एकार्थको का अनेक स्थलो से सग्रहण किया गया है। इन सब नामो की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है[1]—

मदर—मदर देव के योग से प्रचलित नाम।

मेरु—मेरु देव के कारण प्रचलित नाम।

मनोरम—देवताओ के मन को प्रसन्न करने वाला।

सुदर्शन—स्वर्णमय एव रत्नमय होने से दर्शनीय।

स्वयप्रभ—रत्नो की बहुलता से स्वय प्रकाशी।

गिरिराज—समस्त पर्वतो मे मूर्धन्य तथा तीर्थकरो का अभिषेक होने से गिरिराज।

रत्नोच्चय—अनेक प्रकार के रत्नो का समूह।

शिलोच्चय—जिस पर पाडुशिलाओ का उपचय है।

लोकमध्य—समस्त लोक का मध्यवर्ती।

लोकनाभि—लोक की नाभि के समान अवस्थित।

अच्छ—पवित्र।

अस्त—सूर्य आदि ग्रह-नक्षत्र इससे अन्तरित होकर अस्त होते हैं।

सूर्यावर्त—सूर्य-चन्द्र आदि जिसकी प्रदक्षिणा करते हैं।

सूर्यावरण—सूर्य-चन्द्र आदि नक्षत्र जिसको आवेष्टित करते हैं।

उत्तम—सर्वश्रेष्ठ।

उत्तर—भरत आदि क्षेत्रो के उत्तर मे स्थित।

दिशादि—सभी दिशाओ का आदि/प्रारम्भ बिन्दु।

अवतस—समस्त पर्वतो का मुकुट।

धरणिकील—पृथ्वी की धुरी।

धरणिशृग—पृथ्वी पर सबसे ऊचा।

महव्वय (महावय)

'महव्वय' शब्द के पर्याय मे इक्कीस शब्दो का उल्लेख है। महावय से क्षीणवश तक के लगभग सभी शब्द बूढे व्यक्ति के स्पष्ट वाचक

---

१ सूर्यटी प ७८ मदरादय· शब्दा परमार्थत एकार्थिकास्ततो भिन्नाभिप्रायतया प्रवृत्ताः।

हैं। लेकिन क्षीण, निष्ठित, परिमलित, परिशुष्क, परिशटित आदि शब्द वृद्धावस्था से होने वाली परिणतियो के द्योतक होने से एकार्थक हैं।

महापउम (महापद्म)

आगामी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर महापद्म (श्रेणिक का जीव) सन्मति कुलकर की पत्नी भद्रा की कुक्षि मे जन्म लेंगे। जब उनका जन्म होगा तब शतद्वार नगर मे बहुत विशाल पद्मो की वर्षा होगी, इसलिए बालक का नाम 'महापद्म' रखा जाएगा। कुमारावस्था मे देव उनका सहयोग करेंगे, अत उनको 'देवसेन' कहा जायेगा। राजा होने के पश्चात् उनका मुख्य वाहन विमल, चतुर्दन्त हस्तिरत्न होगा, इसलिए उनका नाम 'विमलवाहन' रखा जायेगा। इस प्रकार ये तीनो ही नाम सार्थक—गुणनिष्पन्न हैं।[1]

माण (मान)

मान के एकार्थक के प्रसग मे भगवती सूत्र मे बारह नामो का उल्लेख है। यद्यपि सामान्य रूप से ये सभी एकार्थक हैं, लेकिन प्रत्येक शब्द मान की उत्तरोत्तर अवस्था को प्रकट करते हैं।[2]

१ मान—अभिमान की सामान्य अवस्था।

२ मद—प्रसन्नता से होने वाला उत्कर्ष भाव।

३ दर्प—सफलता पर होने वाला अहकार अथवा उन्मत्तता (मदोन्मत्तता)।

४. स्तम्भ—खम्भे की भाति अकडकर रहना।

५ गर्व—शारीरिक स्तर पर विशेष रूप से दिखाई देने वाला अहकार। जैसे—नाक फूलना, गर्दन कडी रहना आदि।

६ अत्युत्क्रोश—दूसरो के सामने अपने गुणो का कीर्तन करना और स्वयं को श्रेष्ठ बताना। इस स्थिति मे अह वाणी मे प्रकट होने लगता है।

७ परपरिवाद—दूसरो की निंदा करना व उनकी विशिष्टता का अपलाप करना।

८ उत्कर्ष—अभिमानवश अपनी समृद्धि व ऐश्वर्य का दिखावा करना।

---

१. स्था ९/६२।

२. भटी पृ १०५१. मान इति सामान्य नाम मदादयस्तु तद्विशेषाः।

९. अपकर्ष– अहकारवश ऐसा कार्य करना जिससे दूसरो की हीनता दिखाई दे।

१० उन्नत—विनय-विमुखता अथवा नीति-न्याय से विमुख होना।

११. उन्नाम—अभिमानवश नमन न करना।

१२ दुर्नाम—श्रद्धेय के प्रति अकडाई से नमन करना।

स्तम्भ आदि शब्द मान के कार्य हैं, लेकिन वस्तुत ये सभी मान के एकार्थक हैं।[1]

बौद्ध साहित्य मे १० क्लेशवस्तु मे मान को क्लेश माना है तथा उस प्रसग मे मान के वाचक अनेक शब्दो का उल्लेख है, जैसे—मान, मञ्ञना, मञ्ञितत्त, उन्नति, उन्नम, धज, सम्पग्गाह, केतुकम्यता आदि।[2]

माया (माया)

'माया' शब्द के पर्याय मे यहा पन्द्रह शब्द उल्लिखित हैं। यद्यपि ये सभी शब्द माया के कार्य रूप मे उद्धृत हैं, लेकिन उपचार से टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[1]

१ माया—सामान्य अवस्था।

२ उपधि—दूसरो को ठगने के विचार से उसके पास जाना।

३ निकृति—किसी को ठगने के लिए पहले उसके प्रति आदर करना अथवा एक माया को छिपाने के लिए दूसरी माया करना।

४ वलय—वक्र आचरण, व्यगपूर्ण वचन बोलना।

५ गहन—दूसरा समझ न सके ऐसा सघन शब्दजाल रचना।

६ नूम—दूसरो को ठगने के लिए अधम से अधम बर्ताव करना। (दे)

७ कल्क—हिंसात्मक उपायो से ठगना।

८ कुरूप—माया व षड्यन्त्र करने वाले व्यक्ति का चेहरा घबराहट व बेचैनी से कुरूप हो जाता है अत माया का एक अर्थ कुरूप है।

---

१. भटी पृ १०५१ : स्तम्भादीनि मानकार्याणि मानवाचका वैते ध्वनय.।

२. धस पृ २७१-७२।

१. भटी पृ १०५२ मायैकार्थाः वैते ध्वनयः।

९. जिम्ह—बगुले की भांति वंचनापूर्ण व्यवहार करना ।

१०. किल्विष—किल्विषी देव की भांति कपटपूर्ण आचरण करना ।

११. आचरण—किसी को छलने के लिए नाना प्रकार की कपटपूर्ण चेष्टाएं करना ।

१२ गूहन—कपटाई करके अपने स्वरूप को छिपाना ।

१३. वंचन—दूसरो को पूरी तरह ठगना ।

१४. प्रतिकुञ्चन—दूसरो द्वारा सरलभाव से कहे वचन का खडन करना तथा अपनी असत्य बात को अच्छे शब्दो मे प्रस्तुत करना ।

१५ सातियोग—मिलावट करना व कूट-माप-तौल करना ।

प्रस्तुत एकार्थक मे माया, उपधि और निकृति तक के शब्दो में मानसिक माया, वलय और गहन मे वाचिक माया तथा नूम से सातियोग तक के सभी शब्दो मे माया कार्यरूप मे परिणत हो जाती है ।

मित्त (मित्र)

स्वजन आदि मित्र के अन्तर्गत ही होते हैं। अत स्वजन के विभिन्न अग ज्ञाति, सम्बन्धी आदि को भी मित्र के अन्तर्गत लिया है । इन शब्दो की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

मित्र—स्नेही ।

ज्ञाति—समान जाति वाला ।

निजक—पितृव्य आदि निकट सम्बन्धी ।

सम्बन्धी—सास, श्वसुर आदि ।

परिजन—दास-दासी आदि ।

वयस्क—समान वय का मित्र ।

सखा—हर क्रिया साथ में करने वाला ।

सुहृद्—हमेशा साथ मे रहने वाला तथा हितकारी सलाह देने वाला ।

सागतिक—सगति मात्र से होने वाला मित्र ।

धाडिय—सहयोगी (दे) ।

मुच्छिय (मूर्च्छित)

'मुच्छिय' आदि शब्द आसक्ति से होने वाली विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। जैसे—

१ मूर्च्छित—विवेक-चेतना शून्य।

२ ग्रथित—लोभ के तन्तुओ से बंधा हुआ।

३ गृद्ध—आकाक्षा वाला।

४ अध्युपपन्न—विषयो के प्रति एकाग्र।[1]

विपाक सूत्र के टीकाकार ने इनको एकार्थिक माना है।[2]

मुम्मुर (मुर्मुर)

मुर्मुर आदि सभी शब्द अग्नि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ को व्यक्त करते है। लेकिन समवेत रूप से अग्नि के वाचक होने के कारण एकार्थक हैं—

१ मुर्मुर—भस्म मिश्रित कडे की अग्नि।

२ अर्चि—मूल अग्नि से विच्छिन्न ज्वाला अथवा दीपशिखा का अग्रभाग।

३ ज्वाला—अग्नि से सयुक्त अग्निशिखा।

४ अलात—अधजली लकडी।

५ शुद्ध अग्नि—इधन रहित अग्नि अथवा अय पिण्ड मे प्रविष्ट अग्नि।

मेढि (मेढी)[3]

'मेढि' आदि शब्द कुटुम्ब या समाज के प्रधान व्यक्ति के बोधक हैं। वह व्यक्ति पूरे कुटुम्ब या समाज का आधारभूत होता है, अत ये सभी शब्द उसकी गुणवत्ता को द्योतित करते है।

मोहणिज्जकम्म (मोहनीयकर्म)

ये सभी नाम मोहनीय कर्म की विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक हैं। यहा अवयवो मे अवयवी अथवा खड मे समुदाय का उपचार कर सभी

---

१. ज्ञाटी प ६१।

२ विपाटी प ४१ · मुच्छिए त्ति एकार्था।

३. आप्टे, पृ १२८९ मेढि।, मेढी, मेथि·।

को मोहनीय की संज्ञा दी गयी है। कषाय चार हैं—क्रोध, मान, माया और लोभ। इनमें क्रोध के दस, मान के ग्यारह, माया के सतरह और लोभ के चौदह—इस प्रकार चार कषायो के ५२ भेद मोहनीय के पर्याय मान लिए गये हैं। इसके अतिरिक्त भगवती सूत्र मे क्रोध आदि चारो कषायो के भिन्न भिन्न पर्याय शब्दो का उल्लेख मिलता है जो प्राय इन शब्दो से समानता रखते है।

विशेष व्याख्या के लिए देखे—'क्रोध', 'मान', 'माया' और 'लोभ'।

रज्ज (राज्य)

राज्य, देश और जनपद—ये तीनो शब्द वसति के वाचक हैं।

१ राज्य—सम्पूर्ण राष्ट्र।

२. देश—प्रान्त।

३. जनपद—प्रान्त की ईकाई (जिला)।

इसके अतिरिक्त ग्राम, नगर, निगम, राजधानी, खेट, कर्बट, मडब, द्रोणमुख, पत्तन, आकर, आश्रम, सवाह, सन्निवेश आदि शब्द भी वसति के प्रकार हैं। ये सभी शब्द यद्यपि क्षेत्ररचना की दृष्टि से भिन्न-भिन्न है, लेकिन वसति के रूप मे इनको एकार्थक माना है।

रयस् (रयस्)

रय का अर्थ है—वेग। चेष्टा, अनुभव और फल इसी अर्थ के वाचक हैं। वृत्तिकार ने इन्हे एकार्थक माना है।[1] इनको एकार्थक मानने का रहस्य सुबोध नही है।

रहस्स (ह्रस्व)

'रहस्स' शब्द के एकार्थक के रूप मे तेवीस शब्दो का उल्लेख है। यहा 'सपिडित' 'सन्निरुद्ध' आदि शब्द ह्रस्व अर्थ के अन्तर्गत लिये गए हैं। जो रोका हुआ होगा, वह एकत्रित होने के कारण विस्तृत नही होगा। इसी दृष्टि से आकुडित (आकुञ्चित), सवेल्लित (दे) आदि शब्द जो सवृत या सकुचित के अर्थ मे हैं, वे भी अल्प या ह्रस्व के ही द्योतक हैं।

---

१. आवहाटी १ पृ २६३।

राग (राग)

राग का अर्थ है—अनुराग, लोभ, आसक्ति। यहां गृहीत कुछ शब्द आसक्ति की मंदता और कुछ शब्द उसकी तीव्रता के द्योतक हैं। जैसे—मूर्च्छा, स्नेह, गृद्धि, अभिलाषा आदि शब्द आसक्ति की तीव्रता की ओर संकेत करते हैं।

देखें—'लोभ'।

राहु (राहु)

भगवती मे राहु के नौ नाम उल्लिखित हैं। इनमे दर्दुर, मकर, कच्छप आदि कुछ नाम पशुवाची हैं। राहु एक देव है। उसके विमान पाच वर्णों के है—कृष्ण, नील, रक्त, पीत और श्वेत। राहु के अभिवचनो की सार्थकता अन्वेषणीय है। शब्दकल्पद्रुम मे उसके अनेक नामो का उल्लेख है—राहु, तमस, स्वर्भानु, सैंहिकेय, विधुन्तुद, अभ्रपिशाच, ग्रहकल्लोल, उपप्लव, शीर्षक, उपराग, कृष्णवर्ण, कबन्ध, अगु, असुर आदि। राहु के प्रत्यधिदेवता का नाम सर्प है। और राहु का वर्ण कृष्ण है।[1] इस प्रकार कृष्ण सर्प उसका पर्याय बन जाता है। इसी प्रकार अन्यान्य शब्द भी उसकी विभिन्न अवस्थाओ के द्योतक होने चाहिए।

रुण्ण (रुदित)

१ रुदित—रोना, आसू बहाना।

२ रटित—सिसकते हुए रोना। गुजराती भाषा मे रोने के अर्थ मे 'रडे छे'—ऐसा प्रयोग होता है।

३ क्रदन—इष्ट वियोग मे क्रन्दन के साथ रुदन।

४. रसित—सूअर की भांति करुणोत्पादक शब्द करते हुए रोना।

५ करुणविलपित—करुण विलाप करना।[2]

देखें—'रोयमाणी'।

रोयमाणी (रुदती)

'रोयमाणी' आदि शब्द रुदन की विशेष अवस्थाओ के द्योतक है। जैसे—

---

१. शक भा ४ पृ १६०।

२ प्रटी प १६७।

१. रुदन—रोना।

२ क्रन्दन—क्रन्दन के साथ रुदन।

३ तेपन—भय और पसीने से मिश्रित रुदन।

४ शोक—शोक व दुख के साथ निरन्तर रुदन।

५ विलपन—विलाप एव छाती पीटते हुए रोना।

देखे—'रुण्ण'।

लघुक (लघुक)

देखें—'गुरुक'।

लता (लता)

जैन परम्परा मे इन्द्रियविजय के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की तपस्याए की जाती थी। उनको इन्द्रियविजय तप कहा जाता था। उसका क्रम इस प्रकार है—

पहले दिन दो प्रहर करना, दूसरे दिन एकासन, तीसरे दिन विगय-वर्जन, चौथे दिन आचाम्ल, पाचवे दिन उपवास।

इस प्रकार एक-एक इन्द्रिय विजय के लिए पाच दिनो तक यह तप करना होता था। यह पाच दिनो की एक लता, श्रेणी या परिपाटी होती थी।[1]

लद्धट्ठ (लब्धार्थ)

'लद्धट्ठ' आदि शब्द अर्थ-ग्रहण करने की क्रमिक अवस्थाओ के द्योतक हैं। लेकिन समवेतरूप मे वे एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। जैसे—

१ लब्धार्थ—श्रवण के द्वारा अर्थ को जानना।

२ गृहीतार्थ—अर्थ का अवधारण करना।

३ पृष्टार्थ—सशय होने पर पूछना।

४ अभिगतार्थ—अर्थ का सम्यक् अवबोध करना।

५. विनिश्चितार्थ—तात्पर्य को समझ कर हृदयगम कर लेना।

---

१. प्रसाटी प ४३५।

लद्धमईय (लब्धमतिक)

मति का अर्थ है बुद्धि, श्रुति का अर्थ ज्ञान तथा सज्ञा का अर्थ मानसिक अवबोध है। इस प्रकार ये तीनों शब्द ज्ञानार्थक हैं।

लोभ (लोभ)

लोभ के पर्याय शब्दो में यहा सोलह शब्दो का उल्लेख है। ये सभी शब्द लोभ की उत्तरोत्तर अवस्था के द्योतक हैं।[1] इन शब्दो का अर्थबोध इस प्रकार है—

इच्छा—किसी वस्तु के प्रति अभिलाषा।

मूर्च्छा—प्राप्त वस्तु की रक्षा का प्रयत्न।

काक्षा—अप्राप्त की प्राप्ति का प्रयत्न।

गृद्धि—प्राप्त विषयो मे आसक्ति।

तृष्णा—अतृप्ति भाव।

भिध्या—विषयो के प्रति दृढ अभिनिवेश।

अभिध्या—पदार्थासक्ति के कारण अपने सकल्प से डिगना।

आशसना—प्रिय व्यक्ति की भौतिक समृद्धि की कामना।

प्रार्थना—दूसरो की समृद्धि की याचना।

लालपन—खुशामद करके इष्ट वस्तु की माग करना।

कामाशा—इष्ट रूप तथा शब्द प्राप्ति की विशेष इच्छा।

भोगाशा—इष्ट गध, रस और स्पर्श के सयोग की इच्छा।

जीविताशा—जीने की उत्कट अभिलाषा।

मरणाशा—विपत्ति मे मरने की इच्छा।

नन्दीराग—भौतिक समृद्धि की सर्वात्मना प्रबल आसक्ति।

धम्मसगणि मे 'लोभक्लेश' के प्रसग मे लोभ के वाचक अनेक शब्दे का उल्लेख है। उसमे कुछ शब्द भगवती मे निर्दिष्ट लोभ के एकार्थक के सवादी हैं जैसे—राग, नदी, नन्दीराग, इच्छा, मुच्छा, अज्झोसान, गेधि सग, पणिधि, आसा, आसिसना, रूपासा, लाभासा, धनासा, जीवितासा पत्थना, अभिज्झा इत्यादि।

---

1. भटी पृ १०५२-५३ : लोभ इति सामान्य नाम, इच्छादयास्तद् विशेषाः

लोमसिका (दे)

'लोमसिका' आदि शब्द विभिन्न प्रान्तो मे ककडी के अर्थ मे प्रयुक्त देशी शब्द हैं। ककडी शब्द 'कक्कुडिगा' शब्द का बदला रूप प्रतीत होता है। 'सगलिका' शब्द यद्यपि फली के अर्थ मे प्रसिद्ध है लेकिन यहा ककड़ी के लिए प्रयुक्त है।

लोलुग

लोलुग का अर्थ है—प्रगाढ। जो प्रगाढ होता है वह अधिक होता ही है अत प्रगाढ को भृश भी कहा जाता है। और अव्यवच्छिन्न होने के कारण उसका एक नाम निरन्तर भी है।

वंझा (वन्ध्या)

'वझा' आदि शब्द एक दृष्टि से बाझ के द्योतक है।

१ वन्ध्या—जो कभी प्रसव नही करती।

२ अजनयित्री—जो प्रजनन नही करती अथवा जिसकी सन्तान जीवित नही रहती।

३. जानुकूर्परमाता—जो हीन अग होने के कारण सतान का प्रसव नही करती।

इस प्रकार तीनो शब्द भावार्थ मे एक अर्थ के वाचक है।

वदणग (वन्दनक)

'वदणग' शब्द के पर्याय मे ५ शब्दो का उल्लेख है। ये पाचो शब्द वदना की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ के वाचक होने पर भी एकार्थक हैं।[1] इनका अर्थबोध इस प्रकार है—

वदनक—प्रशस्त मन, वचन और काया से गुरु का अभिवादन व स्तुति करना।

चितिकर्म—दान आदि देकर सम्मानित करना।

कृतिकर्म—विधिपूर्वक नमन आदि करना।

पूजाकर्म—अक्षत आदि से पूजा करना।

विनयकर्म—विनय करना।

वंदित (वंदित)

देखें—'अच्चिय' तथा 'थुइ'।

---

१. प्रसाटी प २९ . वदनकस्य इमानि भवन्ति पञ्चैव नामानि।

वक्क (वाक्य)

'वक्क' के एकार्थक मे बारह शब्दो का उल्लेख है। कुछ शब्दो की अर्थध्वनि इस प्रकार है'—

१. वचन—जो अर्थ को अभिव्यक्त करता है।

२. गिरा—जो भाषा वर्गणा के पुद्गलो का भक्षण करती है।[1]

३ सरस्वती—जो स्वरयुक्त होती है।

४ भारती—जो अर्थभार को धारण करती है।

५ गो—जो मुख से नि सृत होकर लोकान्त तक पहुच जाती है।

६ भाषा—जो बोली जाती है।

७ प्रज्ञापनी—जिसके द्वारा अर्थबोध किया जाता है।

८ देशनी—जो अर्थ का देशन/कथन करती है।

९ वाग्योग—जीव की वाचिक प्रवृत्ति।

१० योग—शुभ और अशुभ का योग करने वाली।

वध (वध)

'वध' आदि शब्द पीडित करने के अर्थ मे समानार्थक हैं। पीडित करने के साधनो की भिन्नता होने पर भी इनमे पीडा की समानता है—

१ वध—यष्टि आदि से मारना।

२ बन्धन—बाधना।

३ ताडन—पीटना।

४ अकन—तप्त लोहे की शलाका से चिन्हित करना।

५ निपातन—गड्ढे आदि मे फेंकना।

६ विघात—चोट पहुचाना।

ववण (वपन)

'ववण' आदि शब्द बीज-वपन की विवध प्रक्रियाओ के द्योतक हैं—

१ वपन—सामान्यत बीज बोना।

---

१. दशअचू पृ १५९ : वक्क एगट्ठिताणि।

२ रोपण—अकुर आदि को पुन रोपना। जैसे शालि धान्य आदि।

३. प्रकिरण—बीजो को इधर उधर बिखेरना।

४ परिशाटन—कलमे लगाना।

यहां वपन शब्द का अर्थ है—कुछ लाभ देने वाला। ये चारो शब्द एकार्थक हैं।[1]

ववहार (व्यवहार)

सघ व्यवस्था की दृष्टि से निर्मित आचार-सहिता जिसमे कर्तव्य और अकर्तव्य तथा प्रवृत्ति-निवृत्ति का निर्देश हो, वह व्यवहार कहलाती है। व्यवहार के ५ भेद हैं—आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत। भाव व्यवहार के ये पर्याय नाम हैं—

१ सूत्र—अर्थ की सूचना देने वाले पूर्व अथवा छेदसूत्र।

२ अर्थ—सूत्र का अभिधेय स्पष्ट करने वाला।

३ जीत—अनेक गीतार्थ मुनियो द्वारा आचीर्ण।

४ कल्प—सयम पालन करने मे शक्ति प्रदाता।

५ मार्ग—शुद्धि का साधन।

६ न्याय—मोक्ष का साधन।

७ इप्सितव्य—मुमुक्षुओ द्वारा वाछित।

८ आचरित—महान् व्यक्तियो द्वारा आचरित।

ये आठो पर्याय 'व्यवहार' के विषय-वस्तु तथा प्रतिपाद्य के वाचक हैं।[2]

वाम (वाम)

वाम का अर्थ है—प्रतिकूल। वामावृत्त, वामायार, वामशील आदि शब्द प्रतिकूल शील व आचार के अर्थ मे प्रयुक्त हैं। इनमे वामपक्ष, वामदेश, वामभाग आदि शब्द दाहिने भाग के वाचक हैं। तथा अपसव्य आदि शब्द सस्कृत कोशो मे भी वाम के अर्थ मे प्रयुक्त हैं। अप्पग्घ शब्द

१ व्यभा १ टी प ५. वपनशब्दस्य प्रदानलक्षणोऽर्थ. समर्पित.। शब्दचतुष्टयमेकार्थं, एकार्थप्रवृत्ता: परस्परमेते पर्याया.।

२ व्यभा १ टी प ६।

सभवत. इसी अर्थ मे देशी होना चाहिए ।

वितर्क (वितर्क)

देखें—'तक्क' ।

वुड्ढ (वृद्ध)

वृद्ध, श्रावक और ब्राह्मण ये तीनो शब्द आज भिन्न-२ अर्थ के वाचक हैं । प्राचीन साहित्य मे ये तीनो शब्द प्रौढ आचार वाले श्रावक के लिए प्रयुक्त थे । अनुयोग द्वारा चूर्णि मे ब्राह्मण के लिए वृद्धश्रावक शब्द का उल्लेख हुआ है ।[1]

सोधि (शोधि)

धर्म आत्मशोधि का कारण है, अत कारण मे कार्य का उपचार करके यहां धर्म ओर शोधि को भाष्यकार ने एकार्थक माना है ।[2]

संकित (शकित)

'सकित' आदि तीनो शब्द सदिग्ध चेतना के द्योतक है । इनका अर्थबोध इस प्रकार हैं—

१. शकित—लक्ष्य के प्रति सशयशीलता ।

२. काक्षित—कर्तव्य के प्रतिकूल सिद्धान्तो की आकाक्षा ।

३ विचिकित्सित—फल के प्रति सदेह ।

भगवती सूत्र मे इन तीनो शब्दो के साथ इन दो शब्दो का प्रयोग इसी अर्थ मे हुआ है ।

भेदसमापन्न—लक्ष्य के प्रति मन मे द्वैधभाव उत्पन्न होना ।

कलुषसमापन्न—मतिविपर्यास ।

धम्मसगणि मे, कङ्खा, कखायना, कखायितत्त, विमति, विचिकिच्छा द्वेलहक, द्वेधापथ, ससय, अनेकसग्गाह, आसप्पना, परिसप्पना, अपरियोगाहना, थम्भितत्त, आदि का एक ही अर्थ मे प्रयोग हुआ है ।[3]

---

१. अनुद्वाचू पृ १२ ।

२ व्यभा १० टी प ६७ ।

३. धस पृ २५९-६० ।

संख (शख)

शख सफेद होता है। इसके पर्यायवाची ८ शब्द हैं। ये सभी शब्द श्वेतवर्ण के द्योतक हैं, अत वर्णसाम्य के कारण ये एकार्थक हैं।

संघ (सङ्घ)

सघ आदि चारो शब्द श्रमणसमुदाय को व्यक्त करने वाले हैं। लेकिन इनमे सख्याकृत भेद है—

सघ—गण समुदाय।

गण—कुल समुदाय।

कुल—गच्छ समुदाय।

गच्छ—एक आचार्य का परिवार।

सजत (सयत)

इसके अन्तर्गत गृहीत सयत, विमुक्त आदि छहो शब्द सयमी व्यक्ति की भावधारा के द्योतक है। जो व्यक्ति सयमी होना है वह बाह्य आकर्षणो से विमुक्त होता है, अनासक्त होता है। पदार्थ के प्रति तथा शरीर के प्रति उसकी मूर्च्छा नही होती। वह ममकार तथा स्नेहबधन से मुक्त होता है।

संजय (संयत)

अनगार या साधु के विशेषण के रूप मे आगमो मे अनेक स्थलो पर 'सजय' आदि शब्दो का उल्लेख हुआ है—

सयत—सतरह प्रकार के सयम मे अवस्थित।

विरत—पापो से निवृत्त भिक्षु, अथवा बारह प्रकार के तप मे अनेक प्रकार से रत।

प्रतिहतपापकर्मा—ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों को हत करने वाला।

प्रत्याख्यातपापकर्मा—आस्रव द्वारो को निरुद्ध करने वाला।

अर्थभेद करते हुए भी चूर्णिकार जिनदास ने इनको एकार्थक माना है।[1]

इसके अतिरिक्त अक्रिय, सवृत तथा एकान्तपडित भी सयमी

१ दशजिचू पृ १५४ : अहवा सव्वाणि एताणि एगट्ठियाणि।

व्यक्ति के अर्थ को व्यक्त करते हैं।

संत (सत्)

सत्, तत्त्व, तथ्य, अवितथ और सद्भूत ये सारे शब्द सत्य—यथार्थ के द्योतक हैं। जो तथ्य होता है वह यथार्थ ही होता है।[1]

संत (शान्त)

'सत' आदि शब्द शान्त के अर्थ मे प्रयुक्त एकार्थक हैं।[2] इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

शान्त—कषायमंदता।

प्रशान्त—कषाय के उदय को विफल करने वाला।

उपशान्त—कषायो को उदय मे भी नही लाने वाला।

परिनिर्वृत—कषाय के पूर्ण नष्ट हो जाने पर चैतसिक स्वास्थ्य का धनी।

अनाश्रव—प्राणातिपात आदि आस्रव से रहित।

अमम—ममकार रहित।

अकिंचन—अपरिग्रही।

छिन्नस्रोत—ससार प्रवाह के उद्गम मिथ्यात्व आदि स्रोतो से रहित।

निरुपलेप—कम लेप से रहित।

इस प्रकार ये सभी शब्द निर्मलता की उत्तरोत्तर अवस्था के वाचक हैं।

सत (श्रान्त)

'सत' आदि तीनो शब्द थकान के अर्थ मे प्रयुक्त हैं।[3]

श्रान्त—शारीरिक थकान।

तान्त—मानसिक थकान।

परितान्त—शारीरिक और मानसिक थकान।

---

१ शाटी प १८४ एकार्था वैते शब्दाः।

२ औपटी पृ ६६ प्रशमप्रकर्षाभिधानायैकार्थम्।

३. उपाटी पृ १११ . एते समानार्था.।

संदाण (सन्दान)

किसी तपस्या या साधना के प्रतिफल मे भौतिक ऋद्धि सिद्धि की आकाक्षा करना सदान/बधन है। निदान, पर्व आदि इसी के पर्याय है।

संबुद्ध (संबुद्ध)

सबुद्ध, पडित व प्रविचक्षण ये तीनों शब्द ज्ञानी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हैं। चूर्णिकार ने एकार्थक मानते हुए भी इनका सूक्ष्म अर्थभेद किया है—

सबुद्ध—बुद्धि-सम्पन्न, सम्यग् दर्शन युक्त।

पडित—परित्यक्त भोगो के प्रत्याचरण मे दोषो को जानने वाला, सम्यग् ज्ञान से युक्त।

प्रविचक्षण—पाप से विरत, सम्यक् चारित्र से युक्त।[1]

संयत (सयत)

जो सतरह प्रकार के सयम से सवृत है वह सयत, जो साधनाशील है वह साधु तथा जिसके सभी द्वन्द्व समाहित हो चुके हैं वह सुसमाहित है। इस प्रकार ये तीनो शब्द मुनि के पर्याय हैं।

संरंभ (संरम्भ)

सरभ आदि तीनो शब्द हिंसा की क्रमिक अवस्थाओ के द्योतक हैं। इनका आशय इस प्रकार है—

सरभ—वध का सकल्प करना।

समारभ—परितापित करना।

आरभ—वध करना।[2]

सक्क (शक्र)

'सक्क' शब्द के पर्याय मे बारह शब्दो का उल्लेख है जो अर्थभेद रखते हुए भी भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के निमित्त से इन्द्र के अर्थ मे रूढ है[3]—

१ शक्र—शक्ति सम्पन्नता का द्योतक।

---

१ दशजिचू पृ ६२ तथा दशहाटी प ६६।

२ स्थाटी प ३८४।

३ अनुद्वामटी प २४६ . प्रत्येक भिन्नाभिधेयान् प्रतिपद्यते, भिन्नप्रवृत्ति
।

२. देवेन्द्र—देवो का इन्द्र ।

३ देवराज—देवो के मध्य सुशोभित होने वाला ।

४ मघवा—मघ—मेघ को वश मे रखने वाला ।

५. पाकशासन—पाक नामक शत्रु पर शासन करने वाला ।

६ शतक्रतु—सौ यज्ञ सम्पन्न करने वाला । जैन परम्परा के अनुसार कार्तिक सेठ के भव मे सौ उपासक प्रतिमाओ का पालन करने से शतक्रतु ।

७ सहस्राक्ष—इन्द्र के ५०० मत्री होते हैं । वह उनकी हजार आखो से देखता है । अथवा हजार आखो से जितना देखा जाता है वह अपनी दो आखो से देख लेता है, अत सहस्राक्ष ।

८. वज्रपाणि—हाथ मे वज्र रखने वाला ।

९ पुरदर—पुर नामक राक्षस का दारण करने वाला ।

१० दक्षिणार्धलोकाधिपति ।

११ एरावणवाहन—एरावण नामक हाथी के वाहन वाला ।

१२ सुरेन्द्र—सुर/देवो का इन्द्र ।

सक्कार (सत्कार)

सक्कार' शब्द के पर्याय मे सात शब्दो का उल्लेख है । ये सभी शब्द सम्मान अभिव्यक्त करने की भिन्न-२ रीतियो के द्योतक हैं, जैसे—

१ सत्कार—'सक्कारा पवरवत्थमाईहिं'—किसी को आदरपूर्वक भोजन, वस्त्र आदि देना ।

२ सम्मान—स्तुतिवचन, चरणस्पर्श आदि ।

३ कृतिकर्म—वन्दन करना ।

४ अभ्युत्थान—सामने जाना अथवा आदरणीय व्यक्ति के सम्मान मे खडे होना ।

५ अजलिप्रग्रह—हाथ जोडना ।

६ आसनाभिग्रह—आसन पर बैठने का आग्रह करना ।

७. आसनानुप्रदान—आदरणीय व्यक्ति का आसन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

सण्णिहि (सन्निधि)

सन्निधि आदि शब्द सग्रह के द्योतक हैं। लेकिन इन शब्दो मे पदार्थ कृत भेद द्रष्टव्य है। जैसे—

सन्निधि—दूध, दही आदि विनाशी द्रव्यो का सग्रह।

सन्निचय—अविनाशी द्रव्यो का सग्रह।

निधि—सुरक्षित पूजी।

निधान—भूमिगत खजाना।

सद्दूल (शार्दूल)

शार्दूल, सिह और चिल्लल—ये तीनो शब्द सिह की भिन्न-२ जातियो के द्योतक हैं। 'चिल्लल' शब्द चीते के अर्थ मे देशी पद है।

समण (श्रमण)

देखें—'भिक्खु'।

समर (समर)

इसमे सगृहीत पाचो शब्द कलह, युद्ध के द्योतक हैं—

१ समर—घनघोर युद्ध।

२ सग्राम—रण।

३. डमर—राजकुमार आदि के द्वारा उत्पन्न उपद्रव।

४ कलि—सामान्य लडाई, मानसिक क्षोभ।

५ कलह—वाचिक लडाई।

सागारिय (सागारिक)

सागारिक का अर्थ है—गृहस्थ। वह साधुओ को शय्या/वसति का दान करता है अत वह शय्यातर है। ये सारे शब्द मुनि को वसति का दान करने के कारण शय्यातर के वाचक हैं।

सामायिक (सामायिक)

सामायिक का अर्थ है—वह प्रवृत्ति जिसमे समता का लाभ होता

है। समता, प्रशस्तता, शांति, सुख, अनवद्यता और पवित्रता—ये सारे शब्द सामायिक की निष्पत्तिया हैं, अत कारण मे कार्य का उपचार कर इनको भी सामायिक का पर्याय मान लिया गया है। यद्यपि ये शब्द पुनरुक्त जैसे लगते हैं किन्तु यहा पुनरुक्ति दोष नही है।

आवश्यक निर्युक्ति मे चार प्रकार की सामायिको के पर्याय दिये गये हैं।[1] इसके साथ साम, सम और सम्म आदि शब्दो को सामायिक का एकार्थक माना है।

सिक्खिय (शिक्षित)

'सिक्खिय' आदि शब्द ज्ञानप्राप्ति की क्रमिक भूमिकाओ के द्योतक हैं। इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

१ शिक्षित—शिक्षा प्राप्ति की मान्य अवस्था मे आदि से अन्त तक पढना।

२ स्थित—पढे हुए ज्ञान का अविस्मरण, सतत स्मृति और आचरण।

३ जित—ज्ञान का निरन्तर परावर्तन कर उसे अत्यन्त परिचित कर लेना।

४ मित—पठित ज्ञान का विस्तार से अनुस्मरण।

५ परिजित—पठित का क्रम से या व्युत्क्रम से परावर्तन करने की क्षमता।[2]

सिग्घ (शीघ्र)

शीघ्र आदि सारे शब्द शीघ्रता की विशेष अवस्थाओ के द्योतक हैं।[3]

देखें—'उक्किट्ठ'।

सिद्ध (सिद्ध)

सिद्धि का अर्थ है—लक्ष्य प्राप्ति। जो लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, वह सिद्ध है। सिद्ध के एकार्थक शब्द लक्ष्यप्राप्ति की ही विभिन्न अवस्थाओ के वाचक हैं। कुछ शब्दो की अर्थवत्ता इस प्रकार है—

१ सिद्ध—ऋद्धियो से युक्त।

---

१ आवनि ८६१-६४।

२ विभामहेटी पृ ३४६।

३. ज्ञाटी प ६१ · शीघ्रादीनि एकार्थिकानि शीघ्रतातिशयख्यापनार्थानि।

२ परंपरगत—जो उत्कृष्ट-उत्कृष्ट स्थिति को प्राप्त हो गये हैं।

३ असग—सभी बन्धनो से मुक्त।

४ अशरीरकृत—अशरीरी।

५ निष्प्रयोग—प्रवृत्ति रहित।

६. बुद्ध—केवल ज्ञान सम्पन्न।

७ मुक्त—कर्मबन्धन से मुक्त।

८. परिनिर्वृत—कर्मकृत विकारो से वियुक्त होने से शान्त।

सीईभूय (शीतीभूत)

कषायो के उपशमन के अर्थ मे सभी शब्द एकार्थक हैं।[1]

शीतीभूत—कषायाग्नि का उपशमन।

परिनिर्वृत—कषाय की ज्वाला को शात करना।

उपशात—राग-द्वेष की अग्नि का उपशमन।

प्रल्हादित—कषाय के परिताप का उपशमन कर शात रहना।

सीलमत (शीलमद्)

व्रती व्यक्ति के अर्थ मे इन तीनो शब्दो का उल्लेख है। लेकिन इनका अर्थभेद इस प्रकार है—

१ शील—चारित्र।

२ गुण—ज्ञान।

३ व्रत—महाव्रत, गुणव्रत आदि।[2]

सुक्क (शुष्क)

'सुक्क' शब्द के पर्याय मे ६ शब्दो का उल्लेख है। ये सभी शब्द कृश व्यक्ति की विभिन्न पर्यायो के द्योतक होने पर भी समवेत रूप से समान अर्थ को व्यक्त करते हैं। कुछ शब्दो की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

शुष्क—खून की कमी से शुष्क आभा वाला।

भुक्ख—भोजन की कमी से दुर्बल। यह देशी शब्द है।

निर्मांस—मास की कमी से कमजोर।

---

१ सूटी प १५० एकार्थिकानि वैतानीति।

२ उशाटी प ३८५।

किटिकिटिकाभूत—माम क्षय से उठने-बैठने मे हड्डियो का चरमराना।

अस्थिचर्मावनद्ध—केवल हड्डियो का ढाचा वाला।

धमनिसतत—शरीर में केवल नाडियो का जाल मात्र दिखाई देना। यह शब्द तपस्वी के विशेषण के रूप मे बहुलता से प्रयुक्त होता है।

सुत्त (सूत्र)

सुत्त शब्द के दो अर्थ है—ज्ञान, आगम। यह समवेत रूप मे शास्त्र या आगम का वाचक है।[1] इन शब्दो की अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

१ श्रुत—गुरु से सुना हुआ ज्ञान।

२ सूत्र—मूल आगम वाक्य।

३ ग्रन्थ -ग्रथ रूप मे ग्रथित।

४ सिद्धान्त—तथ्य का अन्त तक निर्वाह करने वाला।

५ शासन—धर्म की अनुशासना देने वाला।

६ आज्ञावचन—तीर्थंकर या केवली द्वारा प्रतिपादित वाक्य।

७ उपदेश—हित अहित का विवेक देने वाला।

८ प्रज्ञापन—तत्त्व का यथार्थ बोध देने वाला।

९ आगम—आचार्य-परम्परा से प्राप्त।

सुद्ध (शुद्ध)

'सुद्ध' आदि सभी शब्द शुभ्रता/निर्मलता के द्योतक हैं। दिवस प्रकाश की दृष्टि से शुभ्र होता है और आकाश नीरज होने से प्रसन्न—शुभ्र होता है। इस प्रकार 'अतिविशुद्ध' वितिमिर, शुचिम आदि सभी शब्द शुभ्रता व निर्मलता की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ के द्योतक है।

देखें—'सेत'।

सुरा (सुरा)

सुरा, मेरक आदि मादक रस मदिरा के ही विभिन्न प्रकार हैं।

---

१. अनुद्वारमटी प ३४-३५ एकार्थिकानि तत्त्वत एकार्थविषयाणि नानाघोषाणि पृथग्भिन्नोदात्तादि स्वराणि नानाव्यञ्जनानि पृथग्भिन्नाक्षराणि नामधेयानि पर्यायध्वनिरूपाणि भवन्ति।

जैसे—

सुरा—पिष्ट आदि द्रव्य से निष्पन्न मदिरा ।

मेरक—सुरा को पुन सन्धान करके जो सुरा तैयार की जाती है ।

मादक रस—इसके अन्तर्गत सभी मादक रस जाते हैं ।[1]

सुसील (सुशील)

देखें—'सीलमत' 'निस्सील ।

सेज्जा (शय्या)

सेज्जा शब्द के पर्याय मे नौ शब्दो का उल्लेख है । ये सभी शब्द बैठने अथवा सोने के भिन्न भिन्न आकार के आसनो के द्योतक हैं । लेकिन जातिगत समानता से इन्हे पर्यायवाची मान लिया है । इनमे कुछ शब्द विशिष्ट अर्थवत्ता के सवाहक है । जैसे—

१ शय्या—शरीर प्रमाण बिछौना ।

२ खट्वा—नीवार आदि से निर्मित पलग ।

३ वृषी—तापसो का कुश आदि से बना आसन ।

४. आसदी—कुर्सी ।

५ पेढिका—काष्ठ निर्मित बैठने का बाजोट ।

६ महिशाखा—भूमी का वह साफ-सुथरा भाग जो बैठने के काम आता है ।

७ सिला—शिला/पत्थर से निर्मित आसन ।

८ फलक—लेटने का पट्ट अथवा पीढा ।

९ इट्टका—ईंट से निर्मित आसन ।

सेत (श्वेत)

देखे—'सुद्ध' ।

स्वर् (स्वर्)

स्वर्ग के बोधक यहा छह शब्दो का उल्लेख है । इनमे कुछ शब्दो का आशय इस प्रकार है—

जिसके सुखो का वर्णन किया जाता है वह स्वर्ग है । वह देवताओ का निवासस्थान होने से सुरसद्म तथा त्रिदशावास कहलाता हैं ।

---

१ दशहाटी प १८८ ।

तीसरा लोक होने के कारण त्रिविष्टप तथा त्रिदिव भी स्वर्ग का प्रसिद्ध नाम हैं।

हंता (हत्वा)

हिंसा की उत्तरोत्तर भूमिकाओ का वर्णन प्रस्तुत एकार्थक मे हुआ है। लेकिन समवेत रूप मे सभी शब्द एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं।

हनन—लकडी आदि से मारना।

छेदन—लोहे आदि से दो टुकडे करना।

भेदन—शूल आदि से छिन्न-भिन्न करना।

लोपन—शरीर के अवयव का लोप करना।

विलोपन—त्वचा उधेडना।

अपद्रावण—प्राण-वियोजन करना।

हक्कार (हक्कार)

देखें—'रोयमाणी'।

हट्ठचित्त (हृष्टचित्त)

हृष्टचित्त—आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता, अथवा बाहर से पुलकित होना।

तुष्टचित्त—सतोष से उत्पन्न खुशी, आन्तरिक प्रसन्नता।[1]

आनन्दित—स्मित हास्य एव सौम्यता।

नन्दित—समृद्धि से प्राप्त प्रसन्नता।

प्रीतिमन—प्रीतियुक्त प्रसन्नता।

परमसौमनस्यिक—परम प्रसन्न मन वाला।

हर्षवशविसर्पद्हृदय—हर्ष से उत्फुल्ल हृदय वाला।

प्रसन्न मानसिक स्थिति मे तरतमता होने पर भी टीकाकार ने इनको एकार्थक माना है।[2]

---

१. उशाटी प ४४१ हृष्टा बहि पुलकाविमन्त, तुष्टा आन्तरिक प्रीतिभाज।

२. (क) ओपटी पृ ४३. सर्वाणि चैतानि हृष्टादिपदानि प्राय एकार्थानि।
(ख) भटी प ११६ · एकार्थिकानि वैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थानीति।

हत्थिक (हास्तिक)

अगविज्जा मे 'हत्थिक' शब्द के पर्याय मे ५ शब्दो का उल्लेख है। ये पाचो शब्द कटक—कङ्गन के बोधक हैं।

कुछ शब्दो का अर्थबोध इस प्रकार है—

हास्तिक
हत्थिक } —हाथ मे पहना जाने वाला।

चक्रकमिथुनक—गोलाकार जोडा।

कगण—हाथ को सुशोभित करने वाला आभूषण।

हय (हत)

ये सभी शब्द प्रहार करने के अर्थ मे एकार्थक हैं लेकिन इनका अवस्थाकृत भेद इस प्रकार है—

हत—शस्त्र आदि से घात करना।

मथित—भूमि पर पछाडना।

घात—मर्मस्थानो पर प्रहार करना।

विपतित—भूमि पर डालकर घसीटना।

हयतेय (हततेज)

'हयतेय' आदि पाचो शब्द विनष्ट तेज वाले व्यक्ति के विशेषण के रूप मे एकार्थक है।[1] इनकी अर्थ-परम्परा इस प्रकार है—

हततेज—आवरण आदि के कारण तेज रहित होना।

नष्टतेज—स्वत ही तेज का नष्ट होना।

भ्रष्टतेज—अव्यक्त तेज, जलने आदि से तेज समाप्त होना।

लुप्ततेज—तेज का लुप्त हो जाना।

विनष्टतेज—तेज का सर्वथा विनाश।

हिय (हित)

हित आदि शब्द प्रतिपाद्य विषय पर बल देने वाले हैं। साधारणतया इन शब्दो मे हितकारी अर्थ ही ध्वनित होता है लेकिन प्रत्येक शब्द की अर्थभिन्नता इस प्रकार है—

१. भटी पृ १२५७ . एकार्था वैते शब्दा ।

हित—अपाय रहित।

शुभ—पुण्यकर।

क्षम—औचित्यकर।

नि श्रेयस—निश्चित कल्याणकर।

आनुगमिक—भविष्य मे निरन्तर कल्याणकारी।

हीलणा (हीलना)

'हीलणा' आदि शब्द तिरस्कार करने के अर्थ मे प्रयुक्त हैं। अभिव्यञ्जना मे अर्थभेद होते हुए भी ये समान अर्थ मे प्रयुक्त हैं।

हीलना—जाति आदि से अवहेलना करना। अथवा जाति से बहिष्कृत करना।

तर्जना—तर्जनी अगुली दिखाते हुए डाटना।

ताडना—थप्पड मारना।

गर्हणा—गर्हणीय लोगो के सामने निंदा करना।[1]

हीलिज्जमाणी

देखें—'हीलणा'।

हेउगोवएस (हेतुकोपदेश)

जो अवबाध हेतु/कारण से होता है वह हेतुकोपदेश सज्ञा कहलाती हैं। विकलेन्द्रिय और असज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव हित की प्रवृत्ति और अहित की निवृत्ति इसी सज्ञा से करते हैं। जैसे चीटी गध के आधार पर वस्तु का ज्ञान कर लेती है। यह प्राय. वार्तमानिकी सज्ञा है।

---

१. औपटी पृ १९५।

उज्झीयति—उज्झत् उत्सर्गे ।

उत्तरति—उद्-तॄ प्लवनतरणयो ।

उत्तुदति—उद्-तुदीत् व्यथने ।

उत्क्षिप्यति—उद्-क्षिपच् प्रेरणे ।

उत्पादयदि—उद्-पदिच् गतौ ।

उत्प्रेक्षते—उद्-प्र-ईक्षि दर्शने ।

उत्सृजति—उद्-सृजिच् विसर्गे ।

उद्द्वेति—उद्-द्राक् कुत्सितगतौ ।

उपनीयते—उप-णीग् प्रापणे ।

उपपदरिसिते—उप-प्र-दृशृ प्रेक्षणे ।

उपपद्यते—उप-पदिच् गतौ ।

उपलभते—उप-डुलभिष् प्राप्तौ ।

उप्पज्जते—उद्-पदिच् गतौ ।

उप्पाडेहि—उद्-पट गतौ ।

उवणामेति—उप-णम प्रह्वत्वे ।

उवयति—उप-याक् गतौ ।

उवेइ—उप-इणक् गतौ ।

उवेहति—उद्-प्र-ईक्षि दर्शने ।

उव्वत्तेइ—उद्-वृतुङ् वर्तने ।

उव्वियति—उद्-ओविजैप् भयचलनयो ।

ओधावति—अव-धावूग् गतिशुद्ध्योः ।

ओभासेइ—अव-भासि दीप्तौ ।

ओभासेज्ज—अप-भाषि च व्यक्ताया वाचि ।

ओसारेति—अव-सृ गतौ ।

कखइ—काक्षु काक्षायाम् ।

कदति—क्रदु रोदनाह्वानयो ।

कपेति—कपिङ् चलने ।

कड्ढति—कृष कर्षणे ।

कत्ताहि—कृतैत् छेदने ।

कधेति—कथण् वाक्यप्रबधे ।

कामयति—कमूङ् कान्तौ ।

परिशिष्ट ३

धातु-अनुक्रम

(प्रस्तुत परिशिष्ट मे उपसर्ग और धातुओ के बीच का निर्देश + से न करके — चिह्न से किया गया है तथा दीर्घ ॠ के टाईप प्रेस मे न होने से ह्रस्व ऋ का प्रयोग किया है। जैसे—तृ, पृ, दृ, शृ आदि।)

अचेति—अञ्चू गतौ।
अदोलति—आन्दोलण् दोलने।
अक्कोसति—आ-क्रुशं आह्वानरोदनयो।
अज्झोववज्जइ—अधि-उप-पदिच् गतौ।
अट्यते—अट गतौ।
अणुपालेइ—अनु-पलण् रक्षणे।
अणुसचरइ—अनु-सम्-चर गतौ।
अण्हेते—अशश् भोजने।
अतिवाह्यन्ति—अति-वही प्रापणे।
अत्थयति—अर्थणि उपयाचने।
अपकड्ढति—अप-कृष कर्षणे।
अब्भुट्ठिज्जइ—अभि-उद्-ष्ठा गतिनिवृत्तौ।
अभिगच्छइ—अभि-गम्लृ गतौ।
अभिप्पायति—अभि-प्र-आ-इणक् गतौ।
अभिलसइ—अभि-लषी कान्तौ।
अभिसन्दध्यात्—अभि-सम्-डुधाग्क् धारणे दाने च।
अभिहणति—अभि-हनक् हिंसागत्यो।
अर्थापयति—अर्थणि उपयाचने।
अर्द्यते—अर्द गतियाचनयो।
अर्यते—ऋ प्रापणे।
अवतरति—अव-तृ प्लवनतरणयो।
अवमण्णति—अव-मनूयि बोधने।
अहिट्ठयति—अधि-ष्ठा गतिनिवृत्तौ।
अहिधावति—अधि-धावूग् गतिशुद्ध्यो।

उज्झीयति—उज्झत् उत्सर्गे ।
उत्तरति—उद्-तॄ प्लवनतरणयो ।
उत्तुदति—उद्-तुदीत् व्यथने ।
उत्क्षिप्यति—उद्-क्षिपच् प्रेरणे ।
उत्पादयदि—उद्-पदिच् गतौ ।
उत्प्रेक्षते—उद्-प्र-ईक्षि दर्शने ।
उत्सृजति—उद्-सृजिच् विसर्गे ।
उद्द्वेति—उद्-द्राक् कुत्सितगतौ ।
उपनीयते—उप-णीग् प्रापणे ।
उपपदरिसिते—उप-प्र-दृशृ प्रेक्षणे ।
उपपद्यते—उप-पदिच् गतौ ।
उपलभते—उप-डुलभिष् प्राप्तौ ।
उप्पज्जते—उद्-पदिच् गतौ ।
उप्पाडेहि—उद्-पट गतौ ।
उवणामेति—उप-णम प्रह्वत्वे ।
उवयति—उप-याक् गतौ ।
उवेइ—उप-इण्क् गतौ ।
उवेहति—उद्-प्र-ईक्षि दर्शने ।
उव्वत्तेइ—उद्-वृतुङ् वर्तने ।
उव्वियति—उद्-ओविजैप् भयचलनयो ।
ओधावति—अव-धावृग् गतिशुद्ध्यो ।
ओभासेइ—अव-भासि दीप्तौ ।
ओभासेज्ज—अप-भाषि च व्यक्ताया वाचि ।
ओसारेति—अव-सृ गतौ ।
कखइ—काक्षु काक्षायाम् ।
कदति—क्रदु रोदनाह्वानयो ।
कपेति—कपिङ् चलने ।
कड्डति—कृष कर्षणे ।
कत्ताहि—कृतैत् छेदने ।
कथेति—कथण् वाक्यप्रबंधे ।
कामयति—कमूङ् कान्तौ ।

किट्टते—कृतण् सशब्दने ।
किरियति—डुकृ ग् करणे ।
किलामेज्ज—क्लमूच् ग्लानौ ।
कीडति—क्रीड् विहारे ।
कीलंति—क्रीड् विहारे ।
कुच्छति—कुत्सिण् अवक्षेपे ।
कुव्वइ—डुकृ ग् करणे, कुर्वं करणे[1] ।
क्रमति—क्रमू पादविक्षेपे ।
खमइ—क्षमौच् सहने ।
खाति—खाद् भक्षणे ।
खोभेइ—क्षुभश् सचलने ।
गच्छति—गम्लृ गतौ ।
गरहति—गर्हण् विनिन्दने ।
गलइ—गलिण् स्रावणे ।
गिज्झइ—गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम् ।
गिण्हाति— ग्रहीश् उपादाने ।
गुणेति—गुण आमन्त्रणे ।
गृह्णाति—ग्रहीश् उपादाने ।
घट्टेइ—घट्टण् चलने ।
घडइ—घटिष् चेष्टायाम् ।
घुमति—घूर्णत् भ्रमणे ।
चञ्चूर्यते—चर गतौ ।
चयति—त्यज हानौ ।
चरति—चर गतौ ।
चाएति—शक्लृ ट्[2] शक्तौ ।
चालेइ—चल कम्पने ।
चिंतेहिति—चितुण् स्मृत्याम् ।
छड्डे—छर्दण् वमने
छिंदति—छिद् पी द्वैधीकरणे ।

---

१ धातु पृ ३६४ आगमिकधातु ।
२ प्रा ४।८६ शकेश्चय-तर-तीर-पाराः ।

छिन्नति—छिदृपी द्वैधीकरणे, क्णुंक्-हिंसायाम् ।
छुभति—क्षुभश् सचलने ।
जपति—कथण्[1] वाक्यप्रबन्धने ।
जहेज्ज—ओहाक् त्यागे ।
जाणइ—ज्ञाश् अवबोधने ।
जूरइ—खिदिप्[2] दैन्ये।
जेमेति—जिमू अदने ।
जोत्तेज्ज—युजण्-सम्पर्चने ।
ज्ञाप्यते—ज्ञाश् अवबोधने ।
टिट्टियावेइ (दे) ।
ठवेति—ष्ठा गतिनिवृत्तौ ।
डज्झति—दह भस्मीकरणे ।
णमसइ—णम प्रह्वत्वे ।
णामेति—णम प्रह्वत्वे ।
णाहिति—ज्ञाश् अवबाधने ।
णिकड्ढति—नि-कृष कर्षणे ।
णिक्खुस्सति—निर्-क्रुश आह्वानरोदनयो ।
णिज्झायति—निर् ध्यै चिंतायाम् ।
णिद्धावति—नि-धावूग् गतिशुद्ध्यो ।
णिरिक्खति—निर्-ईक्षि दर्शने ।
णिलिक्खति—निर्-ईक्षि दर्शने ।
णिल्लवेति—निर्-लूग्श्-छेदने, निस्-सृ[3]-गतौ ?
णिसरति—नि-सृजिच् विसर्गे ।
णिहेति—नि-दुधाग्क् धारणे ।
णीहरति—निर्-हृग् हरणे ।
णूमेति (दे)

१. प्रा ४/२ कथेर्वज्जर पज्जरोप्पालपिसुण-सघ-बोल्ल-चव-जम्प-सीस साहा ।
२ प्रा ४/१३२ खिदेर्जूरविसूरौ ।
३ प्रा ४/७६ निस्सरेर्णीहर-नील-धाड-वरहाडा ।

णोल्लति—क्षिपीव्[1] प्रेरणे ।
णोल्लसति—क्षिपिच प्रेरणे[2] ।
तक्केइ—तर्क विचारे ।
तज्जेति—तर्जिण् सतर्जने ।
तवेंति—तप सन्तापे ।
तसति—त्रसैच् भये ।
तालेति—तडण् आघाते ।
तितिक्खइ—तिजि क्षमानिशानयो ।
तिप्पइ—तिपृङ् क्षरणे ।
तीरेइ—तृ-प्लवनतरणयो ।
तुट्टाएति—(दे) ?
तुदति—तुदींत् व्यथने ।
थणति—स्तन शब्दे ।
दयामो—दयि रक्षणे ।
दिप्पते—दीपैचि दीप्तौ ।
दीसति—दृशृ प्रेक्षणे ।
दुक्खइ—दु खण् तत्क्रियायाम् ।
दुरुहइ—दु-रुह जन्मनि ।
दूइज्जति—दुं-गतौ ।
देति—डुदाग्क् दाने ।
धाडेति—निस् सृ[2] गतौ ।
धारयति—धृ ग् धारणे ।
धावति—धावूग् गतिशुद्ध्यो ।
निअच्छति—नि-यमू उपरमे ।
निंदति—णिदु कुत्सायाम् ।
निग्गच्छति—निर्-गम्लृ गतौ ।
निच्छोडेज्ज—निर्-छुट्-छेदने ।
निर्णीयते—निर्-णीग् प्रापणे ।
निप्पीलए—निस्-पीडण् आघाते ।

---

१. प्रा ४/१४३ क्षिपेर्गलत्थाड्डक्ख सोल्ल-पेल्ल-णोल्ल-छुह-हुल-परी-घत्ताः ।
२ प्रा ४।७९ निस्सरेर्णीहर-नील-धाड-वरहाडाः ।

निब्भच्छेज्ज—निर्-भर्त्सिण् सतर्जने ।
निविशति—नि-विशत् प्रवेशने ।
निव्वजीयति—निर्-वि-आ-अञ्जीप्-व्यक्त्यादौ
निष्पाद्यते—निस्-पदिच् गतौ ।
निसृजति—नि-सृजिच् विसर्गे ।
पउजेज्जा—प्र-युजृ पी योगे ।
पतावेज्ज—प्र-अम् गतौ ।
पक्खति—पक्षण् परिग्रहे ।
पक्खते—दृशृ प्रेक्षणे ।
पगासेति—प्र-काशृङ् दीप्तौ ।
पच्चति—डुपचीष् पाके ।
पच्चाणेति—प्रति-आ-णीग्-प्रापणे ।
पच्छति—प्रछत् ज्ञीप्सायाम् ।
पडइ—पत्लृ-गतौ
पडिक्कमिज्जइ—प्रति-क्रमू पादविक्षेपे ।
पण्णवेइ—प्र-ज्ञाश् अवबोधने ।
पत्तियइ—प्रति-इण्क् गतौ ।
पत्थयति—प्र-अर्थणि उपयाचने ।
पधावति—प्र-धावृग् गतिशुद्ध्योः ।
पधोवेति—प्र-धूत्[1] विधूनने ।
पन्नायति—प्र-ज्ञाश् अवबोधने ।
पभासेइ—प्र-भासि दीप्तौ ।
पमिलायति—प्र-म्लै गात्रविनामे ।
पयाति—प्र-याक् गतौ ।
पर्यालोचयति—परि-आ-लोचृङ् दर्शने ।
परिक्कमिज्ज—परि-क्रमू पादविक्षेपे ।
परिघुमति—परि-घूर्णत् भ्रमणे ।
परिचेट्ठति—परि-चेष्टि चेष्टायाम् ।
परिच्चयति—परि-त्यज हानौ ।
परिच्छिदति—परि-छिदृ पी द्वैधीकरणे ।
परिजाणेइ—परि-ज्ञाश् अवबोधने ।

---

१. प्रा ४/५६ धूगेर्धुव. ।

परितप्पइ— परि-तप सन्तापे ।
परितालेति—परि-तडण् आघाते ।
परिधावति—परि-धावूग् गतिशुद्धयो. ।
परिनिव्वाइ—परि-निर्-वाक् गतिगन्धनयो ।
परिभवति—परि-भू-सत्तायाम् ।
परिभासति—परि-भाषि च-व्यक्ताया वाचि ।
परियट्टति—परि-अट गतौ ।
परियत्तेइ—परि-वृतुङ् वर्तने ।
परिवत्तते—परि-वृतुङ् वर्तने ।
परिवहेति—परि-व्यथिष् भयचलनयो ।
परिहायति—परि-ओहाक् त्यागे ।
परुवेइ—प्र-रूपण् रूपक्रियायाम् ।
पलुक्कइ—प्र-लोकृङ् दर्शने ।
पविद्धसति—प्र-वि-ध्वसूङ् अवस्रसने ।
पवीलए—प्र-पीडण् गहने ।
पव्वइज्जा—प्र-व्रज गतौ ।
पव्वहेति—प्र-व्यथिष् भयचलनयो ।
पवेदेमि—प्र-विदिण् चेतनाख्याननिवासेषु ।
पहर- प्र-हृग् हरणे ।
पाटयति—पट गतौ ।
पालेइ—पलण् रक्षणे ।
पावइ—प्र-आप्लृट् व्याप्तौ ।
पामइ—दृश् प्रेक्षण ।
पियइ—पा पाने ।
पीडइ—पीडण् गहने ।
पीहेइ—स्पृहण् ईप्सासाम् ।
पूरेइ—पृश् पालनपूरणयो ।
पेक्खति—प्र-ईक्षि दशने ।
पेहति—प्र-ईक्ष दशने ।
प्रचोदयति—प्र-चुदण् सचोदने ।
प्रत्येति—प्र इण्क् गतौ ।

प्रभाति—प्र-भाक् दीप्तौ ।
प्रविशति—प्र-विशत् प्रवेशने ।
प्रेरयन्ति—प्र-ईरण् क्षेपे ।
फदेइ—स्पदुङ् किञ्चिच्चलने ।
फरूसेज्ज—पृश् पालनपूरणयो ।
फासेइ—स्पृशत् सम्पर्शे ।
फुडीकज्जति—स्फुट-डुकृग् करणे ।
बधेज्ज—बन्धण् बन्धने ।
बीभिति—ञीभीक् भये ।
बुज्झइ—बुध अवगमने ।
बेंति—ब्रूग्क् व्यक्ताया वाचि ।
भज—भञ्जोप् आमर्दने ।
भक्खति—भक्षण् अदने ।
भणति—भण शब्दे ।
भमते—भ्रमू चलने ।
भवति—भू सत्तायाम् ।
भामते—भामि दीप्तौ ।
भासेइ—भाषि च व्यक्ताया वाचि ।
भिदति—भिदृ पी विदारणे ।
भुजते—भुजप् पालनाभ्यवहारयो ।
मतेहिति—मन्त्रिण् गुप्तभाषणे ।
मग्गइ—मार्गण् अन्वेषणे ।
मन्नति—मनूयि बोधने ।
मरिसेति—मृषीच् तितिक्षायाम् ।
महेज्ज—मन्थ हिंसासंक्लेशयो ।
मिणइ—मीण् मतौ ।
मिणति—माङ्क् मानशब्दयो ।
मुच्चइ—मुचण् प्रमोचने ।
मुज्झइ—मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययो ।
मोहेति—मुहौच् वैचित्ये ।
युज्यते—युजू पी योगे ।
रज्जइ—रञ्जी रागे ।

रमति—रमि क्रीडायाम् ।
रीयति—रीङ्च् स्रवणे, रीश् गतिरेषणयो ।
रुभेज्ज—रुधृ पी आवरणे ।
लज्जामो—ओलस्जैति व्रीडे ।
लब्भति—डुलभिष् प्राप्तौ ।
ललति—ललिण् ईप्सायाम् ।
लुक्कइ—लोकृङ् दर्शने ।
लेसेज्ज—श्लिषच् आलिंगने ।
वदइ—वदुङ् स्तुत्यभिवादनयो ।
वक्कमति—अव-क्रमू पादविक्षेपे ।
वन्दते—वदुङ् स्तुत्यभिवादनयो ।
वत्तज—वृतुङ् वर्तने ।
वप्फति—(दे)
वमेति—टुवमू उद्गिरणे ।
वयति—व्रज गतौ ।
वर्णयति—वर्णण् वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु ।
वासेइ—वासण् उपसेवायाम्, वस निवासे ?
विउक्कमति—वि-उद्-क्रमू पादविक्षेपे ।
विउट्टिज्जइ— वि-कुट्टण् कुत्सने छेदने च ।
विकड्डति—वि-कृष कर्षणे ।
विकत्ताहि—वि-कृतैत् छेदने ।
विच्छिदति—वि-छिदृ पी द्वैधीकरणे ।
विच्छुभ—वि-क्षुभश् सचलने ।
विज्झीयति—वि-उज्झत् उत्सर्गे ।
विद्धसति—वि-ध्वसूङ् अवस्रसने ।
विधावति—वि-धावूग् गतिशुद्ध्योः ।
विनयन्ति—वि-णीग् प्रापणे ।
विप्परिचेट्ठते—वि-परि-चेष्टि चेष्टायाम् ।
विप्परिवतते—वि-परि-वृतुङ् वर्तने ।
विभयति—वि-भञ्जोप् आमर्दने ।
विभावेमि—वि-भू सत्तायाम् ।

विलग्गइ—वि-लगे सङ्गे ।
विलुपति—वि-लुप्लृ ती छेदने ।
विशति—विशत् प्रवेशने ।
विशेषयति—वि-शिष्लृ प् विशेषणे
विसोधेति—वि-शुधच् शौचे ।
विहण—वि-हनक् हिंसागत्यो ।
वोसिरति—वि-उद् मृजिच् विसर्गे ।
वृणीते—वृङ्श् सभक्तौ ।
वृणोति—वृग्ट् वरणे ।
सकुयति—सम्-कुचत् सकोचने ।
सघट्टेज्ज—सम्-घट्टण् चलने
सचारयन्ति—सम्-चर गतौ ।
सचालयन्ति—सम्-चलण् भृतौ ।
सचिट्ठते—सम्-ष्ठा गतिनिवृत्तौ ।
सजमति—सम्-यमू उपरमे ।
सजायते—सम्-जनैचि प्रादुर्भावे ।
सधसेज्ज— सम्-ध्वसूङ् अवस्रसने ।
सधयेत्—सम्-ट्धें पाने ।
सधावति—सम्-धावृग् गतिशुद्ध्योः ।
सपेहेति—सम्-प्र-ईक्षि दर्शने ।
सप्रेक्षते—सम्-प्र-ईक्षि दर्शने ।
सभवति— सम्-भू सत्तायाम् ।
सलुक्कइ—सम्-लोकृङ् दर्शने ।
सवरेज्जा—सम्-वृग्ट् वरणे ।
ससारेइ—सम्-सृ गतौ ।
सक्कारेइ—सद्-डुकृग् करणे ।
सक्केइ—शक्लृट् शक्तौ ।
सज्जइ—षञ्ज सङ्गे ।
सडइ—शट रुजाविशरणगत्यवशातनेषु ।
सद्दहइ— श्रद्-डुधाग्क धारणे ।
समवतरन्ति—सम्-अव-तृ तरणप्लवनयोः ।

समवयन्ति—सम्-अव-इण्क् गतौ ।
समारभइ—सम्-आ-रभि राभस्ये ।
सम्माणेइ—सम्-मानण् पूजायाम् ।
सम्मिलन्ति—सम्-मिलत् श्लेषणे ।
सहति—षहि मर्षणे ।
साध्यते—साधट् ससिद्धौ ।
सिचति—षिचीत् क्षरणे ।
सिज्झइ—षिधूच् सराद्धौ ।
सिणावेति—ष्णाक् शौचे ।
सूयते—षूङ् प्रसवैश्वर्ययो ।
सोभते—शुभि दीप्तौ ।
सोयइ—शुच शोके ।
स्तौति—ष्टुञ्क् स्तुतौ ।
स्पृशति—स्पृशत् सस्पर्शे ।
स्फाटयति—स्फट विशरणे ।
शृणोति—श्रुट् श्रवणे ।
हणति—हनक् हिंसागत्यो ।
हरति—हृग् हरणे ।
हवइ—भू सत्तायाम् ।
हसति—हसे हसने ।
हायति—ओहाक् त्यागे ।
हिंसति—हिसुण् हिंसायाम् ।
हीलेति—हीलण् निन्दायाम् ।[1]

---

१ धातु पृ ३६४ लौकिक धातु ।

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृ संख्या	मूल एकार्थक	अशुद्ध	शुद्ध
३	अक्कोह	खीणक्कोहे	खीणकोहे
६	अत्तव	बा	वा
११	अधम्मत्थिकाय	रइ-अरई	रइ-अरई
१३	अप्पियववहार	अप्पियववहार	अप्पियववहारिय
४०	ऋजु	ऋ-सरजुल	ऋजु-सरल
४४	कम्म	कर्म	कर्म
५२	गड्डिक	सुभगा	सुभगो
६२	जबू	३/७००	जीव ३/७००
७०	णिम्मज्जित	अवि	अवि
७६	थिल्ली	थिल्ली	थिल्लि
९०	पडुर	पडुर	पडुर
९६	परिग्गह	आयार	आयर
९९	पव्वाविय	प्रव्रजित	प्रव्राजित
१०२	पासादिय	अभिरुवे	अभिरूवे
१०२	पासादिय	पडिरुवे	पडिरूवे
१०३	पिच्चअ	पिच्चअ	पिच्चिय
१०३	,,	कुट्टित्तो	कुट्टितो
१०५	पूया	विणआ	विणओ
१३९	व्यक्तिकर	वार्तिकर	वार्तिककर
१४४	सरभ	सरमाभे	समारभे
१४७	सप्पज्जाय	सप्पज्जाय	सपज्जाय
१५३	सिद्धार्थं	सिद्धार्थं	सिद्धार्थ
१५६	सोह	सोह	सोहि
१५७	हत्थखड्डुग	खड्डुग	खडुग
१५८	हायपति	हायपति	हापयति
१५८	हार	हित्यते	ह्रियते

पृ संख्या	मूल एकार्थक	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	हुतासिणासिहा	हुतासिणासिहा	हुतासिणसिहा
१६१	परिशिष्ट १	कोष्टक	कोष्ठक
१६३	" १	अट्ट्यते	अट्यते
१६६	अप्रसूता	नववघू	नववघू
१७०	परिशिष्ट १	अधिसधान	अभिसधान
१७३	अविधिपरिहारि	सजमतवय	सजमतवड्ढय
१६२	परिशिष्ट १	खीणक्कोह	खीणकोह
१६८	चितिकम्म	वदग	वदणग
२०५	णिम्मल	निद्रियद्वि	निद्वियट्ठ
२१०	परिशिष्ट १	दकादर	दकोदर
२३५	"	भत्त्य	भत्थ
२४६	"	लप्पमाण	लुप्पमाण
२४६	लोह	अधम्मत्थिकाय	अधम्मत्थिकाय
२५७	परिशिष्ट १	सउज्जाय	सउज्जोय
२६१	" १	सद्धम	सद्धर्म
२६२	समास	सखेव	सखेव
२६८	परिशिष्ट १	सरगिरि	सुरगिरि
३००	परिशिष्ट २	उट्ठाण	उट्ठाण
३०२	परिशिष्ट २	उवमय	उवसग